नालयिरा दिव्य प्रबंधम्

इयर्पा (सहस्रगीति तृतीय)

पोय्गैयाळवार	भूदत्ताळवार	पेयाळवार
तिरूमळिशैयाळवार	तिरूमंगैयाळवार	नम्माळवार

संकलन

श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी

समर्पण

श्रीमद्‌भगवतो प्राकुंशाचार्यजी महाराज

श्रीमते रामानुजाय नमः

परिचय

शान्तानन्तमहाविभूति परमं यद्ब्रह्मरूपं हरेः
मूर्तं ब्रह्म ततोऽपि तत्प्रियतरं रूपं यदत्यद्भुतम् ।

श्री वैष्णव दिव्य देश की कुल संख्या **108** मानी गयी है। दिव्य देश के मन्दिरों में नारायण हरि के भिन्न भिन्न अर्चारूप हैं। इन अर्चा विग्रहों की प्रशस्ति **12** आळवार संतों द्वारा स्वतः स्फूर्त हृदयोद्‌गार से की गयी है और इन सवों के संकलन को दिव्य प्रबंधम् कहते हैं। इसमें कुल चार हजार पाशुर या छंद हैं इसलिये इसे नालयिरा दिव्य प्रबंधम् कहते हैं। मूल पाशुर तमिल में हैं। कालक्रम में इनका लोप हो गया था परंतु श्री नाथमुनि के अथक परिश्रम से नम्माळवार की कृपा हुई और ये पुनः प्राप्त हुए। बोलचाल की भाषा में सुविधा के लिये इस संकलन को चार भागों में बांटा गया है एवं हर भाग को सहस्रगीति कहते हैं।हालांकि नम्माळवार का तिरूवाय्मोळि को भी केवल सहस्रगीति से संबोधित किया जाता है क्योंकि सारे **24** प्रवंधमों में यह सर्वोत्तम महत्व वाला प्रवंध है। दिव्य प्रबंधम् में संकलित सारे **24** प्रवंधमों का एक विहंगम अवलोकन नीचे के वर्णिका से किया जा सकता है।

संकलन	आळवार	प्रबंधम	पाशुरों की संख्या
प्रथम सहस्रगीति मुदल आयिरम	पेरियाळवार (विष्णुचित्त स्वामी)	1 पेरियाळवार तिरूमोळी	1 से 473
	आंडाल	2 तिरूप्पावै	474 से 503
		3 नाच्चियार तिरूमोळी	504 से 646
	कुलशेखराळवार	4 पेरूमाल तिरूमोळी	647 से 751
	तिरूमळिशैयाळवार (भक्तिसार स्वामी)	5 तिरूच्चन्दविरूत्तम	752 से 871
	तोंडरादिप्पोडियाळवार (भक्ताङ्घ्रिरेणु स्वामी)	6 तिरूमालै	872 से 916
		7 तिरूप्पळिळयळुच्चि	917 से 926
	तिरूप्पाणाळवार	8 अमलनादिपिरान्	927 से 936
	मधुरकवियाऴवार	9 कण्णिनुण् शिरूत्ताम्बु	937 से 947
द्वितीय सहस्रगीति इरान्दाम आयिरम	तिरूमङ्गैयाळवार	10 पेरिया तिरूमोळि	948 से 2031
		11 तिरूक्कुरून्दाण्डगम्	2032 से 2051

		12 तिरूनेडुन्दाण्डगम्	2052 से 2081
तृतीय सहस्रगीति मून्राम आयिरम (इयर्पा)	पोय्गैयाळवार	13 मुदल् तिरूवन्दादि	2082 से 2181
	भूदत्ताळवार	14 इराण्डाम् तिरूवन्दादि	2182 से 2281
	पेयाळवार	15 मून्राम तिरूवन्दादि	2282 से 2381
	तिरूमळिशैयाळवार (भक्तिसार स्वामी)	16 नान्मूगन तिरूवन्दादि	2382 से 2477
	नम्माळवार	17 तिरूविरूत्तम	2478 से 2577
		18 तिरूवाशिरियम	2578 से 2584
		19 पेरिया तिरूवन्दादि	2585 से 2671
	तिरूमङ्गैयाळवार	20 तिरूवेळुकूट्रिरूक्कै	2672
		21 शिरिय तिरूमडल	2673 से 2710
		22 पेरिय तिरूमडल	2711 से 2790
	तिरूवरङ्गत्तमुदनार	23 इरामानुश नुट्रन्दादि	2791 से 2898
चतुर्थ सहस्रगीति नान्गाम आयिरम	नम्माळवार	24 तिरूवाय्मोळि	2899 से 4000

ऊपर के वर्णिका में एक और ध्यान देने योग्य बात है कि प्रबंध संख्या **23** जो रामानुज नुट्रन्दादि है यह आळवारों की रचना नहीं है और यह रामानुज स्वामी के शिष्य मुदनार की कृति है जिसे सुनकर रामानुज ने अपने जीवनकाल में इसकी स्वीकृति दे दी थी। नित्यानुसंधानम में प्रायः इसका पाठ तिरूवाय्मोळि के बाद किया जाता है।

दिव्य प्रवंधम के प्रथम सहस्रगीति का हिन्दी में सरल भावार्थ श्रीमान् सुन्दर कीदम्बी द्वारा तैयार किया हुआ देवनागरी लिपि के पाशुरों को उपयोग में लाते हुए किया गया है। इसके लिये श्रीमान् के सदा आभारी हैं जिनकी अनुमति इस तरह के कैंकर्य के लिये दास को मिल चुकी है। देवनागरी में उपलब्ध पाशुरों को श्रीमान् के www.prapatti.com से लिया गया है। एक बार फिर अपना आभार श्रीमान् द्वारा किये गये महान कैंकर्य के लिये प्रकट करते हैं कि देवनागरी में पाशुरों को न उपलब्ध रहने पर इस तरह के कैंकर्य की कल्पना करने का साहस नहीं किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त श्रीमान् से अन्य महत्वपूर्ण वेब साईट का लिंक भी प्राप्त हुआ जिससे दास का मनोबल बहुत ऊंचा हुआ। श्रीबरदराज स्वामी से श्रीमान् के ऊत्तरोत्तर प्रगति के लिये प्रार्थना है।

तिरूमला तिरूपति देवस्थान द्वारा अंग्रेजी में सात खंडों में प्रकाशित '108 वैष्णव दिव्य देशम' जो डा॰ सुश्री एम एस रमेश आई ए एस की कृति है को दिव्य देशम के वर्णन के लिये उपयोग में लाया गया है । उपयुक्त जगहों पर इसके खंड एवं पेज का संदर्भ ब्रैकेट में दिया गया है। सुश्री रमेश एवं ति ति देवस्थानम को विनम्र आभार प्रकट करते हैं।

डा॰ एस जगतरक्षण का 'नालयिरा दिव्यप्रबंधम' जिसकी अंग्रेजी टीका श्री राम भारती द्वारा की गयी है हिन्दी के इस कैंकर्य में बड़ा ही सहायक हुआ है। डा॰ एस जगतरक्षण का हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

भगवान देवराज वरदराज स्वामी की कृपा से कांचीपुरम में परम विद्वान श्री कोईल अन्नन स्वामी से बड़ा मनोबल बढ़ा और दास आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है। पेरूमाल कोईल कांचीपुरम के श्रीनम्माळवार सन्निधि के स्वामी टी ए भास्यम् ने दिव्य देशम का सद्यः स्वानुभूत ज्ञान से लाभ करा कर इस कैंकर्य को बड़ा सुगम बना दिया।हृदय से आपका आभार प्रकट करते हैं।

दिव्य प्रबंधम् के चार सहस्रगीतियों का यह तीसरा भाग है। प्रथम एवं द्वितीय भाग स्वतंत्र रूप से पूर्व में समर्पित किये जा चुके हैं। तिरूवायमोळी का कैंकर्य पुष्प शीघ्र समर्पित किया जायेगा।

विनीत दास

श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी
कांचीपुरम
2 जुलाइ 2011

उच्चारण संकेत

www.praptti.com से लिये देवनागरी लिपि वाले मूल पाशुर के उच्चारण के अपने नियम हैं जो साभार नीचे दिया जा रहा है।

Attention: New letters have been introduced to facilitate reading Tamil texts in Devanaagarii. Distinction has been made between certain short and long consonants that do not exist in Devanaagarii. For e.g., नॆ and ने should be treated with the same distinction as that exists between नि and नी. The letters ऎ and ए, and ऒ and ओ, should be treated in the same way. The letter ऴ denotes the *za* in Tamil. For e.g., *aazvaar* would be written as आऴ्वार् in Devanaagarii. There is a subtle difference between ऱ and र, however, they can be pronounced in the same way. Also note that ऱ्ऱ sounds almost like ट्र, ऱ्ऱि like ट्रि, and so on. The consonant-cluster न्ऱ is pronounced somewhere between न्र and न्ड्र. It is, however, colloquially acceptable to pronounce the clusters ऱ्ऱ and न्ऱ as त्त and न्न, respectively.

श्रीमते रामानुजाय नमः

मुदल् तिरूवन्दादि (2082 – 2181)

मुदलियाण्डान् अरूळिच्चेय्द तनियन्

कैदैशेर् पूम् पॉळिल् शूळ् कच्चिनगर् वन्दुदित्त*
पॉय्गै प्पिरान् कविञर् पोरेरु* – वैयत्तु
अडियवर्गळ् वाळ अरुन्तमिळन्दादि*
पडिविळङ्ग च्चॅय्दान् परिन्दु

वैयम् तगळिया* वार् कडले नॅय् आग* वॅय्य कदिरोन् विळक्काग* शॅय्य शुडर् आळियान् अडिक्के* शूट्टिनेन् शॉल् मालै* इडर् आळि नीङ्गुगवे एन्रु॥१॥	धरा हमारा दीपक है जिसमें सागर तेल है एवं तेजोमय सूर्य बत्ती है। हम गीतों की यह माला प्रदीप्त चक्रधारी प्रभु के कोमल चरणों पर अर्पित करते हैं जिससे कि दुख के सागर को हम पार कर सकें। **2082**
एन्रु कडल् कडैन्ददु* एव्वुलगम् नीर् एट्रदु* ऑन्रुम् अदनै उणरेन् नान्* अन्रदु अडैत्तुडैत्तु* क्कणपडुत्त आळि* इदु नी पडैत्तिडन्दुण्डुमिळन्द पार्॥२॥	समुद्र मंथन हुआ, कब, मुझे नहीं पता। सागर जिस पर आपने सेतु बनाया, दो भाग में बांटा, एवं जिस पर सोये। क्या यही था वह ? आपने धरा का उपहार लिया, कहां, मुझे नहीं पता।धरा को आपने बनाया, ऊपर उठाया, खा गये एवं पुनः बनाया। क्या यही धरा नहीं थी ? **2083**
पार् अळवुम् ओर् अडिवैत्तु* ओर् अडियुम् पार् उडुत्त* नीर् अळवुम् शॆल्ल निमिर्न्ददे* शूर् उरुविल् पेय् अळवु कण्ड* पॆरुमान्! अरिगिलेन्* नी अळवु कण्ड नॆरि॥३॥	आपने धरा को लिया, एक पैर आकाश में तथा एक पैर सागर किनारे। आप बढ़ते गये, बढ़ते गये, पता नहीं कैसे ? **2084**
नॆरि वाशल् तानेयाय्* निन्रानै* ऐन्दु पॊरि वाशल् पोर् क्कदवम् शार्त्ति* अरिवानाम् आल मर नीळल्* अरम् नाल्वर्क्कन्रुरैत्त* आलम् अमर् कण्डत्तरन्॥४॥	पीपल वृक्ष के नीचे विषकंठ शिव ने कैसे दक्ष पुलस्त्य अगस्त्य एवं मार्कण्डेय को योग की शिक्षा दी। उनलोगों ने पांचों इन्द्रियों के युद्ध द्वार को बन्द कर यह अनुभव किया कि केवल आप ही मुक्ति के मार्ग हैं । **2085**

अरन् नारणन् नामम्⋆ आन्विडै पुळ् ऊर्ति⋆ उरै नूल् मरै उरैयुम् कोयिल्⋆ वरै नीर् करुमम् अळिप्पळिप्पु⋆ क्कैयदु वेल् नेमि⋆ उरुवम् एरि कार् मेनि ऑन्रु॥ ५ ॥	उनके नाम हैं हर एवं नारायण, एवं उनकी सवारी है वृषभ तथा पक्षी। उनके शास्त्र आगम एवं वेद, उनके घर कैलास पर्वत एवं क्षीर सागर, उनके कार्य प्रलय एवं पालन, उनके अस्त्र भाला एवं चक्र, उनके रंग अग्नि एवं बादल, और तब भी आप सबों के लिये एक हैं। **2086**
ऑन्रुम् मरन्दरियेन्⋆ ओद नीर् वण्णनै नान्⋆ इन्रु मरप्पनो एळैगाळ्⋆ अन्रु करुवरङ्गत्तुळ् किडन्दु⋆ कै तॊळुदेन् कण्डेन्⋆ तिरुवरङ्ग मेयान् दिशै॥ ६ ॥	हे लोगों ! सागर सा सलोने प्रभु को मैं नहीं भूल सकता। जब हम गर्भ में आये आपकी पूजा के लिये हाथ जोड़ा। अब मैं दक्षिणी दिशा में ध्यान रखता हूं जिस तरफ अरंगम के प्रभु देख रहे हैं ः यम दिशा की ओर। **2087**
दिशैयुम् दिशै उरु दॆय्वमुम्⋆ दॆय्वत् दिशैयुम्⋆ करुमङ्गळ् एल्लाम्⋆ अशैविल् शीर् कण्णन् नॆडु माल्⋆ कडल् कडैन्द⋆ कार् ओद वण्णन् पडैत्त मयक्कु॥ ७ ॥	दिशायें एवं उनके देवगन, हर दिशा में उनके देव की पूजन विधि, ये सब चमत्कारिक प्रभु कृष्ण के बनाये हैं जो पुराकाल में समुद्रमंथन करने वाले गाढ़े समुद्र रंग के आश्चर्यमय प्रभु हैं। **2088**
मयङ्ग वलम्पुरि वाय् वैत्तु⋆ वान– त्तियङ्गुम्⋆ एरि कदिरोन् तन्नै⋆ मुयङ्गमरुळ् तेर् आळियाल् मरैत्तदु⋆ एन् नी तिरुमाले⋆ पोर् आळि क्कैयाल् पॊरुदु॥ ८ ॥	तिरूमल प्रभु ! पुराकाल के युद्ध में आपने अद्भुत शंखध्वनि किया एवं तीक्ष्ण चक्र चलाये। लेकिन उज्ज्वल सूर्य को आकाश में रथ के चक्के से क्यों छिपा दिया ? **2089**
पॊरुगोट्टोर् एनमाय्⋆ प्पुक्किडन्दाय्क्कु⋆ अन्रुन् ऑरु कोट्टिन् मेल् किडन्ददन्रे⋆ विरि तोट्ट शेवडियै नीट्टि⋆ त्तिशै नडुङ्ग विण् तुळङ्ग⋆ मा वडिविन् नी अळन्द मण्॥ ९ ॥	चक्रधारी प्रभु ! विशाल रूप में चरणारविंद से आप ने धरा को मापा जबकि संसार भयग्रस्त था एवं स्वर्गिक जन कांप रहे थे।जब वृहत वराह के रूप में आपने धरा को अपने दांत पर उठा लिया तब आपके दांत टूटे कैसे नहीं क्योंकि धरा एक ही दांत पर टिकी थी। **2090**
मण्णुम् मलैयुम्⋆ मरि कडलुम् मारुतमुम्⋆ विण्णुम् विळुङ्गियदु मॆय् एन्बर्⋆ एण्णिल् अलगळवु कण्ड⋆ शीर् आळियाय्क्कु⋆ अन्रिव् उलगळवुम् उण्डो उन् वाय्॥ १० ॥	अनंत गौरव के एकमात्र चक्रधारी प्रभु ! कहते हैं यह सच है कि आपने पृथ्वी पर्वत समुद्र वायु एवं आकाश को निगल लिया। जरा सोंचो, क्या आपका मुंह इतना बड़ा था जितनी बड़ी पृथ्वी है ? **2091**

वाय् अवनै अल्लदु वाळ्त्तादु* कै उलगम् तायवनै अल्लदु ताम् तॊळा* पेय् मुलैनञ्जु ऊण् आग उण्डान्* उरुवॊडु पेर् अल्लाल्* काणा कण् केळा शॆवि॥११॥	धरा मापने वाले प्रभुने शिशु के रूप में पूतना राक्षसी का स्तन चाव से पिया। हमारे हाथ आपके सिवा किसी अन्य को प्रणाम नहीं करेंगे।मेरे होंठ दूसरे की प्रशंसा नहीं करेंगे, मेरी आंखें किसी और रूप को नहीं देखेंगी, एवं दूसरे नामों को कान नहीं सुनेंगे। **2092**
शॆवि वाय् कण् मूक्कु* उडल् एन्रैम् पुलनुम्* शॆन्ती पुवि काल् नीर् विण् बूदम् ऐन्दुम्* अवियाद ञानमुम् वेळ्वियुम्* नल्लरमुम् एन्बरे* एनमाय् निन्राकियल्वु॥१२॥	कान एवं अन्य इन्द्रियां, पांच मुख्य तत्व, पांच अनुभव करने वाली इन्द्रियां, पांच चालक इन्द्रियां एवं भीतर का एक शाश्वत प्राणी सभी प्रभु के स्वरूप हैं जो वराह बन कर आये थे। **2093**
इयल्वाग ईन् तुळायान् अडिक्के शॆल्ल* मुयल्वार् इयल् अमरर् मुन्नम्* इयल्वाग नीदियाल् ओदि* नियमङ्गळाल् परव* आदियाय् निन्रार् अवर्॥१३॥	तुलसी धारी नारायण के चरण प्राप्त करने के लिये सभी देवगन उपाय खोजते रहते हैं।पूर्व के सम्यक अध्ययन एवं अभ्यास से वे दैविक स्तर प्राप्त कर सके हैं। **2094**
अवर् अवर् ताम् ताम्* अरिन्दवारेत्ति* इवर् इवर् एम् पॆरुमान् एन्रु* शुवर्मिशै च्चार्त्तियुम्* वैत्तुम् तॊळुवर्* उलगळन्द मूर्त्ति उरुवे मुदल्॥१४॥	स्वभाव एवं समझ के अनुसार वे सिंहासन पर रखे अपने पसंद की आराध्य मूर्ति की या दीवार पर के चित्र की पूजा करते हैं। तब भी धरा को मापने वाले प्रभु आदिनाथ हैं एवं सर्वोपरि हैं। **2095**
मुदल् आवार् मूवरे* अम् मूवर् उळ्ळुम्* मुदल् आवान्* मूरि नीर् वण्णन्* मुदल् आय नल्लान् अरुळ् अल्लाल्* नाम नीर् वैयगत्तु* पल्लार् अरुळुम् पळुदु॥१५॥	सभी देवों में त्रिमूर्ति सर्वोपरि हैं एवं त्रिमूर्ति में सागर सा सलोने प्रभु सर्वोपरि हैं। क्या आदिनाथ प्रभु की कृपा नहीं है कि केवल नाम मात्र के देवगनों की कृपा शून्य ही नहीं है बल्कि बेकार है। **2096**
पळुदे पल पगलुम्* पोयिन एन्रु* अञ्जि अळुदेन्* अरवणै मेल् कण्डु तॊळुदेन्* कडल् ओदम् काल् अलैप्प* क्कण्वळरुम्* शॆङ्गण् अडल् ओद वण्णर् अडि॥१६॥	बेकार के दिन बीतते गये हम भयग्रस्त थे एवं रोये। तब हमने सागर सा सलोने अरूणाभ नयन प्रभु को शेषशायी देखा जिनकी चरणों की सेवा तरंगे कर रही थी। हमने आपकी पूजा की। **2097**
अडियुम् पडि कडप्प* त्तोळ् दिशै मेल् शॆल्ल* मुडियुम् विशुम्बळन्दॆन्बर्* वडि उगिराल् ईर्न्दान्* इरणियनदागम्* इरुञ्जिरै प्पुळ् ऊर्न्दान्* उलगळन्द नान्रु॥१७॥	प्रभु गरूड़ की सवारी करते हैं। आपने अपने तीक्ष्ण पंजों को हिरण्य की छाती में घुसा दिया। कहते हैं जब आप धरा माप रहे थे आपके चरण धरा पर फैल गये भुजायें दिशाओं में छा गयी एवं मुकुट आकाश में छा गया। **2098**

नान्ऱ् मुलैत्तलै नञ्जुण्डु* उरि वॆण्णॆय् तोन्ऱ उण्डान्* वॆन्ऱि शूऴ् कळिट्रै ऊन्ऱि* पॊरुदुडैवु कण्डानुम्* पुळ्ळिन्वाय् कीण्डानुम्* मरुदिडै पोय् मण् अळन्द माल्॥१८॥	धरा को मापने वाले प्रभु ने स्तन का जहर पिया, रस्सी के छींके से लटकते मक्खन खाया, मदमत्त हाथी का सामना कर उसके दांत उखाड़ा, बहुत ही पास के दो मरूदु वृक्षों के बीच से पार किया, एवं दुष्ट पक्षी का चोंच चीरा। आप सागर सा सलोने रंग के हैं। **2099**
माल्लुम् करुङ्गडले !* एन् नोट्राय्* वैयगम् उण्डु आलिन् इलै त्तुयिन्ऱ आऴियान्* कोल करु मेनि* च्चॆङ्गण् माल् कण्वडैयुळ्* एन्ऱुम् तिरुमेनि नी तीण्ड प्पॆट्रु ! ॥१९॥	हे नीले समुद्र ! चक्रधारी प्रभु ने धरा को निगला एवं बट पत्र पर सोये। प्रभु का सुन्दर श्याम शरीर एवं अरूणाभ नयन है। जब प्रभु सोते हैं तो तुम उनके शरीर की रक्षा करते हुये आनंद मनाते हो। कौन सी तपस्या से तुमको यह सौभाग्य मिला ? **2100**
पॆट्रार् तळै कळल* प्पेर्न्दोर् कुऱळ् उरुवाय्* शॆट्रार् पडि कडन्द शॆङ्कण् माल्* नल् तामरै मलर् च्चेवडियै* वानवर् कै कूप्पि* निरै मलर् कॊण्डु* एत्तुवराल् निन्ऱु॥२०॥	संपन्न शंकणमाल अरूणाभ नयन वाले प्रभु ! आपने अपने माता पिता की बेड़ी को हटाया एवं स्वयं शत्रु के कारागार से बाहर निकल कर किसी और के घर में पाले गये। अहा ! आपके चरणारविंद की पूजा फूल से अच्छे स्वर्गिक जन करते हैं। **2101**
निन्ऱु निलमङ्ग* नीर् एट्रु मूवडियाल्* शॆन्ऱु दिशै अळन्द शॆङ्कण् मार्कु* एन्ऱुम् पडै आऴि पुळ् ऊर्दि* पाम्पणैयान् पादम्* अडै आऴि नॆञ्जे ! अऱि॥२१॥	शंकणमाल प्रभु ने मावली के पास जाकर जमीन का दान लिया तथा बढ़कर धरा को मापा। आपका अस्त्र चक्र है सवारी पक्षी है एवं शेष विछावन है। हाय मेरा काला हृदय ! यह जान लो कि प्रभु का चरण अवश्य प्राप्त करना है। **2102**
अऱियुम् उलगॆल्लाम्* यानेयुम् अल्लेन्* पॊरि कॊळ् शिऱै उवणम् ऊर्न्दाय्* वॆरि कमऴुम् काम्पेय् मॆन्दोळि* कडै वॆण्णॆय् उण्डायै* ताम्बे कॊण्डार्त्त तऴुम्बु॥२२॥	केवल मैं ही नहीं सारा जगत जानता है कि गरूड़ की सवारी करने वाले प्रभु ने बांस से सुघड़ बाहों वाली गोपियों के सुगंधित मक्खन खाये एवं रस्सी से बांध दिये गये जिसका चिह्न उदर पर विराजमान है। **2103**
तऴुम्बिरुन्द शार्ङ्ग नाण्* तोय्न्दवामङ्गै* तऴुम्बिरुन्द ताळ् शगडम् शाडि* तऴुम्बिरुन्द पूङ्गोदैयाळ् वॆरुव* प्पॊन् पॆयरोन् मार्बिडन्द* वीङ्गोद वण्णर् विरल्॥२३॥	शारंग धनुष की डोरी से आपकी अंगुली पर निशान बन गये। गाड़ी को ठोकर मारने से आपके पैर पर निशान बन गये। जब आप हिरण्य की छाती चीर रहे थे और लक्ष्मी भी डर गयी थीं उस समय भी आपकी अंगुली पर निशान बन गये । **2104**
विरल्लोडु वाय् तोय्न्द वॆण्णॆय् कण्डु* आय्च्चि उरल्लोडु* उऱ प्पिणित्त ञान्ऱु* कुरल् ओवा– देङ्गि निनैन्दु* अयल्लार् काण इरुन्दिल्लैये* ओङ्गोद वण्णा ! उरै॥२४॥	गहरे सागर सा सलोने प्रभु ! जब आपकी अंगुलियों एवं होठ पर मक्खन के निशान थे तो गोप नारी यशोदा ने आपको ऊखल में बांध दी। उस समय लोग देख रहे थे, क्या आपने रोया एवं चिल्लाया नहीं ? बताओ । **2105**

उरै मेल् कॊण्डु⋆ एन् उळ्ळम् ओवादु⋆ एप्पोदुम् वरै मेल्⋆ मरगदमे पोल⋆ तिरै मेल् किडन्दानै⋆ क्कीण्डानै⋆ केळलाय् प्पूमि इडन्दानै⋆ एत्ति एळुम्॥२५॥	सागर में सोये प्रभु पर्वत पर मणि के समान शोभायमान दिखते हैं। आपने वराह रूप में धरा को उठाया। बिना कोई रूकावट के मैं प्रशस्ति गाते हृदय से आपकी सदा पूजा करूंगा। **2106**
एळुवार् विडैगॊळ्वार्⋆ ईन् तुळायानै⋆ वळुवा वगै निनैन्दु वैगल् तॊळुवार्⋆ विनै च्चुडरै नन्दुविक्कुम्⋆ वेङ्गडमे⋆ वानोर् मन च्चुडरै त्तूण्डुम् मलै॥२६॥	तिरूवेंकटम में पूजा करते हुए जो तुलसी धारी प्रभु का ध्यान करते हैं वे सारे कर्मो के बोझ से मुक्त हो जाते हैं। स्वर्गिकों के हृदय भी पर्वत को देखकर प्रफुल्लित हो उठते हैं। **2107**
मलैयाल् कुडै कवित्तु⋆ मावाय् पिळन्दु⋆ शिलैयाल् मरामरम् एळ् शॆट्रु⋆ कॊलै यानै प्पोर् क्कोडॊशित्तनवुम्⋆ पूङ्गुरुन्दम् शाय्त्तनवुम्⋆ कार् क्कोडु पट्रियान् कै॥२७॥	पर्वत को उलट देने पर वह गायों के लिये छाता हो गया। प्रभु ने केसिन घोड़ा का जबड़ा चीरा, एक बाण से सात पेड़ों को बेधा, मदमत्त हाथी का दांत उखाड़ा एवं कुरून्दु के पेड़ों को नष्ट किया। वेंकटम प्रभु के हाथ में इतनी शक्ति है।**2108**
कैय वलम्बुरियुम् नेमियुम्⋆ कार् वण्ण- त्तैय! मलर् मगळ्⋆ निन् आगत्ताळ्⋆ शॆय्य मऱैयान् निन् उन्दियान्⋆ मा मदिळ् मून्ऱॆय्द⋆ इऱैयान् निन् आगत्तिऱै॥२८॥	मेघ वर्ण के प्रभु आपके हाथ शंख एवं चक्र धारण किये हैं। कमल समान लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर रहती है। आपके नाभिकमल पर ब्रह्मा रहते हैं। वदन के छोटे हिस्से पर त्रिपुर नाशक शिव रहते हैं। **2109**
इऱैयुम् निलनुम्⋆ इरु विशुम्बुम् काट्रुम्⋆ अऱै पुनलुम् शॆन्दीयुम् आवान्⋆ पिऱै मरुप्पिन् पैङ्गण् माल् यानै⋆ पडु तुयरम् कात्तळित्त⋆ शॆङ्गण् माल् कण्डाय् तॆळि॥२९॥	धरा आकाश जल अग्नि एवं वायु के रूप में प्रकट होने वाले शंकणमाल अरूणाभ नयन प्रभु ने आपदाग्रस्त भक्त हाथी को आश्रय दिया। ऐसा जान लो। **2110**
तॆळिदाग⋆ उळ्ळत्तै च्चॆन्निऱी इ⋆ ञान- त्तॆळिदाग⋆ नन्गुणर्वार् शिन्दै⋆ एळिदाग त्ताय् नाडु कन्ऱे पोल्⋆ तण् तुळायान् अडिक्के⋆ पोय् नाडि क्कॊळ्ळुम् पुरिन्दु॥३०॥	हृदय से बुरे विचारों को हटाते हुए स्थिर भक्तिभाव वाले ऋषिगण तुलसी धारी प्रभु के चरणों को वैसे हीं पा जाते हैं जैसे प्रेम से बछड़ा अपनी मां गाय से मिलता है। **2111**
पुरि ऑरु कै पट्रि⋆ ओर् पॊन् आळि एन्दि⋆ अरि उरुवुम् आळ् उरुवुम् आगि⋆ एरि उरुव वण्णत्तान् मार्बिडन्द⋆ माल् अडियै अल्लाल्⋆ मट्रु एण्णत्तान् आमो इमै॥३१॥	प्यारे प्रभु जो एक हाथ में शंख एवं दूसरे में चक्र धारण करते हैं आधे मनुष्य एवं आधे सिंह के रूप में आकर भयानक असुर हिरण्य की छाती चीर डाले। आपके चरण को छोड़कर और कोई नाम लेने लायक चीज ध्येय है क्या ? **2112**

इमैयाद कण्णाल्⋆ इरुळ् अगल नोक्कि⋆ अमैया प्पॊरि पुलन्गाळ्⋆ ऐन्दुम् नमैयामल्⋆ आगत्तणैप्पार्⋆ अणैवरे⋆ आयिर वाय् नागत्तणैयान् नगर्॥३२॥	संदेह मुक्त हो सदा आपका ध्यान करते बाहरी बयार से मन को अलग रख जो प्रभु को अपने हृदय में प्रेम से रखता है वह हजार फनवाले शेष पर शयन करते प्रभु के निवास को प्राप्त कर लेता है। **2113**
नगरम् अरुळ् पुरिन्दु⋆ नान्मुगर्कु पूमेल्⋆ पगर मरै पयन्द पण्बन् पॆयरिनैये⋆ पुन्दियाल् शिन्दियादु⋆ ओदि उरुवॆण्णुम्⋆ अन्दियाल् आम् पयन् अॆङ्गन्॥३३॥	चार मुख वाले ब्रह्मा का निवास उदार प्रभु का नाभि कमल है जहां से वे कृपापूर्वक वेद का रहस्य बताते हैं। बिना प्रेम का प्रभु के नाम का ध्यान कर अगर केवल गिनती में संध्या बंदन कोई करता है तो यह किस काम का होगा ? **2114**
एन् ऑरुवर् मॆय् एन्बर्⋆ एळ् उलगुण्डु⋆ आल् इलैयिल् मुन् ऑरुवन् आय मुगिल् वण्णा⋆ निन् उरुगि प्पेय् ताय् मुलै तन्दाळ्⋆ पेरन्दिललाल्⋆ पेर् अमर् क्कण् आय् ताय्⋆ मुलै तन्द आरु॥३४॥	इस आश्चर्य का रहस्य कैसे कोई समझ सकता है ? मेघवर्ण वाले प्रभु सातों लोक को निगल कर शिशु की भांति सो गये। राक्षसी ने अपना स्तन पिलाया तो मृत्यु को प्राप्त हो गयी जबकि गोप नारी मछली सी खेलती आंखों वाली यशोदा आपके लिये द्रवित हो अपना स्तन आप को पिला कर प्रेम से पालन पोषन किया। **2115**
आरिय अन्पिल्⋆ अडियार् तम् आर्वत्ताल्⋆ कूरिय कुढ्मा क्कॊळ्ळल् नी तेरि⋆ नॆडियोय्! अडि⋆ अडैदर्कन्रे⋆ ईर् ऐन्दु मुडियान् पडैत्त मुरण्॥३५॥	प्रेम एवं भक्ति से जब भक्त कोई भी शब्द बोलता है तो वह आपकी शुद्ध प्रशस्ति हो जाती है। क्या आपके चरण को प्राप्त करने का यह उपाय नहीं है ? दस सिर वाले शत्रु का नाश करने वाले पुराकाल के प्रभु ! **2116**
मुरणै वलि तॊलैदर्काम् अन्रे⋆ मुन्नम् तरणि⋆ तनदागत्ताने⋆ इरणियनै प्पुण् निरन्द वळ् उगिराल्⋆ पॊन् आळि क्कैयाल्⋆ नी मण् इरन्द् कॊण्ड वगै॥३६॥	शक्तिशाली हिरण्य की छाती चीरने वाले चक्रधारी प्रभु ! क्या उसकी बढ़ती शक्ति को रोकने के उद्देश्य से आपने ऐसा नहीं किया कि जो धरा आपकी थी उसी का आपने उपहार लिया ? **2117**
वगै अरु नुण् केळ्वि वाय्वार्गळ्⋆ नाळुम् पुगै विळक्कुम्⋆ पूम् पुनलुम् एन्दि⋆ दिशै दिशैयिन् वेदियर्गळ्⋆ शॆन्रिरैञ्जुम् वेङ्गडमे⋆ वॆण् शङ्गम् ऊदिय वाय्⋆ माल् उगन्द ऊर्॥३७॥	श्वेत शंख बजाने वाले तिरूमल प्रभु का चहेता निवास वेंकटम है। ऊंची मेधा एवं ज्ञान वाले वैदिक ऋषि चारों तरफ से दीपक सुगंधित धूप एवं जल से आपकी पूजा करने के लिये एकत्र होते हैं। **2118**
ऊरुम् वरि अरवम्⋆ ऑण् कुरवर् माल् यानै⋆ पेर एरिन्द पॆरु मणियै⋆ कार् उडैय मिन् एन्रु⋆ पुढ्डैयुम् वेङ्गडमे⋆ मेल् अशुरर् एम् एन्नुम् माल्दिडम्॥३८॥	पूजा हेतु स्वर्गिकजन नीचे आकर कहते हैं 'हमारे प्रभु का निवास'। जंगली हाथी को भगाने के लिये वेंकटम में आदिवासीलोग रत्नमय पत्थर फेंकते हैं जिसे धारीदार सर्पगन चमकती बिजली समझ सरकते हुए छिप जाते हैं। **2119**
इडन्ददु बूमि⋆ एडुत्तदु कुन्रम्⋆ कडन्ददु कञ्जनै मुन् अञ्ज⋆ किडन्ददुम् नीर् ओद मा कडले⋆ निन्रदुवुम् वेङ्गडमे⋆ पेर् ओद वण्णर् पॆरिदु॥३९॥	वेंकटम में प्रभु खड़ा रहते हैं जबकि गहरे सागर में सोये रहते हैं। जो आपने उठाया वही धरा है। पर्वत वही है जिसे आपने ऊपर उठा रखा था। कंस वही है जिस पर आप कूद कर उसका बध कर दिये थे। सच में हमारे प्रभु का गौरव महान है। **2120**

पेरु विल् पगाळि॰ क्कुरवर् कै च्चेन्दी॰ वेंरुवि प्पुनम् तुरन्द वेळम्॰ इरु विशुम्बिल् मीन् वीळ॰ क्कण्डञ्जुम् वेङ्गडमे॰ मेल् अशुरर् कोन् वीळ क्कण्डुगन्दान् कुन्रु॥ ८०॥	आदिवासी जन अपने खेतों से जंगली हाथी को भगाने के लिये धनुष से अग्नि गेंद फेंकते हैं। तब उल्कापात देखकर भी हाथी डर से भाग खड़े होते हैं। हिरण्य असुर का आनंदपूर्वक बध करने वाले प्रभु का निवास वेंकटम पर्वत में है।**2121**
कुन्रनैय कुट्रम् शेयिनुम्॰ गुणम् कोंळ्ळुम्॰ इन्रु मुदलाग एन् नेंञ्जे॰ एन्रुम् पुरन् उरैये आयिनुम्॰ पोंन् आळि क्कैयान्॰ तिरन् उरैये शिन्दित्तिरु॥ ८१॥	तुम्हारे अच्छे कार्यो की ही गिनती होगी एवं पर्वत समान दोष भी भूला दिये जायेंगे। हे मन ! आज से लेकर आगे सदा के लिये चक्रधारी श्रीपति का ध्यान धर एवं यशोगान कर चाहे वह दिखावटी ही क्यों न हो। **2122**
तिरुमगळुम् मण्मगळुम्॰ आय्मगळुम् शेरन्दाल्॰ तिरुमगट्के तीरन्दवारेंन्नोंल्॰ तिरुमगळ् मेल् पाल् ओदम् शिन्द॰ प्पड नागणै क्किडन्द॰ माल् ओद वण्णर् मनम्॥ ८२॥	श्री देवी भू देवी एवं नीला देवी दूध का बौछार करने वाले सागर में आपकी सेवा करती हैं एवं जहां आप फनधारी सर्प पर विश्राम करते हैं। आपका हृदय श्रीदेवी पर लगा रहता है। यह कैसे ? वही अपने हृदय में जानती हैं। **2123**
मन माशु तीरुम्॰ अरु विनैयुम् शारा॰ तनम् आय ताने कै कूडुम्॰ पुन मेय पून् तुळायान् अडिक्के॰ पोदोंडु नीर् एन्दि॰ ताम् तोंळा निर्पार् तमर्॥ ८३॥	जब नूतन तुलसी माला धारी प्रभु की पूजा फूलों एवं ताजे जल से की जाती तब हृदय कचरा एवं पूर्व कर्मों से मुक्त हो जाता है तथा संपन्नता स्वतः आती है। ऐसी भक्तों पर दया है। **2124**
तमर् उगन्ददेंव् उरुवम्॰ अव् उरुवम् ताने॰ तमर् उगन्ददें प्पेर् मट्र प्पेर्॰ तमर् उग- न्देंव् वण्णम् शिन्दित्तु॰ इमैयादिरुप्परे॰ अव् वण्णम् आळियानाम्॥ ८४॥	भक्तगण जिस रूप में प्रेम से प्रभु को देखना चाहते हैं उसमें देखते हैं। आप वही नाम स्वीकार कर लेते हैं जिसमें पुकारा जाता है। आपका वही स्वभाव हो जाता है जिससे प्रेमपूर्वक हृदय में ध्यान किया जाता है। आप चक्रधारी प्रभु हैं। **2125**
आमे अमरर्क्कु॰ अरिय अदु निर्क॰ नामे अरिगिर्पोम् नल् नेंञ्जे॰ पू मेय मा तवत्तोन् ताळ् पणिन्द॰ वाळ् अरक्कन् नीळ् मुडियै॰ पादम् अत्ताल् एण्णिनान् पण्बु॥ ८५॥	प्रभु देवों की सहज पहुंच में हैं लेकिन उससे ज्यादा हमलोगों की पहुंच में भी हैं। राक्षसराज रावण ब्रह्मा का उपासक था परन्तु प्रभु ने शत्रु के सिर अपने पैर के अंगूठों से गिना। हम प्रभु की दया की गिनती कर लें। **2126**
पण् पुरिन्द नान्मरैयोन्॰ शेन्नि प्पलि एट्र॰ वेंण् पुरि नूल् मार्वन् विनै तीर॰ पुण् पुरिन्द आगत्तान्॰ ताळ् पणिवार् कण्डीर्॰ अमरर् तम् बोगत्ताल् बूमि आळ्वार्॥ ८६॥	वेदोच्चार करने वाले ब्रह्मा का गौरवशाली सिर रूद्र का भिक्षा पात्र बन गया।हमारे प्रभु ने अपने हृदय के रस से उसे भर दिया एवं उन्हें शाप से मुक्त कर दिया। जान लो जो प्रभु की पूजा करेगा वह इस संसार पर स्वर्गिकों की तरह राज्य करेगा। **2127**
वारि शुरुक्कि॰ मद क्कळिरैन्दिनैयुम्॰ शेरि तिरियामल् शेन्निरी इ॰ कूरिय मेय्ञ्ञानत्ताल्॰ उणर्वार् काण्बरे॰ मेल् ओरुनाळ् कैन् नागम् कात्तान् कळल्॥ ८७॥	आपदाग्रस्त स्वगिर्क हाथी का पुरा काल में प्रभु ने रक्षा की। जो अपने पांच इन्द्रियों रूपी हाथियों को नियंत्रण में रखते हुए प्रभु पर स्थिर मन से चित्त लगाते हैं वे अवश्य श्रीचरणों का दर्शन करते हैं। **2128**

कळल् ऑन्रॆडुत्तु⋆ ऑरु कै शुट्रि ओर् कैमेल्⋆ शुळल्लुम् शुराशुर्गळ् अञ्ज⋆ अळल्लुम् शॆरुवाळि एन्दिनान्⋆ शेवडिक्के शॆल्ल⋆ मरुवाळि नॆञ्जे ! मगिळ्॥ ४८॥	आपने एक पैर से नमुची को फेंकेत हुए एक हाथ से उसे हवा में घुमा दिया एवं दूसरे हाथ से चक्र चलाया जिसे देखकर देव दानव भयग्रस्त हो गये। हे मन ! श्रीचरणों को प्राप्त करने की ईच्छा रखो एवं आनंद मनाओ। **2129**
मगिळ् अलगॊन्रे पोल्⋆ मारुम् पल् याक्कै⋆ नॆगिळ मुयल्गिर्पार्क्कल्लाल्⋆ मुगिल् विरिन्द जोदि पोल् तोन्रुम्⋆ शुडर् पॊन् नॆडु मुडि⋆ एम् आदि काण्बारक्कुम् अरिदु॥ ४९॥	आदिनाथ को देखने का आनंद जिनके ज्योर्तिमय किरीट का प्रकाश चतुर्दिक फैला रहता है उसी को मिलेगा जो इस शरीर से प्रयत्न कर माला में घूमते चक्रीय आवृति वाले मगिळ के दाना की तरह जन्म की आवृति से मुक्ति पाना चाहता है। दूसरों के लिये यह अति कठिन है। **2130**
अरिय पुलन् ऐन्दडक्कि⋆ आय् मलर् कॊण्डु⋆ आर्वम् पुरिय प्परिशिनाल् पुल्गिल्⋆ पॆरियनाय् माट्रादु⋆ वीट्रिरुन्द मावलिपाल्⋆ वण् कै नीर् एट्रानै क्काण्बॆदॆळिदु॥ ५०॥	चुने हुए नूतन पुष्प को प्रेम से फैलाने वाला ही मावली से धरा पाने वाले प्रभु के चरणों का सुलभता से दर्शन कर सकता है। **2131**
एळिदिल् इरण्डडियुम्⋆ काण्बदर्कु⋆ एन् उळ्ळम् तॆळिय तॆळिन्दॊळियुम् शॆव्वे⋆ कळियिल् पॊरुन्दादवनै⋆ प्पॊरल् उट्रु⋆ अरियाय् इरुन्दान् तिरुनामम् एण्॥ ५१॥	हे मन ! प्रभु अपने चरणों का आसानी से दर्शन देंगे। जिक्की हिरण्य का नाश करने के लिये प्रभु नरसिंह बनकर आये। आठ अक्षर वाले मंत्र से प्रभु का ध्यान कर। **2132**
एण्मर् पदिनॊरुवर्⋆ ईर् अरुवर् ओर् इरुवर्⋆ वण्ण मलर् एन्दि वैगल्लुम्⋆ नण्णि ऑरु मालैयाल् परवि⋆ ओवादु⋆ एप्पोदुम् तिरुमालै क्कै तॊळुवर् शॆन्रु॥ ५२॥	आठ वसु ग्यारह रूद्र बारह आदित्य एवं दो अश्विनी कुमार प्रति दिन नूतन पुष्प के साथ तिरूमल प्रभु की प्रशस्ति गाते हुए करबद्ध हो पूजा अर्पित करते हैं। **2133**
शॆन्राल् कुडैयाम्⋆ इरुन्दाल् शिङ्गाशनमाम्⋆ निन्राल् मरवडियाम् नीळ् कडलुळ्⋆ एन्रुम् पुणैयाम् मणि विळक्काम्⋆ पूम् पट्टाम् पुल्गुम् अणैयाम्⋆ तिरुमार्करवु॥ ५३॥	तिरूमल प्रभु के पास एक नाग है। जब आप चलते हैं तो वह छत्र बन जाता है। जब आप बैठते हैं तो वह सुन्दर सिंहासन बन जाता है। जब आप खड़ा होते हैं तो वह पादुका बन जाता है। जब गहरे सागर में शयन करते हैं तो वह सुकोमल शय्या एवं बांह को सुखपूर्वक टिकने का आधार प्रदान करता तथा उसकी आंखें ज्योति प्रदान करती हैं। **2134**
अरवम् अडल् वेळम्⋆ आन् कुरुन्दम् पुळ् वाय्⋆ कुरवै कुडम् मुलै मल् कुन्रम्⋆ करविन्रि विट्टिरुत्तु मेय्त्तॊशित्तु⋆ क्कीण्डु कोत्ताडि⋆ उण्- डट्टॆडुत्त शॆङ्गण् अवन्॥ ५४॥	विभिन्न कार्यकलापों से प्रभु प्रकट होते रहे हैं। कालिय नाग को भगाया, कुवलयापीड का बध किया, गायों पर दया की, कुरून्दु वृक्षों को तोड़ा, पक्षी का चोंच चीरा, गापियों के साथ कुरूवै नृत्य किया, खाली दही पात्रों के साथ अंग की कुशलता का प्रदर्शन किया, जहरीले स्तन का पान किया, हत्यारों से मल्लयुद्ध किया, एवं पर्वत को ऊपर उठाया। आप हमारे शंकनमाल प्रभु हैं। **2135**

अवन् तमर्⋆ एव् विनैयर् आगिलुम्⋆ एम् कोन् अवन् तमरे⋆ एन्रॊळिवदल्लाल्⋆ नमन् तमराल् आराय प्पट्टु⋆ अऱियार् कण्डीर्⋆ अरवणै मेल् पेर् आयर्कोट् पट्टार् पेर्॥५५॥	विदित हो कि यमदूत यह कहते हुए चले जाते हैं 'प्रभु के भक्तों के कर्मो का कुछ भी लेखा हो ये हमारे नाथ के दास हैं'। जो महान शेष पर शयन करने वाले गोपकुमार के भक्त हो जाते हैं उनकी इस तरह की प्रसिद्धि हो जाती है। **2136**
पेरे वर प्पिदट्रल्⋆ अल्लाल् एम् पॆम्मानै⋆ आरे अऱिवार् अदु निर्क⋆ नेरे कडि क्कमलत्तुळ् इरुन्दुम्⋆ काण्गिलान्⋆ कण्णन् अडि क्कमलम् तन्नै अयन्॥५६॥	बार बार प्रभु का नाम जपने से ही प्रभु के बारे में जानकारी मिलती है। दूसरा उपाय कोई जानता है क्या ? जानता होगा परन्तु कृष्ण के नाभि कमल पर बैठने वाले ब्रह्मा भी प्रभु का चरणारविंद नहीं देख सकते। **2137**
अयल् निन्ऱ वल् विनैयै⋆ अञ्जिनेन् अञ्जि⋆ उय निन् तिरुवडिये शेर्वान्⋆ नयनिन्ऱ नन् मालै कॊण्डु⋆ नमो नारणा एन्नुम्⋆ शॊन् मालै कट्रेन् तॊळुदु॥५७॥	प्रभु मैं आपके चरणारविंद को ही प्राप्त करना चाहता हूं। पूर्व के कर्मो के भय से ही बचनिलने का यह उपाय मैंने सोचा है। गीत की माला से ही हमने 'नमो नारायणा' सीखा। **2138**
तॊळुदु मलर् कॊण्डु⋆ तूपम् कै एन्दि⋆ एळुदुम् एळु वाळि नॆञ्जे⋆ पळुदिन्ऱि मन्दिरङ्गळ् कर्पनवुम्⋆ माल् अडिये कै तॊळुवान्⋆ अन्दरम् ऑन्ऱिल्लै अडै॥५८॥	रे मन ! चुने हुए नूतन पुष्प एवं सुगंधित धूप से पूजा करके ही उठो जागो एवं सफलता पाओ। सीखे हुए सभी शुद्ध मंत्र पूज्य प्रभु की पूजा के लिये हैं। प्राप्त करो आलस मत करो। **2139**
अडैन्द अरु विनैयोडु⋆ अल्लल् नोय् पावम्⋆ मिडैन्दवै मीण्डॊळिय वेण्डिल्⋆ नुडङ्गिडैयै मुन् इलङ्गै वैत्तान्⋆ मुरण् अळिय⋆ मुन् ऑरु नाळ् तन् विल् अङ्गै वैत्तान् शरण्॥५९॥	पुरा काल में लंका के राजा पर सीता का हरण करने के लिये धुनष का प्रयोग करने वाले प्रभु हमारे आश्रय हैं आपको प्राप्त करो। अगर तुम चाहते हो कि पूर्व के कर्म दुख एवं व्याधि सदा के लिये नष्ट हो जायें। **2140**
शरणा मऱै पयन्द⋆ तामरैयानोडु⋆ मरण् आय मन् उयिर्गट्कॆल्लाम्⋆ अरणाय पेर् आळि कॊण्ड⋆ पिरान् अन्ऱि मट्ऱियादु⋆ ओर् आळि शूळ्न्द उलगु॥६०॥	नाभिकमल पर बैठे वैदिक स्वामी से लेकर अंतिम प्राणी तक सबों के एक मात्र आश्रय आप ही हैं। दूसरा कोई नहीं है जिसे सागर से घिरी पृथ्वी के लोग जानते हैं। **2141**
उलगुम्⋆ उलगिऱन्द ऊळियुम्⋆ ऑण् केळ् विल्गु करुङ्गडलुम् वॆर्पुम्⋆ उलगिनिल् शॆन् तीयुम्⋆ मारुदमुम् वानुम्⋆ तिरुमाल् तन् पुन्दियिल् आय पुणर्प्पु॥६१॥	सागर से घिरी धरा, प्रलय कालीन बाढ़ के बाद का समय, सुन्दर गहरा सागर, पर्वत, हवा, पेड़ एवं आकाश सभी तिरूमल एवं श्री दंपति की ईच्छा से निर्मित हैं। **2142**
पुणर् मरुदिन् ऊडु पोय्⋆ प्पूङ्गुरुन्दम् शाय्त्तु⋆ मणम् अरुव माल् विडै एळ् शॆट्रु⋆ कणम् वॆरुव एळ् उलगुम् तायिनवुम्⋆ एण् दिशैयुम् पोयिनवुम्⋆ शूळ् अरव प्पॊङ्गणैयान् तोळ्॥६२॥	युगल मरूदु का नष्ट होना, फूल खिलते कुरन्दु पेड़ का गिरना, नप्पिनाय से विवाह के लिये सात वृषभों उन भुजाओं से का मारा जाना जो जब आप सातों जगत को माप रहे थे वे सभी दिशाओं में छाये थे एवं देव दानव कांप रहे थे। आप कुण्डली मारे शेष पर

	शयन करते हैं। **2143**
तोळ् अवनै अल्लाल् तॊळा⋆ एन् शॆवि इरण्डुम्⋆ केळ् अवनदिन् मॊळियै केट्टिरुक्कुम्⋆ ना नाळुम् कोळ् नागणैयान्⋆ कुरै कळले कूरुवदे⋆ नाणामै नळ्ळेन् नयम्॥६३॥	शेषशयन किये श्रीचरण ही केवल हमारे जीभ से प्रशंसनीय हैं। हमारे हाथ किसी और की पूजा नहीं करेंगे एवं हमारे दोनों कान आपकी गाथा सुनने को लालायित हैं। सुख की जिन्दगी अब मैं कभी नहीं चाहता। **2144**
नयवेन् पिरर् पॊरुळै⋆ नळ्ळेन् कीळारोडु उयवेन् उयरन्दवरोडल्लाल्⋆ वियवेन् तिरुमालै अल्लदु⋆ दॆय्वम् एन्रेत्तेन्⋆ वरुम् आरॆन् एन्मेल् विनै॥६४॥	नीच की संगति छोड़ कर अब मैं ऊच्च जनों के साथ रहूंगा। दूसरे के धन की कभी चाह नहीं रखूंगा एवं तिरूमल को छोड़कर दूसरे देव की प्रशंसा नहीं करूगा। मैं दृढ हूं। कर्मो का संचय कैसे होगा ? **2145**
विनैयाल् अडर्प्पडार्⋆ वॆन् नरगिल् शेरार्⋆ तिनैयेनुम् तीक्कदिक्कण् शॆल्लार्⋆ निनैदर्- करियानै⋆ च्चेयानै⋆ आयिरम् पेर् च्चॆङ्गण् करियानै⋆ क्कै तॊळुद क्काल्॥६५॥	कर्मो का संचय नहीं होगा, नरक गंतव्य स्थल नहीं होगा, कभी थोड़ी भी पीड़ा नहीं होगी, जो करबद्ध हो दूरवासी श्याम रंग एवं कमलनयन प्रभु की पूजा करेंगे।आप संसार की समझ के परे हैं। **2146**
कालै एळुन्दु⋆ उलगम् कर्पनवुम्⋆ कट्टुणरन्द मेलै त्तलै मरैयोर्⋆ वेट्पनवुम्⋆ वेलैक्कण् ओर् आळियान् अडियै⋆ ओदुवदुम् ओर्प्पनवुम्⋆ पेर् आळि कॊण्डान् पॆयर्॥६६॥	सारा संसार प्रातः काल जागकर चक्रधारी प्रभु का स्मरण करता है। विद्वान एवं बुद्धिमान ऊंची मेधा के वैदिक ऋषिगन सागर में शयन करने वाले प्रभु के नाम लेने की चाहत रखते हैं, उसकी चर्चा करते हैं एवं जाप करते हैं। **2147**
पॆयरुम् करुङ्गडले नोक्कुमारु⋆ ऑण् पू उयरुम्⋆ कदिरवने नोक्कुम्⋆ उयिरुम् तरुमनैये नोक्कुम्⋆ ऑण् तामरैयाळ् केळ्वन्⋆ ऒरुवनैये नोक्कुम् उणर्वु॥६७॥	सारी नदियों की दौड़ का सागर ही अंतिम लक्ष्य है। कमल प्रस्फुटित होकर उदयकालीन सूर्य की ओर घूमा रहता है। सारे जीवित प्राणी मृत्यु के देवता के पास गिरते हैं। कमल वाली लक्ष्मी के नाथ ही साक्षात्कार के एक मात्र लक्ष्य हैं। **2148**
उणर्वार् आर् उन् पॆरुमै⋆ ऊळि तोरुळि⋆ उणर्वार् आर् उन् उरुवम् तन्नै⋆ उणर्वार् आर् विण्णगत्ताय्!⋆ मण्णगत्ताय्!⋆ वेङ्गडत्ताय्!⋆ नाल्वेद प्पण्णगत्ताय्!⋆ नी किडन्द पाल्॥६८॥	कौन आपके गौरव का अनुभव करता है ? हे आकाश, धरा, वेंकटम एवं चारों वेद की ऋचाओं के प्रभु ! कौन आपके स्वरूप को समझ पाता है ? कौन यह जान पाता है कि युग युगादि में आप कहां विश्राम करते हैं ? **2149**
पालन् तनदुरुवाय्⋆ एळ् उलगुण्डु⋆ आल् इलैयिन् मेल् अन्रु नी वळरन्द मॆय् एन्बर्⋆ आल् अन्रु वेलै नीर् उळ्ळदो⋆ विण्णदो मण्णदो⋆ शोलै शूळ् कुन्रॆडुत्ताय् शॊल्लु॥६९॥	पुरा काल में आपने शिशु के रूप में सातों लोक को निगल लिया एवं एक तैरते बट पत्र पर सो गये। अगर यह सच है तो बट वृक्ष कहां था प्रलय सागर में या आकाश में या धरा पर ? हरे भरे पर्वत उठाने वाले प्रभु बोलिये न, विनती है। **2150**

शॅाल्लुम् तनैयुम्⋆ तॅाळुमिन् विळुम् उडम्बु⋆ शॅल्लुम् तनैयुम् तिरुमाल्लै⋆ नल् इदळ् त्तामत्ताल् वेळ्वियाल्⋆ तन्दिरत्ताल् मन्दिरत्ताल्⋆ नामत्ताल् एत्तुदिरेल् नन्रु॥७०॥	जब मुंह में बाणी रहे, शरीर काम करे, नूतन फूल माला से, यज्ञ से, तंत्र एवं मंत्र से तिरूमल प्रभु की पूजा कीजिये। हे मन अगर प्रभु के नाम का गान कर प्रशस्ति कर सको तो तेरा काम अच्छे तरीके से हो गया। **2151**
नन्रु पिणि मूप्पु⋆ क्कैयगट्रि नान्गूळि⋆ निन्रु निलम् मुळुदुम् आण्डालुम्⋆ एन्रुम् विडल् आळि नॆञ्जमे !⋆ वेण्डिनेन् कण्डाय्⋆ अडल् आळि कॅाण्डान् माट्टन्बु॥७१॥	हे मन ! विनती है, ध्यान दे। व्याधि एवं क्षीणता से मुक्त अगर तुझे चार युगों तक धरा का शासन करना पड़े तब भी चक्रधारी प्रभु के प्रेम को न भूल। **2152**
अन्बाळियानै⋆ अणुगेन्नुम् ना अवन् तन्⋆ पण्बाळि त्तोळ् परवि एत्तेन्नुम्⋆ मुन्बूळि काणानै⋆ क्काण् एन्नुम् कण् शॆवि केळ् एन्नुम्⋆ पूण् आरम् पूण्डान् पुगळ्॥७२॥	मेरा मन कहता है 'चक्रधारी प्रभु हमारे प्रेम हैं उनके पास जाओ।' मरी जीभ कहती है 'आपके सुन्दर एवं शक्तिशाली भुजाओं की प्रशंसा करो एवं पूजा अर्पित करो।' मेरी आंखें कहती हैं 'प्रभु को देखो जिन्होंने पूर्व के कर्मो को विखरा दिया।' हमारे कान कहते हैं 'गले का हार एवं माला वाले प्रभु की प्रशस्ति सुनो।' **2153**
पुगळ्वाय् पळिप्पाय्⋆ नी पून् तुळायानै⋆ इगळ्वाय् करुदुवाय् नॆञ्जे⋆ तिगळ् नीर् कडलुम् मलैयुम्⋆ इरु विशुम्बुम् काट्रुम्⋆ उडलुम् उयिरुम् एट्रान्॥७३॥	हे मन ! प्रशंसा करो या दोष लगाओ, आदर करो या निरादर करो, प्रभु को सब स्वीकार है। क्या प्रभु महान सागर, पर्वतों, मैदानी क्षेत्र, वायु, शरीर एवं जीवन, सभी अपने भीतर नहीं रखते ? आप शीतल तुलसी की माला पहनते हैं। **2154**
एट्रान् पुळ् ऊरन्दान्⋆ एयिल् एरित्तान् मार्विडन्दान्⋆ नीट्रान् निळल् मणि वण्णत्तान्⋆ कूट्रॅारुपाल् मङ्गैयान्⋆ पूमगळान् वार् शडैयान्⋆ नीळ् मुडियान् गङ्गैयान्⋆ नीळ् कळलान् काप्पु॥७४॥	गरूड़ प्रभु की सवारी है, आप ने हिरण्य की छाती चीर डाली, आप श्यामल वर्ण के हैं, एवं कमल वाली लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर रखते हैं। आपके ऊंचे मुकुट हैं। आपने जब चरण ऊंचा उठाया तो ब्रह्मा ने उसे धोया। आप ने शिव की रक्षा की जो वृषभ की सवारी करते हैं, तीन पुरियों के विध्वंसक हैं, जटा धारी हैं, भस्म लगाते हैं, आधे नारी शरीर के हैं, एवं गंगा के प्रवाह को अपने शिर पर लेने वाले हैं। **2155**
काप्पुन्नै उन्न⋆ क्कळियुम् अरु विनैगळ्⋆ आप्पुन्नै उन्न अविळ्न्दॅाळियुम्⋆ मूप्पुन्नै च्चिन्दिप्पार्क्कु⋆ इल्लै तिरुमाले⋆ निन् अडियै वन्दिप्पार्⋆ काण्बर् वळि॥७५॥	सिर जो प्रभु के चरणों पर झुकेगा उसे उपाय सुलभ होगा। हे तिरूमल प्रभु ! जो आपकी संरक्षण में रहेगा उसके कर्मो का क्षय हो जायेगा। जो आपको खोजता है उसके बंधन हट जाते हैं। जो आपका स्मरण करता है उसको वृद्धावस्था का डर नहीं होता। **2156**
वळि निन्रु⋆ निन्नै त्तॅाळुवार्⋆ वळुवा मॅाळि निन्र मूर्त्तियरे आवर्⋆ पळुदॅान्रुम् वाराद वण्णमे⋆ विण् कॅाडुक्कुम्⋆ मण् अळन्द शीरान् तिरुवेङ्गडम्॥७६॥	युगकालीन वेद बताते हैं कि जो आपको सम्यक तरीके से पूजा करता है उसे पूर्ण आत्म ज्ञान मिल जाता है। हे प्रभु वेंकटम ! धरा मापने वाले प्रभु के प्रति प्रेम सर्वस्व वैकुंठ को प्राप्त कराता है। **2157**

वेङ्गडमुम्* विण्णगरुम् वॆग्कावुम्* अग्काद पूङ्गिडङ्गिन् नीळ् कोवल् पॊन् नगरुम्* नान्गिडत्तुम् निन्रान् इरुन्दान्* किडन्दान् नडन्दाने* एन्राल् कॆडुमाम् इडर्॥७७॥	वेंकटम में आप खड़े हैं, गौरवशाली आकाश यानी वैकुण्ठ में आप बैठे हैं, वेग्का में आप शयनावस्था में हैं, हरेभरे नगर कोवलूर में आप चरण उठाये हैं।इतना ही कहने से हमारे कष्ट मिट जायेंगे। **2158**
इडर् आर् पडुवार्* एळु नॆञ्जे* वेळम् तॊडर् वान् कॊडु मुदलै शूळन्द* पडम् उडैय पैन् नाग प्पळ्ळियान्* पादमे कै तॊळुदुम्* कॊय्न् नाग प्पूम् पोदु कॊण्डु॥७८॥	कौन कष्ट में रहना चाहता है ? हे मन ! उठो। हजार फन वाले शेष पर सोने वाले प्रभु ग्राह के जबड़े में पड़े हाथी की रक्षा मे आ गये। नूतन पुन्नै के फूलों से प्रभु के चरणों की पूजा करो। **2159**
कॊण्डानै अल्लाल्* कॊडुत्तारै यार् पळिप्पार्* मण् ता एन इरन्दु मावलियै* ऒण् तारै नीर् अङ्ग तोय* निमिर्न्दिलैये* नीळ् विशुम्बिल् आरम् कै तोय अडुत्तु॥७९॥	जब मावली से जमीन मांगने पर आपने वदन का विस्तार कर चरण को बढ़ाया तो आभूषण वाले हाथ दिशाओं में फैल गये।उपहार पाने वाले पर सभी ने दोष मढ़े परंतु देनवाले को किसी न कोई दोष न लगाया। **2160**
अडुत्त कडुम् पगैञरक्कु* आट्रेन् एन्रोडि* पडुत्त पॆरुम् पाळि शूळन्द* विडत्तरवै* वल्लाळन् कै क्कॊडुत्त* मा मेनि मायवनुक्कु* अल्लादुम् आवरो आळ्॥८०॥	जब आश्रय मांगते सुमुख नाग आपकी शय्या से चिपक गया था तो सुरक्षा की प्रतिज्ञा करते हुये विशाल हृदयवाले प्रभु ने उसे उसके परम शत्रु गरूड़ को दे दिया। यह जानकर अपने आश्चर्यमय प्रभु को छोड़कर क्या कोई अन्य देवता की पूजा करने जायेगा ? **2161**
आळ् अमर् वॆन्रि* अडु कळत्तुळ् अञ्जान्रु* वाळ् अमर् वेण्डि वरै नट्टु* नीळ् अरवै च्चुट्रि क्कडैन्दान्* पॆयर् अन्रे* तॊल् नरगै प्पट्रि क्कडत्तुम् पडै॥८१॥	पुरा काल में आश्चर्यमय प्रभु विजय की ईच्छा से रणक्षेत्र में गये। आपने पर्वत को स्थिर कर लंबी रस्सी से सागर का मंथन किया। नरक के लंबे रास्ते से मुक्ति के लिये आपका नाम का जप ही एक सहारा है। **2162**
पडै आरुम् वाळ् कण्णार्* पारशि नाळ्* पैम् पून् तॊडैयल्लोडेन्दिय दूपम्* इडै इडैयिल् मीन् माय* माशूणुम् वेङ्गडमे* मेल् ऒरु नाळ् मान् माय* एय्दान् वरै॥८२॥	मुक्ति का साधन वेंकटम है जहां तारे बादलों से लुका छिपी खेलते रहते हैं। वेल जैसी आंखों वाली सन्दर नारियां हाथ में सुगंधित धूप एवं फूल लेकर पुरा काल में हिरण का बध करने वाले प्रभु की पूजा के लिये द्वादशी को प्रतीक्षा करती हैं जो वेंकटम में रहते हैं। **2163**
वरै कुडै तोळ् काम्बाग* आनिरै कात्तु* आयर् निरै विडै एळ्* शॆट्र ऒरॆन्ने* उरवुडैय नीर् आळिउळ् किडन्दु* नेर् आम् निशाशरर् मेल्* पेर् आळि कॊण्ड पिरान्॥८३॥	जब प्रभु ने गायों की रक्षा की तो पर्वत छाता बन गया एवं आपकी भुजा छाते का डंडा। ओह ! आपने कैसे द्वंद में सात वृषभों का अंत किया ! गहरे सागर में शयन करने वाले युद्धरत असुरों पर चक्र चलाने वाले प्रभु सबों के नाथ हैं। **2164**
पिरान् ! उन् पॆरुमै* पिरर् आर् अरिवार्* उरा अ उलगळन्द ञान्रु* वराग- त्तॆयिट्रळवु* पोदा वारॆन् कॊल्लो* एन्दै अडिक्कळवु पोन्द पडि॥८४॥	आपको मापने के लिये धरा कितनी बड़ी थी ! जब आप वराह के रूप में आये तो यह आपके दांतो के बीच में कितनी छोटी थी कि आ गयी ? सबो के नाथ, मेरे जनक ! कौन आपके गौरव को पूर्णतया समझ सकता है ? **2165**

पडि कण्डरिदिये॰ पाम्बणैयिनान्॰ पु- ळ्ळॊडि कण्डरिदिये कूराय्॰ वडिविल् पॊरि ऐन्दुम् उळ् अडक्कि॰ प्पोदॊडु नीर् एन्दि॰ नॆरि निन्र नॆञ्जमे ! नी ॥८५॥	शेषशायी प्रभु का स्वरूप गौरवशाली है, हे मन ! क्या तुम देख सकते हो ? बताओ, गरूड़ ध्वज को देख सकते हो क्या ? इन्द्रियों को शमन करते हुए, स्थिर मन से शुद्ध जल एवं फूल से तूने प्रभु की पूजा की है। **2166**
नीयुम् तिरुमगळुम् निन्रायाल्॰ कुन्रॆडुत्तु प्पायुम्॰ पनि मरैत्त पण्बाळा॰ वायिल् कडै कळिया उळ् पुगा॰ क्कामर् पूङ्गोवल्॰ इडै कळिये पट्रि इनि ॥८६॥	पर्वत उठाकर वर्षा बन्द करने वाले उदार प्रभु ! सुन्दर बागों से घिरे कोवल नगर में एक घर के ड्योढ़ी में आप कमल वाली लक्ष्मी के साथ आकर हमलोगों पर दया दिखाये। न भीतर, न बाहर, क्या आश्चर्य ! **2167**
इनि यार् पुगुवार्॰ एळु नरग वाशल्॰ मुनियादु मूरि त्ताळ् कोमिन्॰ कनि शाय कन्रॆरिन्द तोळान्॰ कनै कळले काण्बदर्कु॰ नन्गारिन्द नावलम् शूळ् नाडु ॥८७॥	बछड़ा को फेंककर फलों को गिराने वाले आश्चर्यमय प्रभु ने अपने रूनझुन आवाज वाले चरणाविंद का दर्शन दिया। यह जंबु द्वीप आपको ठीक से जानता है। अब नरक के द्वार पर कोई नहीं जायेगा। यमदूतगन ! बिना क्रोध किये अच्छा है ताला लगाकर (नरक पर) चले जाओ। **2168**
नाडिलुम्॰ निन् अडिये नाडुवन्॰ नाळ्दोरुम् पाडिलुम्॰ निन् पुगळे पाडुवन्॰ शूडिलुम् पॊन् आळि एन्दिनान्॰ पॊन् अडिये शूडुवेर्कु॰ एन् आगिल् एन्ने एनक्कु ॥८८॥	सब कुछ छोड़कर मैं हर दिन आपके चरण की पूजा करता हूं। गाता हूं तो केवल आपकी प्रशस्ति। आपके दिव्य चरण का ही फूल धारण करता हूं। चक्रधारी प्रभु ! इसका कहां कोई अर्थ है कि मुझे क्या होगा ? **2169**
एनक्कावार्॰ आर् ऒरुवरे॰ एम् पॆरुमान् तनक्कावान्॰ ताने मट्रल्लाल्॰ पुन क्कायाम् पू मेनि काण॰ प्पॊदि अविळुम् पूवै प्पू॰ मा मेनि काट्टुम् वरम् ॥८९॥	मेरा कौन मित्र है केवल प्रभु को छोड़कर। आप अपने आप में अपनी बराबरी हैं आपसे बढकर कहां कोई है। खिलते हुए पुवै एवं कया फूल आपके श्याम स्वरूप का स्मरण कराते हैं। **2170**
वरत्ताल् वलि निनैन्दु॰ मादव ! निन् पादम्॰ शिरत्ताल् वणङ्गानाम् एन्रे॰ उरत्तिनाल् ईर् अरियाय्॰ नेर् वलियोन् आय इरणियनै॰ ओर् अरियाय् नी इडन्ददून् ॥९०॥	सिंह जैसा स्वरूप कूदकर आया एवं बलशाली हिरण्य की मजबूत छाती को तीक्ष्ण नखों से चीर गया। माधव ! क्या उसे अपने तप का अभिमान नहीं था क्या क्योंकि उसने कभी भी आपके चरणों में अपना सिर नहीं नवाया। **2171**
ऊन क्कुरम्बैयिन्॰ उळ् पुक्किरुळ् नीक्कि॰ ञान च्चुडर् कॊळी इ नाळ्दोरुम्॰ एन- त्तुरुवा उलगिडन्द॰ ऊळियान् पादम्॰ मरुवादार्क्कुण्डामो वान् ॥९१॥	धरा को उठाने वाले आदि वराह के चरण इस मांस के शरीर के पर्णकुटीर के भीतर हृदय की ज्योति हैं जो ज्ञान से अंधकार को दूर करते हैं।जो नित्य आप पर ध्यान नहीं करते उनकी मुक्ति कहां ? **2172**
वानागि त्तीयाय्॰ मरि कडल्याय् मारुदमाय्॰ तेनागि प्पाल्लाम् तिरुमाले॰ आन् आय्च्चि वॆण्णॆय् विळुङ्ग॰ निरैयुमे॰ मुन् ऒरु नाळ् मण्णै उमिळन्द वयिरु ॥९२॥	मुक्तिदायी प्रभु तिरूमल ! आप आकाश वायु अग्नि सागर दूध एवं मधु हैं। पुरा काल में धरा को जो आपने खाया था उसका वमन कर दिया। क्या गोप नारियों के मक्खन आपके दिव्य उदर की पूर्ति के लिये पर्याप्त थे ? **2173**

वयिऱळल वाळ् उरुवि* वन्दानै अञ्ज* एयिऱिलग वाय् मडुत्तदॆन् नी* पॊऱि उगिराल् पू वडियै ईडळित्त* पॊन् आळि क्कैया* निन् शेवडि मेल् ईडळिय च्चॆट्टु॥९३॥	पेट में क्रोध की ज्वाला लिये बलशाली हिरण्य हाथ में तलवार के साथ आया। फूल की तरह हाथ एवं दिव्य चक्रवाले प्रभु ! आपने उसे अपने गोद में रखकर अपने पंजो को उसमें घुसा दिया एवं अपने मुंह को उसके खून में डूबोकर अपने तीक्ष्ण उज्ज्वल दांतों के भयावनी दृश्य को दिखाया। आपकी आंखें अग्नि की तरह क्यों चमक रहीं थीं ? **2174**
शॆट्ऴुन्दु ती विळित्तु* च्चॆन्ऱ इन्द एऴुलगुम्* मट्टिवै आ एन्ऱु वाय् अङ्गान्दु* मुट्टुम् मऱैयवर्कु क्काट्टिय* मायवनै अल्लाल्* इऱैयेनुम् एत्तादॆन्ना॥९४॥	जलती आंखों के साथ आपने सब का नाश कर दिया। वैदिक ऋषि मार्कण्डेय को तब आप ने अपने पेट में सबकुछ दिखा दिया। आश्चर्य मय प्रभु ! मेरी जिह्वा से प्रशस्ति के शब्द आपके अतिरिक्त किसी और के लिये नहीं निकलते। **2175**
ना वायिल् उण्डे* नमो नारणा एन्ऱु* ओवादुरैक्कुम् उरै उण्डे* मूवाद मा क्कदिक्कण् शॆल्लुम्* वगै उण्डे* एन् ऒरुवर् ती क्कदिक्कण् शॆल्लुम् तिऱम्॥९५॥	जब हर मुंह में जीभ है, जब नमो नारायण मंत्र जपने के लिये सुलभ है, जब इन्द्रियों से बचने के आसान रास्ते हैं, आश्चर्य है कैसे कोई दुःख के गर्त में गिर सकता है ? **2176**
तिऱम्बादॆन् नॆञ्जमे !* शॆङ्गण् माल् कण्डाय्* अऱम् पावम् एन्ऱिरण्डुम् आवान्* पुऱम् तान् इम् मण् तान्* मऱि कडल् तान् मारुदन् तान्* वान् ताने कण्डाय्* कडैक्कण् पिडि॥९६॥	अच्छे एवं बुरे दोनों प्रभु से व्यक्त हैं।आप सागर हैं, आप आकाश हैं, आप वायु हैं, आपही व्योम हैं । हे मन ! इसलिये समझ लो, आपकी पूजा अंत तक करो। **2177**
पिडि शेर् कळिऱळित्त पेराळा* उन्ऱन् अडि शेर्न्दरुळ् पॆट्राळ् अन्ऱे* पॊडि शेर् अनर्कङ्ग एट्रान्* अविर् शडैमेल् पायन्द* पुनल् गङ्गै एन्नुम् पेर् प्पॊन्॥९७॥	आपदाग्रस्त हाथी की रक्षा करने वाले विशाल हृदय के प्रभु ! भस्म लगाये अग्निधारी शिव अपनी जटाओं से गंगा को निकालते हैं। क्या आपने उसे अपने दिव्य चरण से स्पर्श कर आपने शुद्ध नहीं किया ? **2178**
पॊन् तिगऴुमेनि* प्पुरि शडै अम् पुण्णियनुम्* निन्ऱुलगम् ताय नॆडुमालुम्* एन्ऱुम् इरुवर् अङ्गत्ताल्* तिरिवरेलुम्* ऒरुवन् ऒरुवन् अङ्गत्तॆन्ऱुम् उळन्॥९८॥	दिव्य सुनहले वर्ण के प्रभु दो स्वरूपों में घूमते हैं, जटाधारी शिव एवं धरा मापने वाले नेडुमल। देखो, तब भी एक दूसरे के भीतर समाहित हैं। **2179**
उळन् कण्डाय् नल् नॆञ्जे !* उत्तमन् एन्ऱुम् उळन् कण्डाय्* उळ्ळुवार् उळ्ळत्तुळन् कण्डाय्* वॆळ्ळत्तिन् उळ्ळानुम्* वेङ्गडत्तु मेयानुम्* उळ्ळत्तिन उळ्ळान एन्ऱोर॥९९॥	देखो, सार्वभौम प्रभु की अपनी सत्ता है। और हमेशा आपकी अपनी सत्ता है भक्तों के हृदय में, क्षीर सागर में, वेंकटम में।हे मन ! तुझमें प्रभु की सत्ता है। **2180**
ओर् अडियुम् शाडुदैत्त* ऒण् मलर् च्चेवडियुम्* ईर् अडियुम् काणलाम् एन् नॆञ्जे !* ओर् अडियिल् तायवनै क्केशवनै* त्तण् तुळाय् मालै शेर्* मायवनैये मनत्तु वै॥१००॥	हे मन ! शीतल तुलसी की माला पहने प्रभु की सदा पूजा करो।चमत्कारी बालक ! जिन्होंने गाड़ी को अपने पैर से फेंक दिया। धरा को एक पग से मापने वाले केशव प्रभु ! प्रभु के दोनों चरण इस धरा पर देखे जा सकते हैं। **2181** **पोय्गैयाळवार तिरूवडिगले शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

इराण्डाम् तिरूवन्दादि (2182 – 2281)

तिरूक्कुरूगै प्पिरान् पिळळान् अरूळिच्चेय्द तनियन्

एऩ्पिऱवि तीर इरैऱ्जिनेन् इन्नमुदा★
अन्बे तगळि अऴित्तानै★ – नान् पुगऴ् शेर्
शीदत्तार् मुत्तुगऴ् शेरुम् कडल् मल्लैप्★
बूदत्तार् पॊन्नङ्गऴल्

अन्बे तगळिया★ आर्वमे नॆय् आग★ इन्बुरुगु शिन्दै इडु तिरिया★ नन्बुरुगि ञान च्चुडर् विळक्केट्रिनेन्★ नारणर्कु★ ञान त्तमिऴ् पुरिन्द नान्॥१॥	प्रेम हमारा दीपक है जिसमें उत्सुकता तेल है एवं मेरा हृदय बत्ती है। अपने आपको द्रवित कर हम दीपक को जलाते हैं एवं तमिल ज्ञान के इस माला को अर्पित करते हैं। **2182**
ञानत्ताल् नन्गुणर्न्दु★ नारणन् तन् नामङ्गऴ्★ तानत्ताल् मट्रवन् पेर् शाट्रिनाल्★ वान– त्तणि अमरर्★ आक्कुविक्कुम् अग्तन्रे★ नङ्गऴ् पणि अमरर् कोमान् परिशु॥२॥	अवतारों के माध्यम से जानकर, अगर हम नारायण एवं अनेकों अन्य नामों का, अनेकों मंदिरों में गान करें, तो क्या हमारी पूजा हमें प्रभु के पास देवों के समूह में एक स्थान नहीं दिलायेगी ? **2183**
परिशु नऱु मलराल्★ पार्कडलान् पादम्★ पुरिवार् पुगऴ् पॆरुवर् पोल्लाम्★ पुरिवार्गऴ् तॊल् अमरर् केऴ्व★ त्तुलङ्गॊळि शेर् तोट्रत्तु★ नल् अमरर् कोमान् नगर्॥३॥	स्वर्ग (वैकुण्ठ) में देवताओं के नाथ उज्जवल ज्योति बिखेरते हैं। सागर में शयन करते स्वरूप के चरणाविंद का फूलों से अर्चना करने से भक्तों की श्रेणी में गिनती होती है और वैकुंठ में प्रवेश की योग्यता हो जाती है। **2184**
नगर् इऴैत्तु नित्तिलत्तु★ नाण्मलर् कॊण्डु★ आङ्गे तिगऴुम् अणि वयिरम् शेर्त्तु★ निगर् इल्ला प्पैङ्गमलम् एन्दि★ प्पणिन्देन् पनि मलराऴ्★ अङ्गम् वलम् कॊण्डान् अडि॥४॥	वैकुण्ठ में आप मोती रत्न एवं हीरा जड़ित तथा फूलों से सुसज्जित छत्र के नीचे कमल वाली लक्ष्मी को दायें धारण करते हुए बैठे रहते हैं। हम आपके चरण की पूजा करते हैं। **2185**
अडि मूऩ्ऱिल् इव्वुलगम्★ अन्ऱळन्दाय् पोलुम्★ अडि मूऩ्ऱिरन्दवनि कॊण्डाय्★ पडिनिन्ऱ नीर् ओद मेनि★ नॆडुमाले★ निन् अडियै यार् ओद वल्लार् अऱिन्दु॥५॥	आपने तीन पग जमीन मांगी परंतु सारी धरा ले ली। तीन ही पग जमीन क्यों मांगी दो पग भी तो पर्याप्त होता ? गहरे सागर के रंग वाले प्रभु ! कौन यह समझ सकता है ? **2186**

अरिन्दैन्दुम् उळ् अडक्कि* आय् मलर् कॊण्डु* आर्वम् शॆरिन्द मनत्तराय् च्चॆव्वे* अरिन्दवन् तन् पेर् ओदि एत्तुम्* पॆरुन् तवत्तोर् काण्बरे* कार् ओद वण्णन् कळल्॥६॥	पूरी तरह समझते हुए जो अपनी इन्द्रियों को भीतर शमन करता है तथा हृदय के उद्गार से फूल चढ़ाकर नाम जपते हुए धैर्य पूर्वक पूजा करता है वह निश्चित रूप से सागर सा सलोने प्रभु के चरणों को प्राप्त करता है। **2187**
कळल् एडुत्तु वाय् मडित्तु* क्कण् शुळन्रु* माद्दार् अळल् एडुत्त शिन्दैयराय् अञ्ज* तळल् एडुत्त पोर् आळि एन्दिनान्* पॊन् मलर् च्चेवडियै* ओर् आळि नॆञ्जे ! उगन्दु॥७॥	उठे हुए पग से पभु ने विरोधियों के मुंह बन्द कर दिये तथा देदीप्यमान चक्र से उनकी आंखें चकाचौंध कर दी। हे मन ! उत्साह से चरणारविंद का ध्यान करो। **2188**
उगन्दुन्नै वाङ्गि* ऒळि निरम् कॊळ् कॊङ्गै* अगम् कुळिर उण् एन्राळ् आवि* उगन्दु मुलै उण्बाय् पोले* मुनिन्दुण्डाय्* नीयुम् अलै पण्बाल् आनमैयाल् अन्रु॥८॥	खुशी से आपको अपने जहरीले स्तन पर लगाते हुए राक्षसी ने दूध पिलाया जैसे कि आप एक सीधे सादे शिशु हों। परंतु तब तो आपने उसके दूध के साथ प्राण भी ले लिये। **2189**
अन्रदु कण्डञ्जाद* आय्च्चि उनक्किरङ्गि* निन्रु मुलै तन्द इन् नीर्मैक्कु* अन्रु वरन् मुरैयाल् नी अळन्द* मा कडल् शूळ् ञालम्* पॆरु मुरैयाल् एय्दुमो पेरत्तु॥९॥	तब भी गोप नारी यशोदा आपके लिये बहुत ही चिंतित हुई एवं निर्भय होकर आपको अपने स्तन का दूध पिलायी। सागर से घिरी हुई सारी धरा जिसे आपने मापा एवं ले लिया क्या उसके प्रेम का उपहार हो सकता है ? **2190**
पेरत्तनै* मा शगडम् पिळ्ळैयाय्* मण् इरन्दु कात्तनै* पल् उयिरुम् कावलने* एत्तिय नावुडैयेन् पूवुडैयेन्* निन् उळ्ळि निन्रमैयाल्* का अडियेन् पट्ट कडै॥१०॥	प्रेम से परिपूर्ण हो हम फूल लेकर एवं सम्यक नाम का गान करते हुए खड़े हैं। हे रक्षक प्रभु ! शिशु के रूप में आपने गाड़ी को नष्ट किया। जमीन मांगकर आपने धरावासियों की रक्षा की। विनती है, हमें उचित दिग्दर्शन प्रदान करें। **2191**
कडै निन्रमरर् कळल् तॊळुदु* नाळुम् इडै निन्र इन्बत्तर् आवर्* पुडै निन्र नीर् ओद मेनि* नॆडुमाले* निन् अडियै आर् ओद वल्लार् अवर्॥११॥	वैकुण्ठ के रास्ते के बीच स्वर्गिक जन आपके चरण की पूजा करते हैं तथा स्वर्ग का आनन्द उठाते हैं। हे सागर सा सलोने शाश्वत प्रभु ! उनलोगों में से कौन आपके चरण का संपूर्ण यशोगान कर सकता है ? एक भी नहीं। **2192**
अवर् इवर् एन्रिल्लै* अरवणैयान् पादम्* एवर् वणङ्गि एत्तादार् एण्णिल्* पलरुम् शॆळुम् कदिरोन् ऒण् मलरोन्* कण्णुदलोन् अन्रे* तॊळुम् तगैयार् नाळुम् तॊडरन्दु॥१२॥	एक या दो नहीं, सारा जगत शेषशायी प्रभु के चरणारविंद की पूजा करता है। यहां तक कि जाज्वल्यमान सूर्य, पुष्पासीन ब्रह्मा तथा ललाटनेत्री शिव, क्या वे प्रतिदिन आपका अनुसरण करते हुए आपकी पूजा नहीं करते ? **2193**
तॊडर् एडुत्त माल् यानै* शूळ् कयम् पुक्कञ्जि* पडर् एडुत्त पैङ्गमलम् कॊण्डु* अन्रिडर् अडुक्क आळियान्* पादम् पणिन्दन्रे* वानवर् कोन् पाळि तान् एय्दिट्टु प्पण्डु॥१३॥	पुराकाल में अर्चक हाथी कमलसरोवर में प्रवेश कर भयग्रस्त हो कांप उठा। तब फूल लिये सूंढ़ को ऊपर उठा आपकी पूजा की। क्या वह प्रभु के धाम में शीघ्र ही वहां से नहीं चला गया ? **2194**

पण्डि प्पॅरुम् पदियै आक्कि* पळि पावम् कॉण्डिङ्गु* वाळ्वारै क्कूरादे* एण् दिशैयुम् पेरत्त करम् नान्गुडैयान्* पेर् ओदि प्पेदैगाळ्* तीरत्तगरर् आमिन् तिरिन्दु ॥१४ ॥	मूर्खो ! प्रभु के मंदिर को भोजनालय समझते हुए पाप एवं दोषपूर्ण बातों में निरत मरणशील जनों की प्रशंसा करते हो। इसके बदले आठों दिशाओं में फैली बाहों वाले प्रभु का नाम लेते हुए भ्रमण करो एवं प्रभु का पावनजन बन जाओ। **2195**
तिरिन्ददु वॅम् शमत्तु* त्तेर् कडवि* अन्ऱु पिरिन्ददु शीदैयै मान् पिन् पोय्* पुरिन्ददुवुम् कण् पळ्ळि कॉळ्ळ* अळगियदे* नागत्तिन् तण् पळ्ळि कॉळ्वान् तनक्कु ॥१५ ॥	शीतल शेष शय्या पर सोने वाले युद्ध में रथवाहा बने। आपने एक मृग का पीछा कर सीता को गंवा दिया एवं कठोर भूमि पर सोये। क्या विरोधाभास ! **2196**
तनक्कडिमै पट्टदु* तान् अरियानेल्लुम्* मनत्तडैय वैप्पदाम् माल्लै* वन त्तिडरै एरियाम् वण्णम्* इयट्रुम् इदु वल्लाल्* मारि यार् पॅय्गिर्पार् मट्रु ॥१६ ॥	यद्यपि हम यह नहीं जानते कि प्रभु कैसी सेवा हमसे लेना चाहते हैं परतुं हमें अपना चित्त प्रभु पर ही लगाकर रखना चाहिए। सरोवर के निर्माण के लिये जंगल काटकर हम बांध बना सकते हैं परंतु वर्षा कौन करायेगा ? **2197**
मट्रार् इयल्ल् आवर्* वानवर् कोन् मा मल्लरोन्* शुट्रुम् वणङ्गुम् तॊळिलानै* ऑट्रै प्पिरै इरुन्द* शॅञ्जडैयान् पिन् शॅन्ऱु* माल्लै कुरै इरन्दु तान् मुडित्तान् कॉण्डु ॥१७ ॥	मेघ जैसे रंग वाले प्रभु तिरूमल इन्द्र एवं ब्रह्मा से पूजित हैं। जब शिव के आवेदन पर सकारात्मक होकर उन्हें पाप से विमुक्त कर दिया तबसे शिव भी आपका अनुसरण करने लगे तथा प्रार्थना करने लगे। इस तरह से दयाकरने की शक्ति किसमें हो सकती है ? **2198**
कॉण्डदुलगम्* कुरळ् उरुवाय् क्कोळरियाय्* ऑण् तिरलोन् मार्वत्तुगिर् वैत्तदु* उण्डदुवुम् तान् कडन्द एळ् उलगे* तामरै क्कण् माल् ऑरुनाळ्* वान् कडन्दान् शॅय्द वळक्कु ॥१८ ॥	मर्यादामय वामन ने धरा को प्राप्त किया। डरावना सिंह ने हिरण्य की छाती चीर डाली। शिशु सातों लोक को निगल गये। ये सब कुछेक हमारे राजीवनयन धरा मापने वाले प्रभु के चमत्कारिक कार्यकलापों में से हैं। **2199**
वळक्कन्ऱु कण्डाय्* वलि शगडम् शॅट्राय्* वळक्कॉन्ऱु नी मदिक्क वेण्डा* कुळ क्कन्ऱु ती विळविन् काय्क्कॅरिन्द* तीमै तिरुमाले* पार् विळङ्ग च्चॅय्दाय् पळि ॥१९ ॥	तिरूमल प्रभु ! अपनी पंखुड़ी से कोमल चरण से आपने गाड़ी को तोड़ दिया जो ठीक नहीं किया। राक्षसी बछड़े को घुमाकर राक्षसी ताड़ फल पर पटक दिया, यह नहीं सोंचो कि आपने यह भी ठीक किया। संसार वालों की नजरों में ये सब गलत थे। **2200**
पळि पावम् कैयगट्रि* प्पल्ल् काल्लुम् निन्नै* वळिवाळ्वार् वाळ्वराम् मादो* वळुविन्ऱि नारणन् तन् नामङ्गळ्* नन्गुणरन्दु नन्गोत्तुम्* कारणङ्गळ् ताम् उडैयार् ताम् ॥२० ॥	माधव ! भक्तगन प्रतिदिन बिना रूकावट के आपकी पूजा करते हैं तथा नारायण मंत्र को समझते हुए विश्वास पूर्वक जाप करते हैं वे कुमार्ग छोड़कर आपके साथ का अच्छे जीवन की पहुंच में आ जाते हैं। **2201**
ताम् उळरे* तम् उळ्ळम् उळ् उळदे* तामरैयिन् पूवुळदे* एत्तुम् पॊळुदुण्डे* वामन् तिरु मरुवु* ताळ् मरुवु शॅन्नियरे* शॅव्वे अरु नरगम् शेर्वदरिदु ॥२१ ॥	यहां भक्तगन हैं। वे शुद्ध हृदय के हैं। कमल सर्वत्र खिलते हैं। पूजा में विराम भी है। वामन प्रभु के चरण धारण करने के लिये सिर तैयार हैं। यह सब होते हुए नरक जाना असंभव है। **2202**

अरियदॆळिदागुम्* आट्रलाल् माट्रि* पॆरुग मुयल्वारै प्पॆट्राल्* करियदोर् वॆण् कोट्टु माल् यानै* वॆन्ऱु मुडित्तन्ऱे* तण् कोट्टु मा मलराल् ताळ्न्दु ॥२२॥	बलपूर्वक ठीक करने वाले तथा प्रेमपूर्वक स्वीकार करने वाले प्रभु का जब आश्रय लिया जाता है तो असंभव भी संभव हो जाता है। जल में जीवन के लिये संघर्ष करने वाले बलशाली हाथी की ईच्छा तब पूरी हुई जब झुककर उसने फूल समर्पित किया। **2203**
ताळ्न्दु वरम् कॊण्डु* तक्क वगैगळाल्* वाळ्न्दु कळिवारै वाळ्विक्कुम्* ताळ्न्द विळङ्गनिक्कु* क्कन्ऱॆरिन्दु वेट्रुवाय्* ञालम् अळन्दडि क्कीळ् क्कॊण्ड अवन्॥२३॥	नम्रता से झुकते हुए प्रभु वेष बदलकर आये एवं धरा को अपने चरणों का आश्रय प्रदान किया। आपने बछड़ा फेंककर ताड़ के पेड़ का नाश किया। आप अपने भक्तों को जीवन प्रदान करते हैं। **2204**
अवन् कण्डाय् नल् नॆञ्जे !* आर् अरुळुम् केडुम्* अवन् कण्डाय् ऐम्बुलनाय् निन्ऱान्* अवन् कण्डाय् काट्रुत्ती नीर् वान्* करु वरै मण् कार् ओद* शीट्र त्ती आवानुम् शॆन्ऱु॥२४॥	हे भक्त मन ! अच्छा एवं बुरा सब भगवान हैं। आप ही धरा वायु जल अग्नि एवं आकाश हैं तथा पांचों इन्द्रियों में आप ही व्यक्त हैं। **2205**
शॆन्ऱदिलङ्गैमेल्* शॆव्वे तन् शीट्रत्ताल्* कॊन्ऱदिरावणनै क्कूरुङ्गाल्* निन्ऱदुवुम् वेय् ओङ्गु तण् शारल्* वेङ्गडमे* विण्णवर् तम् वाय् ओङ्गु* तॊल् पुगळान् वन्दु॥२५॥	स्वर्गिकों से आप शाश्वत रूप से प्रशंसित हैं। आप जब आये तो लंका पर धावा बोल दिया। आप ने जब युद्ध किया तब रावण का नाश किया। जब आप खड़ा हुए तो वह वेंकटम की बांसबाड़ी है। **2206**
वन्दित्तवनै* वळि निन्ऱ ऐम् बूदम्* ऐन्दुम् अगत्तडक्कि आर्वमाय्* उन्दि प्पडि अमरर् वेलैयान्* पण्डमरर्क्कीन्द* पडि अमरर् वाळुम् पदि॥२६॥	वेंकटम प्रभु का पावन धाम है जहां आपकी अर्चना स्वर्गिक तथा वैदिक ऋषिगण करते हैं। हे मन ! जो अपने पांच इन्द्रियों पर नियंत्रण रखते हुए प्रभु की पूजा करेंगें वे पांच तत्व के शरीर छोड़ने के बाद स्वर्गिक हो जायेंगे। **2207**
पदि अमैन्दुनाडि* प्परुत्तॆळुन्द शिन्दै* मदि उरिञ्जि वान् मुगडु नोक्कि* कदि मिगुत्तम् कोल् तेडि ओडुम्* कॊळुन्ददे पोन्ऱदे* माल् तेडि ओडुम् मनम्॥२७॥	जो मन प्रभु को खोजता है तथा वेंकटम के प्रभु के स्वरूप का ध्यान करता है वह उस लता की तरह है जो एक वृक्ष का सहारा पाकर शीघ्र हीं बढ़ते हुए चांद को छूने लगता है। **2208**
मनत्तुळ्ळान् वेङ्गडत्तान्* मा कडलान्* मट्रुम् निनैप्परिय* नीळ् अरङ्गत्तुळ्ळान्* एनै प्पलरुम् देवादि देवन्* एनप्पडुवान्* मुन् ऒरु नाळ् मा वाय् पिळन्द मगन्॥२८॥	प्रभु को देवों के नाथ के रूप में धरा एवं गगन स्तुति करते हैं। सागरशायी प्रभु वेंकटम में तथा कल्पना से परे सुन्दर अरंगम में एवं सबों के हृदय में रहते हैं। **2209**
मगनाग क्कॊण्डॆडुत्ताळ्* माण्बाय कॊङ्गै* अगन् आर उण्बन् एन्ऱुण्डु* मगनै त्ताय् तेराद वण्णम्* तिरुत्तिनाय्* तॆन् इलङ्गै नीराग एय्दळित्ताय् नी॥२९॥	राक्षसी ने कहा ‘बच्चा आओ स्तन पान करो’। अपने मां के हृदय में भय उत्पन्न करते हुए आपने कहा ‘जी भर के पीयूंगा’। प्रभु ! आापने अपने अग्नि बाणों से लंका नगर को जला डाला। **2210**

नी अन्ऱलगळन्दाय्⋆ नीण्ड तिरुमाले⋆ नी अन्ऱलगिडन्दाय् एन्बराल्⋆ नी अन्ऱु कार् ओदम् मुन् कडैन्दु⋆ पिन् अडैत्ताय् मा कडल्लै⋆ पेर् ओद मेनि प्पिरान्॥३०॥	आपने अपने स्वरूप का विस्तार कर धरा को ले लिया। तिरूमल प्रभु ! आपने धरा को उठा लिया तथा सागर मंथन किया। सागर सा सलोने प्रभु ! आपने सागर पर सेतु बनाया । **2211**
पिरान् एन्ऱु नाळुम्⋆ पेरुम् पुलरि एन्ऱुम्⋆ कुरा नल् शेळुम् पोदु कोण्डु⋆ वराह– त्तणि उरुवन्⋆ पादम् पणियुम् अवर् कण्डीर्⋆ मणि उरुवम् काण्बार् मगिऴन्दु॥३१॥	आपके वराह स्वरूप के चरणों पर जो नूतन पुष्प चढ़ाकर पूजा करते हैं तथा बार बार 'प्रभु ! कितना अच्छा दिन !' कहकर प्रशंसा करते हैं वे आपके रत्न समान प्रकाशित स्वरूप का दर्शन प्राप्त करेंगे। **2212**
मगिऴन्ददु शिन्दै⋆ तिरुमाल्ले⋆ मट्रुम् मगिऴन्ददुन् पादमे पोढ़्ि⋆ मगिऴन्ददु अळल् आळि शङ्गम्⋆ अवै पाडि आडुम्⋆ तोळिल् आगम् शूऴन्दु तुणिन्दु॥३२॥	हे तिरूमल ! मेरा मन आपसे ही आनन्दित रहता है तथा मात्र आपके ही चरणों की बन्दना से मेरी जिह्वा प्रसन्न रहती है। शंख एवं चक्र का कीर्तन करते हुए आपके आस पास नाचने से मेरा शरीर प्रसन्न रहता है। **2213**
तुणिन्ददु शिन्दै⋆ तुळाय् अलङ्गल्⋆ अङ्गम् अणिन्दवन्⋆ पेर् उळ्ळत्तु प्पल्गाल्⋆ पणिन्ददुवुम् वेय् पिरङ्गु शारल्⋆ विरल् वेङ्गडवनैये⋆ वाय् तिरङ्गळ् शोल्लुम् वगै॥३३॥	तुलसीधारी प्रभु के नाम का आनन्दातिरेक से नाम लेते रहने से मन प्रभु पर टिक जाता है। मेरी जिह्वा एकमात्र आपकी गाथा गाती है।मेरा शरीर बांस के जंगल से घिरे वेंकटम के प्रभु की ही पूजा करता है। **2214**
वगैयाल् अवनि⋆ इरन्दळन्दाय् पादम्⋆ पुगैयाल् नरु मलाराल् मुन्ने⋆ मिग वायन्द अन्बाक्कि एत्ति⋆ अडिमै प्पट्टेन् उनक्कु⋆ एन् बाक्कियत्ताल् इनि॥३४॥	जमीन की भिक्षा मांगकर पूरी पृथ्वी ले लेने वाले प्रभु ! फूल एवं सुगंधित धूप अर्पित करके आपसे जो स्नेह बनाया उसके फलस्वरूप हमें आपके दिव्य चरणों का आश्रय मिल गया है। **2215**
इनिदेन्बर् कामम्⋆ अदनिल्लुम् आढ़्⋆ इनिदेन्बर् तण्णीरुम् एन्दाय्⋆ इनिदेन्ऱु कामनीर् वेळादु⋆ निन् पेरुमै वेट्परेल्⋆ शेम नीर् आगुम् शिरिदु॥३५॥	आश्रयदाता प्रभु ! कहते हैं कामना मीठी होती है परन्तु उससे तो मीठा जल होता है। दोनों की मिठास को भुलाकर अगर कोई प्रभु की प्रशस्ति में दो मीठे शब्द का प्रयोग करे तो जीवन की कुशलता सुनिश्चित हो जाती है। **2216**
शिरियार् पेरुमै⋆ शिरिदिन् कण् एय्दुम्⋆ अरियारुम् ताम् अरियार् आवर्⋆ अरियामै मण् कोण्डु मण् उण्डु⋆ मण् उमिऴन्द मायन् एन्ऱु⋆ एण् कोण्डेन् नेञ्जे ! इरु॥३६॥	छोटे देवों की प्रशंसा छोटा फल वाला होता है। अनभिज्ञ हमेशा अनभिज्ञ ही रह जायेगा। हे मेरा मन ! सदा आश्चर्यमय प्रभु का स्मरण करो जो पृथ्वी को मापे, उसे निगले एवं पुनः उगल दिये। **2217**

<table>
<tr><td>इरुन् तण् कमलत्तु* इरु मलरिन् उळ्ळे*
तिरुन्दु दिशै मुगनै त्तन्दाय्* पॊरुन्दिय निन्
पादङ्गळ् एत्ति* प्पणियावेल्* पल् पिऱप्पुम्
एदङ्गळ् एल्लाम् एमक्कु ॥ ३७ ॥</td><td>अनेक जन्मों में आकर अगर आपके युगल समतुल्य चरणारविंद की पूजा करना नहीं सीखा तो सारे जन्म व्यर्थ हुए। हे प्रभु ! सृष्टिकर्ता ब्रह्मा आपके नाभिकमल पर बैठते हैं। **2218**</td></tr>
<tr><td>एमक्कॆन्ऱिरु निदियम्* एमान्दिरादे*
तमक्कॆन्ऱुम् शार्वम् अऱिन्दु* नमक्कॆन्ऱुम्
मादवने एन्नुम्* मनम् पडैत्तु* मऱ्‍वन् पेर्
ओदुवदे* नाविनाल् ओत्तु ॥ ३८ ॥</td><td>मन को प्रशिक्षित कर प्रभु की गाथा का स्मरण करना सीखाओ एवं माधव को बड़ा धन एवं एकमात्र आश्रय समझो। अपनी जीभ को उनके नाम स्मरण करना सीखाकर विद्वान बनाओ। **2219**</td></tr>
<tr><td>ओत्तिन् पॊरुळ् मुडिवुम् इत्तनैये* उत्तमन् पेर्
एत्तुम्* तिऱम् अऱिमिन् एळैगाळ्* ओत्तदनै
वल्लीरेल्* नन्ऱदनै माट्टीरेल्* मादवन् पेर्
शॊल्लुवदे ओत्तिन् शुरुक्कु ॥ ३९ ॥</td><td>सभी वेद एक स्वर से यही बताते हैं। हे लोगों ! प्रशस्ति की महत्ता को समझो। अगर धर्मशास्त्र जान लेते हो तो अच्छी बात है अन्यथा माधव का नाम अकेले ही पर्याप्त है। **2220**</td></tr>
<tr><td>शुरुक्काग वाङ्गि* च्चुलावि निन्ऱु* ऐयार्
नॆरुक्का मुन् नीर् निनैमिन् कण्डीर्* तिरु प्पॊलिन्द
आगत्तान्* पादम् अऱिन्दुम् अऱियाद*
बोगत्ताल् इल्लै पॊरुळ् ॥ ४० ॥</td><td>जीवन का भौतिक सुख निस्सार है। इसके पहले कि कफ छाती एवं सांस को अवरूद्ध करे प्रभु के श्रीचरणों एवं श्रीसंपन्न वक्षस्थल का ध्यान करो। यह निश्चित मत समझो। **2221**</td></tr>
<tr><td>पॊरुळाल् अमर् उलगम्* पुक्कियलल् आगादु*
अरुळाल् अऱम् अरुळुम् अन्ऱे* अरुळाले
मा मऱैयोर्क्कीन्द* मणिवण्णन् पादमे*
नी मऱवेल् नॆञ्जे ! निनै ॥ ४१ ॥</td><td>हे मन ! भूलो नहीं, निश्चित रूप से मणिसमान वर्ण वाले प्रभु के श्रीचरणों का ध्यान करो जो वैदिक ऋषियों को प्राप्त है। धन से स्वर्गिकों के जगत में प्रवेश नहीं मिल सकता। प्रभु की कृपा से ही वह धर्ममय लोक मिलता है। **2222**</td></tr>
<tr><td>निनैप्पन् तिरुमालै* नीण्ड तोळ् काण*
निनैप्पार् पिऱप्पॊन्ऱुम् नेरार्* मनैप्पाल्
पिऱन्दार् पिऱन्दॆय्दुम्* पेरिन्बम् एल्लाम्*
तुऱन्दार् तॊळुदार् त्तोळ् ॥ ४२ ॥</td><td>मैं जिनका ध्यान करता हूं वे तिरूमल के प्रभु हैं। जो इनका ध्यान करता है वह आगे के जन्म से मुक्त हो जाता है। मुक्त जीव जो इस जगत में जन्म लेते हैं वे सांसारिक सुखों का त्याग कर प्रभु की पूजा करते हैं। **2223**</td></tr>
<tr><td>तोळ् इरण्डॆट्टॆळुम्* मून्ऱु मुडि अनैत्तुम्*
ताळ् इरण्डुम् वीळ च्चरम् तुरन्दान्* ताळ् इरण्डुम्
आर् तॊळुवार् पादम्* अवै तॊळुवदन्ऱे* एन्
शीर् कॆळु तोळ्* शॆय्युम् शिऱप्पु ॥ ४३ ॥</td><td>आपने अकेले ही बाणों से लंकेश के दस सिर एवं बीस भुजाओं को काट डाला। आपके श्रीचरणों की पूजा करने वाले हमारे नाथ हैं। हमारे हाथ सौभाग्यशाली हैं जो ऐसे विशिष्ट जनों के चरणों की पूजा करते हैं। **2224**</td></tr>
<tr><td>शिऱन्दार्क्कॆळु तुणैयाम्* शॆङ्गण् माल् नामम्*
मऱन्दारै मानिडमा वैयेन्* अऱम् ताङ्गुम्
मादवने एन्नुम्* मनम् पडैत्तु* मऱ्‍वन् पेर्
ओदुवदे* नाविनाल् उळ्ळु ॥ ४४ ॥</td><td>शंकनमाल प्रभु विशिष्ट लोगों के अलौकिक साथी हैं। उन जनों के नाम नाहक हैं जो प्रभु के नाम को भूल जाते हैं। निश्चित मन से यह समझो कि माधव ही धर्म के धारक हैं एवं इनके नाम जपने की आदत बनाओ। **2225**</td></tr>
</table>

उळदॆंन्ऱिरुमावार्⋆ उण्डिल्लै ऎन्ऱु⋆ तळर्दल् अदन् अरुगुम् शारार्⋆ अळवरिय वेदत्तान् वेङ्गडत्तान्⋆ विण्णोर् मुडि तोयुम्⋆ पादत्तान् पादम् पयिन्ऱु॥ ८५ ॥	प्रभु का नाम ही स्वरूप धरकर वेंकटम में विराजमान है। आप अगम्य वेदों के प्रभु हैं। आपके चरणारविंद स्वर्गिकों द्वारा पूजे जाते हैं। प्रभु की पूजा करने से भक्तों के मन में सबचीज प्राप्त कर लेने का संतोष प्राप्त हो जाता है एवं कभी भी किसी चीज की कमी की चिंता नहीं सताती। **2226**
पयिन्ऱदरङ्गम् तिरुक्कोट्टि⋆ पल् नाळ् पयिन्ऱदुवुम्⋆ वेङ्गडमे पल् नाळ्⋆ पयिन्ऱ– दणि तिगऴुम् शोलै⋆ अणि नीर् मलैये⋆ मणि तिगऴुम् वण् तडक्कै माल्॥ ८६ ॥	श्यामल मणि वर्ण के पूज्य प्रभु अरंगम के प्राचीन निवासी हैं। तिरूक्कोट्टियूर एवं तिरूवेंकटम भी आपके वंशानुगत निवास हैं। सुन्दर मलिरूमसोलै एवं तिरूनिर्मलै प्रभु का पुराना निवास है। **2227**
मालै अरि उरुवन्⋆ पादमलर् अणिन्दु⋆ कालै तॊऴुदॆऴुमिन् कैगोलि⋆ ञालम् अळन्दिडन्दुण्डुमिऴन्द⋆ अण्णलै मट्रल्लाल्⋆ उळम् किडन्द आट्राल् उणर्न्दु॥ ८७ ॥	संध्या काल में पदार्पण करने वाले नरसिंह प्रभु के अतिरिक्त किसी भी हृदय को प्रिय लगने वाले प्रभु की नित्य प्रातः पूजा फूलों से कर सकते हो। धरा को मापने निगलने एवं उगलने वाले प्रभु हमारे प्रभु नहीं हैं क्या ? **2228**
उणर्न्दाय् मऱै नान्गुम्⋆ ओदिनाय् नीदि⋆ मणन्दाय् मलर्मगळ् तोळ् माले !⋆ मणन्दाय् पोय् वेय् इरुम् शारल्⋆ वियल् इरु ञालम् शूऴ्⋆ मा इरुम् शोलै मलै॥ ८८ ॥	आपने प्रभु वेद को प्रकट किया तथा जीवन धर्म के बारे में बताया। पंकजनिवासिनी लक्ष्मी को आपने अपने बाहों में रखा। वेंकटम के बांस के वन में आपने निवास बनाया। **2229**
मलै एऴुम्⋆ मा निलङ्गळ् एऴुम् अदिर⋆ कुलै शूऴ् कुरै कडल्गळ् एऴुम्⋆ मुलै शूऴ्न्द नञ्जुरत्तु प्पॆण्णै⋆ नविन्ऱुण्ड नावन् ऎन्ऱु⋆ अञ्जादॆन् नॆञ्जे ! अऴै॥ ८९ ॥	हे मन ! सात पर्वत, सात समुद्र एवं सात महादेश में प्रभु का नाम गूंजने दो। जोर से स्पष्ट शब्दों में पुकारो 'आनन्द से राक्षसी का जहरीला स्तन पीने वाले प्रभु'। घबराओ नहीं। **2230**
अऴैप्पन् तिरुमालै⋆ आङ्गवर्गळ् शॊन्न⋆ पिऴैप्पिल् पॆरुम् पॆयरे पेशि⋆ इऴैप्परिय आयवने ! यादवने !⋆ ऎन्ऱवनै यार् मुगप्पुम्⋆ मायवने ऎन्ऱु मदित्तु॥ ५० ॥	सबों के समक्ष बिना भय के हम पुकारेंगे 'हे यादव ! हे गाय चराने वाले ! हे आश्चर्यमय देव !' एवं अन्य दूसरों नामों से जो उनलोगों ने पुकारा था जब प्रभु ने उनकी रक्षा की थी। **2231**
मदि क्कण्डाय् नॆञ्जे !⋆ मणिवण्णन् पादम्⋆ मदि क्कण्डाय् मट्रवन् पेर् तन्नै⋆ मदि क्कण्डाय् पेर् आऴि निन्ऱु⋆ पॆयर्न्दु कडल् कडैन्द⋆ नीर् आऴि वण्णन् निऱम्॥ ५१ ॥	हे मन ! मणिवर्ण वाले प्रभु के चरणों को सदा याद करो तथा उनके नाम का भी स्मरण रखो। समुद्र मंथन करने वाले सागर सा सलोने प्रभु के वदन के रंग का सतत ध्यान करो। **2232**
निऱम् करियन् शॆय्य⋆ नॆडु मलराळ् मार्वन्⋆ अऱम् पॆरियन् आर् अदऱिवार्⋆ मऱम् पुरिन्द वाळ् अरक्कन् पोल्वानै⋆ वानवर् कोन् तानत्तु⋆ नीळ् इरुक्कैक्कुयत्तान् नॆरि॥ ५२ ॥	श्यामल मणिवर्ण वाले प्रभु लाल कमल निवासिनी लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर धारण करते हैं। आप धर्म के स्वरूप हैं। राक्षस राज को आपने इन्द्र की राजधानी आकाश में भेज दिया। आपके संयम को कौन समझ सकता है ? **2233**

नॅरियार् कुळल् कट्टै★ मुन् निन्रु पिन् ताळन्दु★ अरियादिळङ्गिरि एन्रॅण्णि★ पिरियादु पूङ्गॉडिगळ् वैगुम्★ पॉरु पुनल् कुन्रॅन्रुम्★ वेङ्गडमे याम् विरुम्बुम् वॅर्पु॥५३॥	संयम से रहने वाले संतगन जिनकी जटायें आगे तथा पीछे कंधों तक लटकती हैं आपके ध्यान में वेंकटम के पर्वत पर निमग्न बैठे रहते हैं।आस पास की लतायें पहाड़ियों की तरह इनपर चढ़ी रहती हैं। नालों का जल ढ़लान पर संघर्ष करता हुआ नीचे आता है।यह प्रभु का प्यारा पर्वत है। **2234**
वॅर्पॅन्रिरुम् शोलै★ वेङ्गडम् एन्रिव् इरण्डुम्★ निर्पॅन्रु नी मदिक्कुम् नीर्मै पोल्★ निर्पॅन्रु उळम् कोयिल्★ उळ्ळम् वैत्तुळ्ळिनेन्★ वॅळ्ळ– त्तिळङ्गोयिल् कैविडेल् एन्रु॥५४॥	मलिरूमसोलै एवं वेंकटम के पर्वतीय आरामगाह आपके प्रिय निवास स्थल हैं तथा इसीतरह हमारा हृदय भी आपका निवास स्थल है।विनती है कि क्षीर सागर जो कि आपका मूल धार्मिक निवास है कृपा कर न त्यागें। **2235**
एन्रुम् मरन्दरियेन्★ एळ् पिरप्पुम् एप्पॉळुदुम्★ निन्रु निनैप्पॉळिया नीर्मैयाल्★ वॅन्रि अडल् आळि कॉण्ड★ अरिवने★ इन्ब कडल् आळि नी अरुळि क्काण्॥५५॥	चक्रधारी सर्वज्ञ प्रभु ! हम कभी आपको भूले नहीं हैं। सात जन्मों एवं सात युगों से हम आपको हृदय में रखे हुए हैं। इसलिये आप हमें अपना गहरे सागर वाले निवास का दर्शन करायें। **2236**
काण क्कळि कादल्★ कै मिक्कु क्काट्टिनाल्★ नाण प्पडुम् एन्राल् नाणुमे★ पेणि करु मालै★ प्पॉन् मेनि काट्टामुन् काट्टुम्★ तिरुमालै नङ्गळ् तिरु॥५६॥	जब प्रभु के दर्शन की चाह सागर सी उमड़ने लगती है तो क्या कोई चाह कर भी इसे रोक सकेगा ? इसके पहले कि प्रभु अपना श्यामल स्वरूप का दर्शन करायें कमलनिवासिनी माता लक्ष्मी आपकी दिव्यता की झांकी दिखा देती हैं। **2237**
तिरुमङ्गै निन्ररुळुम्★ दॅय्वम् ना वाळ्त्तुम्★ करुमम् कडैप्पिडिमिन् कण्डीर्★ उरिमैयाल् एत्तिनोम् पादम्★ इरुन् तडक्कै एन्दै पेर्★ नाल् दिशैयुम् केट्टीरे नाम्॥५७॥	लक्ष्मीश्री का दिव्य निवास प्रभु का प्रशंसनीय स्वरूप है। अतः सावधानी से ध्यान पूर्वक प्रभु का पीछा करो। चारों दिशाओं ! सुनो, प्रभु के श्रीचरणों की पूजा करना तथा यशोगान करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। **2238**
नाम् पॅट्र नन्मैयुम्★ ना मङ्गै नल् नॅञ्जत्तु★ ओम्बिरुन्दॅम्मै ओदुवित्तु★ वेम्बिन् पॉरुळ् नीर्मै आयिनुम्★ पॉन् आळि पाडॅन्रु★ अरुळ् नीर्मै तन्द अरुळ्॥५८॥	चक्रधारी प्रभु की प्रशंसा में नीम का कड़ुवापन है परंतु हमारे हृदय में सरस्वती का निवास होने से हम प्रभु की गाथा का गान करने के लिये उत्प्रेरित होते रहते हैं। हमारा यह सौभाग्य कमल निवासिनी लक्ष्मी की कृपा से ही प्राप्त है। **2239**
अरुळ् पुरिन्द शिन्दै★ अडियार् मेल् वैत्तु★ पॉरुळ् तॅरिन्दु काण् कुट्र अप्पोदु★ इरुळ् तिरिन्दु नोक्किनेन् नोक्कि★ निनैन्देन् अदॉण्गमलम्★ ओक्किनेन् एन्नैयुम् अङ्गोरन्दु॥५९॥	अंधकरा का नाश करते हुए जब प्रभु ने अपना स्वरूप दिखाया तो भक्तों पर लक्ष्मी की कृपा से ही हम प्रभु के स्वरूप का स्पष्ट दर्शन कर पाये। प्रभु के चरणों पर ध्यान केन्द्रित कर हम अपना शरणागति कर सके। **2240**

ओर् उरुवन् अल्लै⋆ ऑळि उरुवम् निन् उरुवम्⋆ ईर् उरुवन् एन्बर् इरु निलत्तोर्⋆ ओर् उरुवम् आदियाम् वण्णम्⋆ अऱिन्दार् अवर् कण्डीर्⋆ नीदियाल् मण् काप्पार् निन्ऱु ॥ ६० ॥	आप का एक ही स्वरूप नहीं है। आप ज्योर्तिमय हैं । जगत में आपके विरोधाभास की जोड़ी का वर्णन किया गया है। शास्त्रों में आपका मूल स्वरूप का वर्णन है। जो इस तरह से आपको समझता है वह धरा का शासक होता है। **2241**
निन्ऱदोर् पादम्⋆ निलम् पुदैप्प नीण्ड तोळ्⋆ शॆन्ऱळन्ददॆन्बर् दिशै एल्लाम्⋆ अन्ऱु करुमाणियाय् इरन्द⋆ कळ्वने⋆ उन्नै प्पिरमाणित्तार्⋆ पॆट्ऱ पेऱु ॥ ६१ ॥	धरा मापने वाले प्रभु ! श्यामल वामन के रूप में आपने छल का सहारा लिया। जबकि आपका एक पाद पृथ्वी को माप डाला आपकी लंबी भुजायें फैलकर दिशाओं को माप डाली। अहो ! वे सौभाग्यशाली हैं जिन्होंने आपका उस समय दर्शन किया। **2242**
पेऱॊन्ऱु मुन् अऱियेन्⋆ पॆट्ऱऱियेन् पेदैमैयाल्⋆ माऱॆन्ऱु शॊल्लि वणङ्गिनेन्⋆ एऱिन् पॆरुत्तॆरुत्तम् कोडॊशिय⋆ प्पॆण् नशैयिन् पिन् पोय्⋆ एरुत्तिरुन्द नल् आयर् एऱु ॥ ६२ ॥	तब मुझे अपना उद्देश्य नहीं पता था और न तो हमनें दूसरों से इसकी जानकारी ली। यह हमारी भूल थी। अपने में परिवर्तन की चाह से नप्पिनाय के लिये सात गुस्सैल लड़ाकू बैलों को शमन करने वाले प्रभु के चरण कमल की पूजा की। **2243**
एऱेळुम्⋆ वॆन्ऱडर्त्त एन्दै⋆ एऱि उरुवत्तु एऱेऱि प्पट्ट इडुशापम्⋆ पाऱेऱि उण्डदलै वाय् निऱैय⋆ क्कोट्टम् कै ऑण् कुरुदि⋆ कण्ड पॊरुळ् शॊल्लिन् कदै ॥ ६३ ॥	सात वृषभों का नाश करने वाले प्रभु ने वृषभ वाहन गुस्सैल शिव की भिक्षा पात्र को जो ब्रह्मा का गिद्ध द्वारा खाया हुआ कपाल था अपने हृदय के खून से भर दिया तथा उन्हें शाप से मुक्त किया। यह एक प्राचीन काव्यात्मक कहानी है। **2244**
कदैयुम् पॆरुम् पॊरुळुम् कण्णा !⋆ निन् पेरे इदयम्⋆ इरुन्दवैये एत्तिल्⋆ कदैयुम् तिरुमॊळियाय् निन्ऱ⋆ तिरुमाले⋆ उन्नै प्परु मॊळियाल् काण प्पणि ॥ ६४ ॥	काव्य के विषय वस्तु कृष्ण ! महान काव्यों की ऊच्च भाषा तिरूमल प्रभु ! मुझे इस बात की स्वीकृति प्रदान करें कि सुन्दर शब्दों से आपकी गाथा गाते हुए हम आपको अपने हृदय की गहराई में देख सकें। **2245**
पणिन्देन् तिरुमेनि⋆ पैङ्गमलम् कैयाल्⋆ अणिन्देन् उन् शेवडिमेल् अन्वाय्⋆ तुणिन्देन्⋆ पुरिन्देत्ति⋆ उन्नै प्पुगलिडम् पार्त्तु⋆ आङ्ग इरुन्देत्ति⋆ वाळुम् इदु ॥ ६५ ॥	हृदय के स्नेह से हम आपकी अर्चना करते हैं तथा अपने हाथों से आपके श्रीचरणों पर पुष्प अर्पित करते हैं। अपने प्रिय शब्दों से हम आपके दूसरे लोकों के स्वरूपों की बन्दना करते हैं जिससे कि हमें इह लोक के बाद भी वहां बन्दना करते रहने की अनुमति मिले । **2246**
इदु कण्डाय् नल् नॆञ्जे !⋆ इ प्पिऱवि आवदु⋆ इदु कण्डाय् एल्लाम् नाम् उट्ऱदु⋆ इदु कण्डाय् नारणन् पेर् ओदि⋆ नरगत्तरुगणैया⋆ कारणमुम् वल्लैयेल् काण् ॥ ६६ ॥	हे नेक मन ! तुम्हें सुबुद्धि मिले ओर समझो कि तुम ही पुनर्जन्मों की आवृत्ति के कारण हो। यह हमारे कर्मो का फल है एवं नारायण का नाम अकेले ही नरक से हमारी रक्षा के लिये उपयोगी है। **2247**
कण्डेन् तिरुमेनि⋆ यान् कनविल्⋆ आङ्गवन् कै कण्डेन्⋆ कनलुम् शुडर् आळि कण्डेन्⋆ उऱु नोय् विनै इरण्डुम्⋆ ओट्टु वित्तु⋆ पिन्नुम् मऱु नोय् शॆऱुवान् वलि ॥ ६७ ॥	अपने स्वप्न में हमने देखा कि आपका सुन्दर स्वरूप हाथ में तेजोमय चक्र धारण किये है तथा आपने हमें अच्छे एवं बुरे कर्मो से मुक्त कर पुनर्जन्म के चक्कर से निवृत्ति कर दिया है। आपकी शक्ति का भी उसमें दिग्दर्शन हुआ। **2248**

वल्लि मिक्क वाळ् एयिट्रु* वाळ् अवुणर् माळ* वल्लि मिक्क वाळ् वरै मत्ताग* वल्लि मिक्क वाळ् नागम् शुट्रि* मरुग क्कडल् कडैन्दान्* कोळ् नागम् कॉम्बॉशित्त को॥६८॥	आपने शक्तिशाली हाथी का दांत उखाड़ कर उसका नाश किया। शक्तिशाली नरसिंह रूप में आये और बलशाली हिरण्य असुर का नाश किया। शक्तिवान नाग को महान पर्वत पर लपेट कर समुद्र मंथन किया। आप शक्तिशाली स्वामी हैं। **2249**
को आगि मा निलम् कात्तु* नम् कण् मुगप्पे* मा एगि च्चॅल्गिन्ऱ मन्नवरुम्* पू वेगुम् शॅङ्गमल्ल नावियान्* शेवडिक्के एळ् पिरप्पुम्* तण् कमल्ल मेयन्दार् तमर्॥६९॥	धरा पर शासन करने वाले महान राजालोग जिन्हें घोड़े की सवारी की सुविधा उपलब्ध है आपके भक्त हैं। सात जन्मों तक पद्मनाभ प्रभु के श्रीचरणों की पुष्प से पूजा करके ये लोग राजा हुए हैं। **2250**
तमर् उळ्ळम् तञ्जै* तलै अरङ्गम् तण् काल्* तमर् उळ्ळुम् तण् पॉरुप्पु वेलै* तमर् उळ्ळुम् मामल्लै कोवल्* मदिळ् कुडन्दै एन्बरे* एवल्ल एन्दै क्किडम्॥७०॥	भक्तों की साक्षात प्रसन्नता धनुषधारी मेरे जनक प्रभु तंजैमाम्नी के मंदिर, श्रीरंगम, तिरूतन्कल, पूज्य तिरूमल, तटीय कडलमल्लै के मंदिर, दीवारों से घिरे कुडन्दै, भक्तों के हृदय स्थल, एवं सागर यानी क्षीरसागर में रहते हैं। **2251**
इडङ्गै वलम्बुरि निन्ऱार्प्प* एरि कान्ऱ अडङ्गार्* ऑडुङ्गुवित्तदाळि* विडम् काल्लुम् ती वाय् अरवणैमेल्* तोन्ऱल् दिशै अळप्पान्* पूवार् अडि निमिर्त्त पोदु॥७१॥	सागर सा सलोने प्रभु ने विष वमन करते शेषशय्या से जब अपना फूल की पंखुड़ी समान सुकोमल चरण को धरा मापने के लिये उठाया तो बायें हाथ का दक्षिणावर्त शंख गूंज उठा तथा दायें हाथ का चक्र अपनी ज्योति से सर्वत्र दिन का प्रकाश बिखेरते हुए विरोधियों का शमन कर डाला। **2252**
पोदरिन्दु वानरङ्गळ्* पूञ्जुनै पुक्कु* आङ्गलर्न्द पोदरिन्दु* कॉण्डेत्तुम् पोदु* उळ्ळम् पोदु मणि वेङ्गडवन्* मलर् अडिक्के शॅल्ल* अणि वेङ्गडवन् पेर् आयन्दु॥७२॥	दिन के उजाले में बन्दरगन वेंकटम के बागों से फूल चुनकर प्रभु की पूजा करते हैं। मेरा मन ! उठो, हमें भी वेंकटम के सुन्दर प्रभु की पूजा के लिये फूल चुनना चाहिये। **2253**
आयन्दुरैप्पन् आयिरम् पेर्* आय् नडुवन्दिवाय्* वायन्द मलर् तूवि वैगल्लुम्* एयन्द पिरै क्कोट्टु च्चॅङ्गण्* करि विडुत्त पॅम्मान्* इरैक्काट्पड त्तुणिन्द यान्॥७३॥	लाल आंखों वाले हाथी के नाश करने वाले प्रभु हमारे स्वामी हैं। हम उनकी सेवा के लिये तैयार हैं। दिन में तीन बार फूल एकत्र कर धैर्य पूर्वक हजार नामों का उच्चारण करते हुए हम पूजा करें। **2254**
याने तवम् शॅय्देन्* एळ् पिरप्पुम् एप्पॉळुदुम्* याने तवम् उडैयेन् एम् पॅरुमान्* याने इरुन्दमिळ् नल् माल्लै* इणै अडिक्के शॉन्नेन्* पॅरुन्दमिळन् नल्लेन् पॅरिदु॥७४॥	प्रभु सात जन्मों से एवं सतत से हमने अकेले आपकी तपस्या की एवं अकेले उसका फल प्राप्त किया। आपके पूर्णतया एक समान चरणों की सेवा में हमने तमिल मधुर गीतमालिका समर्पित किये। सचमुच मैं तमिल का सबसे बड़ा कवि हूं। **2255**
पॅरुगु मद वेळम्* मा प्पिडिक्कु मुन् निन्ऱु* इरु कण् इळ मूङ्गिल् वाङ्गि* अरुगिरुन्द तेन् कल्लन्दु नीट्टुम्* तिरु वेङ्गडम् कण्डीर्* वान् कल्लन्द वण्णन् वरै॥७५॥	वेंकटम की कवितावली । मदमत्त वृषभ अपनी गायों के पास खड़ा होकर बांस का कोमल कोपल ऊपर लटकते छत्ता के मधु से भिंगोकर अर्पित करते हैं। गगन सदृश वर्ण वाले प्रभु का पर्वतों में निवास स्थान है। **2256**

वऱै च्चन्दन क्कुळम्बुम्⋆ वान् कलनुम् पट्टुम्⋆ विरै प्पॉलिन्द वॅण् मल्लिगैयुम् निरैत्तु क्कॉण्डु⋆ आदिक्कण् निन्ऱ⋆ अऱिवन् अडि इणैये⋆ ओदि प्पणिवदुरुम्॥ ७६॥	पर्वतीय चंदन की सुगंधि, रेशमी वस्त्र, सुंदर आभूषण, तथा ढ़ेर सारे सुगंधित चमेली धारण किये हुए प्रभु शुद्ध ज्ञान तत्व के रूप में (वेंकटम में) खड़े हैं। हमारा यह कर्त्तव्य होता है कि हम प्रभु के एक समान पादारविंदों का यशगान करें। **2257**
उरुम् कण्डाय् नल् नॅञ्जे !⋆ उत्तमन् नऱ् पादम्⋆ उरुम् कण्डाय् ऑण् कमलन् तन्नाल्⋆ उरुम् कण्डाय् एत्ति प्पणिन्दवन् पेर्⋆ ईर् ऐञ्ञूऱॅप्पॉळुदुम्⋆ शाऱ्ऱि उरैत्तल् तवम्॥ ७७॥	हे मन ! आपके चरणारविंद स्वतः प्राप्त होंगे। पद्मनिवासिनी लक्ष्मी की दया भी स्वतः एकत्रित होती जायेगी। हजार नाम के यशगान की तपस्या एवं पूजा का लाभ भी स्वतः जमा होते जायेंगे। **2258**
तवम् शॅय्दु⋆ नान् मुगने पॅढ्ढान्⋆ तरणि निवन्दळप्प नीट्टिय पॉऱ् पादम्⋆ शिवन्द तन् कै अनैत्तुम्⋆ आर क्कळुविनान्⋆ गङ्गै नीर् पॅय्तनैत्तु प्पेर् मॉळिन्दु पिन्॥ ७८॥	ब्रह्मा के महान तपस्या का फल स्वतः मिला कि गगन में उठे प्रभु के दिव्य चरण के दर्शन का सौभाग्य मिला। तब प्रभु के जितने नाम उनको ज्ञात था सबों का उच्चारण करते हुए उन्होंने पादारविंद को अपने हृदय की संतुष्टि तक पखारा और इससे गंगा निकली। **2259**
पिन् निन्ऱ ताय् इरप्प क्केळान्⋆ पॅरुम् पणै त्तोळ् मुन् निन्ऱ तान् इरप्पाळ्⋆ मॉय्म् मलराळ्⋆ शॉल् निन्ऱ तोळ् नलन्दान्⋆ नेर् इल्ला त्तोन्ऱल्⋆ अवन् अळन्द नीळ् निलम् तान्⋆ अत्तनैक्कुम् नेर्॥ ७९॥	अपने पीठ पीछे मां की बातों को अनसुना करते हुए आप अपने नगर से संतुष्ट भाव में निकले। सामने खड़ी जूड़ेवाली की बातों पर आपने ध्यान दिया। हमारे प्रभु की गाथा उतनी ही विशाल है जितनी बड़ी पृथ्वी आपने मापा एवं अधिकार में ले लिया। **2260**
नेर्न्देन् अडिमै⋆ निनैन्देन् अदॉण्गमलम्⋆ आर्न्देन् उन् शेवडिमेल् अन्बाय्⋆ आर्न्द अडि क्कोलम्⋆ कण्डवर्क्कॅन् कॉलो⋆ मुन्नै प्पडि क्कोलम् कण्ड पगल्॥ ८०॥	प्रभु ! अपनी सेवा में स्वीकार करते हुए आपने हमें अपने पादारविंद में प्रेम दिया तथा अपने हृदयकमल की करूणा से अभिसिक्त किया। आपके पाद की पूर्णता को देखने में प्राप्त आनन्द के बाद, क्या हम आपके वामन स्वरूप के सौंदर्य का पुनः दर्शन नहीं प्राप्त कर सकेंगे ? **2261**
पगल् कण्डेन्⋆ नारणनै क्कण्डेन्⋆ कनविल् मिग क्कण्डेन्⋆ मीण्डवनै मॅय्ये मिग क्कण्डेन्⋆ ऊन् तिगळुम् नेमि⋆ ऑळि तिगळुम् शेवडियान्⋆ वान् तिगळुम् शोदि वडिवु॥ ८१॥	हमने दिन का प्रकाश देखा। नारायण का दर्शन मिला। पहले स्वप्न में साक्षात्कार मिला, पुनः सच्चाई में देखा। आप चक्रधारी हैं, आपके अरूणाभ पादारविंद हैं, तथा आकाश से उज्जवल हैं। **2262**
वडि क्कोल वाळ् नॅडुङ्गण्⋆ मा मलराळ्⋆ शॅव्वि प्पडि क्कोलम्⋆ कण्डगलाळ् पल् नाळ्⋆ अडिक्कोलि ञालत्ताळ् पिन्नुम्⋆ नलम् पुरिन्ददॅन् कॉलो⋆ कोलत्ताल् इल्लै कुऱै॥ ८२॥	आभापूर्ण बड़ी सी मत्स्यनयना कमलवासी लक्ष्मी प्रभु के सुन्दर वक्षस्थल को अनंत काल से भी निहारकर तृप्त नहीं दिखती। भू देवी भी यहां वक्षस्थल पर स्थान प्राप्त कर बैठने का आनंद उठा रही हैं। यह सब कैसे हुआ ? क्योंकि प्रभु का सौंदर्य असीम है। **2263**
कुऱैयाग वॅम् शॉर्कळ्⋆ कूऱिनेन् कूऱि⋆ मऱै आङ्गन उरैत्त माल्लै⋆ इऱैयेनुम् ईयुम्बॉल् एन्ऱे⋆ इरुन्देन् एनै प्पगलुम्⋆ मायन् कण् शॅन्ऱ वरम्॥ ८३॥	निम्नस्तरीय शब्दों के साथ प्रभु की सीमित गाथा हमने गायी जिसे वेद भी अपर्याप्त रूप से ही गा सके हैं। तब भी हम धैर्यपूर्वक अपनी विनती की स्वीकृति की आशा लगाये बैठे हैं। क्यों प्रभु अति आश्चर्य मय नहीं हैं क्या ? **2264**

वरम् करुदि त्तन्नै* वणङ्गाद वन्मै* उरम् करुदि मूरक्कत्तवनै* नरम् कलन्द शिङ्गमाय् क्कीण्ड* तिरुवन् अडि इणैये* अङ्गण् मा ज्ञालत्तमुदु ॥८४॥	आश्चर्यमय प्रभु नरसिंह के रूप में पधारकर अपने तपस्या के अभिमान से चूर स्वच्छंदी मूर्ख राजा की छाती चीर डाली। श्रीपति के पादारविंद इस विस्तृत धरा पर एकमात्र अमृत हैं। **2265**
अमुदेन्रुम् तेन् एन्रुम्* आळियान् एन्रुम्* अमुदन्रु कोंण्डुगन्दान् एन्रुम्* अमुदन्न शोंल् मालै एत्ति* त्तोंळुदेन् शोंलप्पट्टु* नन्मालै एत्ति नविन्रु ॥८५॥	अमृतमय प्रभु ! अमृत के समान मधुर ! चक्रधारी ! समुद्र मंथन करने वाले ! हम अपने मधुर गीतमालिका से आपकी पूजा करते हैं एवं प्रशस्ति गाते हैं। **2266**
नविन्रुरैत्त नावलर्गळ्* नाळ् मलर् कोंण्डु* आङ्ग पयिन्रदनाल्* पेंट्र पयन् एन्नोंल्* पयिन्रार् तम् मेंय् त्तवत्ताल्* काण्बरिय मेग मणि वण्णनै* यान् एत्तवत्ताल् काण्पन्नोंल् इन्रु ॥८६॥	प्रभु की फूल से पूजाकर विद्वान प्रशस्ति गायकजन श्यामल मेघवर्ण मणि समान प्रभु की उदारता का पात्र बनते हैं जबकि बहुत सारे तपस्वी को आपका दर्शन दुर्लभ है। किस तपस्या से हम आपको देख सकेंगे ? **2267**
इन्रा अरिगिन्रेन् अल्लेन्* इरु निलत्तै च्चेंन्राङ्गळन्द तिरुवडियै* अन्रु करुक्कोट्टियुळ् किडन्दु* कै तोंळुदेन् कण्डेन्* तिरुक्कोट्टि एन्दै तिरम् ॥८७॥	क्या अब हम तिरूकोट्टियूर प्रभु की उदारता की अनुभूति पा सके हैं ? नहीं, जब हम तिमिराछन्न गर्भ में पड़े थे उस समय हम बद्धांजलि हो धरा को मापने वाले पादारविंद का दर्शन प्राप्त कर चुके हैं। **2268**
तिरम्पिट्रिनि अरिन्देन्* तेंन् अरङ्गत्तेंन्दै* तिरम्बा वळि च्चेंन्रारक्कल्लाल्* तिरम्बा च्चेंडिनरगै नीक्कि* त्ताम् शेंल्वदन् मुन्* वानोर् कडिनगर वाशल् कदवु ॥८८॥	मेरे जनक, अरंगम के प्रभु ! जो भक्ति के रास्ते चलते हैं उनके लिये आप नरक के कंटीले झाड़ी पूर्ण रास्ते को साफ कर अपने भवन का दरवाजा खोल देते हैं। यह अब हम जान गये हैं कि अन्यजनों के लिये आप दरवाजा बन्द रखते हैं। **2269**
कदवि क्कदम् शिरन्द* कञ्जनै मुन् कायन्दु* अदवि प्पोर् यानै ओंशित्तु* पदवियाय् प्पाणियाल् नीर् एट्रु* प्पण्डोरुगाल् मावलियै* माणियाय् क्कोंण्डिलैये मण् ॥८९॥	प्रभु ! मैं आपको जानता हूं। क्या आप वह नहीं हैं जो वामन रूप में जमीन की भिक्षा मांग कर अपने पादारविंद से सारी धरा को माप लिये, जिसने मदमत्त हाथी के दांत से ही उसका अंत कर दिया, तथा दुष्ट कंस का उसके स्वयं के गुस्सा से ही नाश कर दिया ? **2270**
मण्णुलगम् आळेने* वानवरक्कुम् वानवनाय्* विण्णुलगम् तन् अगत्तु मेवेने* नण्णि त्तिरुमालै* शेङ्गण् नेंडियानै* एङ्गळ् पेंरुमानै क्कै तोंळुद पिन् ॥९०॥	प्रभु राजीव नयन हैं तथा सबों के स्वामी हैं। आप श्रीदेवी को अपने वक्षस्थल पर धारण करते हैं। हालांकि मैं आपकी पूजा करता हूं लेकिन मुझे धरा का राज्य या स्वर्गिक देवराज इन्द्र का साम्राज्य नहीं चाहिए। **2271**
पिन्नाल् अरु नरगम्* शेरामल् पेदुरुवीर्* मुन्नाल् वणङ्ग मुयल्मिनो* पल् नूल् अळन्दानै* क्कार् क्कडल् शूळ् ञालत्तै* एल्लाम् अळन्दान् अवन् शेवडि ॥९१॥	मूर्खो ! ऐसा न हो कि इस जीवन के बाद नरकगामी होना पड़े। जबतक जीवित हो प्रभु के चरणारविंद की पूजा करना सीखो। आपने धरा एवं सागर को माप दिया। सभी शास्त्र आपको सार्वभौम कहते हैं। **2272**

अडियाल् मुन् कञ्जनै च्चॅट्टु⋆ अमरर् एत्तुम् पडियान्⋆ कॅाडिमेल् पुळ् कॅाण्डान्⋆ नॅडियान् तन् नाममे⋆ एत्तुमिन्गाळ् एत्तिनाल्⋆ ताम् वेण्डुम् काममे⋆ काट्टुम् कडिदु॥१२॥	प्रभु ने कंस को चकनाचूर कर उसका अंत कर दिया एवं आप देवों से पूजित हैं।आप गरूड़ध्वज वाले हैं। सतत आपके दिव्य नाम का जप कर। इतना छोटा सा काम करने पर आप हमारे सभी इच्छाओं की शीघ्र तथा सुलभता से पूर्ति करते हैं। **2273**
कडिदु कॅाडु नरगम्⋆ पिर्कालुम् शॅय्दै⋆ कॅाडिदॅन्रदु कूडा मुन्नम्⋆ वडि शङ्गम् कॅाण्डानै⋆ क्कून्दल् वाय् कीण्डानै⋆ कॅाङ्गै नं– जुण्डानै⋆ एत्तुमिनो उट्टु॥१३॥	आसानी से प्राप्त होने वाला नरक भयानक है तथा उसके बाद जो मिलता है वह ज्यादा डरावना है। इसके पहले कि यह हो जाये प्रभु की पूजा करो जो शंख धारण करते हैं तथा जिन्होंने केशिन घोड़ा का अंत किया और राक्षसी के विषैले स्तन का प्रेम से पान किया। **2274**
उट्टु वणङ्गि⋆ तॅाळुमिन् उलगेळुम्⋆ मुट्टुम् विळुङ्गुम् मुगिल् वण्णम्⋆ पट्टि प्पॅारुन्दादान् मार्विडन्दु⋆ पूम् पाडगत्तुळ् इरुन्दानै⋆ एत्तुम् एन् नॅञ्जु॥१४॥	प्रेम से पूजा करो। मेघ के वर्ण वाले प्रभु ने सातों लोकों को निगल लिया तथा स्वच्छंद हिरण्य की छाती को नष्ट कर दिया। आप पडकम के सुन्दर नगर में रहते हैं। मैं हृदय से आपकी प्रशस्ति गाता हूं। **2275**
एन् नॅञ्जम् मेयान्⋆ एन् शॅन्नियान्⋆ तान् अवनै वल् नॅञ्जम्⋆ कीण्ड मणि वण्णन्⋆ मुन्नम् शेय् ऊळियान्⋆ ऊळि पॅयर्त्तान्⋆ उलगेत्तुम् आळियान्⋆ अत्तियूरान्॥१५॥	हमारे हृदय के स्थायी निवासी अपना श्रीचरण हमारे सिर पर रखे हुए हैं। आप मणिवर्ण वदन के हैं और आपने असुर की छाती को नष्ट कर दिया। प्रलय एवं सृष्टि के प्रथम कारण, चक्रधारी प्रभु, अत्तियूर कांची के निवासी हैं। **2276**
अत्तियूरान्⋆ पुळ्ळै ऊर्वान्⋆ अणि मणियिन् तुत्ति शेर्⋆ नागत्तिन् मेल् तुयिल्वान्⋆ मुत्ती मरै आवान्⋆ मा कडल् नञ्जुण्डान् तनक्कुम्⋆ इरै आवान् एङ्गळ् पिरान्॥१६॥	अत्तियूर कांची के प्रभु पच्छी की सवारी करते हैं। आप सुन्दर नाग पर सोते हैं जिसके फन में ज्योतिर्मय मणि जड़े हैं। आप मुक्ति के मार्ग हैं। आप नीलविषकंठ शिव के स्वामी है तथा हमारे स्वामी हैं। **2277**
एङ्गळ् पॅरुमान्⋆ इमैयोर् तलैमगन् ! नी⋆ शॅङ्गण् नॅडुमाल् तिरुमार्वा⋆ पॅाङ्गु पड मूक्किन् आयिर वाय्⋆ प्पाम्बणै मेल् शेर्न्दाय्⋆ कुडमूक्किल् कोयिला क्कॅाण्डु॥१७॥	प्रभु ! आप देवों के सम्राट हैं। कमलनिवासिनी लक्ष्मी को वक्षस्थल पर रखने वाले शंकनमाल आप हजार फन वाले नाग पर शयन करते हैं। आप कुडन्दै के मन्दिर में रहते हैं। **2278**
कॅाण्डु वळर्क्क⋆ क्कुळवियाय् त्तान् वळर्न्ददु⋆ उण्डदुलगेळुम् उळ्ळॅाडुङ्ग⋆ कॅाण्डु कुडम् आडि⋆ क्कोवलनाय् मेवि⋆ एन् नॅञ्जम् इडमाग क्कॅाण्ड इरै॥१८॥	मेरे स्वामी गोपवधू यशोदा से गोपकिशोर के रूप में पाले पोसे गये। पात्रों के साथ नृत्य कर आपने सब के हृदय को जीत लिया। आप सातों लोकों को निगल गये। आप हमारे हृदय में बसते हैं। **2279**
इरै एम् पॅरुमान् अरुळ् एन्रु⋆ इमैयोर् मुरै निन्रु⋆ मॅाय्म् मलर्गळ् तूव⋆ अरै कळल शेवडियान्⋆ शॅङ्गण् नॅडियान्⋆ कुरळ् उरुवाय् मावडिविल्⋆ मण् कॅाण्डान् माल्॥१९॥	आपकी फूलों से पूजा कर तथा आपका दयापात्र बनने के लिये सदा से देवगन धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं। मेरे स्नेह ! रूनझुन नूपुर बजते पादारविंद के साथ आप सुन्दर राजीवनयन वामन बन कर आये और मावली से धरा ले ली। **2280**

माले !⋆ नेंडियाने !⋆ कण्णने⋆ विण्णवर्क्कु मेला !⋆ वियन् तुळाय् क्कण्णियने⋆ मेलाल् विळविन् काय्⋆ कन्ऱिनाल् वीऴ्त्तवने⋆ एन्ऱन् अळवन्ऱाल्⋆ यानुडैय अन्बु॥१००॥	मेरे स्नेह ! मेरे प्राचीन नाथ ! मेरे कृष्ण ! सभी स्वर्गिकों के नाथ ! नूतन तुलसी की माला पहने प्रभु ! ताड़वृक्ष को बछड़े की मार से धराशायी करने वाले प्रभु ! ओह ! मैं अपने स्नेह को रोक नहीं सकता। **2281** **भूदत्ताळवार तिरूवडिगले शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

मूऩ्ऱाम् तिरूवन्दादि (2282 – 2381)

कुरूगै कावलप्पन् अरूळिच्चेय्द तनियन्

शीरारुम् माड त्तिरुक्कोवलूर् अदनुळ्★
कारार् करुमुगिलै क्काणप्पुक्कु – ओरा
त्तिरुक्कण्डेन् एन्ऱुरैत्त शीरान् कळले★
उरैक्कण्डाय् नॆञ्जे ! उगन्दु

तिरु क्कण्डेन्★ पॊन् मेनि कण्डेन्★ तिगळुम् अरुक्कन् अणि निऱमुम् कण्डेन्★ शॆरु क्किळरुम् पॊन् आळि कण्डेन्★ पुरि शङ्गम् कै क्कण्डेन्★ एन् आळि वण्णन्बाल् इन्ऱु॥१॥	आज हमने कमल निवासिनी को सागर सा सलोने प्रभु के वदन पर देखा है। प्रभु अपने हाथों में ज्वालामय चक्र तथा दक्षिणावर्त शंख धारण करते हैं। आपकी आभा सुनहले सूर्य के समान है। **2282**
इन्ऱे कळल् कण्डेन्★ एळ् पिऱप्पुम् यान् अऱुत्तेन्★ पॊन् तोय् वरै मार्बिल् पून् तुळाय्★ अन्ऱु तिरु क्कण्डु कॊण्ड★ तिरुमाले★ उन्नै मरुक्कण्डु कॊण्डेन् मनम्॥२॥	श्रीपति ! रत्नों से आभूषित आपका वक्षस्थल पुरा काल में श्रीदेवी की तुलसी माला को धारण किया। आपके स्नेह से उत्प्लावित हमारा हृदय आपके चरणारविंद का आश्रय लेता है। अब हमारे सात जन्मों का अंत हो गया। **2283**
मनत्तुळ्ळान्★ मा कडल् नीर् उळ्ळान्★ मलराळ् तनत्तुळ्ळान्★ तण् तुळाय् मार्बन्★ शिनत्तु च्चॆरुनर् उग च्चॆट्रुगन्द★ तेङ्गोद वण्णन्★ वरु नरगम् तीर्क्कुम् मरुन्दु॥३॥	गुस्सैल असुरों का हर्षित मन से नाश करने वाले प्रभु हमारे हृदय में कर्म से मिलने वाले नरक से बचने की औषधी के रूप में निवास करते हैं। सागर सा सलोने प्रभु सागर में रहते हैं तथा तुलसी धारण करने वाले प्रभु कमल निवासिनी लक्ष्मी के हृदय में बसते हैं। **2284**
मरुन्दुम् पॊरुळुम्★ अमुदमुम् ताने★ तिरुन्दिय शॆङ्गण् माल् आङ्गे★ पॊरुन्दियुम् निन्ऱुलगम् उण्डुमिळन्दुम्★ नीर् एट्रु मूवडियाल्★ अन्ऱुलगम् तायोन् अडि॥४॥	राजीव नयन प्रभु स्वयं ही औषधि हैं, इसकी आरोगिनी शक्ति हैं, तथा मधुर कुशलता हैं। आपने ब्रह्मांड को बनाया, निगला, एवं पुनः उसका निर्माण किया, तथा तीन पग जमीन का उपहार प्राप्त कर इसको माप डाला। **2285**
अडि वण्णम् तामरै★ अन्ऱुलगम् तायोन्★ पडि वण्णम् पार् क्कडल्★ नीर् वण्णम्★ मुडि वण्णम् ओर् आळि वॆय्योन्★ ऒळियुम् अगतन्ऱे★ आर् आळि कॊण्डार्कॆळगु॥५॥	धरा को मापने वाले चरण कमल के रंग के हैं। आपका वदन सागर के रंग का है। आपका किरीट सूर्य की तरह प्रकाशमय है तथा चक्र भी सूर्य की तरह है। क्या आपकी सुन्दरता तुलना से परे नहीं है ? **2286**

अऴगन्ऱे आऴियार्कु⋆ आऴि नीर् वण्णम्⋆ अऴगन्ऱे अण्डम् कडत्तल्⋆ अऴगन्ऱे अङ्ग नीर् एट्रार्कु⋆ अलर् मेलोन् काल् कऴुव⋆ गङ्ग नीर् कान्ऱ कऴल्॥६॥	क्या चक्रधारी प्रभु का गहरे सागर सा सलोना रंग सुन्दर नहीं है ? जब जमीन का उपहार मिला तो आप उठे और पूर्ण आकाश में फैल गये। फूल से उत्पन्न ब्रह्मा ने आपके चरण को जल से धोया जिससे गंगा निकली। क्या यह सुन्दर नहीं था ? **2287**
कऴल् तॊऴुदुम् वा नॆञ्जे !⋆ कार् क्कडल् नीर् वेलै⋆ पॊऴिल् अळन्द पुळ् ऊर्ति च्चॆल्वन्⋆ एऴिल् अळन्द- ग्गॆण्णर्करियानै⋆ ए प्पॊरुट्कुम् शेयानै⋆ नण्णर्करियानै नाम्॥७॥	वर्णनातीत सौंदर्य वाले प्रभु सबों से दूर हैं तथा पहुंच के बाहर हैं। आपने सागर परिवृत्त पृथ्वी को मापा। आप गरूड़ पक्षी की सवारी करते हैं। आप संपन्नता वाली लक्ष्मी के पति हैं। आओ मन ! हम आपके चरणों की पूजा करें। **2288**
नामम् पल शॊल्लि⋆ नारायणा एन्ऱु⋆ नाम् अङ्गियाल् तॊऴुदुम् नल् नॆञ्जे ! वा⋆ मरुवि मण्णुलगम् उण्डुमिऴन्द⋆ वण्डरैयुम् तण् तुऴाय्⋆ कण्णनैये काण्ग नम् कण्॥८॥	आओ मन ! नारायण एवं अन्य नामों के साथ हम आपकी स्नेहपूर्ण प्रशस्ति गायें। मधुमक्खी मंड़राते तुलसी माला पहने कृष्ण ने पृथ्वी को निगल लिया तथा पुनः बना दिया। हमारी आंखें आपके स्वरूप को देखकर खुशी मनायें।**2289**
कण्णुम् कमलम्⋆ कमलमे कैत्तलमुम्⋆ मण अळन्द पादमम मटवैये⋆ एण्णिल करुमा मुगिल् वण्णन्⋆ कार् क्कडल् नीर् वण्णन्⋆ तिरुमामणि वण्णन् तेशु॥९॥	आपके स्वरूप का रंग मेघ, गहरे सागर, तथा रत्नपर्वत जैसा है। आपकी आंखें, हाथ, एवं चरण सभी कमल के समान हैं। ऐसी वस्तु स्थिति कोई सोच सकता है क्या ? **2290**
तेशुम् तिऱलुम्⋆ तिरुवुम् उरुवमुम्⋆ माशिल् कुडिप्पिऱप्पुम्⋆ मट्वैयुम् पेशिल्⋆ वलम् पुरिन्द वान् शङ्गम्⋆ कॊण्डान् पेर् ओद⋆ नलम् पुरिन्दु शॆन्ऱडैयुम् नन्गु॥१०॥	वास्तविकता है कि आपके बायें हाथ में दक्षिणावर्त शंख है। बल, आभा, धन, सौंदर्य, ऊच्च कुल एवं सब कुछ प्रभु के नाम के स्मरण से स्वयं मिल जाते हैं। **2291**
नन्गोदुम्⋆ नाल् वेदत्तुळ्ळान्⋆ नऱविरियुम् पॊङ्गोदरुवि प्पुनल् वण्णन्⋆ शङ्गोद प्पार्कडलान्⋆ पाम्पणैयिन् मेलान्⋆ पयिन्ऱरैप्पार् नूऱ् कडलान् नुण् अऱिविनान्॥११॥	प्रभु वेदों के वस्तु तथ्य हैं। आप मधु से मृदुतर पर्वत के झरना हैं। गहरे सागर के रंग आप ही हैं। आप क्षीरसागर में शेष शायी हैं। आप विद्वत्जनों के लिये ज्ञान के सागर हैं। आप सूक्ष्म ज्ञान हैं। **2292**
अऱिवॆन्नुम् ताळ् कॊळुवि⋆ ऐम्पुलनुम् तम्मिल्⋆ शॆऱिवॆन्नुम् तिण् कदवम् शॆम्मि⋆ मऱै एन्ऱम् नन्गोदि⋆ नन्गुणर्वार् काण्बरे⋆ नाळ्दोऱुम् पैङ्गोद वण्णन् पडि॥१२॥	सूक्ष्म ज्ञान क्या है ? इन्द्रियों के दरवाजों को बन्द कर उस पर विवेक का ताला लगा दो। रहस्य ग्रंथों का बार बार अध्ययन कर उनके अर्थ को समझो। शनैः शनैः सागर सा सलोने प्रभु का योग के माध्यम से साक्षात्कार हो जायेगा। **2293**
पडि वट्ट त्तामरै⋆ पण्डुलगम् नीर् एट्टु⋆ अडि वट्टत्ताल् अळप्प⋆ नीण्ड मुडि वट्टम्⋆ आगायम् ऊडऱुत्तु⋆ अण्डम् पोय् नीण्डदे⋆ मा कायमाय् निन्ऱ मार्कु॥१३॥	योग के प्रभु ने पुराकाल में जमीन का उपहार पाया एवं अपना विस्तार कर सारी पृथ्वी को माप लिये। आपका मुकुट आकाश को चीरते हुए ब्रह्मांड के बाहर चला गया। **2294**

मार्पाल् मनम् शुळिप्प⋆ मङ्गैयर् तोळ् कैविट्टु⋆ नूर्पाल्⋆ मनम् वैक्क नोय्विदाम्⋆ नाल् पाल वेदत्तान् वेङ्गडत्तान्⋆ विण्णोर् मुडिदोयुम्⋆ पादत्तान् पादम् पणिन्दु॥१४॥	अगर नारियों के बाहुपाश से अपने को मुक्त कर लो तो रहस्य ग्रथों का अध्ययन एवं समझना आसान हो जायेगा। अपना मन प्रभु पर लगाओ। प्रभु ही चारो वेद हैं एवं वेंकटम के निवासी हैं और स्वर्गिक जन आपके चरणों की पूजा करते हैं। आपको सिर नवाओ। **2295**
पणिन्दुयरन्द पौव⋆ प्पडु तिरैगळ् मोद⋆ पणिन्द पणि मणिगळाले अणिन्दु⋆ अं- गनन्दन् अणै⋆ क्किडक्कुम् अम्मान्⋆ अडियेन् मनन्दन् अणै क्किडक्कुम् वन्दु॥१५॥	तरंगों वाले गहरे सागर में हजार फन एवं लाल रत्न सी आंखों के कुंडली मारे नाग पर शयन करने वाले प्रभु हमारे नीच एवं चंचल हृदय में शयन करने आये हैं। कितना आश्चर्य ! **2296**
वन्दुदैत्त वॆण् तिरैगळ्⋆ शॆम् पवळ वॆण् मुत्तम्⋆ अन्दि विळक्कुम् अणि विळक्काम्⋆ एन्दै ऑरुवल्लि त्तामरैयाळ्⋆ ऑन्ऱिय शीर् मार्वन्⋆ तिरुवल्लिक्केणियान् शॆन्ऱु॥१६॥	कूदती तटीय लहरों के तिरूवल्लिकेणी में कमलनिवासिनी लक्ष्मी को वक्षस्थल पर धारण किये हमारे नाथ निवास करने आये हैं जहां सागर तट पर लहरें मोती एवं मूंगा एकत्र करती हैं जो संध्या की अरूणिमा एवं दीप के समान प्रकाशमान हैं। **2297**
शॆन्ऱ नाळ् शॆल्लाद⋆ शॆङ्गण् माल् एङ्गळ् माल्⋆ एन्ऱ नाळ् एन् नाळुम् नाळ् आगुम्⋆ एन्ऱुम् इऱवाद एन्दै⋆ इणै अडिक्के आळाय्⋆ मऱवादु वाळ्त्तुग एन् वाय्॥१७॥	इस दास की जिह्वा पूज्य शेंकणमाल प्रभु के पादारविंद की प्रशस्ति विना अवरोध के करती रहें।बीते हुए दिन आने वाले दिन एवं अन्य सब दिन शुभ हो जायेंगे। **2298**
वाय् मॊळिन्दु वामननाय्⋆ मावलिबाल्⋆ मूवडि मण् नी अळन्दु कॊण्ड⋆ नॆडुमाले⋆ ताविय निन् एञ्जा इणै अडिक्के⋆ एळ् पिऱप्पुम् आळागि⋆ अञ्जादिरुक्क अरुळ्॥१८॥	अहा ! कितना अच्छा दिन था जब आपने वामन के रूप में मावली से तीन पग भूमि की भिक्षा मांगी एवं धरा को माप लिया। सात जन्मों तक आपके चरण की सेवा की हमें अनुमति प्रदान करें तथा हमें निर्भय कर दें। हे ऊंचे विस्तृत प्रभु ! **2299**
अरुळादॊळियुमे⋆ आल् इलैमेल्⋆ अन्ऱु तॆरुळाद⋆ पिळ्ळैयाय् च्चेरन्दान्⋆ इरुळाद शिन्दैयराय् च्चेवडिक्के⋆ शॆम् मलर् तूय् क्कै तॊळुदु⋆ मुन्दैयराय् निर्पार्क्कु मुन्॥१९॥	सातों लोकों को निगल कर शिशु की तरह सोने वाले प्रभु कभी भी दया से वंचित नहीं करेंगे। लेकिन जो लोग विश्वास पूर्वक शांत चित्त हो प्रभु के चरणों में नूतन फूल करबद्ध होकर चढ़ाते हैं वे ही पहले दया पाने के अधिकारी होंगे।**2300**
मुन् उलगम्⋆ उण्डुमिळ्न्दायक्कु⋆ अव्वुलगम् ईर् अडियाल्⋆ पिन् अळन्दु कोडल् पॆरिदॊन्ऱे⋆ एन्ने तिरुमाले !⋆ शॆङ्गण् नॆडियाने⋆ एङ्गळ् पॆरुमाने ! नी इदनै प्पेशु॥२०॥	प्रथम कारण प्रभु के लिये जिन्होंने धरा को निगल कर फिर से बना दिया क्या यह कोई बड़ा आश्चर्य होगा कि वे आकर दो कदमों में इसे माप डालें ? हे शंकणमाल ! हे तिरूमल ! आप ही बताइये। **2301**

पेशुवार्⋆ एव्वळवु पेशुवर्⋆ अव्वळवे वाश मलर् त्तुळाय् मालैयान्⋆ तेशुडैय शक्करत्तान्⋆ शङ्गिनान् शारङ्गत्तान्⋆ पॊङ्गरव वक्करनै क्कॊन्ऱान् वडिवु॥२१॥	बड़बोला दंतबक्र का नाश करने वाले, चक्र, शंख, शारंग धनुष एवं सुगंधित तुलसी की माला धारण करने वाले प्रभु की गाथा का कोई अंत पा सकता है क्या ? **2302**
वडिवार् मुडि कोट्टि⋆ वानवर्गळ्⋆ नाळुम् कडियार् मलर् तूवि⋆ क्काणुम् पडियानै⋆ शॆम्मैयाल् उळ् उरुगि⋆ च्चॆव्वने नॆञ्जमे⋆ मॆय्म्मैये काण विरुम्बु॥२२॥	हे मन ! हम कहते हैं कि किरीटधारी स्वर्गिकजन प्रभु के चरणों पर सिर रखकर नूतन पुष्प दर्शन प्राप्त करने के उद्देश्य से चढ़ाते हैं। तू भी यही कर।उत्कट इच्छा से द्रवित हो आपके वास्तविक स्वरूप का दर्शन प्राप्त कर। **2303**
विरुम्बि विण् मण् अळन्द⋆ अञ्जिऱैय वण्डार्⋆ शुरुम्बु तॊळैयिल् शॆन्ऱद⋆ अरुम्बुम् पुनन् तुळाय् मालैयान्⋆ पॊन् अम् कळऱ्के⋆ मनम् तुळाय् मालाय् वरुम्॥२३॥	प्रभु शीतल तुलसी की माला पहनते हैं जो नर एवं मादा मधुमक्खी से लिपटे हैं तथा फूलों में मधुमक्खियां बन्द हैं। आपके दिव्य चरणों ने धरा एवं गगन को माप दिया। शीघ्र ही मेरा मन आपके चरणों के पास मंड़राने के लिये सीख जायेगा। **2304**
वरुङ्गाल् इरु निलनुम्⋆ माल् विशुम्बुम् काट्रुम्⋆ नॆरुङ्गु ती⋆ नीर् उरुवुम् आनान्⋆ पॊरुन्दुम् शुडर् आऴि ऒन्ऱुडैयान्⋆ शूऴ् कळल्⋆ नाळुम् तॊडर् आऴि⋆ नॆञ्जे ! तॊऴुदु॥२४॥	हे मन ! चक्रधारी प्रभु के पूज्य पादारविंद शीघ्र ही पृथ्वी आकाश जल अग्नि एवं वायु रूपी मौलिक तत्वों में मिल जायेंगे। लेकिन पूजा से श्रीचरणों का अनुगमन करो। **2305**
तॊऴुदाल् पऴुदुण्डे⋆ तू नीर् उलगम्⋆ मुऴुदुण्डु मॊय् कुऴलाळ् आय्च्चि⋆ विऴुदुण्ड वायानै⋆ माल् विडै एऴ् शॆट्रानै⋆ वानवर्क्कुम् शेयानै⋆ नॆञ्जे ! शिऱन्दु॥२५॥	हे मन ! पूजा से कोई क्षति नहीं होगी। ब्रह्मांड को निगलने वाले शिशु ही जूड़ावाली गोपनारी के मक्खन खा गये, सात वृषभों का अंत कर दिया, तथा देवों के लिये दुर्लभ हो गये। **2306**
शिऱन्द एन् शिन्दैयुम् शॆङ्गण् अरवुम्⋆ निऱैन्द शीर् नीळ् कच्चि उळ्ळुम्⋆ उऱैन्ददुवुम् वेङ्गडमुम् वॆग्कावुम्⋆ वेळुक्कै प्पाडियुमे⋆ ताम् कडवार् तण् तुळायार्॥२६॥	देवों के प्रभु जो हमारे हृदय एवं शेषशय्या का त्याग नहीं करते तुलसी की माला धारण करते हैं। आप पावन वेंकटम तथा आनंद का नगर कांची के वेग्का एवं वेलुक्कै में रहते हैं। **2307**
आरे तुयर् उऴन्दार्⋆ तुन्पुट्रार् आण्डैयार्⋆ कारे मलिन्द करुङ्गडलै⋆ नेरे कडैन्दानै⋆ क्कारणनै नीर् अणैमेल्⋆ पळ्ळि अडैन्दानै नाळुम् अडैन्दु॥२७॥	आनंद से रहित इस संसार में कौन ऐसा है जो नित्य उस प्रभु की पूजा कर दुःख से मुक्त न हुआ हो जिन्होंने सागर का मंथन किया और जो सबों के कारण हैं तथा सागर में शयन करते हैं। **2308**
अडैन्ददरवणैमेल्⋆ ऐवरक्काय्⋆ अन्ऱु मिडैन्ददु⋆ बारद वॆम् पोर्⋆ उडैन्ददुवुम् आय्च्चि पाल् मत्तुक्के⋆ अम्मने वाळ् एयिट्रु⋆ पेय्च्चि पाल् उण्ड पिरान्॥२८॥	क्या संसार इस आश्चर्य को समझ सकता है ? गहरे सागर मे शयन करने वाले प्रभु ने चमत्कारी शिशु के रूप में राक्षसी का अंत किया। आपने घोर भारत युद्ध का संचालन कर बलशाली राजाओं का अंत किया। और फिर भी जब मां ने मक्खन चुराने के लिये मथानी वाले डंडे से धमकाया तो डर कर सिर नवा लिये। **2309**

पेय्च्चि पाल् उण्ड⋆ पॆरुमानै प्पेर्न्दॆडुत्तु⋆ आय्च्चि मुलै कॊडुत्ताळ् अञ्जादे⋆ वाय्त्त इरुळ् आर् तिरुमेनि⋆ इन् पवळ च्चॆव्वाय्⋆ तॆरुळा मॊऴियानै च्चेर्न्दु ॥ २९ ॥	तब भी आपको उठाकर मां ने मधुर स्तन का पान कराया तथा इस बात से बिल्कुल नहीं घबरायी कि आपने राक्षसी का अंत किया है। उसके लिये आप एक लाल मुक्ता से होठ वाले अस्पष्ट तोतली बातें बोलते श्यामल शिशु हैं। **2310**
शेर्न्द तिरुमाल्⋆ कडल् कुडन्दै वेङ्गडम्⋆ नेर्न्द एन् शिन्दै निऱै विशुम्बु⋆ वाय्न्द मऱै पाडगम् अनन्दन्⋆ वण् तुऴाय् क्कण्णि⋆ इऱैपाडि आय इवै ॥ ३० ॥	हम भी आपको देखकर आनंद लेते हैं। आप वेंकटम, कुडन्दै, पडकम एवं बहुतों के हृदय में बसते हैं। आप श्रीपति हैं। आप सागर में शेषशायी हैं। आप वेदों के प्रभु तथा सभी स्वर्गिकों के देव हैं। आप तुलसी की माला वाले प्रभु हैं। **2311**
इवै अवन् कोयिल्⋆ इरणियनदागम्⋆ अवै शॆय्द अरि उरुवम् आनान्⋆ शॆवि तॆरिया नागत्तान्⋆ नाल् वेदत्तुळ्ळान्⋆ नऱवेऱ्ऱान्⋆ पागत्तान् पाऱ्कडल् उळान् ॥ ३१ ॥	हिरण्य का घर भी आपका पावन आवास हो गया जब आप नरसिंह के रूप में आकर उसकी छाती चीर डाले। आप वेदों के प्रभु हैं। आप सागर में शेषशायी हैं। आप वृषवाही शिव को अपने स्वरूप पर धारण करते हैं। **2312**
पाऱ्कडलुम् वेङ्गडमुम्⋆ पाम्बुम् पनि विशुम्बुम्⋆ नूल् कडलुम् नुण् नूल तामरै मेल्⋆ पाऱ्– ट्टिरुन्दार् मनमुम्⋆ इडमाग क्कॊण्डान्⋆ कुरुन्दॊशित्त गोपालकन् ॥ ३२ ॥	वेंकटम में रहने वाले प्रभु ने कृष्ण के रूप में कुरून्दु वृक्ष का नाश किया और अभी भी आप सागर में, वैकुंठ में, वेदों में तथा सच्चे वैदिक ऋषियों के हृदय में रहते हैं। **2313**
पालकनाय्⋆ आल् इलैमेल् पैय⋆ उलगॆल्लाम् मेल् ऒरुनाळ्⋆ उण्डवने मॆय्म्मैये⋆ मालवने मन्दरत्ताल्⋆ मा नीर् क्कडल् कडैन्दु⋆ वान् अमुदम् अन्दरत्तार्क्कीन्दाय् नी अन्ऱु ॥ ३३ ॥	सच्चे प्रभु पुराकाल में सभी लोकों को निगल गये एवं तब एक शिशु के रूप में जल में तैरते बट पत्र पर सो गये। पूज्य प्रभु ! आपने समुद्र मंथन एक पर्वत से किया तथा देवों को आकाश में अमृत प्रदान किया। **2314**
अन्ऱिव् उलगम्⋆ अळन्द अशैवेगॊल्⋆ निन्ऱिरुन्दु वेळुक्कै नीळ् नगर्वाय्⋆ अन्ऱु किडन्दानै⋆ क्केडिल् शीरानै⋆ मुन् कञ्जै कडन्दानै⋆ नॆञ्जमे ! काण् ॥ ३४ ॥	आपके चरण जो आकाश में फैल गये थे क्या वे थक गये थे ? हे मन ! देखो, प्रभु वेलुक्कै (कांची) में बैठे हैं, तथा वेग्का (कांची) में सोये हैं। आपका ध्यान करो। आप ही कंस के नाश करने वाले हैं। **2315**
काण् काण् एन⋆ विरुम्बुम् कण्गळ्⋆ कदिर् इलगु पूण्डार् अगलत्तान् पॊन् मेनि⋆ पाण् कण् तॊऴिल् पाडि⋆ वण्डऱैयुम् तॊङ्गलान्⋆ शॆम् पॊन् कऴल् पाडि⋆ याम् तॊऴुदुम् कै ॥ ३५ ॥	विस्तृत वक्षस्थल पर प्रभु जाजवल्यमान हार पहनते हैं। हमारी आंखें आतुर हैं 'अहा ! देखो, देखो'। आपके तुलसी माला पर लटकने वाले मधुमक्खी सुन्दर पान धुन में आपकी प्रशस्ति गाते हैं। मेरा मन भी उनलोगों की तरह गाना चाहता है तथा हाथ आपके चरणों की पूजा करना चाहते हैं। **2316**

कैय कनल् आळि⋆ कार् क्कडल् वाय् वॅण् शङ्गम्⋆ वॅय्य कदै शारङ्गम् वॅम् शुडर् वाळ्⋆ शॅय्य पडै परवै पाळि⋆ पनि नीर् उलगम्⋆ अडि अळन्द मायन् अवर्कु॥ ३६ ॥	जब आश्चर्य मय प्रभु के पाद ने धरा को मापा तब आपके दिव्य अस्त्र आग्नेय चक्र, श्वेत शंख, भारी गदा, एवं काला धनुष, तथा चमकता खड्ग, सब आपके साथ बड़े आकार के हो गये। यहां तक कि सागर में आपका शय्या भी आपके साथ बड़ा हो गया। **2317**
अवर्कडिमै प्पट्टेन्⋆ अगत्तान् पुऱत्तान्⋆ उवरक्कुम् करुङ्गडल् नीर् उळ्ळान्⋆ तुवरक्कुम् पवळ वाय् प्पूमगळुम्⋆ पल् मणि पूण् आरम्⋆ तिगळुम् तिरुमार्बन् तान्॥ ३७ ॥	प्रभु का वक्षस्थल मुक्ता समान लाल होठ वाली कमलनिवासिनी लक्ष्मी का वास स्थान है। आप अनेक आभूषण एवं अनेक हार पहनते हैं। आप गहरे सागर तथा बाह्य आकाश में रहते हैं। आप हमारे गहरे हृदय में बैठे हैं और हम आपके सेवक दास हैं। **2318**
ताने तनक्कुवमन्⋆ तन् उरुवे एव् उरुवुम्⋆ ताने तव उरुवुम् तारगैयुम्⋆ ताने एरि शुडरुम् माल् वरैयुम्⋆ एण् दिशैयुम्⋆ अण्ड– त्तिरु शुडरु माय इऱै॥ ३८ ॥	सभी स्थित बस्तु आप हीं हैं। तपस्वी ऋषिगन, तारागन, प्रज्वलित अग्नि, पर्वत, आठों दिशायें, युगल ज्योति पुंज सब आप हीं हैं। आप अकेले नाथ हैं, एवं अपनी बराबरी स्वयं हैं। **2319**
इऱै आय् निल्न् आगि⋆ एण् दिशैयुम् तानाय्⋆ मऱैयाय् मऱै प्पॊरुळाय् वानाय्⋆ पिऱै वाय्न्द वॅळ्ळत्तरुवि⋆ विळङ्गॊलि नीर् वेङ्गडत्तान्⋆ उळ्ळत्तिन् उळ्ळे उळन्॥ ३९ ॥	प्रभु पृथ्वी, आठ दिशायें, वेद, वेद के सार, एवं ऊंचे वेंकटम के स्वामी हो गये जहां पहाड़ी नाले तेजी से प्रवाहित होते हैं। आप हमारे हृदय में रहते हैं। **2320**
उळन् कण्डाय् नल् नॅञ्जे !⋆ उत्तमन् एन्ऱुम् उळन् कण्डाय्⋆ उळ्ळुवार् उळ्ळत्तुळन् कण्डाय्⋆ विण् ऑडुङ्ग क्कोडुयरुम्⋆ वीङ्गरुवि वेङ्गडत्तान्⋆ मण् ऑडुङ्ग त्तान् अळन्द मन्॥ ४० ॥	हे मेरे नेक मन ! यह जान लो कि प्रभु संप्रति तथा निरंतर वर्तमान रहते हैं। प्रभु जो ऊंचे गगनचुंबी वेंकटम के पर्वत पर रहते हैं एवं जो पृथ्वी के मापने के लिये ऊंचे उठे वे भक्तों के हृदय में भूत वर्तमान तथा सतत बने रहते हैं। **2321**
मन्नु मणि मुडि नीण्डु⋆ अण्डम् पोय् एण् दिशैयुम्⋆ तुन्नु पॉळिल् अनैत्तुम् शूळ् कळल्⋆ मिन्नै उडैयाग क्कॉण्डु⋆ अन्ऱुलगळन्दान्⋆ कुन्ऱम् कुडैयाग⋆ आगात्त को॥ ४१ ॥	पुरा काल में प्रभु ऊंचे उठकर आकाश छेद कर पार हो गये। आपका आभूषित मुकुट आकाश छू रहा था तो आप के पाद पृथ्वी मापते हुए आठों दिशाओं में फैल गये थे। आप वही हैं जो गायों की रक्षा के लिये पर्वत उठा रखे थे। **2322**
कोवल्नाय्⋆ आ निरैगळ् मेय्त्तु क्कुळल् ऊदि⋆ मा वल्नाय् क्कीण्ड मणि वण्णन्⋆ मेवि अरि उरुवम् आगि⋆ इरणियनदागम्⋆ तॅरि उगिराल् कीण्डान् शिनम्॥ ४२ ॥	गोपकिशोर प्रभु गायों को चराते हुए बांसुरी बजाये। मणिवर्ण वाले प्रभु ने केशिन घोड़ा का बध किया। आपने एक भयानक रूप धारण कर हिरण्य की छाती अपने नखों से फाड़ दिया। आपका गुस्सा सर्व विदित है। **2323**
शिन मा मद कळिऱ्ऱिन्⋆ तिण् मरुप्पै च्चाय्त्तु⋆ पुन मेय बूमि अदनै⋆ तनमाग प्पेर् अगलत्तुळ्ळॊडुक्कुम्⋆ पेर् आर मार्वनार्⋆ ओर् अगलत्तुळ्ळदुलगु॥ ४३ ॥	गुस्सैल कुवलयापीड हाथी अपना दांत गंवा कर जान भी गंवा बैठा। भू देवी तुलसी माला से सुशोभित आपके वक्षस्थल के एक हिस्से पर विराजमान रहती हैं। सारे जगत को प्रभु अपने में समाहित कर प्रलय से रक्षा प्रदान करते हैं। **2324**

उत्लगमुम्⋆ ऊळियुम् आळियुम्⋆ ऑण् केळ् अत्लर् कदिरुम्⋆ शॅन्दीयुम् आवान्⋆ पत्ल कदिर्गळ् पारित्त⋆ पैम् पॅान् मुडियान् अडि इणैक्के⋆ पूरित्तॅन् नॅञ्जे पुरि॥ ८८॥	प्रभु हीं प्रलय, सृष्टि, सागर, ज्योर्तिमय सूर्य, एवं अग्नि हैं। आप अनेक वर्ण के रत्नों से जड़ित सुनहला मुकुट पहनते हैं। हे मन ! स्नेहपूर्वक प्रभु के पादारविंद की पूजा करो। **2325**
पुरिन्दु मद वेळम्⋆ मा प्पिडियोडूडि⋆ तिरिन्दु शिनत्ताल् पॅारुदु⋆ विरिन्द शीर् वॅण् कोट्टु मुत्तुदिर्क्कुम्⋆ वेङ्गडमे⋆ मेल् ऑरुनाळ् मण् कोट्टु⋆ क्कॅाण्डान् मलै॥ ८५॥	पुरा काल में वराह के रूप में धरा को अपने दसनों पर उठाने वाले प्रभु वेंकटम में विराजमान हैं जहां नर हाथी एवं मादा हाथी साथ रहते हैं एवं फिर विछुड़ कर गुस्से में वेग से कूदते हुए अपने दांत से मिट्टी खोदकर मोती विखेरते हैं। **2326**
मलै मुगडु मेल् वैत्तु⋆ वाशुगियै च्चुट्रि⋆ तलै मुगडु तान् ऑरु कै पट्रि⋆ अलै मुगट्टु अण्डम् पोय् नीर् तॅरिप्प⋆ अन्ऱु कडल् कडैन्दान्⋆ पिण्डमाय् निन्ऱ पिरान्॥ ८६॥	मोतीमय सागर का प्रभु ने स्वयं मंथन किया। कच्छप के रूप में आपने पर्वत को अपने ऊपर संभाला जो बासुकी नाग से आगे पीछे घूमते हुए जगत के अंत तक फैलने वाला तेज तरंग उत्पन्न कर रहा था। आप चट्टान की तरह अटल रहे। **2327**
निन्ऱ पॅरुमाने !⋆ नीर् एट्रु⋆ उलगॅल्लाम् शॅन्ऱ पॅरुमाने !⋆ शॅङ्गण्णा⋆ अन्ऱु तुरग वाय् कीण्ड⋆ तुळाय् मुडियाय्⋆ नङ्गळ् नरग वाय् कीण्डायुम् नी॥ ८७॥	हे प्रभु ! आपने खड़ा होकर पृथ्वी को ले लिया। हे प्रभु ! आपने जगत को माप दिया। राजीवनयन एवं तुलसी माला के प्रभु ! आपने पुराकाल में केशिन घोड़ा का जवड़ा चीर दिया। अव आपने नरक के जवड़ों को भी नष्ट कर दिया। **2328**
नी अन्ऱे नीर् एट्रु⋆ उलगम् अडि अळन्दाय्⋆ नी अन्ऱे निन्ऱु निरै मेय्त्ताय्⋆ नी अन्ऱे मा वायुरम् पिळन्दु⋆ मा मरुदिन् ऊडु पोय्⋆ देवाशुरम् पॅारुदाय् शॅट्रु॥ ८८॥	क्या उपहार स्वरूप धरा को आपने अपने पादारविंद से नहीं मापा ? क्या आप गायों को चराते हुए नहीं घूमे ? क्या आप केशिन के जबड़े को नहीं चीरे ? क्या आप मुरूदु वृक्षों के बीच जाकर उनको नष्ट नहीं किया क्या ? क्या आपने देवों एवं असुरों के बीच युद्ध का संचालन नहीं किया ? **2329**
शॅट्रदुवुम्⋆ शेरा इरणियनै⋆ शॅन्ऱेट्रु प्पॅट्रदुवुम्⋆ मा निलम् पिन्नैक्काय्⋆ मुट्रल् मुरि एट्रिन्⋆ मुन् निन्ऱु मॅाय्म्पॅाळित्ताय्⋆ मूरि च्चुरियेरु⋆ शङ्गिनाय् ! शूळ्न्दु॥ ८९॥	आपने हिरण्य असुर का नाश किया एवं मावली असुर से पृथ्वी ले ली। नप्पिनाय के लिये आपने सात महान वृषभों का नाश किया। हे शंखधारी ! **2330**
शूळ्न्द तुळाय् अलङ्गल्⋆ शोदि मणि मुडि माल्⋆ ताळ्न्द अरुवि त्तड वरैवाय्⋆ आळ्न्द मणि नीर् च्चुनै वळर्न्द⋆ मा मुदलै कॅान्ऱान्⋆ अणि नील वण्णत्तवन्॥ ५०॥	प्रभु रत्न का ऊंचा मुकुट पहनते हैं तथा उसपर तुलसी की माला धारण करते हैं। आपका आकर्षक मणि के समान रंग है। झील में बसे ग्राह का आपने बध किया। शीतल जल की धाराओं वाले एक पर्वत (वेंकटम) पर आप रहते हैं। **2331**

अवने अरु वरैयाल्⋆ आ निरैगळ् कात्तान्⋆ अवने अणि मरुदम् शाय्त्तान्⋆ अवने कलङ्गा प्पॅरु नगरम्⋆ काट्टुवान् कण्डीर्⋆ इलङ्गा पुरम् एरित्तान् एय्दु॥५१॥	एक पर्वत से आपने गायों की रक्षा की। मरूदु पेड़ों को नष्ट करने वाले आप ही थे। लंका नगर को मटियामेट करने वाले आप ही थे। आप ही हमें सुन्दर एवं महान नगर अयोध्या का दर्शन करायेंगे **2332**
एय्दान् मरामरम्⋆ एळुम् इरामनाय्⋆ एय्दान् अम् मान् मरियै एन्दिळैक्काय्⋆ एय्ददुवुम् तॅन् इलङ्गै क्कोन् वीळ⋆ शॅन्ऱु कुऱळ् उरुवाय्⋆ मुन् निलम् कै क्कॉण्डान् मुयन्ऱु॥५२॥	आप अयोध्या में राम बनकर आये। आपने सात वृक्षों को गिरा दिया। आपने जादू के मृग का बध किया। आपने लंकेश रावण के शिर को धराशायी कर दिया। वामन के रूप में पृथ्वी को लेने वाले आप ही थे। **2333**
मुयन्ऱु तॊळु नॅञ्जे !⋆ मूरि नीर् वेलै⋆ इयन्ऱ मरत्ताल् इलैयिन् मेलाल्⋆ पयिन्ऱङ्गोर् मण् नलम् कॊळ् वॅळ्ळत्तु⋆ माय क्कुळवियाय्⋆ तण् अलङ्गल् मालैयान् ताळ्॥५३॥	चमत्कारी शिशु के रूप में आपने ब्रह्मांड को निगल लिया और प्रलय जल में तैरते बट पत्र पर सो गये। आप शीतल तुलसी की माला पहनते हैं। हे मन ! प्रयास करके आपके पादारविंद की पूजा करो। **2334**
ताळाल् शगडम्⋆ उदैत्तु प्पगडुन्दि⋆ कीळा मरुदिडै पोय् क्केळलाय्⋆ मीळादु मण् अगलम् कीण्डु⋆ अङ्गोर् मादुगन्द मार्वर्कु⋆ पॅण् अगलम् कादल् पॅरिदु॥५४॥	आपने सुकोमल चरणों से गाड़ी का नाश किया तथा हाथी एवं दो मरूदु पेड़ों का नाश किया। वराह के रूप में शौर्य पूर्वक आपने पृथ्वी को अपने दांतों पर उठा लिया। कमलनिवासिनी लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर रहती हैं तथा भू देवी के प्रति भी आपका बहुत गहरा स्नेह है। **2335**
पॅरिय वरै मार्बिल्⋆ पेर् आरम् पूण्डु⋆ करिय मुगिलिडै मिन् पोल⋆ तॅरियुङ्गाल् पाण् ऑडुङ्ग वण्डऱैयुम् पङ्गयमे⋆ मऱ्ऱवन् तन् नीळ् नॅडुङ्गण् काट्टुम् निऱम्॥५५॥	अपने मजबूत छाती पर अनेक रत्नों की मालाओं को धारण करने से आप वर्षा के श्याम मेघ पर चमकती बिजली की तरह दिखते हैं। आपकी बड़ी बड़ी अरूणाभ नयनों का रंग मधुमक्खी मंड़राते कमल की तरह दिखती हैं। **2336**
निऱम् वॅळिदु शॅय्दु⋆ पशिदु करिदॆन्ऱु⋆ इऱै उरुवम् याम् अऱियोम् एण्णिल्⋆ निऱैवुडैय ना मङ्गै तानुम्⋆ नलम् पुगळ वल्लळे⋆ पू मङ्गै केळ्वन् पॊलिवु॥५६॥	श्वेत लाल पीला हरा एवं काला प्रभु के रंग हैं परन्तु प्रथम तीन हमने नहीं देखा है। जरा सोंचो। क्या ज्ञानवती सरस्वती भी लक्ष्मी के पतिदेव की यशगाथा पूर्णतया गा सकती है ? **2337**
पॊलिन्दिरुण्ड कार् वानिल्⋆ मिन्ने पोल् तोन्ऱि⋆ मलिन्दु तिरुविरुन्द मार्वन्⋆ पॊलिन्दु गरुडन् मेल् कॊण्ड⋆ करियान् कळले⋆ तॆरुळ् तन्मेल् कण्डाय् तॆळि॥५७॥	जैसे श्याम घन बिजली से सुशोभित होता है वैसे ही प्रभु कमलनिवासिनी लक्ष्मी को वक्षस्थल पर धारण कर गरूड़ पर सवार होकर सुशोभित होते हैं। ज्ञान के माध्यम से प्रभु के चरण को देख चुके हो। हे मन ! अब उठो। **2338**

तॆळिन्द शिलादलत्तिन्⋆ मेल् इरुन्द मन्दि⋆ अळिन्द कडुवनैये नोक्कि⋆ विळङ्गिय वॆण् मदियम् ता एन्नुम्⋆ वेङ्गडमे⋆ मेल् ऒरु नाळ् मण् मदियिल्⋆ कॊण्डुगन्दान् वाळ्वु ॥५८॥	स्वरूप विस्तार कर धरा एवं गगन को लेने वाले प्रभु वेंकटम में रहते जहां मादा बन्दरी ऊंचे चट्टानों पर बैठकर साथी नर बन्दर को छलांग लगाकर उज्जवल चांद लाने को कहती है। **2339**
वाळुम् वगै अरिन्देन्⋆ मै पोल् नॆडु वरैवाय्⋆ ताळुम् अरुवि पोल् तार् किडप्प⋆ शूळुम् तिरु मा मणि वण्णन्⋆ शॆङ्गण् माल्⋆ एङ्गळ् पॆरुमान्⋆ अडि शेर प्पॆट्रु ॥५९॥	उज्जवल जल के झरने नाले काले वेंकटम पर ऐसे ही शोभते हैं जैसे मणिवर्ण श्याम वदन शेंकणमाल प्रभु के वक्षस्थल पर श्री एवं अन्य मोती की लड़ियां शोभा देती हैं। आपके चरणारविंद को धारण कर हम नया जीवन प्राप्त किये हैं। **2340**
पॆट्रम् पिणै मरुदम्⋆ पेय् मुलै मा च्चगडम्⋆ मुट्र क्कात्तूडु पोय् उण्डुदैत्तु⋆ कट्रु कुणिलै⋆ विळङ्गनिक्कु क्कॊण्डॆरिन्दान्⋆ वॆट्रि प्पणिलम् वाय् वैत्तुगन्दान् पण्डु ॥६०॥	पुरा काल में प्रभु ने गायों की रक्षा की, मरूदु वृक्षों के बीच घुसे, राक्षसी का स्तन पान किया, राक्षसी गाड़ी को पैर से तोड़ा, बछड़ा को ताड़ पेड़ पर पटक कर दोनों का नाश किया। आपने भारत के घोर युद्ध में विजय का शंखनाद किया। **2341**
पण्डॆल्लाम् वेङ्गडम्⋆ पार्कडल् वैगुन्दम्⋆ कॊण्डङ्गुरैवार्क्कु क्कोयिल् पोल्⋆ वण्डु वळम् किळरुम् नीळ् शोलै⋆ वण् पूङ्गडिगै⋆ इळङ्गुमरन् तन् विण्णगर् ॥६१॥	पुरा काल से ही प्रभु क्षीरसागर एवं वेंकटम में ऐसा मान कर रहते हैं जैसे आप अपने स्थायी निवास वैकुंठ में हों।युवापूर्ण प्रभु अब मधुमक्खी से गूंजते फूल के बागों से घिरे कडिगै (शोलंगिर) में रहते हैं। **2342**
विण्णगरम् वॆग्का⋆ विरि तिरै नीर् वेङ्गडम्⋆ मण् नगरम् मा माड वेळुक्कै⋆ मण्णगत्त तॆन् कुडन्दै⋆ तेन् आर् तिरुवरङ्गम् तॆन्गोट्टि⋆ तन् कुडङ्गै नीर् एट्रान् ताळ्वु ॥६२॥	अमृतमय बागों से घिरे श्रीरंगम, दक्षिण तिरूकोट्टियूर, सुन्दर कुडन्दै, अटारी वाले वेलुक्कै (कांची), वेग्का (कांची) एवं विण्णगरम (ओप्पली अप्पन) प्रभु के अन्य निवास स्थल हैं जिन्होंने अपने हाथ में धरा का उपहार स्वीकार किया तथा जो झरनों से भरे पर्वतों वाले वेंकटम में रहते हैं। **2343**
ताळ् शडैयुम् नीळ् मुडियुम्⋆ ऒण् मळुवुम् शक्करमुम्⋆ शूळ् अरवुम् पॊन् नाणुम् तोन्रुमाल्⋆ शूळुम् तिरण्ड अरुवि पायुम्⋆ तिरुमलै मेल् एन्दैक्कु⋆ इरण्डुरुवुम् ऒन्राय् इशैन्दु ॥६३॥	नाले झरने के पर्वत वाले तिरूमल (वेंकटम) के प्रभु हमारे पिता जटा एवं मुकुट के साथ दिखते हैं। आप कुल्हाड़ी एवं चक्र, गले में सांप एवं जनेऊ दोनों धारण किये हैं। दो स्वरूपों का अद्भुत आश्चर्यमय संमिश्रण। **2344**
इशैन्द अरवमुम्⋆ वॆर्पुम् कडलुम्⋆ पशैन्दङ्गमुदु पडुप्प⋆ अशैन्दु कडैन्द वरुत्तमो⋆ कच्चि वॆग्काविल्⋆ किडन्दिरुन्दु निन्रदुवुम् अङ्गु ॥६४॥	क्या आश्चर्य है कि वेग्का मंदिर कांची में प्रभु शयनावस्था में है जबकि अन्य जगहों वे बैठे तथा खड़े दिखते हैं। क्या यह देवताओं के लिये समुद्र मंथन में पर्वत की मथानी एवं नाग की रस्सी चलाने के थकान के कारण है ? **2345**

अङ्गकिडर् इन्रि⋆ अन्दि प्पोंळुदत्तु⋆ मङ्ग इरणियनदागत्तै⋆ पोंङ्गि अरि उरुवमाय् प्पिळन्द⋆ अम्मान् अवने⋆ करि उरुवम् कोंम्बोंशित्तान् कायन्दु ॥ ६५ ॥	ईश्वरीय पुत्र प्रह्लाद के संरक्षक संध्या काल में नरसिंह बनकर आये एवं हिरण्य की मजबूत छाती को चीर दिया। आप वही प्रभु हैं जिन्होंने गुस्सैल हाथी का दांत उखाड़ कर उसका नाश कर दिया था। **2346**
कायन्दिरुळै माट्रि⋆ क्कदिर् इलगु मा मणिगळ्⋆ एयन्द पण क्कदिर्मेल्⋆ वेव्वुयिर्प्प⋆ वायन्द मदु कैडवरुम्⋆ वयिरुरुगि माण्डार्⋆ अदु केडवर्क्किरुदि आङ्गु ॥ ६६ ॥	विनाशकारी मधु कैटभ क्रोध में अग्नि वमन करते शेषशायी प्रभु के पास आये जहां शेष की रत्न समान आंखें दिन के उजाले की तरह चमक रहीं थी। यह उनकी गलती थी और उनका अंत हो गया। **2347**
आङ्गु मलरुम्⋆ कुवियुमाल् उन्दिवाय्⋆ ओङ्गु कमलत्तिन् ओंण् पोदु⋆ आम् कै त्तिगिरि शुडर् एन्रुम्⋆ वेंण् शङ्गम्⋆ वानिल् पगरु मदि एन्रुम् पार्त्तु ॥ ६७ ॥	प्रभु की नाभि से एक डंढल निकला है जिसके ऊपर कमल खिला है जो खुलते एवं बन्द होते रहता है जैसे वह सूर्य एवं चांद को देखकर करता है। परंतु यहां तो प्रभु का ज्योर्तिमय चक्र एवं शंख है। **2348** (सुदर्शनं भास्कर कोटि तुल्यम् तं पाञ्चजन्यं शशिकोटि शुभ्रं)
पार्त्त कडुवन्⋆ शुनै नीर् निळल् कण्डु⋆ पेर्त्तोर् कडुवन् एन प्पेर्न्दु⋆ कार्त्त कळङ्गनिक्कु⋆ क्कै नीट्टुम् वेङ्गडमे⋆ मेल् नाळ् विळङ्गनिक्कु⋆ क्कन्रेरिन्दान् वेर्पु ॥ ६८ ॥	बछड़ा को फेंककर ताड़ वृक्षों को धराशायी करने वाले प्रभु स्फटिक से साफ जल वाले झरनों के वेंकटम में रहते हैं जहां नर बन्दर जल में अपनी परछाई देखकर उसे अपना प्रतिद्वंदी समझ डर जाता है तथा सावधानी से अपनी बाहों को फैलाकर चुपचाप कला का फल तोड़ता है। **2349**
वेर्पेन्रु⋆ वेङ्गडम् पाडुम्⋆ वियन् तुळाय् कर्पेन्रु शूडुम् करुङ्गुळल् मेल्⋆ मल् पोन्र नीण्ड तोळ् माल् किडन्द⋆ नीळ् कडल् नीर् आडुवान्⋆ पूण्ड नाळ् एल्लाम् पुगुम् ॥ ६९ ॥	भक्तगण उपवास के दिनों में अपने चोटी में तुलसी बांध कर स्नान के लिये 'केवल वेंकटम ही पर्वत है' गाते हुए जाते हैं। स्नान की डुबकी से उन्हें शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु के शयन करने वाले सागर में स्नान का आनंद आता है। **2350**
पुगु मदत्ताल्⋆ वाय् पूशि क्कीळ् ताळ्न्दु⋆ अरुवि उगु मदत्ताल्⋆ काल् कळुवि क्कैयाल्⋆ मिगु मद त्तेन् विण्ड मलर् कोंण्डु⋆ विरल् वेङ्गडवनैये⋆ कण्डु वणङ्गुम् कळिरु ॥ ७० ॥	सागर शायी प्रभु वेंकटम में रहते हैं जहां मद से भींगे कपोल वाले नर हाथी अपना पैर एवं मुंह धोकर प्रभु को सूंढ़ से मधु टपकते फूल अर्पित कर पूजा में सिर नवाते हैं। **2351**
कळिरु मुगिल् कुत्त⋆ क्कै एडुत्तोडि⋆ ओंळिरु मरुप्पोंशि कै⋆ याळि पिळिरि विळ⋆ कोंन्रु निन्रदिरुम्⋆ वेङ्गडमे⋆ मेनाळ् कुळ क्कन्रु⋆ कोंण्डेरिन्दान् कुन्रु ॥ ७१ ॥	जब पूजा की इच्छा से विहीन हाथी मदमत्त हो आकाश को छेदते अपने सूंढ़ उठाकर दौड़ते हैं तब मजबूत बाहों वाला दानवी आकृति का नररूप उनके दांतो को उखाड़ कर उनका वध करते हुए उनके मृत शरीर पर खड़ा हो दहाड़ता है। यह प्रभु का पर्वतीय आवास वेंकटम है जिन्होंने पेड़ पर बछड़ा फेंका था। **2352**

कुन्ऱॅन्निऱन् आय⋆ कुऱ मगळिर् कोल् वळै क्कै⋆ शॅन्ऱु विळैयाडुम्⋆ तीम् कळै पोय्⋆ वॅन्ऱु विळङ्गु मदि कोळ् विडुक्कुम्⋆ वेङ्गडमे⋆ मेलै इळङ्गुमरर् कोमान् इडम्॥ ७२॥	स्वर्गिकों के स्वामी, पूर्णयुवा प्रभु पर्वत पर रहते हैं जहां की बनवासी लड़कियां बांस का कंगन पहन बांसों पर चढ़कर खेलती हैं तथा बांसबाड़ी में उलझे चांद को छुड़ाने का प्रयास करती हैं। यह पर्वत वेंकटम है। **2353**
इडम् वलम् एळ् पूण्ड⋆ इरवि त्तेर् ओट्टि⋆ वड मुग वेङ्गडत्तु मन्नुम्⋆ कुडम् नयन्द कूत्तनाय् निन्ऱान्⋆ कुरै कळले कूऱुवदे⋆ नात्तन्नाल् उळ्ळ नलम्॥ ७३॥	पात्रों के साथ आनंद पूर्वक नृत्य करने वाले प्रभु का आवास वेंकटम में है। आप पूर्व से पश्चिम सूर्य का रथ चलाते हैं तथा ऊत्तर में रहते हैं। होंठों का काम प्रभु की प्रशंसा करना ही है। **2354**
नलमे वलिदुगॉल्⋆ नञ्जूट्टु वन् पेय्⋆ निलमे पुरण्डु पोय् वीळ⋆ शलमे तान् वॅम् कॊङ्गै उण्डानै⋆ मीट्टायच्चि ऊट्टुवान्⋆ तन् कॊङ्गै वाय् वैत्ताळ् शारन्दु॥ ७४॥	प्रभु ने राक्षसी के जहरीले स्तन पर होंठ रखकर तबतक चूसा जबतक वह दर्द से कराहती हुई विखर कर जमीन पर नहीं गिर गयी। तब गोप नारी यशोदा चिंतित होकर आपको उठाई और अपना स्तन पीने को दिया। देखों प्यार कितना बलशाली होता है। **2355**
शारन्दगडु तेयप्प⋆ त्तडाविय कोट्टुच्चिवाय्⋆ ऊरन्दियङ्गुम् वॅण् मदियिन्⋆ ऑण् मुयलै⋆ शेरन्दु शिन वेङ्गै पारक्कुम्⋆ तिरुमलैये⋆ आयन् पुन वेङ्गै नाऱुम् पॊरुप्पु॥ ७५॥	महान पर्वत वेंकटम के ऊंचे शिखर चांद को छूते हैं। गुस्से में बाघ यहां लोमड़ी पर उसे पकड़ने के लिये छलांग लगाता है। गोप किशोर प्रभु का यह निवास स्थान है। जंगली वेंगै वृक्ष का सुगंध यहां सर्व व्याप्त रहता है **2356**
पॊरुप्पिडैये निन्ऱुम्⋆ पुनल् कुळित्तुम्⋆ ऐन्दु नॅरुप्पिडैये⋆ निर्कवुम् नीर् वेण्डा⋆ विरुप्पुडैय वॅग्कावे शेरन्दानै⋆ मॅय्म् मलर् तूय् क्कै तॊळुदाल्⋆ अग्कावे तीविनैगळ् आयन्दु॥ ७६॥	पर्वत शिखर पर खड़ा होकर, पानी में गले भर डूबकर तथा पंचाग्नि के बीच रहकर तपस्या करने की आवश्यकता नहीं है। नूतन फूलों से वेग्का (कांची यथोक्तकारी) प्रभु की सहृदय होकर पूजा करने मात्र से ही सभी कर्म लुप्त हो जायेंगे। **2357**
आयन्द अरु मरैयोन्⋆ नान्मुगत्तोन् नन् कुरङ्गिल्⋆ वायन्द कुळवियाय् वाळ् अरक्कन्⋆ एयन्द मुडि प्पोदु⋆ मून्ऱॆळॆन्ऱॆण्णिनान्⋆ आरन्द अडि प्पोदु नङ्गट्करण्॥ ७७॥	विद्वान वैदिक ऋषि ब्रह्मा की गोद में मनमतंग प्रभु शिशु के रूप में विराजमान थे कि तपस्या एवं पूजा हेतु रावण आया। तब प्रभु ने अपने चरण की दस उंगलियों से उसके दसों सिरों को गिना। हे मन ! हमारे शाश्वत आश्रय। **2358**
अरण् आम् नमक्कॆन्ऱुम्⋆ आळि वलवन्⋆ मुरन् नाळ् वलम् शुळिन्द मॊय्म्बन्⋆ शरण् आमेल् एदु गति एदु निलै⋆ एदु पिरप्पॆन्नादे⋆ ओदु गति मायनैये ओरत्तु॥ ७८॥	हे मन ! प्रभु में अपना विश्वास स्थिर करो। राजकुमारियों को मुक्त करने हेतु चक्र के साथ हमारे कृष्ण प्रभु ने मुर का बध नहीं किया क्या ? अपने आपको प्रभु पर समर्पित कर यह चिंता न कर कि 'हमारा क्या भाग्य है' 'हमारा आश्रय कौन है' 'हमारा पुनर्जन्म कब होगा'

	आश्चर्य मय प्रभु की करूणकृपा की प्रतीक्षा कर। **2359**
ओऱ्ऱ मनत्तराय्⋆ ऐन्दडक्कि आरायन्दु⋆ पेऱ्ऱाल् पिऱप्पेळुम् पेऱ्क्कलाम्⋆ काऱ्ऱ विरै आर् नऱुम् तुळाय्⋆ वीङ्गोद मेनि⋆ निरै आर मार्वनैये निन्ऱु॥ ७९ ॥	गहरे सागर सा सलोने दयावान प्रभु कृष्ण तुलसी एवं रत्न आभूषणों के अनेकों हार पहनते हैं। इन्द्रियों को दबाकर स्थिर मन से अगर प्रभु का ध्यान एवं सेवा करें तो हम सात जन्मों के कर्मों से मुक्त हो जायेंगे। **2360**
निन्ऱ्ऱैदिराय⋆ निरै मणि त्तेर् वाणन् तोळ्⋆ ऑन्ऱिय ईर् ऐञ्ञूऱुडन् तुणिय⋆ वॅन्ऱिलङ्गुम् आर् पडुवान् नेमि⋆ अरवणैयान् शेवडिक्के⋆ नेर् पडुवान् तान् मुयल्लुम् नॅञ्जु॥ ८० ॥	हमारा जीवन चक्रधारी प्रभु की ओर स्वतः खींच जायेगा। जब बाणासुर रत्नाभूषित रथ पर सवार हो आप से युद्ध करने आया था आपने उसके हजारों हाथ को टुकड़े टुकड़े कर दिये थे। **2361**
नॅञ्जाल्⋆ निनैप्परियनेल्लुम्⋆ निल्लै पॅट्रॅन् नॅञ्जमे ! पेशाय्⋆ निनैक्कुङ्गाल्⋆ नॅञ्जत्तु प्पेरादु निर्कुम्⋆ पॅरुमानै एन्गॉलो⋆ ओरादु निर्पदुणर्वु॥ ८१ ॥	इसके बावजूद कि प्रभु पर मन को स्थिर करना कठिन है आपकी मधुर गाथा को गाते रहो। प्रभु सद्यः प्रकट होकर मन में बस जायेंगे। तब आप पर ध्यान कैसे स्थिर नहीं रहेगा ? **2362**
उणरिल् उणर्वरियन्⋆ उळ्ळम् पुगुन्दु⋆ पुणरिल्लुम् काणबरियन् उण्मै⋆ इणर् अणैय कॉङ्गणैन्दु वण्डरैयुम्⋆ तण् तुळाय् क्कोमानै⋆ एङ्गणैन्दु काण्डुम् इनि॥ ८२ ॥	रहस्य ग्रंथों से आपको समझना कठिन है। जबकि आप हमारे हृदय में हैं परंतु आपकी उपस्थिति का आभास होना कठिन है। अगर यह स्थिति है तो मधु टपकते मधुमक्खी लिपटे तुलसी की माला पहने प्रभु को सच में कहां पाया जा सकता है ? **2363**
इनियवन् मायन्⋆ एन उरैप्परेल्लुम्⋆ इनियवन् काणपरियनेल्लुम्⋆ इनियवन् कळ्ळत्ताल् मण् कॉण्डु⋆ विण् कडन्द पैङ्गळलान्⋆ उळ्ळत्तिन् उळ्ळे उळन्॥ ८३ ॥	जबकि आपको आश्चर्यमय कहा जाता है, आपका दर्शन दुर्लभ बताया जाता है, आपने छल से धरा एवं गगन को अपने पादों से माप डाला, आप निश्चित ही हमारे हृदय में बसते हैं। **2364**
उळनाय⋆ नान् मऱैयिन् उट्पॉरुळै⋆ उळ्ळ- त्तुळनाग⋆ त्तेरन्दुणर्वरेल्लुम्⋆ उळनाय वण् तामरै नॅडुङ्गण्⋆ मायवनै यावरे⋆ कण्डार् उगप्पर् कवि॥ ८४ ॥	वेद के गूढ़ अर्थ दैविक शक्ति की व्याख्या करते हैं। जबकि आप हमारे हृदय में रहते हैं परंतु आश्चर्यमय राजीवनयन प्रभु का अनुभव करने वाले विरले हीं हैं। वे कविता में पारंगत हैं। **2365**

कवियिनार् कै पुनैन्दु⋆ कण्णार् कळल् पोय्⋆ शेवियिनार् केळ्वियराय् च्चेरन्दार्⋆ पुवियिनार् पोढ़्ि उरैक्क⋆ प्पोलियुमे⋆ पिन्नैक्काय् एढ़ुयिरै अट्टान् एळिल्॥८५॥	जबकि सबलोग कवि हो जायें, सभी ज्ञान अर्जित कर लें, पर प्रभु के पास हाथ में फूल लिये, आंखों में दर्शन का ललक लिये जाकर गाथा की रचना अर्पित करें तो प्रभु के गौरव का प्रसार होगा। नप्पिनाय के प्रेम में आपने सात वृषभों का अंत किया। **2366**
एळिल् कोण्डु⋆ मिन्नु क्कोडि एडुत्तु⋆ वेग त्तोळिल् कोण्डु⋆ तान् मुळङ्गि त्तोन्ऱुम्⋆ एळिल् कोण्ड नीर् मेगम् अन्न⋆ नेडु माल् निऱम् पोल⋆ कार् वानम् काट्टुम् कलन्दु॥८६॥	नप्पिनाय के लिये सात काले वृषभों से घोर युद्ध करने वाले प्रभु श्यामल वर्षा मेघ की तरह दो बादल के टकराने पर उत्पन्न तड़ित रेखा से प्रकाशित दिखते हैं। **2367**
कलन्दु मणि इमैक्कुम् कण्णा⋆ निन् मेनि मलर्न्दु⋆ मरगदमे काट्टुम्⋆ नलम् तिगळुम् कोन्दिन् वाय् वण्डरैयुम्⋆ तण् तुळाय् क्कोमानै⋆ अन्दि वान् काट्टुम् अदु॥८७॥	हे प्रभु ! संध्याकालीन आकाश आपके वक्षस्थल के लाल कौस्तुभ मणि से आभासित आपके वदन के स्वरूप का स्मरण कराता है। वक्षस्थल पर मधुमक्खी लिपटे तुलसी की माला हरे पन्ने से आभासित वदन का दर्शन देता है। **2368**
अदु नन्ऱिदु तीदेन्ऱु⋆ ऐयप्पडादे⋆ मदु निन्ऱ तण् तुळाय् मार्वन्⋆ पोदु निन्ऱ⋆ पोन् अम् कळले तोळुमिन्⋆ मुळुविनैगळ् मुन्नम् कळलुम् मुडिन्दु॥८८॥	क्या अच्छा है एवं क्या बुरा है इसका द्वंद छोड़कर वक्षस्थल पर तुलसी माला धारण किये सुलभता से प्राप्त प्रभु के दिव्य चरणों की पूजा करो। हमारे सभी कर्मो के नामोनिशान वृद्धावस्था के पूर्व ही लुप्त हो जायेंगे। **2369**
मुडिन्द पोळुदिल्⋆ कुऱ वाणर्⋆ एनम् पडिन्दुळु शाल्⋆ पैन् तिनैगळ् वित्त⋆ तडिन्देळुन्द वेयङ्गळै पोय्⋆ विण् तिऱक्कुम् वेङ्गडमे⋆ मेल् ओरु नाळ् तीङ्गुळल्⋆ वाय् वैत्तान् शिलम्बु॥८९॥	वेंकटम पर्वत ही हमारा पूर्वकाल से जीवन बीमा है जहां वृद्ध बनवासी जंगली सूकरों की सहायता से खेत जोतकर राई का पौधा लगाते हैं तथा जहां की ऊंची बांसबाड़ी चावी के रूप में आकाश के बन्द ताला लगे बादल को खोलकर वर्षा लाते हैं। यह मधुर बांसुरी वादक प्रभु का आवास है। **2370**
शिलम्बुम् शेरि कळलुम् शेन्ऱिशैप्प⋆ विण् आ- ऱलम्बिय शेवडि पोय्⋆ अण्डम् पुलम्बिय तोळ्⋆ एण् दिशैयुम् शूळ⋆ इडम् पोदादेन्गोलो⋆ वण् तुळाय् माल् अळन्द मण्॥९०॥	तुलसी माला धारण किये प्रभु ने बजते पाजेब के साथ एक पाद को आकाश में उठाया जहां ब्रह्मा ने आकाश गंगा के जल से चरण पखारा। आपकी बाहें आठो दिशाओं में फैल गयीं थी। आपने इस छोटी पृथ्वी को कैसे मापा ? **2371**
मण् उण्डुम्⋆ पेय्च्चि मुलै उण्डुम् आढ़ादाय्⋆ वेण्णेय् विळुङ्ग वेगुण्डु⋆ आय्च्चि कण्णि कयिढ़िनाल् कट्ट⋆ तान् कट्टुण्डिरुन्दान्⋆ वयिढ़िनोडाढ़ा मगन्॥९१॥	पृथ्वी निगलने वाले एवं राक्षसी के विषैले स्तन पीने वाले प्रभु फिर भी भूखे थे। आप सब मक्खन खा गये। क्रोधित गोपनारी यशोदा ने गांठ वाली रस्सी लाकर आपको बांधा एवं आप शांतिपूर्वक एक बच्चे की तरह बंध गये। **2372**

मगन् ऑरुवरक्कल्लाद⋆ मा मेनि मायन्⋆ मगन् आम् अवन् मगन् तन्⋆ कादल् मगनै⋆ शिरै शॅय्द वाणन् तोळ्⋆ शॅट्रान् कळ्ले⋆ निरै शॅय्दॅन् नॅञ्जे ! निनै॥१२॥	जो उसकी संतान नहीं थी वह मेधावी एवं चमत्कारी थी। जब आपका पौत्र अनिरूद्ध बाना के कारागार में बंद था आपने असुर के हजारों हाथ को काट डाला। हे मन ! आपमें ही पूर्णतया बस जाओ। **2373**
निनैत्तुलगिल् आर् तॅळिवार्⋆ नीण्ड तिरुमाल्⋆ अनैत्तुलगुम् उळ् ऑडुक्कि आल्मेल्⋆ कनैत्तुलवु वॅळ्ळत्तोर् पिळ्ळैयाय्⋆ मॅळ्ळ त्तुयिन्रानै⋆ उळ्ळत्ते वै नॅञ्जे ! उयत्तु॥१३॥	हे मन ! आकाश में ऊंचा उठने वाले प्रभु सातों लोकों को अपने भीतर रखकर शांतिपूर्वक समुद्र जल में तैरते बटपत्र पर सो गये। इस जगत में कौन आपको समझ सकेगा ? हे मन ! सावधानी पूर्वक आपको अपने भीतर विराजमान कराओ। **2374**
उयत्तुणर्वॅन्नुम्⋆ ऑळि कॉळ् विळक्केट्रि⋆ वैत्तवनै नाडि वलै प्पडुत्तेन्⋆ मॅत्तॅनवे निन्रान् इरुन्दान्⋆ किडन्दान् एन् नॅञ्जत्तु⋆ पॉन्रामै मायन् पुगुन्दु॥१४॥	हमने आपको अपने हृदय में लाकर चेतना का दीप जलाया तथा सिर झुकाया एवं आपको भीतर ही देखा। आश्चर्यमय प्रभु हमारे हृदय में बिना कोई क्षति पहुंचाये आये, थोड़ी देर खड़ा हुए, फिर बैठे तत्पश्चात् आराम से सो गये। **2375**
पुगुन्दिलङ्गुम्⋆ अन्दि प्पॉळुदत्तु⋆ अरियाय् इगळ्न्द⋆ इरणियनदागम्⋆ शुगिरन्दॅङ्गुम् शिन्द प्पिळन्द⋆ तिरुमाल् तिरुवडिये⋆ वन्दित्तॅन् नॅञ्जमे ! वाळ्त्तु॥१५॥	जैसे ही सूर्यास्त हुआ प्रभु नरसिंह के रूप में पधारे। अपने नखों से हिरण्य की छाती विदार कर सर्वत्र मांस खून आदि फैला दिये। तब आप कमल निवासिनी लक्ष्मी के साथ मिल गये। हे मन ! मात्र आपकेही पादारविंद की पूजा एवं प्रशंसा करो। **2376** (अहोविलम के श्रीलक्ष्मी नृसिंह की बन्दना है।)
वाळ्त्तिय वायराय्⋆ वानोर् मणि मगुडम्⋆ ताळ्त्ति वणङ्ग त्तळुम्बामे⋆ केळ्त्त अडि त्तामरै⋆ मलर्मेल् मङ्गै मणाळन्⋆ अडि त्तामरैयाम् अलर्॥१६॥	कमल निवासिनी लक्ष्मी के पति के चरणारविंदों की पूजा रत्नजडित किरीटधारी स्वर्गिक तब तक करते रहते हैं जब तक उनके मुंह एवं ललाट थक नहीं जाते। **2377**
अलर् एडुत्त उन्दियान्⋆ आङ्गॅळिल् आय⋆ मलर् एडुत्त मा मेनि मायन्⋆ अलर् एडुत्त वण्णत्तान् मा मलरान्⋆ वार् शडैयान्⋆ एन्रिवर्कट्कु एण्णत्तान् आमो इमै॥१७॥	गौरवर्ण इन्द, कमलासीन ब्रह्मा, एवं जटाधारी शिव, कमल के वर्ण एवं पद्मनाभ प्रभु की गौरव गाथा का अंत नहीं पा सकते। **2378**
इमम् शूळ् मलैयुम्⋆ इरु विशुम्बुम् काट्रुम्⋆ अमम् शूळ्न्दर् विळङ्गि त्तोन्रुम्⋆ नमन् शूळ् नरगत्तु⋆ नम्मै नणुगामल् काप्पान्⋆ तुरगत्तै वाय् पिळन्दान् तॉट्टु॥१८॥	जिस प्रभु ने पर्वत वायु आकाश एवं सबों को अपने भीतर रख रक्षा की वे अवश्य ही हमलोगों को नरकगामी होने से बचायेंगे। आपने केशिन घोड़े का निहत्थे हाथ से बध कर दिया। **2379**

‡तोँट्ट पडै एट्टुम्⋆ तोलाद वेँन्ऱियान्⋆ अट्ट पुयगरत्तान् अञ्ञान्ऱु⋆ कुट्टत्तु कोळ् मुदलै तुञ्ज⋆ क्कुऱित्तेँऱिन्द शक्करत्तान्⋆ ताळ् मुदले नङ्गट्कु च्चार्वु॥९९॥	आठ हाथों में आठ विजयी अस्त्रों से लैस प्रभु, जिन्होंने कभी हार का मुंह नहीं देखा, अत्ताव्युकारम के प्रभु, आप हमारे एकमात्र आश्रय हैं। पुराकाल में ग्राह पर चक्र चलाकर आपने हाथी की रक्षा की। **2380**
‡शार्वु नमक्केँन्ऱुम् शक्करत्तान्⋆ तण् तुळाय् त्तार् वाळ्⋆ वरै मार्वन् तान् मुयङ्गुम्⋆ कार् आरन्द वान् अमरु मिन् इमैक्कुम्⋆ वण् तामरै नेँडुङ्गण्⋆ तेन् अमरुम् पूमेल् तिरु॥१००॥	चक्रधारी तुलसी की माला वाले प्रभु कमल निवासिनी लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर ऐसे धारण करते हैं जैसे श्याम घन पर दामिनी हो। मां लक्ष्मी की सुन्दर कमल सी आंखे हैं एवं आप अमृत बहाते फूल पर बैठी हैं। आज एवं सदा के लिये आप ही हमलोगों की आश्रयिनी हैं। **2381** **पेयाळवार तिरूवडिगले शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

नान्मुगन् तिरूवन्दादि (2382 – 2477)

शीरामप्पिळ्ळै अरूळिच्चेय्द तनियन्

नारायणन् पडैत्तान् नान्मुगनै* नान्मुगनु-
क्केरार् शिवन् पिरन्दान् एन्नुम् शोल्* - शीरार्
मॊळिशॆप्पि वाळलाम् नॆञ्जमे !* मॊय्पू
मळिशै प्परन् अडिये वाळ्त्तु

नान्मुगनै* नारायणन् पडैत्तान्* नान्मुगनुम् तान् मुगमाय्* च्चङ्करनै त्तान् पडैत्तान्* यान् मुगमाय् अन्दादि मेलिट्टु* अरिवित्तेन् आळ् पॊरुळै* शिन्दामल् कॊळ्मिन् नीर् तेर्न्दु॥१॥	नारायण ने चतुर्मुख ब्रह्मा की सृष्टि की तथा ब्रह्मा ने शिव को बनाया। इस गहरे सच को हम अन्दादि गीत के माध्यम से बता रहे हैं। सावधानी पूर्वक इसे ग्रहण करो तथा छलक कर बर्बाद होने से बचाओ। **2382**
तेरुङ्गाल् देवन्* ऑरुवने एन्ऱुरैप्पर्* आरुम् अरियार् अवन् पॆरुमै* ओरुम् पॊरुळ् मुडिवुम् इत्तनैये* एत्तवम् शॆय्दार्क्कुम्* अरुळ् मुडिवदाळियान् पाल्॥२॥	ऐसा कहते हैं प्रभु एक हैं। ध्यानपूर्वक सोच लो। आपकी गाथा किसी को विदित नहीं है। चारों अवस्था की साधना भी इसे नहीं पा सकते। तपस्या का जो भी फल मिलता है वह मात्र चक्रधारी प्रभु से ही प्राप्त होता है। **2383**
पालिल् किडन्ददुवुम्* पण्डरङ्गम् मेयदुवुम्* आलिल् तुयिन्रदुवुम् आर् अरिवार्* ञाल- त्तॊरु पॊरुळै* वानवर् तम् मॆय् प्पॊरुळै* अप्पिल् अरु पॊरुळै* यान् अरिन्द वारु॥३॥	प्रभु का सागर में शयन, श्रीरंगम में आकर रहना, बटपत्र पर सोना ः ये सब आपने देवों को बता दिया है कि आप जल का सार नारायण हैं। हमने जिस तरह से यह समझ है दूसरा कौन समझ सकता है ? **2384**
आरु शडै क्करन्दान्* अण्डर्कोन् तन्नोडुम्* कूरुडैयन् एन्बदुवुम्* कॊळ्ळौत्ते* वेरॊरुवर् इल्लामै* निन्रानै एम्मानै* ए प्पॊरुट्कुम् शॊल्लानै* च्चॊन्नेन् तॊगुत्तु॥ ४॥	वस्तु स्थिति है कि जटाधारी शिव एवं हिरण्यगर्भा ब्रह्मा प्रभु के ही स्वरूप के एक हिस्सा हैं। आप तो वरीयतम हैं। आप हमारे नाथ हैं। शास्त्रों की सारी उक्तियां आप ही हैं। मैं आपकी गाथा गाता हूं। **2385**
तॊगुत्त वरत्तनाय्* त्तोला तान् मार्वम्* वगिरत्त वळै उगिर् तोळ् माले* उगत्तिल् ऑरुनान्रु नी उयरत्ति* उळ्वाङ्गि नीये* अरु नान्गुम् आनाय् अरि॥५॥	वरदान के मद में चूर हिरण्य की छाती को अपने घुमावदार नखों से फाड़ने वाले एवं शक्तिशाली भुजा वाले प्रभु ! आप सब चीज का नाश करके पुनः सबों को बना देते हैं। आप ही चार युग हैं। यह सब मैं जानता हूं। **2386**

अऱियार् शमणर्⋆ अयर्त्तार् पवुत्तर्⋆ शिऱियार् शिवप्पट्टार् शॅप्पिल्⋆ वॅऱियाय मायवनै मालवनै⋆ मातवनै एत्तातार्⋆ ईनवरे आतलाल् इन्ऱु॥६॥	श्रमण लोग अनभिज्ञ हैं।बौद्ध लोग द्वंद में हैं। शैव लोग संकीर्ण बुद्धि के हैं। जो लोग आश्चर्यमय प्रभु माधव की बन्दना नहीं करते वे आज महत्वहीन हो गये हैं। **2387**
इन्ऱाग⋆ नाळैये आग⋆ इनि च्चिऱिदुम् निन्ऱाग⋆ निन् अरुळ् एन् पालदे⋆ नन्ऱाग नान् उन्नै अन्ऱि⋆ इलेन् कण्डाय्⋆ नारणने नी एन्नै अन्ऱि इलै॥७॥	नारायण प्रभु आपकी दया आज मिले कल मिले या बाद में कभी मिले इतना तो निश्चित है कि दया मिलनी है। हम आपके बिना नहीं रह सकते हैं और न आप हमारे बिना रह सकते हैं। **2388**
इलै तुणै मर्ट्रन् नॅञ्जे⋆ ईशनै वॅन्ऱ⋆ शिलै कॉण्ड शॅङ्गण् माल् शेरा⋆ कुलै कॉण्ड ईर् ऐन्दलैयान्⋆ इलङ्गैयै ईडळित्त⋆ कूर् अम्बन् अल्लाल् कुऱै॥८॥	मन ! अरूणाभ नयन पूज्य राम ने प्रशुराम से विष्णु धनुष ले लिया और स्वछंदी राजा दसानन का बध कर अग्निबाण से लंका को भस्मीभूत कर दिया। आपको छोड़कर हमारा कोई स्थायी साथी नहीं है। **2389**
कुऱै कॉण्डु नान्मुगन्⋆ कुण्डिगै नीर् पॅय्दु⋆ मऱै कॉण्ड मन्दिरत्ताल् वाळ्त्ति⋆ कऱै कॉण्ड कण्डत्तान्⋆ शॅन्नि मेल् एऱ क्कळुविनान्⋆ अण्डत्तान् शेवडियै आङ्गु॥९॥	जब प्रभु ने अपना पग आसमान में बढ़ाया तो ब्रह्मा ने अपने कमंडल के जल से पग पखारा तथा प्रशस्ति के गीत गाये। वह जल जटाधारी शिव के सिर पर गिरा एवं पावन गंगा नदी का उद्गम हुआ। **2390**
आङ्गारवारम् अदु केट्टु⋆ अळल् उमिळुम् पूङ्गार् अरवणैयान्⋆ पॉन्मेनि⋆ याम् काण वल्लमे अल्लमे⋆ मा मलरान् वार् शडैयान्⋆ वल्लरे अल्लरे वाळ्त्तु॥१०॥	गर्जन भरे सागर के बीच आग उगलते शेष की शय्या पर प्रभु विश्राम करते हैं। हाय ! क्या हमलोग आपके दिव्य स्वरूप के दर्शन के लिये उपयुक्त नहीं हैं ? क्या शिव और ब्रह्मा आपकी प्रशस्ति गाने योग्य नहीं हैं ? **2391**
वाळ्त्तुग वाय्⋆ काण्ग कण् केट्क शॅवि⋆ मगुडम् ताळ्त्ति वणङ्गुमिन्गाळ्⋆ तण् मलराल्⋆ शूळ्त्त तुळाय् मन्नु नीळ् मुडि⋆ एन् तॉल्लै माल् तन्नै⋆ वळा वण् कै कूप्पि मदित्तु॥११॥	हमारे पुराकालीन प्रभु ऊंचे मुकुट पर तुलसी की माला धारण करते हैं। मनोयोग पूर्वक ध्यान करो तथा प्रार्थना के लिये करवद्ध हो पुष्प अर्पित करो।प्रभु के चरणारविंद पर अपना सिर झुकायो। जीभ को प्रभु की प्रशंसा करने दो आंखों को प्रभु का दर्शन करने दो तथा कानों को प्रभु की गाथा सुनने दो। **2392**
मदित्ताय् पोय् नान्गिन्⋆ मदियार् पोय् वीळ⋆ मदित्ताय् मदिगोळ् विडुत्ताय्⋆ मदित्ताय् मडु क्किडन्द⋆ मा मुदलै कोळ् विडुप्पान्⋆ आळि विडर्किरण्डुम् पोय् इरण्डिन् वीडु॥१२॥	प्रभु ! आपने निर्णय कर लिया है कि विश्वासहीन जन चार स्तर के पुनर्जन्म को प्राप्त होंगे। लेकिन उनलोगों को अभिशाप से मुक्त करने के लिये आप भी प्रतीक्षा करते रहते हैं। क्या क्षीण होते चंद्र को शाप से आपने मुक्त नहीं किया ? क्या आपने चक्र चलाकर गज एवं ग्राह को शाप से मुक्त नहीं किया ? **2393**

वीडाक्कुम्* पॆट्रि अरियादु* मॆय् वरुत्ति कूडाक्कि* निन्रुण्डु कॊन्रुळल्वीर्* वीडाक्कुम् मॆय् प्पॊरुळ् तान्* वेद मुदर्पॊरुळ् तान्* विण्णवर्क्कु नर् पॊरुळ् तान्* नारायणन्॥१३॥	ओह ! लोग अपने अस्तित्व की जानकारी के अभाव में तपस्या रत रहते हैं। विदित हो कि नारायण ही मार्ग एवं लक्ष्य हैं। आप हीं वेद के प्रतिपादित प्रभु हैं तथा स्वर्गिकों के भी नाथ हैं। **2394**
नारायणन्* एन्नै आळि* नरगत्तु च्चेरामल्* काक्कुम् तिरुमाल्* तन् पेरान पेश प्पॆराद* पिण च्चमयर् पेश क्केट्टु* आशै प्पट्टाळ्वार् पलर्॥१४॥	तिरूमल हमारे नाथ एवं रक्षक हैं। नारायण के नाम नहीं लेने वाले दुष्टों से दिग्भ्रमित होकर बहुत सारे लोग भ्रम वश गलत रास्ता के शिकार हो जाते हैं। **2395**
पल देवर् एत्त* प्पडि कडन्दान् पादम्* मलर् एर् विट्टिरैञ्जि* वाळ्त्त वलर् आगिल्* मार्क्कण्डन् कण्ड वगैये* वरुम् कण्डीर्* नीर्क्कण्डन् कण्ड निलै॥१५॥	अगर सत्य के बारे में जानना चाहते हैं तो मार्कण्डेय मुनि का निश्चित किया हुआ मार्ग पकड़िये जिन्होंने देवों से प्रशंसित प्रभु के धरा मापने वाले पग का फूलों से पूजा की तथा उसकी प्रशस्ति गायी। **2396**
निलैमन्नुम् एन् नॆञ्जम्* अन्नान्रु* देवर् तलैमन्नर्* तामे माट्राग* पलर् मन्नर् पोर् माळ* वॆम् कदिरोन् माय प्पॊळिल् मरैय* तेर् आळियाल् मरैत्ताराल्॥१६॥	देवताओं के नाथ प्रभु ने पुरा काल में महान राजाओं के विरूद्ध युद्ध कर उनका नाश किया। आपने रथ के चक्के से सूर्य को छिपा दिया। आप ही हमारे मन के आश्रय हैं। **2397**
आल निळकीळ्* अरनॆरियै* नाल्वर्क्कु मेलै युगत्तुरैत्तान्* मॆय् त्तवत्तोन्* ञाल्लम् अळन्दानै* आळि क्किडन्दानै* आल्मेल् वळर्न्दानै* त्तान् वणङ्गुमारु॥१७॥	पुरा काल में तपःपूत शिव ने पीपल वृक्ष के नीच चार जनों को मार्ग बताया : दक्ष, अगस्त्य, पुलस्त्य, एवं मार्कण्डेय। यह मार्ग पृथ्वी मापने वाले एवं बटपत्र शायी प्रभु की पूजा का मार्ग है। **2398**
माराय तानवनै* वळ् उगिराल्* मार्विरण्डु कूराग* क्कीरिय कोळरियै* वेराग एत्तियिरुप्पारै* वॆल्लुमे* मट्रवरै शार्त्ति इरुप्पार् तवम्॥१८॥	असुर हिरण्य की मजबूत छाती को अपने तीक्ष्ण नखों से चीरने वाले भयंकर नरसिंह रूपधारी प्रभु ही हमारे प्रभु हैं। आपकी पूजा की सरलता के कारण से ही आपके भक्त दूसरे देवों की प्रशस्ति से विरत हैं। **2399**
तवम् शॆय्दु* नान्मुगनाल् पॆट्र वरत्तै* अवम् शॆय्द* आळियाय् अन्रे* उवन्दॆम्मै काप्पाय् नी* काप्पदनै आवाय् नी* वैगुन्दम् ईप्पायुम्* एव्वुयिर्क्कुम् नी॥१९॥	तपस्या से ब्रह्मा का वरदान अर्जित करने वालों के फल का आप नाश करते हैं। आप भक्तों के रक्षक एवं रक्षा के माध्यम हैं। सभी जीवत्मा को वैकुंठ देने वाले हैं। **2400**

नीये उल्गैल्लाम्⋆ निन् अरुळे निर्पनवुम्⋆ नीये⋆ तवत्तेव देवनुम्⋆ नीये एरि शुडरुम् माल् वरैयुम्⋆ एण् तिशैयुम्⋆ अण्ड- त्तिरु शुडरुम् आय इवै॥२०॥	प्रभु सारा ब्रह्मांड आप ही हैं। समस्त चेतन प्राणी आप ही हैं। तपःपूत शिव एवं उनके देव ब्रह्मा भी आप ही हैं। अग्नि, आठ दिशायें, एवं युगल ज्योति पुंज भी आप ही हैं। **2401**
इवैया ! पिल्ल वाय्⋆ तिरन्दैरि कान्र⋆ इवैया !⋆ एरिवट्ट क्कण्गळ्⋆ इवैया एरि पोङ्गि क्काट्टुम्⋆ इमैयोर् पेरुमान्⋆ अरि पोङ्गि क्काट्टुम् अळगु॥२१॥	देवों के प्रभु ने भयानक नरसिंह रूप धारण किया। क्या आश्चर्यजनक स्वरूप ! आपका खुला मुंह आग उगल रहा था। लाल आंखें अंगारे की तरह जल रही थीं। कितना सुंदर स्वरूप था ! **2402**
अळगियान् ताने⋆ अरि उरुवन् ताने⋆ पळगियान्⋆ ताळे पणिमिन्⋆ कुळवियाय् त्तान् एळ् उलगुक्कुम्⋆ तन्मैक्कुम् तन्मैयने⋆ मीनाय् उयिर् अळिक्कुम् वित्तु॥२२॥	आप सुन्दर स्वरूप हैं। आप नरसिंह रूप में हैं और आप शिशु रूप में हैं। आप सातों लोकों के सार एवं अर्न्तरस हैं। मत्स्य के रूप में आपने सब जीवात्माओं की रक्षा की। **2403**
वित्तुम् इडल्वेण्डुम् कोल्लो⋆ विडै अडरत्त⋆ पत्ति उळवन्⋆ पळम् पुनत्तु⋆ मोयत्तेळुन्द कार् मेगम् अन्न⋆ करु माल् तिरुमेनि⋆ नीर् वानम् काट्टुम् निगळ्न्दु॥२३॥	सात वृषभों का नाश करने वाले प्रभु भक्ति की खेती कराते हैं। क्या बार बार जोते गये खेत में नया बीज डालने की आवश्यकता नहीं होती ? पौधा बढकर प्रभु के रंग वाले श्यामल मेघ की वर्षा की आवश्यकता महसूस करता है। **2404**
निगळ्न्दाय् पाल् पोन् पशुप्पु⋆ क्कार् वण्णम् नान्गुम्⋆ इगळ्न्दाय्⋆ इरुवरैयुम् वीय⋆ प्पुगळ्न्दाय् शिन प्पोर् च्चुवेदनै⋆ च्चेनापतियाय्⋆ मन प्पोर् मुडिक्कुम् वगै॥२४॥	प्रभु ! भिन्न भिन्न युग में आपने अलग अलग श्वेत लाल पीला एवं काला रंग धारण किया। हृदय से लेकिन आपने राजस के लाल एवं तामस के काले रंग का बहिष्कार किया। घृणा के युद्ध में आप संचालक होकर श्वेत सात्विकता के प्रतीक अर्जुन को युद्ध के लिये उत्प्रेरित कर कोध उत्पन्न किया एवं युद्ध कराया। **2405**
वगैयाल् मदियादु⋆ मण् कोण्डाय्⋆ मट्रुम् वगैयाल्⋆ वरुवदोन्रुण्डे⋆ वगैयाल् वयिरम् कुळैत्तुण्णुम्⋆ मावलि तान् एन्नुम्⋆ वयिर वळक्कोळित्ताय् मट्रु॥२५॥	बिना विचारे आपने जमीन की भिक्षा मांगी। क्या इससे असराहनीय और अन्य कार्य हो सकता है ? फिर भी मावली के महान अभिमान का आपने नाश किया जो सारतत्व का रस पीकर जीवित रहे। क्या आश्चर्य है ! । **2406**
मट्रु त्तोळुवार्⋆ ओरुवरैयुम् यान् इन्मै⋆ कट्रै च्चडैयान्⋆ करि क्कण्डाय्⋆ एट्रैक्कुम् कण्डुगोळ् कण्डाय्⋆ कडल्वण्णा⋆ यान् उन्नै कण्डु कोळगिर्कुमारु॥२६॥	सागर सा सलोने प्रभु ! हम आपके अतिरिक्त अन्य किसी की पूजा नहीं करते जिसके साक्षी जटाधारी शिव हैं। आशीर्वाद दें कि हम सदा के लिये आपके प्रति समर्पित रहें। **2407**

माल् तान्⋆ पुगुन्द मड नैञ्जम्⋆ मट्दुवुम् पेराग⋆ क्कॊळ्वनो पेदैगाळ्⋆ नीराडि तान् काण माट्टाद⋆ तार् अगल च्चेवडियै⋆ यान् काण वल्लेर्किद्॥२७॥	मूर्खो ! हमारा हृदय प्रभु पर टिक गया है। क्या इसके लिये हमें कोई पारितोषिक चाहिए ? हमने प्रभु के पादारविंद को माला से सुसज्जित देखा है जो भस्म लगाये शिव नहीं कर सकते। यही हमारा पारितोषिक है। **2408**
इदुविलङ्गै ईडळिय⋆ क्कट्टिय शेदु⋆ इदुविलङ्गु वालियै वीळ्त्तदु⋆ इदुविलङ्गै तान् ऒडुङ्ग विल् नुडङ्ग⋆ त्तण् तार् इरावणनै⋆ ऊन् ऒडुङ्ग एय्दान् उगप्पु॥२८॥	यह वही सेतु है जो प्रभु ने लंका के नाश के लिये बनाया। यहां प्रभु ने वाली का बध किया था। यहां आपने अपने धनुष से महान शक्तिशाली राजा रावण का सर्वनाश किया था। **2409**
उगप्पुरुवन् ताने⋆ ऒळि उरुवन् ताने⋆ मगप्पुरुवन् ताने मदिक्किल्⋆ मिग प्पुरुवम् ऒन्रुक्कॊन्रु⋆ ओशनैयान् वीळ⋆ ऒरु कणैयाल् अन्रिक्कॊण्डेय्दान् अवन्॥२९॥	अपने धनुषाकार भौंहों तथा अग्नि बाणों से आपने बहुत ही लंबे कुंभकर्ण का बध किया। आपकी भौंहे, आकर्षक मुखड़ा, तथा ज्योर्तिमय वदन ध्यान करने योग्य हैं। **2410**
अवन् एन्नै आळि⋆ अरङ्गत्तरङ्गिल्⋆ अवन् एन्नै एय्दामल् काप्पान्⋆ अवन् एन्न– दुळ्ळत्तु⋆ निन्रान् इरुन्दान् किडक्कुमे⋆ वॆळ्ळत्तरवणैयिन् मेल्॥३०॥	आप हमारे नाथ हैं एवं जीवन की बेड़ी से सुरक्षा प्रदान करते हैं। आप हमारे हृदय में खड़ा रहते हैं तथा बैठते हैं। तब कैसे आप अन्य जगह गहरे सागर में रहना पसंद करेंगे ? **2411**
मेल् नान्मुगन्⋆ अरनै इट्ट विडु शापम्⋆ तान् नारणन् ऒळित्तान्⋆ तारगैयुळ्⋆ वानोर् पॆरुमानै⋆ एत्तात पेय्गाळ्⋆ पिरक्कुम् करु मायम् पेशिल् कदै॥३१॥	शिव को ब्रह्मा का शाप नारायण ने समाप्त किया। धरा के क्रूर लोगों देवों के नाथ की गाथा तुमलोग नहीं गाते हो। तुम्हारे पुनर्जन्म का अनंत सिलसिला है। **2412**
कदै प्पॊरुळ् तान्⋆ कण्णन् तिरुवयिट्रिन् उळ्ळ⋆ उदैप्पळवु पोदुपोक्किन्रि⋆ वदै प्पॊरुळ् तान् वायन्द कुणत्तु⋆ प्पडाददडैमिनो⋆ आयन्द कुणत्तान् अडि॥३२॥	सारा ब्रह्मांड कृष्ण के उदर में रहता है। जो इस गौरवशाली गाथा में आनंद नहीं लेते वे मृतप्राय हैं। एक क्षण भी बर्वाद न करो और प्रभु के गौरवशाली स्तुति के योग्य पादारविंद को प्राप्त करो। **2413**
अडि च्चगडम् शाडि⋆ अरवाट्टि⋆ यानै पिडित्तॊशित्तु⋆ प्पेय् मुलै नञ्जुण्डु⋆ वडिप्पवळ वाय् प्पिन्नै तोळुक्का⋆ वल् एट्रॆरुत्तिरुत्तु⋆ को प्पिन्नुम् आनान् कुरिप्पु॥३३॥	आपने राक्षसी के विषैले स्तन का पान किया, पैरों से गाड़ी को नष्ट किया, नाग पर नृत्य किया, मदमत्त हाथी का बध किया, मुक्तामय होठवाली नप्पिनाय के आलिंगन के लिये सात वृषभों का नाश किया और राजा बने। इसे ध्यान पूर्वक समझ लो। **2414**

कुरिप्पेंनक्कु⋆ क्कोट्टियूर् मेयानै एत्त⋆ कुरिप्पेंनक्कु नन्मै पयक्क⋆ वेंरुप्पनो वेङ्गडत्तु मेयानै⋆ मेंय् विनै नोय् एय्दामल्⋆ तान् कडत्तुम् तन्मैयान् ताळ्॥ ३४ ॥	हम तिरूकोट्टियूर के प्रभु की प्रशस्ति गाते हैं परंतु क्या वेंकटम प्रभु के प्रति हमारा प्रेम घटा हुआ है ? भौतिक व्याधि से मुक्त करके हमारी इच्छाओं को पूरा करने का आप ख्याल रखते हैं। आपके चरणारविंद ही हमारा आश्रय है। **2415**
ताळाल् उलगम्⋆ अळन्द अशैवेगोंल्⋆ वाळा किडन्दरुळुम्⋆ वाय् तिरवान्⋆ नीळोदम् वन्दलैक्कुम् मा मयिलै⋆ मा अल्लि क्केणियान्⋆ ऐन्दलै वाय् नागत्तणै॥ ३५ ॥	सागर तटीय मयिलै एवं तिरूवल्लिकेण्णी के प्रभु पांच फन वाले नाग शय्या पर सागर में बिना बोले एवं बिना चलते हुए निवास करते हैं।धारा मापने से आप थक क्यों गये ? **2416**
नागत्तणै क्कुडन्दै⋆ वेंग्का तिरुवेंव्वुळ्⋆ नागत्तणै अरङ्गम् पेर् अन्बिल्⋆ नाग– त्तणै प्पार्कडल् किडक्कुम्⋆ आदि नेंडुमाल्⋆ अणैप्पार् करुत्तन् आवान्॥ ३६ ॥	प्रभु कुडन्दै (कुंभकोनम), वेग्का (कांची) एवं तिरूवल्लूर में शेषशायी हैं। प्रभु अरंगम (श्रीरंगम), तिरूप्पेर एवं अनबिल में शेषशायी हैं। प्रभु क्षीरसागर में शेषशायी हैं। परंतु कालातीत आदिरहित प्रभु सरलता से भक्तों के हृदय में प्रवेश करते हैं। **2417**
वान् उलवु ती वळि⋆ मा कडल् मा पोंरुप्पु⋆ तान् उलवु वेंम् कदिरुम्⋆ तण् मदियुम्⋆ मेल् निलवु कोंण्डल् पेंयरुम्⋆ दिशै एट्टुम् शूळ्च्चियुम्⋆ अण्डम् तिरुमाल् अगैप्पु॥ ३७ ॥	आकाश, अग्नि, सागर, पर्वत, सूर्य, चंद्र, बादल, आठ दिशायें, सारा ब्रह्मांड एवं इसके चारों तरफ का सबकुछ प्रभु का स्वरूप है। **2418**
अगैप्पिल् मनिशरै⋆ आरु शमयम् पुगैत्तान्⋆ पोंरु कडल् नीर् वण्णन्⋆ उगैक्कुमेल् एत्तेवर् वालाट्टुम्⋆ एव्वारु शेंय्गैयुम्⋆ अप्पोदोंळियुम् अळैप्पु॥ ३८ ॥	जिन लोगों के पास प्रभु को पुकारने का हृदय नहीं है उनलोगों के लिये आपने दर्शनशास्त्र के छः शाखायें बना दी है। परंतु अगर वे आपके कोपभाजन हुए तो उनके देवता या प्रार्थना कोई काम नहीं आता **2419**
अळैप्पन्⋆ तिरुवेङ्गडत्तानै क्काण⋆ इळैप्पन्⋆ तिरुक्कूडल् कूड⋆ मळै प्पेर् अरुवि⋆ मणि वरन्रि वन्दिळिय⋆ यानै वेंरुवि⋆ अरवोंडुङ्गुम् वेंर्पु॥ ३९ ॥	मैं वेंकटम प्रभु को पुकारते रहता हूं एवं रहस्य मयी कुडल गोला चित्रित करते रहता हूं जिससे कि हम आपसे मिल सकें। आप पर्वत शिखर पर रहते हैं जहां जलस्रोत रत्न विखेरते हैं जिसे देखकर हाथी भयभीत हो सांप का शिकार छोड़ देते हैं। **2420**
वेंर्पेन्रु⋆ वेङ्गडम् पाडिनेन्⋆ वीडाक्कि निर्किन्रेन्⋆ निन्रु निनैक्किन्रेन्⋆ कर्किन्र नूल्वलैयिल् पट्टिरुन्द⋆ नूलाट्टि केळ्वनार्⋆ काल् वलैयिल् पट्टिरुन्देन् काण्॥ ४० ॥	प्रभु लक्ष्मी के पति हैं एवं वेदों के सार हैं। आपके चरणाविंद के जाल में हम फंस चुके हैं। पर्वत देखकर हम वेंकटम की स्तुति गाते हैं। आप एकमात्र हमारे आश्रय हैं हम आप पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। **2421**

काणल् उरुगिन्रेन्⋆ कल् अरुवि मुत्तुदिर⋆ ओण विळविल् ऑत्नि अदिर⋆ पेणि वरु वेङ्गडवा !⋆ एन् उळ्ळम् पुगुन्दाय्⋆ तिरुवेङ्गडम् अदनै च्चेन्रु॥ ८१॥	वेंकटम के पूज्य प्रभु आप हमारे हृदय में प्रवेश कर चुके हैं। पहाड़ी झरने आपके पर्वत पर मोती धोते हैं। ओनम पर्व का आनन्द लूटने हम आपके यहां आने को लालायित हैं। **2422**
शॆन्रु वणङ्गुमिनो⋆ शेण् उयर् वेङ्गडत्तै⋆ निन्रु विनै कॆडुक्कुम् नीर्मैयाल्⋆ एन्रुम् कडि क्कमल नान्मुगनुम्⋆ कण् मून्रत्तानुम्⋆ अडि क्कमलम् इट्टेत्तुम् अङ्गु॥ ८२॥	प्रभु भक्तों के साथ रहकर उनकी कामना का अंत करते हैं। चार मुंह के ब्रह्मा एवं तीन आंख वाले शिव सदा आपके चरणारविंद की कमल से पूजा करते हैं। ऊंची शिखरें (वेंकटम) पूजा के लिये आमंत्रित करती रहती हैं। **2423**
मङ्गुल् तोय् शॆन्नि⋆ वड वेङ्गडत्तानै⋆ कङ्गुल् पुगुन्दार्गळ्⋆ काप्पणिवान्⋆ तिङ्गळ् शडै एर वैत्तानुम्⋆ तामरै मेलानुम्⋆ कुडै एर त्ताम् कुवित्तु क्कॊण्डु॥ ८३॥	बादलों के बीच रहने वाले ऊत्तरी वेंकटम पर्वत के प्रभु चंद्रधारी शिव एवं कमलासीन ब्रह्मा से पूजित हैं जो रात में छत्र आदि लाकर प्रभु की सेवा करते हैं। **2424**
कॊण्डु कुडङ्गाल्⋆ मेल् वैत्त कुळवियाय्⋆ तण्ड अरक्कन् तलै⋆ ताळाल् पण्डॆण्णि⋆ पोम् कुमरन् निर्कुम्⋆ पॊळिल् वेङ्गड मलैक्के⋆ पोम् कुमररुळ्ळीर् पुरिन्दु॥ ८४॥	जब राक्षस रावण तपस्या के बाद ब्रह्मा के पास वरदान के लिये गया तो प्रभु ब्रह्मा की गोद में शिशु के रूप में प्रकट होकर रावण के दस सिरों को अपने चरण के दसों अंगुलियों से गिने। प्रभु वेंकटम के बागों में रहते हैं। जब तुम युवा हो प्रेमपूर्वक वहां जाओ। **2425**
पुरिन्दु मलर् इट्टु⋆ प्पुण्डरीक प्पादम्⋆ परिन्दु पडुगाडु निर्प⋆ तॆरिन्दॆङ्गुम् तान् ओङ्गि निर्किन्रान्⋆ तण् अरुवि वेङ्गडमे⋆ वानोरक्कुम् मण्णोरक्कुम् वैप्पु॥ ८५॥	पर्वत पर सबजगह शीतल झरनों के बीच प्रभु अपने भक्तों के पास आते हैं जो वन में बैठकर आपके चरणाविंद का ध्यान करता है। वेंकटम के प्रभु देव तथा मनुष्य के लिये स्थायी धनराशि हैं। **2426**
वैप्पन् मणि विळक्का⋆ मा मदियै⋆ मालुक्कॆन्रु एप्पॊळुदुम्⋆ कै नीट्टुम् यानैयै⋆ एप्पाडुम् वेडु वळैक्क⋆ क्कुरवर् विल् एडुक्कुम् वेङ्गडमे⋆ नाडु वळैत्ताडुमेल् नन्रु॥ ८६॥	सचेत हाथी जब शिकारियों से घिर जाते हैं तो वे अपना सूंढ़ उठाकर प्रभु को चांद लाकर देने का प्रयास करते हैं परंतु वनवासी अपने तीर धनुष से शिकारियों को भगा देते हैं। अच्छा होता हम वहां (वेंकटम) जमा होकर गोल में नाचते। **2427**
नन्मणि वण्णन् ऊर्⋆ आळियुम् कोळरियुम्⋆ पॊन् मणियुम्⋆ मुत्तमुम् पू मरमुम्⋆ पन्मणि नी- रोडु पॊरुदुरुळुम्⋆ कानमुम् वानरमुम्⋆ वेडुमुडै वेङ्गडम्॥ ८७॥	मणिवर्ण वाले वेंकटम के प्रभु वन एवं पर्वत पर शिकारियों, बन्दरों, बनमानुषों, सिंह एवं पहाड़ी झरनों के साथ रहते हैं जहां झरने सोना एवं कीमती पत्थर विखेरते हैं। **2428**
वेङ्गडमे⋆ विण्णोर् तॊळुवदुवुम्⋆ मॆय्म्मैयाल् वेङ्गडमे⋆ मॆय् विनै नोय् तीर्प्पदुवुम्⋆ वेङ्गडमे तानवरै वीळ⋆ त्तन् आळि प्पडै तॊट्टु⋆ वानवरै क्काप्पान् मलै॥ ८८॥	वेंकटम पर्वत स्वर्गिकों द्वारा पूजित है। वेंकटम सभी शारीरिक कर्मो की यातना के लिये औषधि है। वेकटम चक्रधारी प्रभु का निवास है जो असुरों का नाश कर देवों की रक्षा करते हैं। **2429**

मलै आमैमेल् वैत्तु⋆ वाशुकियै च्चुट्रि⋆ तलै आमै तान् ऑरु कै पट्रि⋆ अलैयामल् पीर् क्कडैन्द⋆ पॆरुमान् तिरु नामम्⋆ कूरुवदे यावरक्कुम् कूट्र॥ ८९ ॥	आप कच्छप के रूप में आये एवं एक पर्वत को अपने पीठ पर बिना गिरे हुए रख लिया तथा उसपर एक सांप को लपेट दिया एवं सागर का अमृत के लिये मंथन किया। आपके नाम का उच्चारण ही सार्थक शब्द है। **2430**
कूट्रमुम् शारा⋆ कॊडु विनैयुम् शारा⋆ ती माट्रमुम्⋆ शारावगै अरिन्देन्⋆ आट्र गरै किडक्कुम्⋆ कण्णन् कडल् किडक्कुम्⋆ मायन् उरै क्किडक्कुम्⋆ उळ्ळत्तॆनक्कु॥५०॥	चमत्कारी कृष्ण प्रभु जो सागर में तथा नदी किनारे रहते हैं वही हमारे कवि हृदय में रहते हैं। मृत्यु कभी भी हमारे पास नहीं आ सकती।हमारे कर्मो का कभी संचय नहीं होगा। कर्मो के भयानक प्रभाव हमें कभी आहत नहीं कर सकते। हमें मार्ग पता हो गया है। **2431**
ऎनक्कावार्⋆ आर् ऑरुवरे⋆ ऎम् पॆरुमान् तनक्कावान्⋆ ताने मट्रल्लाल्⋆ पुनक्काया वण्णने⋆ उन्नै प्पिरर् अरियार्⋆ ऎन् मदिक्कु⋆ विण् ऎल्लाम् उण्डो विलै॥५१॥	प्रभु को छोडंकर जिनका कोई समतुल्य या वरीय नहीं है कौन हमारे साथ निभाने वाले हैं ? कयाफूल के रंग के प्रभु को जितना मैं जानता हूं उतना कोई नहीं जानता है। हमारी बुद्धि का मूल्य संपूर्ण आकाश हो सकता है क्या ? **2432**
विलैक्काट्पडुवर्⋆ विशादि एट्रुण्बर्⋆ तलैक्काट्पलि तिरिवर् तक्कोर्⋆ मुलैक्काल् विडम् उण्ड वेन्दनैये⋆ वेराग एत्तादार्⋆ कडम् उण्डार् कल्लादवर्॥५२॥	प्रभु जहरीला स्तन पीने वाले राजकुमार हैं। जो आपकी पूजा नहीं करते वे मजदूर की तरह रहेंगे और बहुत सारी बीमारियों के शिकार हो जायेंगे। छोटे देवता के लिये हो सकता है कि उन्हें बलि के रूप में अर्पित कर दिया जाय।वे लोग अनुपयोगी अनभिज्ञ एवं सदा के लिये पापी रह जायेंगे। **2433**
कल्लादवर्⋆ इलङ्गै कट्टळित्त⋆ कागुत्तन् अल्लाल्⋆ ऑरु दॆय्वम् यान् इलेन्⋆ पॊल्लाद देवरै⋆ देवर् अल्लारै⋆ तिरुविल्लात् देवरै⋆ त्तेरेल्मिन् देवु॥५३॥	स्वच्छंद राक्षसों की नगरी लंका को नष्ट करने वाले काकुत्स्थ राम को छोड़कर हम किसी अन्य देव को नहीं जानते। ऐसे देवों की पूजा मत करो जो निम्न स्तर के देव हैं या जो देव नहीं हैं या जो मंगलमय देव नहीं हैं। **2434**
देवराय् निर्कुम् अत्तेवुम्⋆ अत्तेवरिल् मूवराय् निर्कुम्⋆ मुदु पुणर्प्पुम्⋆ यावराय् निर्किन्रदॆल्लाम्⋆ नॆडुमाल् ऎन्रोरादार्⋆ कर्किन्रदॆल्लाम् कडै॥५४॥	ईश्वरीय गुण वाले देवगन, पुराकाल से आ रहे त्रिमूर्ति तथा सभी चैतन्य, सब नेडुमल प्रभु ही हैं। जो यह नहीं समझते उनकी जिन्दगी निरर्थक कूड़े कचरे के तरह बीत गयी। **2435**
कडै निन्रमरर्⋆ कळल् तॊळुदु⋆ नाळुम् इडै निन्र इन्बत्तर् आवर्⋆ पुडैनिन्र नीर् ओद मेनि⋆ नॆडुमाले⋆ निन् अडियै यार् ओद⋆ वल्लार् अवर्॥५५ ॥	स्वर्गिक गन हाथ जोड़े प्रभु की पूजा कर स्वर्ग का फल प्राप्त करते हैं। सागर सा सलोने शाश्वत प्रभु ! कौन उनलोगों में से आपके चरणारविंद की प्रशस्ति पूरी तरह गा सकता है ? कोई नहीं। **2436**

अवर् इवर् एन्ऱिल्लै⋆ अनङ्गवेळ् तादैक्कु⋆ एवरुम् एदिर् इल्लै कण्डीर्⋆ उवरि कडल् नञ्जम् उण्डान्⋆ कडन् एन्ऱु⋆ वाणर्– कुडन् निन्ऱु तोऱ्ऱान् ऑरुङ्गु॥५६॥	मदन के जनक कृष्ण के लिये कोई भी सार्थक नहीं है तथा कोई आपका विरोध नहीं कर सकता। विषकंठ या नीलकंठ शिव जिन्होंने वाणासुर के लिये लड़ना अपना कर्त्तव्य समझा था प्रभु से मुंह की खा गये। **2437**
ऑरुङ्गिरुन्द नल्विनैयुम्⋆ तीविनैयुम् आवान्⋆ पॅरुम् कुरुन्दम् शायत्तवने पेशिल्⋆ मरुङ्गिरुन्द वानवर् ताम् तानवर् ताम्⋆ तारगै तान्⋆ एन् नॅञ्जम् आनवर् ताम्⋆ अल्लादर्दॅन्॥५७॥	यह बोलो कि कुरून्दु पेंड़ को तोड़ने वाले प्रभु ही एक मात्र अच्छे एवं बुरे कर्म सबकुछ हैं। यहां तक कि देवगन, असुर समुदाय, पृथ्वी आदि यह सब अगर प्रभु का हमारे हृदय में प्रकट होना नहीं है तो और क्या है ? **2438**
एन् नॅञ्ज मेयान्⋆ इरुळ् नीक्कि एम्बिरान्⋆ मन् अञ्ज मुन् ऑरु नाळ्⋆ मण् अळन्दान्⋆ एन् नॅञ्जम् मेयानै⋆ इल्ला विडै एऱ्ऱान्⋆ वॅव्विनै तीर्– त्तायानुक्काक्किनेन् अन्बु॥५८॥	पुरा काल में सभी हृदयों के नाथ ने सबको भयाकांत करते हुए पृथ्वी को मापा।हमारे हृदय के प्रभु ने अंधकार मिटाकर हमें मृत्यु के फंदा से बचा लिया। मैंने अपना प्रेम प्रभु को अर्पित किया है। **2439**
अन्बावाय्⋆ आर् अमुदम् आवाय्⋆ अडियेनु– क्किन्बावाय्⋆ एल्लामुम् नी आवाय्⋆ पॅान् पावै केळ्वा⋆ किळर् ऑळि एन् केशवने⋆ केडिन्ऱि आळ्वाय्क्कु⋆ अडियेन् नान् आळ्॥५९॥	कमल निवासिनी लक्ष्मी के नाथ ! मेरे दिव्य केशव ! आप हमारे प्रेम हैं। आप हमारे अमृत हैं। आप हमारे प्रिय हैं। आप हमारे सर्वेसर्वा हैं। बिना दोष देखे आप हम पर शासन करते हैं। हम आपके विनीत दास हैं। **2440**
आळ् पार्त्तुळिदरुवाय्⋆ कण्डुगॉळ् एन्ऱु⋆ निन् ताळ् पार्त्तुळिदरुवेन्⋆ तन्मैयै⋆ केट्पार्– क्करुम् पॅारुळाय् निन्ऱ⋆ अरङ्गने⋆ उन्नै विरुम्बुवदे⋆ विळ्ळेन् मनम्॥६०॥	अरंगम के प्रभु ! विद्वानों के अमूल्य निधि ! आप अपने भक्तों को खोजते हुए घूमते रहते हैं। हम भी आपके चरणारविंद को खोजते हुए घूमते हैं। विनती है हम पर ध्यान रखें। हमारा मन आपको प्रेम करने से मानता नहीं। **2441**
मन क्केदम् शारा⋆ मदुशूदन् तन्नै⋆ तनक्के तान्⋆ तञ्जमा क्कॉळ्ळिल्⋆ एनक्के तान्⋆ इन्ऱॅान्ऱि निन्ऱुलगै एळ्⋆ आणै ओट्टिनान्⋆ शॅन्ऱॅान्ऱि निन्ऱ तिरु॥६१॥	प्रभु के लिये, मधुसूदन प्रभु में आश्रय लो। यातनाविहीन रहोगे। आप खड़े होकर सातों लोकों पर नियंत्रण रखते हैं। आज आपकी चिरस्थायी गाथा हमारे साथ है। **2442**
तिरु निन्ऱ पक्कम्⋆ तिऱविर्दॅन्ऱोरार्⋆ करु निन्ऱ कल्लार्क्कुरैप्पर्⋆ तिरुविरुन्द मार्बिन्⋆ शिरीदरन् तन् वण्डुल्वु तण् तुळाय्⋆ तार् तन्नै च्चूडि त्तरित्तु॥६२॥	श्री को अपने वक्षस्थल पर धारण करने वाले प्रभु के मधुमक्खी लिपटे धारण किये तुलसी की माला को जो धारण नहीं करते एवं यह नहीं अनुभव करते कि दायें (वक्षस्थल के) तरफ जहां श्री का निवास है, वही पार्श्व भाग खड़े होने की ठीक जगह है, वे सदा के लिये अनभिज्ञ एवं जन्म की आवृति में फंसे रहेंगे। **2443**

तरित्तिरुन्देन् आगवे⋆ तारागण प्पोर्⋆ विरित्तुरैत्त⋆ वॆम् नागत्तुन्नै⋆ तॆरित्तॆळुदि वाशित्तुम् केट्टुम्⋆ वणङ्गि वळिपट्टुम्⋆ पूशित्तुम् पोक्किनेन् पोदु ॥ ६३ ॥	इनसारे वर्षों में हम आपके लिये धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा रत रहे हैं। आदिशेष से इसी कारण से हम आपके बारे में ज्ञान प्राप्त कर सके जिन्होंने ज्योतिष रहस्य को प्रकट किया। यह मुझे लिखित, मौखिक, श्रद्धा से, सेवा से, एवं प्रार्थना से मिला। **2444**
पोदान इट्टिरैञ्जि एत्तुमिनो⋆ पॊन् मगर कादानै⋆ आदि प्पॆरुमानै⋆ नादानै नल्लानै नारणनै⋆ नम् एळ् पिरप्परुक्कुम् शॊल्लानै⋆ शॊल्लुवदे शूदु ॥ ६४ ॥	सुनहले मकरकुंडल पहनने वाले प्रथम नाथ नारायण की पूजा पुष्प से करो। आप नेक नाथ हैं। आपके नाम ही मात्र से सात जन्म का पुनर्जन्म का बंधन टूट जाता है। आपके नाम का गान करना हमारी मुक्ति का एक मात्र उपाय है। **2445**
शूदावदु⋆ एन् नॆञ्जत्तॆण्णिनेन्⋆ शॊल् मालै मादाय⋆ मालवनै मादवनै⋆ यादानुम् वल्लवा⋆ शिन्दित्तिरुप्पेर्कु⋆ वैगुन्द– त्तिल्लैयो⋆ शॊल्लीर् इडम् ॥ ६५ ॥	गीतों की इस माला का गान हमने मुक्ति के उपाय के रूप में किया है। पूज्य माधव का चिंतन हमेशा से हम कई विधि से करते हैं। कृपा करके यह बताइये, हमारे लिये वैकुंठ में कोई जगह नहीं है क्या ? **2446**
इडमावदु⋆ एन् नॆञ्जम् इन्नॆल्लाम्⋆ पण्डु पड नागणै⋆ नॆडिय मार्कु⋆ तिडमाग वैयेन्⋆ मदिशूडि तन्नोडु⋆ अयनै नान् वैयेन्⋆ आट्चॆय्येन् वलम् ॥ ६६ ॥	पूर्व में प्रभु फनधारी शेष पर शयन करते थे। अब वे हमारे हृदय में रहते हैं। मैं दृढ़ विचार से यह बता रहा हूं कि कभी भी हम शशिभूषण शिव या कमल से उत्पन्ना ब्रह्मा को अपने हृदय में नहीं लायेंगे और न तो उनकी प्रदक्षिणा करेंगे। **2447**
वलम् आग⋆ माट्टामै तान् आग⋆ वैगल् कुलम् आग⋆ कुट्रम् तान् आग⋆ नलम् आग नारणनै नम् पदियै⋆ ञान प्पॆरुमानै⋆ शीरणनै⋆ एत्तुम् तिरम् ॥ ६७ ॥	हमारी जिह्वा के प्रभु हमारे ज्ञान के एवं गुणों के प्रभु नारायण हैं। यह लाभदायक हो या निरर्थक हो, चाहे प्रशंसा का हो या निन्दा का हो, प्रभु के नाम का उच्चारण सदा अच्छा होता है। **2448**
तिरम्बेल्मिन् कण्डीर्⋆ तिरुवडि तन् नामम्⋆ मरन्दुम् पुरम् तॊळा मान्दर्⋆ इरैञ्जियुम् शादुवराय्⋆ प्पोदुमिन्गाळ् एन्रान्⋆ नमनुम् तन्⋆ तूदुवरै क्कूवि च्चॆविक्कु ॥ ६८ ॥	मृत्यु के देवता यम अपने दूतों को अलग बुलाकर बोले 'कभी भूल नहीं करना। प्रभु के भक्तगन प्रभु का नाम भूल जा सकते हैं पर वे कभी भी इतर देवों के सामने झुक कर पूजा नहीं करेंगे। अगर उनको देखो तो नम्रता से झुककर सम्मान देते हुए हट जाओ।' **2449**
शॆविक्किन्बम् आवदुवुम्⋆ शॆङ्गण् माल् नामम्⋆ पुविक्कुम् पुवियदुवे कण्डीर्⋆ कविक्कु निरै पॊरुळाय् निन्रानै⋆ नेर्पट्टेन्⋆ पार्क्किल् मरै प्पॊरुळुम्⋆ अत्तनैये तान् ॥ ६९ ॥	शेंकणमाल के नाम बहुत ही कर्णप्रिय हैं। ये मनुष्यों के आश्रय हैं। अपनी कविता के लिये हम इन्हें अतिउत्तम पाते हैं। जरा सोंचो, ये वेदों का सार है। **2450**

तान् ऑरुवन् आगि॰ त्तरणि इडन्दॆडुत्तु॰ एन् ऑरुवनाय्॰ एयिढ़िल् ताङ्गियदुम्॰ यान् ऑरुवन् इन्रा॰ अरिगिन्रेन् अल्लेन्॰ इरु निलत्तै॰ शॆन्राङ्गडिप्पडुत्त शेय्॥७०॥	प्रभु को समझने वाले आज हम अकेले नहीं हैं। आप बालक रूप में वामन बनकर आये। आपने सूकर स्वरूप में धरा को अपने दांतों पर उठा लिया। **2451**
शेयन् अणियन्॰ शिरियन् मिग प्पॅरियन्॰ आयन् तुवरै क्कोनाय्॰ निन्र् मायन्॰ अन्– रोदिय॰ वाक्कदनै क्कल्लार्॰ उलगत्तिल् एदिलर् आम्॰ मॅय्ञ् ञानम् इल्॥७१॥	प्रभु बहुत बड़े हैं तथा बहुत छोटे हैं।प्रभु बहुत दूर हैं तथा बहुत पास हैं। आप आश्चर्यमय द्वारकाधीश हैं।युद्ध में प्रभु की बोली गयी बातों को जो नहीं सीखे वे हमेशा के लिये अनुपयोगी एवं अज्ञानी रह गये। **2452**
इल्लरम् अल्लेल्॰ तुरवरम् इल् एन्नुम्॰ शॊल् अरम् अल्लनवुम्॰ शॊल् अल्ल॰ नल्लरम् आवनवुम्॰ नाल् वेद मा त्तवमुम्॰ नारणने आवदीदन्रॆन्बार् आर्॥७२॥	वर्णाश्रम धर्म के नियमों का पालन करना यानी ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ एवं सन्यास का मानना ही जीवन को फलदायक बनाता है सही नहीं है। वेदों के धर्म एवं त्याग के मार्ग भी सार्वभौम प्रभु नारायण को ही एकमात्र लक्ष्य मानते हैं। कौन इससे असहमत होगा ? **2453**
आरे अरिवार्॰ अनैत्तुलगुम् उण्डुमिळ्न्द॰ पेर् आळियान् तन् पॆरुमैयै॰ कार् शॆरिन्द कण्डत्तान्॰ एण् कण्णान् काणान्॰ अवन् वैत्त पण्डै त्तानत्तिन् पदि॥७३॥	चक्रधारी प्रभु की गाथा को कौन समझ सकता है जो ब्रह्मांड को निगल कर पुनः निर्माण करते हैं। यहां तक कि नीलकंठ शिव तथा आठ आंखों वाले ब्रह्मा भी अपने पूर्वज के आवास वैकुंठ का रास्ता नहीं जानते। **2454**
पदि प्पगैञर्क्काढ़ादु॰ पाय् तिरै नीर् प्पाळि॰ मदित्तडैन्द वाळ् अरवम् तन्नै॰ मदित्तवन् तन् वल् आगत्तेढ़िय॰ मा मेनि मायवनै॰ अल्लादॊन्रेत्तादॆन ना॥७४॥	आश्चर्यमय प्रभु को छोड़कर हमारी जीभ अन्य किसी की प्रशंसा नहीं करेगी। जब गरूड़ के परम शत्रु सुमुख प्रभु के शय्या में लटक गया तो प्रभु ने सुरक्षा के लिये उसे गरूड़ को सुपुर्द कर दिया जिसे उसने अपने बांह में आभूषण बना लिया। **2455**
ना क्कॊण्डु॰ मानिडम् पाडेन्॰ नलम् आग त्ती क्कॊण्ड॰ शॆञ्जडैयान् शॆन्रु॰ एन्रुम् पू क्कॊण्डु वल्लवारु॰ एत्त मगिळाद॰ वैगुन्द च्चॆल्वनार्॰ शेवडिमेल् पाट्टु॥७५॥	मरणशील मनुष्यों की गाथा हम नहीं गाते। हमारे गीत हमारी एकमात्र संपत्ति प्रभु के चरणों के लिये है जिसमें अग्नि ढ़ोने वाले जटाधारी शिव भी नूतन पुष्प से वैकुंठ तक जाकर पूरी योग्यता से प्रशंसा करने के प्रयत्न के बाद भी असफल रह जाते हैं। **2456**
पाट्टुम् मुरैयुम्॰ पडु कदैयुम् पल् पॊरुळुम्॰ ईट्टिय तीयुम् इरु विशुम्बुम्॰ केट्ट मनुवुम्॰ शुरुदि मरै नान्गुम्॰ मायन् तन मायैयिल् पट्ट तर्पु॥७६॥	गीत, पूजा की विधि, पुराकाल की गाथा, मनु स्मृति, चार वेद की श्रुति, पवित्र अग्नि, आकाश ये सभी आश्चर्यमय प्रभु के चमत्कारिक सृष्टि हैं। **2457**

तर्पॆन्नै⋆ त्तान् अरियानेल्लुम्⋆ तडङ्गडलै कर् कॊण्डु⋆ तूर्त्त कडल् वण्णन्⋆ एर्कॊण्ड वॆव्विनैयुम् नीङ्ग⋆ विलङ्गा मनम् वैत्तान्⋆ एव् विनैयुम् मायुमाल् कण्डु॥७७॥	सागर से रंग वाले तथा सागर पर सेतु बनाने वाले प्रभु हमें नहीं जानते थे परंतु हमारे कर्म एकत्र नहीं हो इसकी व्यस्था आपने स्वतः कर दी। अतः अब कितना भी बड़ा कर्म का पाप हो हमें सता नहीं सकता। **2458**
कण्डु वणङ्गिनार्क्कु⋆ एन्नाङ्गॊल्⋆ कामन् उडल् कॊण्ड⋆ तवत्तार्कुमै उणर्त्त⋆ वण्डलम्बुम् तार् अलङ्गल् नीळ् मुडियान्⋆ तन् पॆयरे केट्टिरुन्दु⋆ अं- गार् अलङ्गल् आनमैयाल् आयन्दु॥७८॥	मदन को जलाकर भस्म करने वाले शिव ने जब उमा से मधुमक्खी लिपटे तुलसी धारण करने वाले प्रभु की प्रशस्ति सुनी तो ध्यानमग्न होकर निश्चल हो गये। और कितना ज्यादा होता अगर कोई पूजा के साथ गाथा भी गाये। **2459**
आयन्दु कॊण्डु⋆ आदि प्पॆरुमानै⋆ अन्बिनाल् वायन्द⋆ मनत्तिरुन्द वल्लार्गळ्⋆ एयन्द तम् मॆय् कुन्दम् आग⋆ विरुम्बुवरे⋆ तामुम् तम् वैगुन्दम् काण्बार् विरैन्दु॥७९॥	जो प्रथम कारण प्रभु का ध्यान करते हैं एवं अपने प्रेमपूर्ण हृदय को समर्पित करते हैं वे वैकुंठ की स्वाधीनता का दर्शन पाने के लिये प्रतीक्षा रत हो जाते हैं। उनलोगों के लिये उनका शरीर एक बेड़ी है। **2460**
विरैन्दडैमिन् मेल् ऒरु नाळ्⋆ वॆळ्ळम् परक्क⋆ करन्दुलगम्⋆ कात्तळित्त कण्णन्⋆ परन्दुलगम्⋆ पाडिन आडिन केट्टु⋆ पडु नरगम् वीडिन वाशर् कदवु॥८०॥	भक्तों का गान सुनो तथा पावन स्थलों पर उनके नृत्य देखो। शीघ्र ही कृष्ण प्रभु को प्राप्त कर लोगे जिन्होंने शिशु के रूप में प्रलय की बाढ़ से पृथ्वी की रक्षा की थी। नरक के द्वार स्वतः बन्द हो जायेंगे। **2461**
कदवु मनम् एन्रुम्⋆ काणलाम् एन्रुम्⋆ कुदैयुम् विनै आवि तीर्न्देन्⋆ विदै आग नल् तमिळै वित्ति⋆ एन् उळ्ळत्तै नी विळैत्ताय्⋆ कट्ट मॊळि आगि क्कलन्दु॥८१॥	प्रभु ! हमारा हृदय एक बंजर स्थल था। आपने अच्छे तमिल का बीज डालकर इसको उपजाऊ बनाया जहां ज्ञान की फसल की कटाइ हुई। बेड़ी एवं स्वतंत्रता के बीच अब हमारा हृदय एकदम ही नहीं घूमता। **2462**
कलन्दान् एन् उळ्ळत्तु⋆ क्काम वेळ् तादै⋆ नलम् तानुम्⋆ ईदॊप्पदुण्डे⋆ अलर्न्दलर्गळ् इट्टेत्तुम्⋆ ईशनुम् नान्मुगनुम्⋆ एन्रिवर्गळ् विट्टेत्त⋆ माट्टाद वेन्दु॥८२॥	जवकि शिव एवं ब्रह्मा भी फूल चढ़ाकर पूजा करते हैं परंतु वे भी प्रभु की पूरी गाथा नहीं गा सकते। आप मदन के जनक हैं तथा मेरे हृदय में हैं। क्या इससे कोई अच्छा सौभाग्य हो सकता है ? **2463**
वेन्दराय् विण्णवराय्⋆ विण्णागि त्तण्ळियाय्⋆ मान्दराय् मादाय्⋆ मट्रॆल्लामाय्⋆ शार्न्दवर्क्कु त्तन् आट्रान् नेमियान्⋆ माल् वण्णन् तान् कॊडुक्कुम्⋆ पिन्नाल् तान् शॆय्युम् पिदिर्॥८३॥	जो सबों के प्रति सहृदय होकर आपको खोजते हैं वे ही आप 'पूज्य चक्रधारी प्रभु' के दया के पात्र बनते हैं। आपकी शीतल करूणा राजा, देवगन, लोगों, मित्रों, मां एवं अन्यों से आती है तथा इनसवों में आपका ही अप्रत्यक्ष हाथ कर्ता बनता है। **2464**

पिदिरुम् मनम् इल्लेन्⋆ पिञ्ञगन् तन्नोडु⋆ एदिर्वन् अवन् एनक्कु नेरान्⋆ अदिरुम् कळर् काल मन्ननैये⋆ कण्णनैये⋆ नाळुम् तॊळ क्कादल् पूण्डेन् तॊळिल्॥८४॥	मेरा मन चंचल नहीं है। मैं शिव का विरोध करूंगा, वे हमारे समकक्ष नहीं हैं। हमारे हृदय का प्रेम केवल हमारे सम्राट एवं नाथ कृष्ण के श्रीचरणों की नित्य सेवा के लिये है जो अपने पैरों में विजयप्रदायी शब्द करने वाले नुपूर पहनते हैं। **2465**
तॊळिल् एनक्कु⋆ तॊल्लै माल् तन् नामम् एत्त⋆ पॊळुदेनक्कु मट्रुदुवे पोदुम्⋆ कळि शिनत्त वल्लाळन्⋆ वानर क्कोन् वालि मदन् अळित्त⋆ विल्लाळन् नॆञ्जत्तुळन्॥८५॥	महान योद्धा बाली की छाती को बाण से विदीर्ण करने वाले धनुर्धारी प्रभु सदा हमारे हृदय में रहते हैं। पुरा काल के प्रभु की प्रशस्ति गाना हमारा व्यवसाय तथा शौक है। **2466**
उळन् कण्डाय् नल् नॆञ्जे⋆ उत्तमन् एन्रुम् उळङ्गण्डाय्⋆ उळ्ळुवार् उळ्ळत्तुळन् कण्डाय्⋆ तन् ऑप्पान् तानाय्⋆ उळन् काण् तमियेर्कुम्⋆ एन् ऑप्पारक्कीशन् इमै॥८६॥	हे मन ! देखो, सार्वभौम प्रभु विराजमान हैं। हमेशा आप विराजमान हैं तथा भक्तों के हृदय में आप विराजमान हैं। अद्वितीय प्रभु हमारे जैसे भक्त के सामने भी प्रकट होते हैं। यह जान लो। **2467**
इमैय प्पॆरु मलै पोल्⋆ इन्दिरनार्क्किट्ट⋆ शमय विरुन्दुण्डार्⋆ काप्पार्⋆ शमयङ्गळ् कण्डान् अवै काप्पान्⋆ कारक्कण्डन् नान्मुगनोडु⋆ उण्डान् उलगोडुयिर्॥८७॥	इन्द्र के लिये पर्वत के समान एकत्रित भोजन सामग्री प्रभु खा गये एवं एक पर्वत से गायों की रक्षा की।दूसरा कौन ऐसा कर सकता है ? आप धर्मशास्त्रों के रचयिता एवं संरक्षक हैं।आप शिव ब्रह्मा तथा सारे जगत को निगल गये। **2468**
उयिर् कॊण्डुडल् ऑळिय⋆ ओडुम् पोदोडि⋆ अयर्वॆन्र तीर्प्पान्⋆ पेर् पाडि⋆ शॆयल् तीर च्चिन्दित्तु⋆ वाळ्वारे वाळ्वार्⋆ शिरु शमय प्पन्दनैयार् वाळ्वेल् पळुदु॥८८॥	जब शरीर छोड़कर प्राण बाहर निकलता है तब प्रभु अपने जीवात्माओं की रक्षा के लिये दौड़े आते हैं। आपके नाम गाते हुए एवं ध्यान करते हुए कर्मो का क्षय करो। इस तरह से जीने वाले अकेले जीते हैं। जो छोटी उपलब्धि से जुड़े हैं उनकी जिन्दगी शून्य है। **2469**
पळुदागादॊन्ररिन्देन्⋆ पार्कडलान् पादम्⋆ वळुवा वगै निनैन्दु⋆ वैगल् तॊळुवारै⋆ कण्डिरैञ्जि वाळ्वार्⋆ कलन्द विनै कॆडुत्तु⋆ विण् तिरन्दु वीट्रिरुप्पार् मिक्कु॥८९॥	हमें एक अक्षय सत्य का ज्ञान हुआ है। क्षीर सागर शायी प्रभु के चरणों की हर दिन पूजा करने वाले भक्तों के चरणों की पूजा करने वालों के लिये वेंकटम का दरवाजा हमेशा खुला रहेगा **2470**
वीट्रिरुन्दु⋆ विण्णाळ वेण्डुवार्⋆ वेङ्गडत्तान् पाल् तिरुन्द⋆ वैत्तारे पल् मलर्गळ्⋆ मेल् तिरुन्दि वाळ्वार्⋆ वरुमदि पार्त्तन्बिनराय्⋆ मट्रवर्क्के ताळ्वाय् इरुप्पार् तमर्⋆॥९०॥	वेंकटम के नाथ की नित्य निश्छल मन से फूल से पूजा करने वाले वैंकुंठ पर शासन के लिये प्रत्याशी हैं।ये सभी के प्रति सहृदय एवं प्रभु के भक्तों के समक्ष नम्रता से झुककर रहते हैं।और इसतरह ऊन्नत जीवन प्राप्त करते हैं। **2471**

तमर् आवर् यावरुक्कुम्⋆ तामरै मेलार्कुम्⋆ अमरर्क्कुम् आडरवार् त्तार्कुम्⋆ अमरर्गळ् ताळ् तामरै⋆ मलर्गळ् इट्टिरैञ्जि⋆ माल् वण्णन् ताळ् तामरै अडैवोम् एन्रु⋆ ॥९१॥	जो श्यामल प्रभु को प्राप्त करना चाहते हैं वे आपके पूज्य चरणारविंद पर नूतन पुष्प चढ़ाकर भक्त बनते हैं। इसतरह की जीवात्मायें शिव एवं ब्रह्मा तथा अन्य देवों के भी देव हो जाते हैं। **2472**
एन्रुम् मरन्दरियेन्⋆ एन् नेञ्जत्ते वैत्तु⋆ निन्रुम् इरुन्दुम् नेडुमालै⋆ एन्रुम् तिरुविरुन्द मार्बन्⋆ शिरीदरनुक्काळाय्⋆ करुविरुन्द नाळ् मुदला क्काप्पु॥९२।	श्री को धारण करने वाले श्रीधर प्रभु का भक्त बनकर हमने पूज्य प्रभु को सोते जागते एक क्षण भी नहीं भूलते हुए अपने हृदय में रख लिया है।गर्भ से ही हम संरक्षित हैं। **2473**
काप्पु मरन्दरियेन्⋆ कण्णने एन्रिरुप्पन्⋆ आप्पङ्गॊळियवुम् पल् उयिरक्कुम्⋆ आक्कै कॊडुत्तळित्त⋆ कोने कुणप्परने⋆ उन्नै विड त्तुणियार्⋆ मेय् तॆळिन्दार् ताम्॥९३॥	प्रभु ने जो संरक्षण दिया है वह हम कभी भूल नहीं सकते। मैं केवल कृष्ण को ही जानता हूं। प्रलय में सभी जीवों के संरक्षण के लिये आप अपना शरीर उपलब्ध करा देते हैं। हे उदारमना सम्राट ! मुक्त जीव कभी भी आपको छोड़ नहीं सकते। **2474**
मेय् तॆळिन्दार् एन् शॆय्यार्⋆ वेरानार् नीराग⋆ कै तॆळिन्दु काट्टि क्कळप्पडुत्तु⋆ पै तॆळिन्द पाम्बिन् अणैयाय्⋆ अरुळाय् अडियेर्कु⋆ वेम्बुम् करि आगुम् एन्रु॥९४॥	दिव्य शेष पर शयन करने वाले प्रभु ! आपने मतिभ्रम सैकड़ों के विरूद्ध स्पष्ट उद्देश्य से युद्ध संचालित कर उन्हें मटियामेट कर दिया। विनती है कि इस दास पर कृपा कटाक्ष रखें। ठीक से पकाने पर नीम भी भोजन हो जाता है। प्रबुद्ध मन से कितना और किया जा सकता है ! **2475**
एन्रेन् अडिमै⋆ इळिन्देन् पिरप्पिडुम्बै⋆ आन्रेन् अमरर्क्कमरामै⋆ आन्रेन् कडन् नाडुम् मण् नाडुम्⋆ कैविट्टु⋆ मेलै इडम् नाडु काण इनि॥९५॥	पुनर्जन्म की यातना भोगते हुए आपके चरणों का आश्रय लिया एवं ऐसी कृपा मिली कि ब्रह्मा को भी वह सुख प्राप्त नहीं है। ऋण पूर्ण सांसारिक जीवन से मुक्त होकर हम अब सर्वोत्तम लोक वैकुंठ का दर्शन प्राप्त करने जा रहे हैं। **2476**
इनि अरिन्देन्⋆ ईशर्कुम् नान्मुगर्कुम् दॆय्वम्⋆ इनि अरिन्देन्⋆ एम् पॆरुमान् उन्नै⋆ इनि अरिन्देन्⋆ कारणन् नी कट्रवै नी⋆ कर्पवै नी⋆ नल् किरिशै नारणन् नी⋆ नन्गरिन्देन् नान्॥९६॥	हे प्रभु ! अब हम जान गये कि आप ही शिव एवं ब्रह्मा के नाथ हैं।आप ही कारण हैं। जो विदित है वे सब आप ही हैं। जो जानने के लिये बचा रह जाता है वे भी आप ही हैं। आप उदारमना नारायण हैं। हम अच्छी तरह यह समझ गये हैं। **2477** **तिरूमळिशैयाळवार तिरूवडिगले शरणं** ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

तिरूविरूत्तम् (2478 – 2577)

किडाम्बि आच्चान् अरूळिच्चेय्द तनियन्

करुविरुत्तक्कुऴि नीत्तपिन् काम क्कडुङ्गुऴिवीऴ्न्दु*
ऑरुविरुत्तम् पुक्कुऴलुऱुवीर् ! उयिरिन् पॊरुळ्गट्कु*
ऑरुविरुत्तम् पुगुदामल् कुरुगैयर् कोनुरैत्त*
तिरुविरुत्तत्तोर् अडि कट्रीर् तिरु नाट्टगत्ते

पॊय्न् निन्ऱ ञानमुम्* पॊल्ला ऑऴुक्कुम् अऴुक्कुडम्बुम्* इन् निन्ऱ नीर्मै* इनि याम् उऱामै* उयिर् अळिप्पान् एन् निन्ऱ योनियुमाय् प्पिऱन्दाय्* इमैयोर् तलैवा !* मॆय्न्निन्ऱु केट्टरुळाय्* अडियेन् शॆय्युम् विण्णप्पमे॥१॥	स्वर्गिकों के देव ! संपूर्ण जीवात्माओं की रक्षा के लिये आपने कई गर्भ से अवतार लिये। हम फिर अनर्गल ज्ञान की निम्न स्थिति, दुष्टतापूर्ण कार्य, एवं गंदगी से भरे शरीर को नहीं प्राप्त हों इसकी कृपा कर स्वीकृति दीजिये। हमारा यह विनम्र समर्पण है कृपा कर मेरा निवेदन सुनें। **2478**
शॆऴु नीर् त्तडत्तु* कयल् मिळिर्न्दाल् ऑप्प* शेयरि क्कण् अऴु नीर् तुळुम्ब अलमरुगिन्ऱन* वाळियरो ! मुऴु नीर् मुगिल् वण्णन् कण्णन् विण् नाट्टवर् मूदुवर् आम्* तॊऴु नीर् इणै अडिक्के* अन्बु शूट्टिय शूळ् कुऴऱ्के॥२॥	श्याम घन वदन वाले कृष्ण को जिनकी पूजा स्वर्गिक जन करते हैं इस जूड़े वाली बालिका ने अपना प्रेम का हार उनके समतुल्य युगल चरणों पर समर्पित किया। इसकी अरूणाभ आंखें अश्रुवर्षा करती हुई एक बड़े तालाव में झगड़ा करती दो मछलियों की तरह एक दूसरे का पीछा कर रही हैं। अहो ! प्रेम दीर्घायु होता। **2479**
कुऴल् कोवलर् मड प्पावैयुम्* मण् मगळुम्* तिरुवुम् निऴल् पोल्वनर् कण्डु* निर्कुङ्गॊल् मीळुङ्गॊल्* तण्णन्दुळाय् अऴल् पोल् अडुम् चक्करत्तण्णल् विण्णोर् तॊऴ क्कडवुम्* तऴल् पोल् शिनत्त* अ प्पुळ्ळिन् पिन् पोन तनि नॆञ्जमे॥३॥	बांसुरी वादन करते उदार प्रभु नप्पिनाय, भू देवी, एवं कमलनिवासिनी लक्ष्मीश्री देवी को कभी अलग नहीं होने वाली छाया की तरह साथ ले भयंकर विनाशक चक्र धारण करते हुये घोर गुस्सैल गरूड़ पक्षी की सवारी करते हैं। क्या हमारा अकेला हृदय जो उनके पीछे गया है उनके साथ रहेगा या लौट आयेगा ? हाय ! **2480**
तनि नॆञ्जम् मुन् अवर्* पुळ्ळे कवर्न्ददु* तण्णन्दुळाय्– क्किनि नॆञ्जम् इङ्गु क्कवर्वदु याम् इलम्* नी नडुवे मुनि वञ्ज प्पेय्च्चि मुलै शुवैत्तान् मुडि शूडु तुळाय्* प्पनि नञ्ज मारुदमे* एम्मदावि पनिप्पियल्वे॥४॥	छली एवं कोधी राक्षसी के स्तन चूसने वाले प्रभु के तुलसी की माला के मृदु विषैली सुगंधि को फैलानी वाली ठंढी हवा ! प्रभु का गरूड़ पक्षी हमारे अकेले हृदय को चुरा चुका है। अब हमारा पास दूसरा है नहीं जिसे ठंढी तुलसी चुरा सकती है। क्या आपके लिये उचित है कि हमारे हृदय में घुसकर उसे बर्फ जैसी ठंढ कर दो ? **2481**
पनिप्पियल्वाग* उडैय तण् वाडै* इ क्कालम् इव्वूर् पनिप्पियल्वॆल्लाम् तविर्न्दॆरि वीशुम्* अन्दण्णन्दुळाय् पनि प्पुयल् शोरुम् तडङ्गण्णि मामै त्तिरत्तुक्कॊलाम्* पनि प्पुयल् वण्णन्* शॆङ्गोल् ऑरु नान्ऱु तडावियदे॥५॥	शीतल सुगंधित तुलसी को चाहने वाली किशोरी की बड़ी आंखें अश्रु वर्षाती हैं।शीतल वायु जो स्वभाव से ठढ़ करने वाली है समय, स्थान, एवं अपने महत्त्व को भुलाकर गर्म होकर बह रही है। क्या घनश्याम वदन प्रभु का राजशाही दंड अब बदल दिया गया है ? **2482**

तडाविय अम्बुम्* मुरिन्द शिलैगळुम् पोगविट्टु* कडायिन कॉण्डॉल्गुम् वल्लि ईदनुम्* अशुरर् मङ्ग कडाविय वेग प्परवैयिन् पागन् मदन शॅङ्गोल्* नडाविय कूट्रम् कण्डीर्* उयिर् कामिन्गाळ् ञालत्तुळ्ळे॥६॥	मदन के मुड़े हुए बाण एवं टूटे धनुष के ढ़ेर से वह अच्छे अच्छे को चुन लेती है। मुर्झाये हुए लता की तरह पीछे हट गयी है परंतु लौटेगी। हे जगत ! अपनी जान बचाओ। मदन के राज दंड से वह शीघ्रगामी गरूड़ की सवारी करने वाले असुरों के विनाशक पर जानलेवा प्रहार करेगी। **2483**
ञालम् पनिप्प च्चॅरित्तु* नल् नीर् इट्टु क्काल् शिदैन्दु* नील वल् एरु पॉरा निन्र् वानम् इदु* तिरुमाल् कोलम् शुमन्दु पिरिन्दार् कॉडुमै कुळरु* तण् पूं गालम् कॉलो अरियेन्* विनै आट्टियेन् काण्गिन्रवे॥७॥	आकाश में हम जो अभी देख रहे हैं वे क्या गुर्राते हुए युद्धरत काले वृषभ हैं जो घुटनो पर खड़ा होकर पृथ्वी को गर्म मूत्र से सींच रहे हैं या यमदूत हैं जो तिरूमल के शीतल सुगंधित मुकुट पहन कर एक तिरस्कृत प्रेमी को लेने आये हैं ? हाय ! भाग्यहीन मैं नहीं जानता । **2484**
काण्गिन्रनगळुम्* केट्किन्रनगळुम् काणिल्* इन् नाळ् पाण् कुन्र नाडर् पयिल्गिन्रन* इदॅल्लाम् अरिन्दोम् माण् कुन्रम् एन्दि तण् मा मलै वेङ्गडत्तुम्बर् नम्बुम्* शेण् कुन्रम् शॅन्रु* पॉरुळ् पडैप्पान् कट्ट तिण्णनवे॥८॥	जो हम देखते हैं या सुनते हैं उससे यह समझ में आता है कि मधुमक्खी लिपटे प्रभु आजकल क्या कर रहे हैं। यह स्पष्ट हो गया है कि पर्वत उठाने वाले कृष्ण ने देवों से पूजित ऊंचे पहाड़ों वाले वेंकटम में धन अर्जित करने के लिये आने का निर्णय ले लिया है। **2485**
तिण् पूञ्जुडर् नुदि* नेमि यञ्जॅल्वर्* विण् नाडनैय वण् पू मणि वल्लि यारे पिरिबवर् ताम्* इवैयो कण् पूङ्गमलम् करुञ्जुडर् आडि वॅण् मुत्तरुम्बि* वण् पूङ्गुवळै* मड मान् विळिक्किन्र मा इदळे॥९॥	यह किशोरी एक सुन्दर लता है जिसके फूल उतने ही सुन्दर हैं जितना कि मजबूत तीक्ष्ण एवं प्रकाशमय चक्र को धारण करनेवाले श्रीसंपन्न स्वर्ग के नाथ का शौर्य है। इस तरह की किशोरी का कौन तिरस्कार कर सकता है ? हाय ! उसकी कजरारी काली कमल सी बड़ी आंखें मोती जैसे आंसू बहा रही है।उसकी आंख की पलकें नीले कमल के उड़े हुए पंखुड़ी जैसी हैं। उसकी बड़ी बड़ी आंखें मृगशावक की आंखें जैसी हैं। हाय ! उसके होंठ कैसे फड़क रहे हैं ! **2486**
मायोन्* वड तिरुवेङ्गड नाड* वल्लि क्कॉडिगाळ् ! नोयो उरैक्किलूम्* केट्गिन्रिलीर् उरैयीर्* नुमदु वायो अदुवन्रि वल्विनैयेनुम् किळियुम् एळुम् आयो* अडूम् तॉण्डैयो* अरैयो इदरिवरिदे॥१०॥	आश्चर्यमय प्रभु के वेंकटम पर्वत की लताओं की तरह हे किशोरियां ! हाय ! हमारी यातना की कोई भी शिकायत आप नहीं सुनते। बताइये, यह कौन है जो हमें वेदना दे रहा है ‘आपके संभाषण या आपकी आवाज’ ? और क्या यह वह आवाज ‘ऐ’ है जो आप सुग्गे एवं मुझ जैसी दुखिया को भगाने के लिये निकालते हैं ? यह समझना मुश्किल है। **2487**
अरियन याम् इन्रु काण्गिन्रन* कण्णन् विण् अनैयाय् ! पॅरियन कादम्* पॉरुक्को पिरिवॅन* ञालम् एय्दर् कुरियन ऑण् मुत्तुम् पैम् पॉन्नुम् एन्दि ओरो कुडङ्गैप्* पॅरियॅन कॅण्डै क्कुलम्* इवैयो वन्दु पेर्गिन्रवे॥११॥	हमलोग ने इतना ही कहा ‘क्या वे तुम्हारे पास से हटकर धन अर्जित करने चले जायेंगे ?’ धरती को खरीदने वाली सुन्दर आंखों की यह किशोरी, जिसकी बाहर निकलती एवं भीतर जाती चंचल आंखें केन्डै मछली की तरह एवं हाथ की तलहथी जैसी बड़ी बड़ी हैं, आंखों से मोती जैसे आंसू बहाते हुए मुर्झाकर पीली हो गयी है। हाय ! कृष्ण के स्वर्गिक सौंदर्य जैसी इस किशोरी को वेदनाग्रस्त देखना कठिन है। **2488**

पेर्गिन्रदु मणि मामै* पिरङ्गि अळ्ळल् पयलै* ऊर्गिन्रदु कङ्गुल् ऊळिगळे* इदॆल्लाम् इनवे ईर्गिन्र शक्करत्तॆम् पॆरुमान् कण्णन् तण्णन्दुळाय्* शार्किन्र नल् नॆञ्जिनार्* तन्दु पोन तनि वळमे॥१२	हमारा वदन फीका पड़ गया है।बीमारी की तरह हम पीले पड़ गये हैं और यह रात युग की तरह लंबी हो गयी है। मेरा हृदय, मेरे प्रभु कृष्ण, जो तीक्ष्ण चक्र धारण करते हैं उनकी शीतल तुलसी माला के साथ चला गया है। हाय ! यह बड़ी संपत्ति है जो उन्होंने हमारे लिये छोड़ा है। **2489**
तनि वळर् शॆङ्गोल् नडावु* तळल् वाय् अरशविय प्पनि वळर् शॆङ्गोल् इरुळ् वीट्रिरुन्ददु* पार् मुळुदुम् तुनि वळर् कादल् तुळायै त्तुळावु तण् वाडै तडिन्दु* इनि वळै काप्पवर् आर्* एनै ऊळिगळ् ईर्वनवे॥१३॥	प्रचंड ज्योति एवं दंड वाले सूर्य के सुनहले शासन का अंत हो गया है। (रात्रि का आगमन हो गया है) सर्वत्र अंधकार का राज्य हो गया है।शीतल हवा प्रभु की पूज्य तुलसी के घातक सुगंध को फैला रही है, इस आतंक के लिये इसे कौन सजा देगा ? विधि व्यवस्था की रक्षा कौन करेगा तथा हमारे कंगन को कौन बचायेगा ? हाय ! कितने युगों तक ऐसी स्थिति रहेगाी ? **2490**
ईर्वन वेल्लुम् अञ्जेल्लुम्* उयिर्मेल् मिळिर्न्दिवैयो* पेर्वनवो वल्ल* दॆय्व नल् वेळ् कणै* प्पेर् ऑळिये शोर्वन नील च्चुडर् विडु मेनि अम्मान्* विशुम्बूर् तेर्वन* दॆय्वम् अन्नीर कण्णो इच्चॆळुङ्गयल्ले॥१४॥	क्या ये हृदय में घुस जाने वाले भुजाल हैं या सुन्दर मछलियां हैं ? या क्या ये मदन के धनुष के बिना छोड़े हुए बाण हैं ? ये आंखें सच में ईश्वरीय मछली हैं जो जल के वर्ण वाले दिव्य प्रभु को वैकुंठ में खोज रही हैं। **2491**
कयलो नुम कण्गळ् एन्रु कळिरु विनवि निट्टीर्* अयलोर् अरियिलुम् ईदॆन्न वार्त्तै* कडल् कवर्न्द पुयलोडुलाम् कॊण्डल् वण्णन् पुन वेङ्कडत्तॆम्मॊडुम् पयलो इलीर्* कॊल्लै क्काक्किन्र नाळुम् पल पलवे॥१५॥	आप हाथी खोजते आये एवं सभी दर्शकों के सामने हमलोगों की आंखें एवं मछली के बारे में बोलने लगे। यह कैसी बातें आप कर रहे हैं ? हमलोग इस बाग की रखवाली वेंकटम के घनश्याम प्रभु के लिये बहुत लंबे समय से कर रही हैं। आप हमलोगों के बीच के नहीं हैं। **2492**
पल्पल ऊळिगळ् आयिडुम्* अन्रि ओर् नाळिगैयै* प्पल्पल कूरिट्ट कूरायिडुम्* कण्णन् विण् अनैयाय् !* पल्पल नाळ् अन्बर् कूडिलुम् नीङ्गिलुम् याम् मॆल्लिदुम्* पल्पल शूळल् उडैत्तु* अम्म ! वाळि इप्पाय् इरुळे॥१६॥	कृष्ण के आकाशीय आवास जैसे मृदु मित्र ! यह अंधकार या तो युग युगान्तर तक रहेगा या एक क्षण के अति ही सूक्ष्म अवधि में सिमट जायेगा। हमारे हृदय के प्रेमी हमारे साथ हो जायें या हमें छोड़े रहें दोनों ही स्थिति में हम वेदना में हैं। हाय ! यह अंधकार बहुत सारे दोषों से भरा है। यह बनी रहे ! **2493**
इरुळ् विरिन्दाल् अन्न* मा नीर् त्तिरै कॊण्डु वाळियरो* इरुळ् पिरिन्दार् अन्बर् तेर् वळि तूरल्* अरवणै मेल् इरुळ् विरि नील क्करु नायिरु शुडर् काल्वदु पोल्* इरुळ् विरि शोदि* प्पॆरुमान् उरैयुम् एरि कडले ! ॥१७॥	हे नीले श्यामल सागर जहां श्यामल आभा वाले प्रभु शेषशय्या पर शयन किये हुये हैं जो नीली किरणें विखेरते एक काले सूर्य की तरह हैं। आप बने रहें। मेरे प्रभु रात के अंधेरे में खिसक लिये। आपके रथ का चिह्न हमें सागर तट तक ले आया। विनती है कि चिह्नों को अपने काले तरंगों से मिटाये नहीं। **2494**

कडल् कॉण्डॅळुन्ददु वानम्⋆ अव्वानत्तै अन्रि च्चॅन्रु⋆ कडल् कॉण्डॅळुन्द अदनाल् इदु⋆ कण्णन् मण्णुम् विण्णुम्⋆ कडल् कॉण्डॅळुन्द अक्कालङ्गॅालो ! पुयल् कालम् कॅालो !⋆ कडल् कॉण्ड कण्णीर्⋆ अरुवि शॅय्या निर्कुम् कारिगैये॥१८॥	हे सुन्दर किशोरी ! बादल सागर से जल लेकर ऊपर उठते हैं। सागर ने पीछा कर पानी वापस ले लिया जिससे प्रलयकारी बाढ़ आयी एवं कृष्ण ने धरती आकाश सब को निगल लिया। क्या दूसरे समय में दूसरा प्रलय आयेगा ? क्या यह वर्षा का समय है ? हाय ! यह तुम्हारे आंसू हैं जो सागर की तरह उमड़ पड़े हैं। **2495**
कारिगैयार् निरै काप्पवर् यार् एन्रु⋆ कार् कॉण्डिन्ने मारि कै एरि⋆ अरैयिडुम् कालत्तुम्⋆ वाळियरो शारिगै प्पुळ्ळर् अम् तण्णन् तुळाय् इरै कूय् अरुळार्⋆ शेरि कै एरुम्⋆ पळियाय् विळैन्ददॅन् शिल् मॉळिक्के॥१९॥	नारियों ! देखो कैसे काले बादल गरजते हुए चुनौती दे रहे हैं। आप लोगों में से कौन मर्यादा से रहेगी ? कम से कम अभी गरूड़ पर चक्कर काटने वाले प्रभु हमलोगों की थोड़ी सी तुलसी माला देने के लिये न पुकार दें ? हाय ! इसी कारण से हमारी कम बोलने वाली बेटी नगर के शिकायत की वस्तु बन गयी है। संसार अमर रहे। **2496**
शिन्मॉळि नोयो⋆ कळि पॆरुन् दॅय्वम्⋆ इन् नोय् इनदॅन्रु इन्मॉळि केट्कुम्⋆ इळन् दॅय्वम् अन्रिदु⋆ वेल ! निल् नी एन् मॉळि केण्मिन् एन् अम्मनै मीर् ! उलगेळुम् उण्डान्⋆ शॅाल् मॉळिमालै⋆ अन्दण्णन्दुळाय् कॉण्डु शूट्टुमिने॥२०॥	नारियों सुनो ! आधा भुजाल नर्तक। इस कम बालेने वाली किशोरी की बीमारी का कारण एक बहुत बड़े प्रभु हैं। किसी छोटे देवता की यह करतूत नहीं है जो इस भुजाल नर्तक से सुन जाये। सात लोकों को निगलने वाले प्रभु का नाम लो तथा इसके जूड़े में तुलसी की माला लपेट दो। **2497**
शूट्टु नल् मालैगळ्⋆ तूयन वेन्दि⋆ विण्णोर्गळ् नन्नीर् आट्टि⋆ अन्दूबम् तरानिर्कवे अङ्गु⋆ ओर् मायैयिनाल् ईट्टिय वॆण्णै तॊडुवुण्ण प्पोन्दिमिल् एट्टु वन् कून्⋆ कोट्टिडै आडिनै कूत्तु⋆ अडल् आयर् तम् कॉम्बिनुक्के॥२१॥	आकाश के प्रभु ! स्वर्गिकों ने नूतन माला एवं सुगंधित धूप से आपकी पूजा की। आप जादू की तरह क्षण भर में क्या यहां आकर मक्खन नहीं चुराये एवं सात वृषभों के सींग पर गोप किशोरी नप्पिनाय के लिये नृत्य नहीं किया ? **2498**
कॉम्बार् तळै कै शिरु नाण् एरिविल्लम्⋆ वेट्टै कॉण्डा– ट्टम्बार् कळिरु विनवुवदैयर्⋆ पुळ् ऊरुम् कळ्वर् तम् पार् अगत्तॅन्रुम् आडादन तम्मिल् कूडादन⋆ वम्बार् विना च्चॊल्लवो⋆ एम्मै वैत्तदिव् वान् पुनत्ते॥२२॥	श्रीमान आपका दंड नमीपूर्ण एवं ताजा है। इसपर प्रत्यंचा का कहीं नामो निशान नहीं है। श्रीमान आपने जिस हाथी पर बाण मारा उसे खोजते हुए यहां आये। गरूड़ की सवारी करने वाले आश्चर्यमय प्रभु के विस्तृत पृथ्वी पर इस तरह की बातें कभी नहीं हुई हैं। आपकी शिकार यात्रा आनंद उठाने का एक बहाना मात्र है। आप अप्रासंगिक बातें कर रहे हैं। क्या इसीलिये आपने हमलोगों को इस बाग में रोक रखा है ? **2499**
पुनमो पुनत्तयले वळि पोगुम् अरु विनैयेन्⋆ मनमो मगळिर् नुम् कावल् शॅाल्लीर्⋆ पुण्डरीगत्तङ्गेळ् वनम् ओर् अनैय कण्णान् कण्णन् वान् नाडमरुम्⋆ दॅय्व– त्तिनम् ओर् अनैयीर्गळाय्⋆ इवैयो नुम् इयल्वुगळे॥२३॥	नारियों ! क्या आपलोग इस बाग के संरक्षक हैं या इस भाग्यहीन राहगीर के हृदय के ? आपलोग कृष्ण के आकाशीय जगत के स्वर्गिकों के समूह हैं जिस प्रभु की आंखें कमल के गुच्छों की तरह दिखती हैं। बताओ, क्या तुम्हारे लिये यह ठीक है ? **2500**

इयल्वायिन वञ्ज नोय् कॉण्डुलावुम्⋆ ओरो कुडङ्गै कयल् पाय्वन⋆ पॅरु नीर् क्कण्गळ् तम्मॉडुम्⋆ कुन्रम् ऑन्राल् पुयल् वाय् इन निरै कात्त पुळ् ऊर्दि कळ् ऊरुम् तुळाय्⋆ क्कॉयल्वाय् मलर्मेल्⋆ मनत्तॊडॆन् आङ्गॊलॆम् कोल्वळैक्के ॥ २४ ॥	हमारी कंगन वाली बेटी भयंकर बीमारी की शिकार हो गयी है। इसकी मछली सी आंखें तलहथी भर अश्रु बहा रही हैं। हाय ! इसका एवं इसके हृदय का क्या होगा जो पक्षी आरोही प्रभु जिन्होंने पर्वत से वर्षा के विरोध में गायों की रक्षा की उनकी अमृतमय तुलसी की माला के लिये तड़प रही है ? **2501**
एम् कोल् वळै मुदला⋆ कण्णन् मण्णुम् विण्णुम् अळिक्कुम्⋆ शॅङ्गोल् वळैवु विळै विक्कुमाल्⋆ तिरल् शेर् अमरर् तङ्गोनुडैय तम् कोन् उम्बर् एल्ला अवरक्कुम् तम् कोन्⋆ नम् कोन् उगक्कुम् तुळाय्⋆ एन् शॅय्यादिनि नानिलत्ते ॥ २५ ॥	हमारी कंगन वाली बेटी के कारण यह तुलसी कृष्ण के धरती एवं आकाश के शासन में एक कलंक बन गयी है जिसमें देवों के प्रभु स्वर्गिकों के प्रभु एवं सवों के प्रभु इतना प्रेम रखते हैं। हाय ! इस चार भाग वाले जगत में अब और इससे ज्यादा क्या होगा ? **2502**
नानिलम् वाय् क्कॉण्डु⋆ नन्नीर् अरमॅन्रु कोदु कॉण्ड⋆ वेनिल् अम् शॅल्वन् शुवैत्तुमिळ् पालै⋆ कडन्द पॊन्ने ! काल् निलम् तोयन्दु विण्णोर् तॊळुम् कण्णन् वॅग्कावुदु⋆ अम् पून् तेन् इळञ्जोलै अप्पालदु⋆ एप्पालैक्कुम् शेमत्तदे ॥ २६ ॥	गर्म स्वभाव के सूर्य चार भाग वाली धरती को खा जाते हैं। इसका रस चूसकर सूखा मरूभूमि उगल देते हैं। प्यारी किशोरी ! जो अभी तुरत उस क्षेत्र से पार की है। स्वर्गिक जन नीचे आकर कृष्ण की पूजा वेग्का (कांची यथोक्तकारी) में करते हैं जो विल्कुल पास है। इसके बाद सुगंधित अमृमय बागों से घिरा तिरूतन्कल (कांची दीपप्रकाश) है। यह किसी को भी किसी भी स्थिति में आराम देता है। अतः यहां रूको। **2503**
शेमम् शॅङ्गोन् अरुळे⋆ शॅरुवारुम् नट्पागुवर् एन्रु एमम् पॅर वैयम्⋆ शॊल्लुम् मॅय्ये⋆ पण्डॆल्लाम् अरै कूय् यामङ्गळ् तोरॅरि वीशुम् नम् कण्णन् अम् तण्णन्दुळाय्⋆ त्तामम् पुनैय⋆ अव् वाडै ईदो वन्दु तण्णॆन्रदे ॥ २७ ॥	'राजा का कृपापात्र बनने से शत्रु भी मित्र बन जाता है' यह कहावत चरितार्थ हो गयी। प्रभु की तुलसी माला मिलने के बाद युगों से चलने वाली हवा जो हम पर आग उगलती थी अब शीतल एवं सुखदायी हो गयी है। **2504**
तण्णन्दुळाय्⋆ वळै कॊळ्वदु याम् इळप्पोम्⋆ नडुवे वण्णम् तुळावि⋆ ओर् वाडै उलावुम्⋆ वळ् वाय् अलगाल् पुळ् नन्दुळामे पॊरु नीर् त्तिरुवरङ्गा !⋆ अरुळाय्⋆ एण्णन् तुळावुमिडत्तु⋆ उळवो पण्डुम् इन्नन्नवे ॥ २८ ॥	तिरूवरंगम के प्रभु ! यहां कावेरी जल की लहरों के कारण तीक्ष्ण चोंच वाली पक्षी घोंघा पर चोट नहीं कर पाते।जबकि तुलसी माला के लिये हमने अपना कंगन गंवा दिया। क्या शीतल हवा के लिये यह उचित है कि वह हमारे अंदर से बहकर हमारे रंग को सुखा दे ? क्या पहले इस तरह से हुआ है ? बताओ। **2505**
इन्नन्न तूदॆम्मै⋆ आळ् अट्ट्पट्टिरन्दाळ् इवळ् एन्रु⋆ अन्नन्न शॊल्ला⋆ पॅडैयॊडुम् पोय्वरुम्⋆ नीलम् उण्ड मिन्नन्न मेनि प्पॅरुमान् उलगिल् पॅण् तूदु शॅल्ला⋆ अन्नन्न नीर्मै कॊलो⋆ कडि च्चीर्मैयिल अन्नङ्गळे ॥ २९ ॥	हम इसी तरह से प्रभु के बारे में बोलते रहे क्योंकि हम जानते थे कि हम बिना किसी सहायता के अकेले पड़ गये हैं। अच्छे कुल के कारण हंस की जोड़ी बुरे चीजों से अच्छी चीज को चुन लेती है। मेरे शब्दों से केवल मृदु शब्दों को प्रभु तक मेरा संवाद पहुंचाना। हे बुरे कुलवाले हंस ! क्या कभी मेघ एवं तड़ित वर्ण के प्रभु के सुखद जगत में ऐसा हुआ है कि हंस कभी हंसिनी का संवाद नहीं पहुंचाये। **2506**

अन्नम् शॅल्वीरुम् वण्डानम् शॅल्वीरुम् तॉळुदिरन्देन्⋆ मुन्नम् शॅल्वीर्गळ्⋆ मरवेल्मिनो⋆ कण्णन् वैगुन्दनो– डॅन् नॅञ्जिनारै क्कण्डाल् एन्नै च्चॊल्लि⋆ अवरिडै नीर् इन्नम् शॅल्लीरो⋆ इदुवो तगवॅन्रिशैमिन्गाळे॥ ३०॥	उड़ने के लिये तैयारी करते हुए हे हंस एवं सारस ! आपलोगों से एक प्रार्थना है। जो भी वहां पहले पहुंचो, भूलो नहीं। अगर तुम हमारे हृदय को वैकुंठ के नाथ कृष्ण के पास देखो तो प्रभु को बताओ 'मेरा हृदय है, परिचय दो। उनको प्रभावित करो।' एवं पूछो ' क्या आप अभी भी नहीं लौट जायेंगे ? क्या यह उचित है ?' **2507**
इशै मिन्गाळ् तूदॅन्रु⋆ इशैत्ताल् इशैयिलम्⋆ एन् तलैमेल् अशै मिङ्गळ् एन्राल् अशैयुम् कॊल्लाम्⋆ अम् पॊन् मा मणिगळ् दिशै मिन् मिळिरुम् तिरुवेङ्गडत्तु वन् ताळ्⋆ शिमय मिशै⋆ मिन् मिळिरिय प्पोवान् वळि क्कॊण्ड मेगङ्गळे॥ ३१॥	श्याम एवं तड़ित रेखा वाले बादल वेंकटम के स्थायी शिखरों पर जाकर सोना एवं मोती वर्षाने के लिये तैयार हैं। जब मैंने उनसे अपना एक संवाद ले जाने के लिये निवेदन किया तो मना कर दिया। क्या वे कम से कम हमारे सिर के ऊपर से तो उड़ कर जायेंगे ? अहा ! हां। **2508**
मेगङ्गळो ! उरैयीर्⋆ तिरुमाल् तिरुमेनि ऑक्कुम्⋆ योगङ्गळ् उङ्गळुक्कॆव् वारु पॆट्टीर्⋆ उयिर् अळिप्पान् मागङ्गळ् एल्लाम् तिरिन्दु नल् नीर्गळ् शुमन्दु⋆ नुन् तम् आगङ्गळ् नोव⋆ वरुन्दुम् तवमाम् अरुळ् पॆट्टदे॥ ३२॥	हे बादल ! बताओ तुम तिरूमल प्रभु के श्याम रंग को कैसे पा गये ? मैं जानता हूं। जीवन प्रदान करने वाले जल लेकर तुम यत्र तत्र घूमते रहते हो जिससे तुम्हारे वदन को बहुत पीड़ा पहुंचती है। इसी तपस्या से तुम दया पात्र बने हो। **2509**
अरुळ् आर् तिरु च्चक्करत्ताल्⋆ अगल् विशुम्बुम् निलनुम्⋆ इरुळ् आर् विनै कॆड च्चॆङ्गोल् नडावुदिर्⋆ ईङ्गोर् पॆण्बाल् पॊरुळो एनुम् इगळ्वो इवट्रिन् पुरत्ताळ् एन्रॆण्णो⋆ तॆरुळोम् अरवणैयीर्⋆ इवळ् मामै शिदैक्किन्रदे॥ ३३॥	शेष पर शयन करने वाले प्रभु ! आप अपने उदार चक्र के माध्यम से कर्म के अंधकार को दूर करते हुए विस्तृत धरती एवं आकाश में शासन करते हैं। यह किशोरी दिन प्रति दिन दुबली होती जा रही है। क्या इसलिये कि नारियों को अपनी सृष्टि में आप निरर्थक पाते हैं ? या यह किशोरी आपके न्याय के क्षेत्र से बाहर है ? हमलोग नहीं जानते। **2510**
शिदैक्किन्रदाळि⋆ एन्राळियै च्चीरि⋆ तन् शीरडियाल् उदैक्किन्र नायगन्⋆ तन्नॊडु माल्ले⋆ उनदु तण् तार् तदैक्किन्र तण्णन्दुळाय् अणिवान् अदुवे मनमाय्⋆ प्पदैक्किन्र मादिन् तिरत्तु⋆ अरियेन् शॅयर् पालदुवे॥ ३४॥	हे आदरणीय प्रभु ! यह किशोरी अपने पैर से बालू के ऊपर गोले का चित्र बनाते हुए उन्हें गिनती है। अगर गिनती का शकुन अच्छा नहीं निकलता तो गुस्से से उन गोलों को पैरों से ही मिटा देती है। इसका हृदय आपके शीतल तुलसी माला पर टिका हुआ है जो यह बड़बड़ाते रहती है। हमें नहीं पता कि हम इस किशोरी के लिये क्या करें। **2511**
पाल् वाय् प्पिरै प्पिळ्ळै⋆ ऑक्कलै क्कॊण्डु⋆ पगल् इळन्द मेल्पाल् तिशैप्पॆण् पुलम्बुरु माल्लै⋆ उलगळन्द माल्पाल् तुळाय्क्कु मनम् उडैयार्क्कु नल्गिट्टै एल्लाम्⋆ शोल्वान् पुगुन्दु⋆ इदुवोर् पनि वाडै तुळागिन्रदे॥ ३५॥	लुटेरा सूर्यास्त काल ने बहादुर दिन का बध कर दिया है। इसकी युवा पत्नी पश्चिम अपने कमर पर दूध टपकाते चंद्र को लेकर चीत्कार कर रही है। जो धरती मापने वाले प्रभु की तुलसी माला चाहते हैं उनलोगों का सबकुछ इसकी प्रजा शीतल वायु उत्पात मचाते हुए हर ले गयी है। **2512**

तुळा नॅडुम् शूळ् इरुळ् एन्रु★ तन् तण् तार् अदु पॅयरा एळा नॅडुवूळि★ एळुन्द इक्कालत्तुम्★ ईङ्गिवळो वळा नॅडुन् तुन्बत्तळ् एन्रिरङ्गार् अम्मनो !★ इलङ्गै कुळा नॅडु माडम्★ इडित्त पिरानार् कॉडुमैगळे ! ॥३६	किला से संरक्षित लंका का नाश करने वाले प्रभु अपनी शीतल तुलसी की माला नहीं देते।आपका हृदय दया से द्रवित होकर यह नहीं कहता ‘यह किशोरी वेदनाग्रस्त है। यह स्थान इसके लायक नहीं है।’ हाय ! भयानक व्यवहार है। **2513**
कॉडुङ्गाल् शिलैयर् निरैगोळ् उळवर् कॉलैयिल् वॅय्य★ कडुङ्गाल् इळैञर् तुडि पडुम् कव्वैत्तु★ अरु विनैयेन् नॅडुङ्गालमुम् कण्णन् नीळ् मलर् प्पादम् परवि प्पॅट्★ तॉडुङ्गाल् ऑशियुम् इडै★ इळमान् शॅन्र शूळ् कडमे॥३७॥	ओह पापिनी मैं ! मेरी कोमल मृगशावक जैसी बेटी जो लंबे काल से कृष्ण के चरणों की पूजा करती थी चली गयी है। हमलोगों के चारो ओर की मरूभूमि भयानक धनुष चलाने वाले शिकारियों, पशु चोरों, हत्यारों एवं रात भर नगाड़ा बजाने वाले तेज धावकों से भरा है। **2514**
कडम् आयिनगळ् कळित्तु★ तन् काल् वन्मैयाल् पल नाळ्★ तडम् आयिन पुक्कु★ नीर् निलै निन्र तवम् इदुगॉल्★ कुडम् आडि इम् मण्णुम् विण्णुम् कुलुङ्ग उलगळन्दु★ नडम् आडिय पॅरुमान्★ उरुवॉत्तन नीलङ्गळे॥३८॥	गाढ़े नीले जलकुमुद ! तुम्हारा रंग पात्र नर्तक प्रभु का है जिन्होंने धरा एवं आकाश को अपने गर्जनभरे चरण से माप दिया। क्या यह आपकी तपस्या का फल है ? आपने अपने बाग वाले घर का त्याग कर सब समय एक पैर पर गहरे जल में खड़ा रहते हैं। **2515**
नील त्तडवरै मेल्★ पुण्डरीक नॅडुन् तडङ्गळ् पोल★ पॉलिन्दॅमक्कॅल्ला विडत्तवुम्★ पॉङ्गु मुन्नीर् ञाल प्पिरान् विशुम्बुक्कुम् पिरान् मट्रुम् नल्लोर् पिरान्★ कोलम् करिय पिरान्★ एम् पिरान् कण्णिन् कोलङ्गळे॥३९॥	हमारे प्रभु श्याम रंग के हैं, सागर से घिरे धरा के प्रभु हैं, आकाश के प्रभु हैं तथा नेक लोगों के प्रभु हैं। आपकी सुन्दर आंखें श्यामल पर्वत के रत्न सरोवर में कमल के गुच्छे जैसे हैं।ये हमें सब जगह दिखते हैं। **2516**
कोल प्पगल् कळिरॉन्रु कल् पुय्य★ कुळाम् विरिन्द नील क्कङ्गुल् कळिरॅल्लाम् निरैन्दन★ नेरिळैयीर् ! ञाल प्पॉन् मादिन् मणाळन् तुळाय् नङ्गळ् शूळ् कुळर्के★ एल प्पुनैन्दॅन्नैमार्★ एम्मै नोक्कुवदॅन्रु कॉल्लो ! ॥४०॥	नारियों ! सुवर्ण जड़ित नर हाथी सूर्य पश्चिम दिशा के पर्वतों पर चला गया है एवं काले हाथियों का समूह रात्रि उसे चारो तरफ से घेर लिया है। क्या हम अपने घुंघराले लटों में भू देवी एवं श्रीदेवी के पति की तुलसी माला पहरने के लिये पा सकेंगे ? कब हमारी मां हमें इस तरह से देखेंगी ? हाय ! **2517**
एन्रुम् पुन् वाडै इदु कण्डरिदुम्★ इव्वारु वॅम्मै ऑन्रुम् उरुवुम् शुवडुम् तॅरियिल्लम्★ ओङ्गशुरर् पॉन्रुम् वगै पुळ्ळै ऊर्वान् अरुळ् अरुळाद इन्नाळ्★ मन्रिल् निरै पळि तूट्रि★ निन्रॅन्नै वन् काट्रुडुमे॥४१॥	गरूड़ की सवारी करने वाले एवं दुष्ट असुरों के विनाशक प्रभु आज दया दर्शाते नहीं दिख रहे हैं। दक्षिण की तेज हवा लंबी अवधि तक परिसर में बह रही है एवं हमें अपशब्दों से आहत कर रही है। हमलोगों ने इस तरह की कठोर हवा पहले भी देखी है परंतु इस तरह की गर्मी आक्रोश एवं विनाश नहीं देखा है। **2518**

वन् काट्ऱैय ऑरुङ्ग मरिन्दु किडन्दलरन्द* मॅन् काल् कमल त्तडम्पोल् पॉलिन्दन* मण्णुम् विण्णुम् ऎन् कार्कळविन्मै काण्मिन् ऎन्बान् ऑत्तु वान् निमिरन्द* तन् काल् पणिन्द ऎन्बाल्* ऎम् पिरान् तडङ्गण्गळे॥८२॥	जब प्रभु फैलकर आकाश में चले गये तो उनकी आंखें पार्श्व में देखकर मानो कह रही थीं 'ये सभी लोक हमारे चरण के लिये उपयुक्त नहीं हैं।' हमारे ऊपर की बहती हुई हवा हमें कमल से भरा सरोवर दिखा रही है जो सब एक तरफ झुके हुए हैं। **2519**
कण्णुम् शॅन्तामरै कैयुम् अवै अडियो अवैये* वण्णम् करियदोर् माल् वरै पोन्ऱु* मदि विगर्पाल् विण्णुम् कडन्दुम्बर् अप्पाल् मिक्कु मट्ॅप्पाल् ऎवरक्कुम्* ऎण्णुम् इडत्तदुवो* ऎम् पिरानदॅळिल् निऱमे॥८३॥	हमारे प्रभु की आखें कमल की तरह हैं। उनके हाथ उसी तरह के हैं एवं चरण भी वैसे ही हैं। आपका दिव्य श्यामल स्वरूप का रंग विशाल पर्वत के रंग का है जो आकाश में उठकर स्वर्गिकों के लोक से ऊपर जाते हुए किसी के समझ के बाहर एवं बुद्धि से परे है। ओह ! **2520**
नियम् उयर् कोलमुम् पेरुम् उरुवुम् इवै इवै ऎन्ऱु* अऱ मुयल् ज्ञान च्चमयिगळ् पेशिलुम्* अङ्ङॅङ्ल्लाम् उऱ उयर् ज्ञान च्चुडर् विळक्काय् निन्ऱदन्ऱि ऑन्ऱुम्* पॅऱ मुयन्ऱार् इल्लैयाल्* ऎम्पिरान् तन् पॅरुमैयैये॥८४॥	धार्मिक शास्त्रों के जानकार लोग जो प्रभु के रंग आभूषण नाम एवं स्वरूप का बखान करते हैं वे अतिविशिष्ट ज्ञान की केवल झांकी तक ही प्राप्त कर सके हैं, जो दिव्य प्रकाश की तरह खड़ा है, परन्तु गौरव पूर्ण गाथा की बाढ़ का लेश मात्र भी नहीं पा सके। हाय ! **2521**
पॅरुङ्गेळलार् तम्* पॅरुङ्गण् मलर् प्पुण्डरीकम्* नम्मेल् ऑरुङ्ग पिऱळ वैत्तार् इव्व कालम्* ऑरुवर् नम् पोल् वरुङ्गेळपवर् उळरे तॉल्लै वाळियम् शूळ् पिऱप्पु* मरुङ्ग वर प्पॅऱुमे* शॉल्लु वाळि मड नॅञ्जमे ! ॥८५॥	मेरे कमजोर हृदय ! बने रहो। बताओ, महान सूकर प्रभु ने अपनी कमल सी आंखों से हमलोगों को देखा है एवं हमलोगों को बहुत सारे बुरे समय दिखाया है। हमलोगों के जैसा आपको पुराकाल से जानने वाला एवं साथ रहने वाला और कोई है क्या ? क्या भविष्य के जन्म हमें धैर्यपूर्वक रख सकेंगे ? **2522**
मड नॅञ्जम् ऎन्ऱुम् तमॅन्ऱुम्* ओर् करुमम् करुदि विड नॅञ्जै उट्ार् विडवो अमैयुम्* अ प्पॉन् पॅयरोन् तड नॅञ्जम् कीण्ड पिरानार् तमदडि क्कीळ् विड* प्पोय् त्तिड नॅञ्जमाय्* ऎम्मै नीत्तिन्ऱु ताऱुम् तिरिगिन्ऱदे॥८६॥	जो लोग हृदय को आज्ञाकारी मानकर कार्यकम बनाये हुए हैं कि जो कहेंगे वह करेगा उनको अपना कार्यकम छोड़ देना चाहिये। मैंने अपने हृदय को प्रभु के चरणों में भेजा जिन्होंने असुर की लौहवत छाती को चीर दिया था। हाय ! वह मेरा हृदय वहीं स्थिर होकर रह गया और आज तक एक बार भी मेरे पास नहीं लौटा। **2523**
तिरिगिन्ऱदु वड मारुदम्* तिङ्गळ् वॅन्दी मुगन्दु* शॉरिगिन्ऱददुवुम् अदु* कण्णन् विण्णूर् तॉळवे शरिगिन्ऱदु शङ्गम् तण्णन्दुळायक्कु वण्णम् पयलै* विरिगिन्ऱदु मुळु मॅय्युम्* ऎन् आम्मॉल् ऎन् मॅल्लियर्के॥८७॥	वह केवल कृष्ण के आकाशीय घर को नमस्कार की थी।हाय ! ओस कणों से अभिषिक्त हवा चांद का ताप लेकर बहती है जबकि चांद गर्मी से तप रहा है। उसके कंगन खिसक रहे हैं। शीतल तुलसी माला की चाह में उसका सारा वदन पीला पड़ गया है। हाय ! हमारी कृशकाय प्यारी का क्या होगा ? **2524**

मॅल्लियल् आक्कै क्किरुमि* कुरुविल् मिळिर् तन्दाङ्ग* शॅल्लिय शॅल्गैत्तुलगै एन् काणुम्* एन्नालुम् तन्नै च्चॉल्लिय शूळल् तिरुमाल् अवन् कवि यादु कट्टेन्* पल्लियिन् शॉल्लुम् शॉल्ला* कॉळ्वदो उण्डु पण्डु पण्डे॥ ४८॥	मैं घाव का एक भूखा कीड़ा हूं जो केवल घाव में ही रेंगना जानता है। अन्य दुनियां वह जान ही क्या सकता है ? तिरूमल प्रभु अपनी गाथा का गीत रचने से हमें वंचित करते हैं परंतु मैं कविता करना कितना जानती ही हूं ? तबभी एक छिपकली की आवाज पुरातन काल से एक बोले हुए शब्द के रूप में तो लिया ही जाता है। **2525**
पण्डुम् पल्पल वीङ्गिरुळ् काण्डुम्* इ प्पाय् इरुळ् पोल् कण्डुम् अरिवदुम् केट्पदुम् याम् इलम्* काळ वण्ण वण्डुण् तुळाय् प्पॅरुमान् मदुशूदनन् दामोदरन्* उण्डुम् उमिळ्न्दुम् कडाय* मण्णेरन्न ऑण्णुदल्ले ! ॥ ४९ ॥	हे आभावाली किशोरी ! तुम्हारे ललाट में उस धरती की चमक है जिसे मधुमक्खी लिपटे शीतल तुलसी की माला धारण करने वाले श्यामल प्रभु मधुसूदन दामोदर निगल गये एवं फिर बनाकर उसे चरणों से माप दिया। पूर्व में भी प्रभु के श्यामल रंग के बारे में सुने थे परन्तु ऐसा श्यामल तो न जाना न सुना। **2526**
ऑण् नुदल् मामै ऑळि पयवामै विरैन्दु नम् तेर्* नण्णुदल् वेण्डुम्* वलव ! कडागिन्रु* तेन् नविन्र विण् मुदल् नायगन् नीळ् मुडि वॅण् मुत्त वाशिगैत्ताय्* मण् मुदल् शेर्वुट्रु* अरुवि शॅय्या निर्कुम् मा मलैक्के॥ ५०॥	हे निपुण भाई ! इससे पहले कि किशोरी का तेजपूर्ण ललाट पीला पड़े या शरीर शिथिल हो जाये अपना रथ तेजी से हंकाओ। हमलोगों को मधुमक्खी मंड़राते महान वेंकटम पर्वत पर पहुंचना है जहां जल के झरने जमीन पर प्रभु के किरीट से चरणारविंद तक के मोती की लड़ियों की तरह गिरते हैं। **2527**
मलै कॉण्डु मत्ता अरवाल्* शुळट्रिय माय प्पिरान्* अलै कण्डु कॉण्ड अमुदम् कॉळ्ळादु कडल्* परदर् विलै कॉण्डु तन्द शङ्गम् इवै वेरि त्तुळाय् तुणैया* त्तलै कॉण्ड तायम किळरन्द* कॉळ्वान ऑत्तलैक्किन्रदे॥ ५१॥	प्रभु से नाग एवं पर्वत को उपयोग में लाते हुए अमृत निकाल लेने से सागर बहुत गुस्से में है तथा मुझे एक हिस्सेदार के रूप में लड़ने के लिये बुला रहा है। हाय ! ये कंगन हमने सागर तट के आदिम निवासियों से खरीदा है और इसके पास में तुलसी की सुगंध भी है **2528**
अळैक्कुम् करुङ्गडल्* वॅण् तिरै क्कैकॉण्डु पोय्* अलर्वाय् मळैक्कण् मडन्दै अरवणै एर्* मण् मादर् विण्वाय् अळैत्तु प्पुलम्बि मुलैमलै मेल् निन्रुम् आरुगळाय्* मळै क्कण्ण नीर्* तिरुमाल् कॉडियान् एन्रु वार्गिन्रदे ! ॥५२॥	कमल में निवास करने वाली लक्ष्मी सागर से प्रभु की पुकार सुनकर आपके श्वेत तरंग वाले हाथों को पकड़ के आपके शेषशय्या पर पहुंच जाती है। यह देखकर भू देवी अपने आकाश रूप मुंह से चिल्लाती है ‘तिरूमल दुष्ट हैं’ एवं अश्रु वर्षा करती है जिससे पर्वत की नदियां उमड़ पड़ती हैं। **2529**

<table>
<tr><td>वार् आयिन मुलैयाळ् इवळ्* वानोर् तलैमगन् आम्*
शीर् आयिन दैय्व नल् नोयिदु* दैय्व त्तण्णन्दुळाय्
त्तार् आयिनुम् तळै आयिनुम् तण् कॉम्बदायिनुम्* कीळ्
वेर् आयिनुम्* निन्र् मण् आयिनुम् कॉण्डु वीशुमिने॥५३॥</td><td>पूर्ण उरोज वाली इस किशोरी को मंगलमय प्रभु से ईश्वरीय रोग का संकमण लग गया है। इसे प्रभु का धारण किया हुआ शीतल तुलसी माला सुंघा दो। चाहे उसकी एक पत्ती या डंठल या वह मिट्टी जहां तुलसी उपजी है कोई भी हो असर करेगा। **2530**</td></tr>
<tr><td>वीशुम् शिरगाल् परत्तिर्* विण् नाडु नुङ्गट्कॅळिदु*
पेशुम् पडि अन्न पेशियुम् पोवदु* नैय् तॉडुवुण्डु
एशुम् पडि अन्न शैय्युम् एम् ईशर् विण्णोर् पिरानार्*
माशिन् मलरडि क्कीळ्* एम्मै च्चेर्विक्कुम् वण्डुगळे॥५४॥</td><td>हे भ्रमरगन ! तू हमें पूर्ण प्रभु के चरणों से मिलाने वाले हो जो देवां के नाथ हैं एवं मक्खन चुराने के लिये डांट सुन चुके हैं। तुम्हारे पंख तुम्हें वैकुंठ तक सरलता से ले जायेंगे। इसके पहले कि तुम जाओ यह बताओ कि हमारे बारे में वहां उनसे क्या बताओगे ? **2531**</td></tr>
<tr><td>वण्डुगळो ! वम्मिन्* नीर् प्पू निल प्पू मरत्तिल् ऑण् पू*
उण्डु कळित्तुळल् वीर्क्कॉन्रैक्कियम्* एनम् ऑन्राय्
मण् तुगळ् आडि वैगुन्दम् अन्नाळ् कुळल् वाय् विरै पोल्*
विण्डुगळ् वारुम्* मलर् उळवो नुम् वियलिडत्ते॥५५॥</td><td>हे भ्रमरगन ! तू जल के फूल, मिट्टी के फूल, एवं आकाश के फूल का रस चख चुके हो। हमें कुछ पूछना है। प्रभु सूकर के स्वरूप में आये एवं धरती की धूल का आनंद लिया। उनके वैकुंठ की तरह यह किशोरी भी मृदु है जिसके जूड़े के फूल अमृतमय सुगंध विखेरते हैं।क्या ऐसा सौंदर्य अन्य कहीं देखा है ? **2532**</td></tr>
<tr><td>वियलिडम् उण्ड पिरानार्* विडुत्त तिरुवरुळाल्*
उयलिडम् पॅट्रुयन्दम् अञ्जलम् तोळि* ओर् तण्तॅन्रल् वन्दु
अयलिडै यारुम् अरिन्दिलर् अम् पून् तुळायिन् इन् तेन्*
पुयलुडै नीर्मैयिनाल्* तडविट्रॅन् पुलन् कलने॥५६॥</td><td>बहन ! डरो मत। पृथ्वी निगलने वाले प्रभु की कृपा से हम आश्रय पा गये हैं तथा हमारा पुनरोद्धार हो गया है। बादल के स्वर्गिक स्पर्श एवं तुलसी के अमृत को ढ़ोते हुए शीतल वायु हमारे अंगों एवं इन्द्रियों को आराम दे चुकी है। अन्य कोई इसके बारे में नहीं जानता था। **2533**</td></tr>
<tr><td>पुल क्कुण्डल प्पुण्डरीकत्त पोर् क्कॅण्डै* वल्लि ऑन्राल्
विलक्कुण्डुलागिन्रु वेल् विळिक्किन्रन* कण्णन् कैयाल्
मलक्कुण्डमुदम् शुरन्द मरि कडल् पोन्रवट्राल्*
कलक्कुण्ड नान्रु कण्डार्* एम्मै यारुम् कळरलरे॥५७॥</td><td>कमल जैसे मुखमंडल पर कान के दो कुंडल एवं केन्डै मछली की तरह की आंखों का युद्ध बीच के लता जैसे नाक के कारण बच गया है। कटार की तरह नजरों ने हमारे हृदय को वैसे उद्वेलित कर दिया है जैसे कृष्ण ने सागर का अमृत के लिये मंथन से कर दिया था। जिसने यह देखा है हमें कभी डांट नहीं लगायेगा। **2534**</td></tr>
<tr><td>कळल् तलम् ऑन्रे निल मुळुदायिट्रु* ऑरु कळल् पोय्
निळल् तर* एल्ला विशुम्बुम् निरैन्ददु* नीण्ड अण्डत्तु
उळरलर् ञान च्चुडर् विळक्काय् उयरन्दोरै इल्ला*
अळरलर् तामरै क्कण्णन्* एन्नो इङ्गळक्किन्रदे॥५८॥</td><td>आपका एक तलुवा धरती को ढके हुए था एवं आकाश के एक पैर की छाया से उसके नीचे के सभी लोक भर गये थे। ज्ञान के आनंद की ज्योति संपूर्ण ब्रह्मांड पर फैल गयी थी। कीचड़ के कमल की तरह सुन्दर कृष्ण जैसा कोई दूसरा नहीं है। आश्चर्य है कि हम लोगों के लिये उन्होंने क्या सोच रखा है ? **2535**</td></tr>
</table>

अळप्परुम् तन्मैय ऊळि अम् कङ्गुल्* अम् तण्णन्दुळाय्क्कु उळ पॅरुङ्गादलिन् नीळियवाय् उळ* ओङ्गु मुन्नीर् वळ पॅरु नाडन् मदुशूदनन् एन्नुम् वल् विनैयेन्* तळ पॅरु नीळ् मुरुवल्* शॅय्य वाय तड मुलैये॥५९॥	हाय पापिनी मैं ! मृदु विजयी मुस्कान एवं मूंगे की तरह होंठ वाली हमारी बेटी वेदना में कहती है ‘युग की तरह लंबी रात जिसे मापना संभव नहीं है, वह उतनी ही बढ़ती जा रही है जितनी मधुसूदन प्रभु वाली तुलसी के लिये हमारी चाह बढ़ रही है। परंतु, हाय ! वे तो सागर से घिरे पृथ्वी के शासक हैं। **2536**
मुलैयो मुळु मुट्टुम् पोन्दिल* मॉय् पूङ्गुळल् कुरिय कलैयो अरै इल्लै नावो कुळरुम्* कडल् मण् एल्लाम् विलैयो एन मिळिरुम् कण् इवळ् परमे ! पॅरुमान् मलैयो* तिरुवेङ्कडम् एन्रु कर्किन्र वाशगमे॥६०॥	उसके उरोज पूर्णतया उन्नत नहीं हुए हैं, उसके कोमल बाल जूड़े में बंधते नहीं, उसके वस्त्र अभी उसके शरीर पर टिकते नहीं, अभी उसकी आवाज अटपटी है। फिरभी उसके होंठ की चमक को धरती तथा सागर कभी खरीद नहीं सकते। वह हमेशा यह बोलती रहती है ‘प्रभु का पर्वत तिरूवेंकटम है।’ **2537**
वाशगम् शॅय्वदु नम् परमे* तॉल्लै वानवर् तम् नायगन्* नायगर् एल्लाम् तॉळुम् अवन्* ञाल मुट्टुम् वेय् अगम् आयिनुम् शोरा वगै* इरण्डे अडियाल् तायवन्* आय क्कलमाय वन्द तोन्रिट नम इरैये॥६१॥	स्वर्गिकों के देव एवं देवों से पूजित प्रभु ने दो पग में धरा को बिना एक घास का तिनका छोड़े माप दिया। गोपकुमार के स्वरूप वाले आप हमारे नाथ हैं। क्या हम आपके बारे में द्वंदरहित कुछ बता सकते हैं ? **2538**
इरैयो इरक्किनुम्* ईङ्गोर् पॅण्बाल्* एनवुम् इरङ्गा– दरैयो ! एन* निन्रदिरुम करुङ्गडल्* ईङ्गिवळ् तन् निरैयो इनि उन् तिरुवरुळाल् अन्रि* क्काप्परिदाल् मुरैयो* अरवणै मेल् पळ्ळि कॉण्ड मुगिल् वण्णने ! ॥६२॥	दया की मांग करने पर भी नीले सागर के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं दिखता और न वह इस किशोरी पर कोई दया ही दिखाता है, सदा विजयघोष ही करते रहता है। हाय ! यहां के शेषशायी प्रभु ! यह क्या उचित है ? हाय ! आपकी कृपा के बिना यह किशोरी अपने सौंदर्य को अक्षुण्ण नहीं रख सकती। **2539**
वण्णम् शिवन्दुळ* वानाडमरुम् कुळिर् विळिय* तण् मॅन् कमल त्तडम् पोल् पॉलिन्दन* ताम् इवैयो कण्णन् तिरुमाल् तिरुमुगम् तन्नॊडुम् कादल् शॅय्देर्कु* एण्णम् पुगुन्दु* अडियेनॊडिक्कालम् इरुक्किन्रदे॥६३॥	अहो ! आपकी अरूणाभ राजीव नयनों से हमारे प्रेमासिक्त हृदय में प्रभापूर्ण शीतल प्रकाश फैलता है। तिरूमल कृष्ण इस तरह के मुखमंडल से हमारे समक्ष इस बार सदा के लिये प्रकट हुए हैं। **2540**
इरुक्कार् मॉळियाल्* नॅरि इळुक्कामै* उलगळन्द तिरु त्ताळ् इणै निलत्तेवर् वणङ्गुवर्* यामुम् अवा ऑरुक्का विनैयॊडुम् एम्मॊडुम् नॊन्दु कनि इन्मैयिन्* करुक्काय् कडिप्पवर् पोल्* तिरुनाम च्चॊल् कट्रनमे॥६४॥	धरती के देवता वैदिक ऋषिगण धरा को मापने वाले प्रभु की पूजा ऋग वेद के मंत्रों से करते हैं। अपने को पापी समझते हुए तथा अपने पाप पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए हम आपके पास इसी उद्देश्य से आये कि हम भी विधिवत पूजा करें। लेकिन जैसे फल चुनने वाला जब देर से आता है तो पके फल समाप्त रहते हैं अतः उसे कच्चे फल पर ही संतोष करना पड़ता है हमें भी आपके नाम के जप मात्र से ही संतुष्ट होना पड़ेगा। **2541**

कट्टुप्पिणै मलर् क्कणिणन् कुलम् वॅन्ऱु* ओरो करुमम् उट्टु प्पयिन्ऱु शॅवियॊडुशावि* उलगम् एल्लाम् मुट्टुम् विळुङ्गि उमिळन्द पिरानार् तिरुवडि क्कीळ्* उट्टुम् उरादुम्* मिळिर्न्द कण्णाय् एम्मै उण्गिन्ऱवे ! ॥६५॥	उसकी पंखुड़ी समान कोमल मृगशावक की तरह आंखें भारी भीड़ में भी अलग ही दिखती है। उसकी केंद्रित नजर अपने कानों से ओझल हो जाती है और लगता है कि धरा को निगलकर पुनः बनाने वाले प्रभु के चरणों को नहीं देखपाती है। आपकी प्रकाशपूर्ण आंखें हमारे हृदय में छायी हुई है। **2542**
उण्णादुरङ्गादु* उणर्वुरुम् एत्तनै योगियर्क्कुम्* एण्णाय् मिळिरुम् इयल्विनवाम्* एरि नीर् वळि वान् मण् आगिय एम् पॅरुमान् तनदु वैगुन्दम् अन्नाळ्* कण्णाय् अरुविनैयेन्* उयिर् आयिन काविगळे॥६६॥	यह कुशल किशोरी प्रभु के वैकुंठ की तरह है जो स्वयं धरा जल अग्नि वायु एवं आकाश हैं। उसकी कमल समान तेजपूर्ण आंखों को यह पापिनी सदा देखते रहना चाहती है जिसमें ऐसा आकर्षण है कि बिना भोजन एवं नींद के चैतन्य का अभ्यास करने वाले योगी लोग भी जिसे देखकर विचलित हो जाते हैं। **2543**
कावियुम् नीलमुम्* वेलुम् कयलुम् पलपल वॅन्ऱु* आवियिन् तन्मै अळवल्ल पारिप्पु* अशुरर् शॅट्ट् मावियम् पुळ् वल्ल मादवन् गोविन्दन् वेङ्गडम् शेर्* तूवियम् पेडै अन्नाळ्* कण्गळ् आय तुणैमलरे॥६७॥	पक्षी की सवारी एवं असुरों के संहारक माधव एवं गोविन्द प्रभु के आवास वेंकटम पर्वत पर की सुन्दर हंस की तरह यह किशोरी दिखती है। इसकी पूर्णतया समान आंखें कमल, नीले जलकुमुद, कटार, एवं मछलियों पर बहुत सी बातों में आसानी से जीत प्राप्त कर लेती है। हमारे हृदय को सहने से ज्यादा प्रभावी इसकी नजरें हैं। **2544**
मलर्न्दे ऑळिन्दिल* माल्लैयुम् माल्लै पॅान् वाशिगैयुम्* पुलन् तोय् तळै प्पन्दर् तण्डुर् नाट्टि* पॅारु कडल् शूळ् निलम् ताविय एम् पॅरुमान् तनदु वैगुन्दम् अन्नाय् !* कलन्दार् वरॅवॅदिर् कॅाण्डु* वन् कॅान्ऱैगळ् कारत्तनवे॥६८॥	हे सागर से घिरे धरती को मापने वाले प्रभु के वैकुंठ की तरह कुशल किशोरी ! तुम्हारी प्रेमी को लौट आने की प्रत्याशा में कोन्रै वृक्ष फूल की कली खिला रहे हैं। लेकिन अभी तक लताओं एवं पत्तों की छतरी पर पूर्ण पुष्प नहीं खिले हैं। **2545**
कार् एट्रिरुळ् शॅगिल् एट्रिन् शुडरुक्कुळैन्दु* वॅल्वान् पोर् एट्टॅदिरन्ददु पुन् तल्लै माल्लै* पुवनि एल्लाम् नीर् एट्ळन्द नॅडिय पिरान् अरुळा विडुमे* वार् एट्रिळमुलैयाय्* वरुन्देल् उन् वळैत्तिरमे॥६९॥	हे जूड़े की तरह उरोज वाली सुकोमल प्यारी ! कंगन की चिंता छोड़ दो।अंधकार रूपी काला सांढ़ सूर्य रूपी लाल सांढ़ से हार गया है। परंतु लंगड़ाते हुए फिर लड़ने के लिये उठ खड़ा हुआ है। यह संध्या की प्रारंभिक वेला है। प्रभु ने संकल्प का जल स्वीकार करते हुए पूरी पृथ्वी को माप डाला। क्या वे तुम पर कृपा नहीं करेंगे ? **2546**
वळै वाय् त्तिरु च्चक्करत्तु* एङ्गळ् वानवनार् मुडिमेल्* तळै वाय् नरुङ्गण्णि* तण्णन्दुळाय्क्कु वण्णम् पयल्लै* विळैवान् मिग वन्दु नाळ् तिङ्गळ् आण्डूळि निर्क* एम्मै उळैवान् पुगुन्दु* इदुवोर् कङ्गुल् आयिरम् ऊळिगळे॥७०॥	जबसे हमने तीक्ष्ण चक्र को धारण करने वाले प्रभु के मुकुट की तुलसी की कामना की है तबसे दिन हम पर फीका पीलापन बरसा रहा है और यह स्थिति महीनों वर्षो तथा युगों से कायम है। हाय ! इसपर यह भयानक हजारों युगों तक रहने वाली रात्रि का प्रवेश हमें समाप्त कर देने के लिये हुआ है । **2547**

ऊळिगळाय्* उलगेळुम् उण्डान् एन्रिलम्* पळम् कण्डु आळि कळाम् पळ वण्णम् एन्रेकु* अग्ते कोंण्डन्नै नाळ् इवळो एन्नुम् ञालम् उण्डान् वण्णम् शोंल्लिट्टन्नुम्* तोळिगळो ! उरैयीर्* एम्मै अम्मनै शूळिान्रवे॥७१॥	हे सखी ! काला फल को देखकर हमने यह नहीं कहा कि प्रभु युग युगान्तरों से सात लोंकों को निगलते आ रहे हैं वल्कि हमने कहा 'सागर का रंग काला फल का रंग है'। इसपर हमारी मां कहती है 'मैं दोषी हूं क्योंकि मैंने पृथ्वी निगलने वाले प्रभु के रंग की बात की' एवं हमें पीटती है। बताओ मैं क्या करूं ? **2548**
शूळिान्र कङ्गुल्* शुरुङ्गा इरुळिन् करुन् तिणिम्बै* पोळिान्र तिङ्गळ् अम् पिळ्ळैयुम् पोळा* तुळाय् मलरक्के ताळिान्र नेञ्जत्तोरु तमियाट्टियेन् मामैक्किन्रु* वाळिान्रवारिदुवो* वन्दु तोन्रिट्टु वालियदे॥७२॥	सुखद चांद रात्रि के अंधकार से उत्पन्न भयावह दृश्य को हटाने आता है परंतु मेरे हृदय को तोड़ देता है। इस अकेली आत्मा के पास एक हृदय है जो केवल तुलसी पाने के लिये लालायित रहता है। क्या इसीतरह से आज भी होगा ? हाय ! शत्रु प्रवल हो गया है। **2549**
वाल् वेण् निलवु* उलगार च्चुरक्कुम् वेण् तिङ्गळ् एन्नुम्* पाल् विण् शुरवि* शुर मुदिर् मालै* परिदि वट्टम् पोलुम् शुडर् अडल् आळि प्पिरान् पोंळिल् एळ् अळिक्कुम्* शाल्बिन् तगैमै कोंलाम्* तमियाट्टि तळर्न्ददुवे॥७३॥	सारे संसार पर देर संध्या में आकाश की गाय चांद रूपी थन से चांदनी के समान दूध बरसा रही है जो सबों के लिये सुखद है परंतु इस किशोरी के लिये यातना है। हाय ! सुनहले तेजोमय चक्र धारण करने वाले सातों लोकों के रक्षक प्रभु का दुखिया को आराम पहुंचाने का यही तरीका है ? **2550**
तळर्न्दुम् मुरिन्दुम्* वरु तिरै प्पायल्* तिरु नेंडुङ्गण् वळर्न्दुम् अरिवुट्टम्* वैयम् विळुङ्गियुम्* माल् वरैयै किळर्न्दुमरिदर क्कोंण्डेंडुत्तान् मुडि शूडु तुळाय्* अळैन्दुण् शिरु पशुन्देंन्रल्* अन्दो वन्दुलागिन्रदे ! ॥७४॥	उठते गिरते लहरों वाले सागर की शय्या पर प्रभु श्रीदेवी के साथ नींद में चले जाते हैं फिर जागकर ब्रह्मांड को निगल जाते हैं तब पर्वत को उलट कर पकड़ते हैं तथा अपनी गायों की रक्षा करते हैं। सुखद हवा उनकी तुलसी माला का सुगंध लेकर यहां आती है। क्या आश्चर्य है ? **2551**
उलागिन्र केंण्डै ओंळि अम्बु* एम् आवियै ऊडुरुव कुलागिन्र* वेंञ्जिलै वाळ् मुगत्तीर्* कुनि शङ्गिडरि प्पुलागिन्र वेलै प्पुणरि अम् पळ्ळि अम्मान्* अडियार् निलागिन्र वैगुन्दमो* वैयमो नुम् निलैयिडमे॥७५॥	आभापूर्ण मुखड़े वाली नारियां अपनी मछली समान कटारी आंखों के बाण को भौंहे रूपी धनुष से छोड़कर हमारे हृदय को छेद देती हैं।सागर में शयन करने वाले प्रभु के भक्तगण आपके स्थायी निवास वैकुंठ को पसंद करते हैं कि पृथ्वी को ? **2552**
इडम् पोय् विरिन्दिव्वुलगळन्दान्* एळिलार् तण् तुळाय्* वडम् पोदिनैयुम् मड नेंञ्जमे* नङ्गळ् वेळ् वळैक्के विडम् पोल् विरिदल् इदु वियप्पे वियन् तामरैयिन्* तडम् पोदोंडुङ्ग* मेल् आम्बल् अलर्विक्कुम् वेण् तिङ्गळे॥७६॥	उठकर पृथ्वी को मापनेवाले प्रभु की तुलसी माला को चाहने वाला हमारा मूर्ख हृदय ! जब लाल कमल की बड़ी पंखुड़ियां बंद होती हैं तो चांद से श्वेत कुमुद की छोटी पंखुड़ियां खुलती हैं।चांद अपनी विषैला चांदनी हमलोगों के धवल कंगन को हरने के लिये फैलाता है। क्या यह आश्चर्यजनक है ? **2553**
तिङ्गळम् पिळ्ळै पुलम्ब* त्तन् शेंङ्गोल् अरशु पट्ट* शेंङ्गळम् पट्टि निन्रेंळ्गु पुन् मालै* तेंन्वाल् इलङ्गै वेंङ्गळम् शेंय्द नम् विण्णोर् पिरानार् तुळाय् तुणैया* नङ्गळै मामै कोंळ्वान्* वन्दु तोन्रि नलिगिन्रदे॥७७॥	गोधूलि वेला रूपी पत्नी पश्चिम के रक्तिम युद्ध क्षेत्र में अपने पति सूर्य का बध के लिये शोक से कराहती है जबकि बच्चा चांद बिना सांत्वना के विलाप करता है। हाय ! दक्षिणी नगर लंका के नाश करने वाले राम प्रभु अपनी तुलसी माला के सहयोग से हमलोगो की कुशलता को नष्ट करने आये हैं। **2554**

नल्लियुम् नरगनै वीट्टिट्टुम्* वाणन् तिण् तोळ् तुणित्त* वल्लियुम् पॅरुमैयुम्* याम् शॅाल्लुम् नीरत्तल्ल* मैवरै पोल् पॅाल्लियुम् उरुविल् पिरानार् पुनै पून् तुळाय् मलरक्के* मॅल्लियुम् मड नॅञ्जिनार्* तन्दु पोयिन वेदनैये ! ॥७८॥	नरकासुर का नाश करने वाले बानासुर के शक्तिशाली भुजाओं का काटने वाले एवं अन्य विरोधियों को पराजय करने वाले पर्वत सा श्याम प्रभु कृष्ण भी हमलोगों के ऊपर दया नहीं दिखाते। मेरा मूर्ख हृदय मुझे छोलकर प्रभु के खिलते तुलसी माला की खोज में चला गया है। हाय ! इस तरह से हमें केवल यातना ही मिली है। **2555**
वेदनै वॅण् पुरि नूल्नै* विण्णोर् परव निन्र् नादनै* ञालम् विळुङ्गुम् अनादनै* ञालम् तत्तुम् पादनै प्पार् कडल् पाम्बणै मेल् पळ्ळि कॅाण्डरुळुम्* शीदनैये तॅाळुवार्* विण्णुळारिल्लुम् शीरियरे॥७९॥	वेदों के प्रभु, यज्ञोपवीत धारण करने वाले प्रभु, स्वर्गिकों से पूजित प्रभु, सबों के नाथ, ब्रह्मांड को निगलने वाले जिनका कोई नाथ न हो, धरा को मापने वाले प्रभु, गहरे क्षीरसागर में शेषशायी प्रभु ः जो आपको इस तरह से पूजा करता है वे देवों से भी ऊपर हैं। **2556**
शीर् अरशाण्डु* तन् शॅङ्गोल् शिल नाळ्* शॅल्ली इक्कळिन्द पार् अरशॅात्तु* मरैन्ददु नायिरु* पार् अळन्द पेर् अरशे ! एम् विशुम्बरशे ! एम्मै नीत्तु वञ्जित्त* ओर् अरशे ! अरुळाय्* इरुळाय् वन्दुरुगिन्रदे॥८०॥	आपके सुराज को कुछ दिनों के लिये अवधि विस्तार देते हुए सूर्य भी अनेकों अन्य राजाओं की तरह लुप्त हो गया है। धरा को मापने वाले महान राजा, स्वर्गिकों के राजा, विछुड़न से विषाद के साम्राज्य वाले राजा। कृपा करें भयानक विषाद से हम घिर गये हैं। **2557**
उरुगिन्र कन्मङ्गळ्* मेलान ओर् प्पिलराय्* इवळै प्पॅरुगिन्र तायर्* मॅय् नॅान्दु पॅरारगॅाल्* तुळाय् कुळल्वाय् तुरुगिन्रिलर् तॅाल्लै वेङ्गडम् आट्टवुम् शूळ्गिन्रिलर्* इरुगिन्रदाल् इवळ् आगम्* मॅल् आवि एरि कॅाळ्ळवे॥८१॥	जो नारियां इस किशोरी को घेरे हुए हैं वे कभी भी इसके पुर्नस्थापन की बात नहीं करते न तो कोई कठिन मार्ग ही बताते हैं। वे इसके जूड़ो में तुलसी भी नहीं बांधते और न तो वेंकटम पर्वत की परिक्रमा में जाते हैं। हाय प्रेमाग्नि से इसका हृदय जल रहा है। **2558**
एरि कॅाळ् शॅन् नायिरु* इरण्डुडने उदयम् मलैवाय्* विरिगिन्र वण्णत्त एम् पॅरुमान् कण्गळ्* मीण्डवट्टूळ् एरि कॅाळ् शॅन्दी वीळ् अशुररै प्पोल एम् पोलियरक्कुम्* विरिव शॅाल्लीर् इदुवो* वैय मुट्टम् विळरियदे॥८२॥	उदयगिरी पर्वत पर दो प्रकाशमान सूर्य की तरह उदय लेने वाली प्रभु की दो आंखे फिर से चमकने लगी हैं और जैसे असुरगन इसमें गिरकर नष्ट हो गये थे वैसे ही ये हमें भी जला रही हैं। सखी ! बताओ, क्या अच्छा संसार इस तरह की ईच्छा रखता है ? **2559**
विळरि क्कुरल् अन्रिल्* मॅन् पडै मेगिन्र मुन्रिल् पॅण्णै* मुळरि क्कुरम्बै इदुविदुवाग* मुगिल् वण्णन् पेर् किळरि क्किळरि प्पिदट्टुम् मॅल् आवियुम् नैवुम् एल्लाम्* तळरिन् कॅाल्लो अरियेन्* उय्यल् आवदि तैयलुक्के ! ॥८३॥	ताड़ वृक्ष के कंटीले घोंसले में अपने सुकोमल जोड़ी से मिलकर अन्रिल पक्षी की बार बार आने वाली आवाज की तरह यह किशोरी भी मेघ जैसे श्यामल प्रभु के नाम को बारबार बिना थके बोलकर अपना स्वास्थ्य एवं कुशलता नष्ट कर रही है।क्या जब यह सबतरह से टूट जायेगी तब इसकी मुक्ति होगी ? मैं नहीं जानती । **2560**
तैयल् नल्लार्गळ् कुळाङ्गळ्* कुळिय कुळुविनुळ्ळुम्* ऐय नल्लार्गळ्* कुळिय विळविनुम्* अङ्ङॅल्लाम् कैय पॅान् आळि वॅण् शङ्गॅाडुम् काण्बान् अवावुवन् नान्* मैय वण्णा ! मणिये* मुत्तमे ! एन्रन् माणिक्कमे ! ॥८४॥	हे श्यामल प्रभु ! मेरे रत्न एवं मोती ! मेरे पन्ना ! मैं आपका दिव्य चक्र एवं धवल शंख के साथ दर्शन चाहती हूं। मत सोंचो, यह या तो भीड़ भरी स्थिति में हो जब आप बहुतों नारियों से घिरे हों या विद्वान संतों द्वारा आयोजित उत्सव हो या कहीं भी हो। **2561**

माणिक्कम् कॉण्डु* कुरॅङ्गरिवॉत्तिरुळोडु मुट्टि* आणिप्पॉन् अन्न शुडर् पडु मालै* उलगळन्द माणिक्कमे ! एन् मरगदमे ! मट्टॉप्पारै इल्ला* आणि प्पॉन्ने* अडि येनुडै आवि अडैक्कलमे ! ॥८५॥	धरती को मापने वाले रत्नमय प्रभु ! मेरे पन्ना ! सोने का नग ! प्रभु जिसके समान कोई और न हो! जैसे बन्दर रत्न चुनचुन कर फेंकते जाता है उसी तरह संध्या के आकाश ने सूर्य को अंधकार में फेंक दिया है। हमारे नीच प्राण के लिये आप एकमात्र सहारा हैं। **2562**
अडै क्कलत्तोङ्गु* कमलत्तलर् अयन् शॅन्नि एन्नुम्* मुडै क्कलत्तूण्* मुन् अरनुक्कु नीक्कियै* आळि शङ्गम् पडैक्कलम् एन्दियै वॅण्णॅयक्कन्रायच्चि वन् ताम्बुगळाल्* पुडै क्कलन्दानै* एम्मानै एन् शॉल्लि प्पुलम्बुवने॥८६॥	शंख एवं चक्रधारी प्रभु ने खोपड़ीधारी शिव को कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के शाप से मुक्त किया। फिर भी मक्खन चुराने के लिये हमारे प्रभु गोपनारी द्वारा बांध कर पीटे गये तथा रूलाये गये। हाय ! आपको पुकार कर हम आश्रय के लिये रोयें क्या ? **2563**
पुलम्बुम् कन कुरल्* पोळ् वाय अन्रिलुम् पूङ्गळि पायन्दु* अलम्बुम् कन कुरल् शूळ् तिरै आळियुम्* आङ्गवै निन् वलम् पुळ्ळदु नलम् पाडुमिदु कुट्रमाग* वैयम् शिलम्बुम् पडि शॅय्वदे* तिरुमाल् इ त्तिरुविनैये॥८७॥	तिरूमल प्रभु ! यह 'तिरू' की तरह पावन किशोरी आपके शक्तिशाली गरूड़ पक्षी की गाथा गान के लिये सब से अपशब्द सुनती है। यह काम अन्रिल पक्षी के जोड़ी का आपस में मिलने की रूखी एवं मोटी पुकार तथा आस पास के सागर की लहरों के गर्जन के बीच 'सत्त पान्न' की धुन पर करती है।क्या आपके लिये यह उचित है कि आप इसे इस तरह की स्थिति में रखें ? **2564**
तिरुमाल् उरुवॉक्कुम् मेरु* अम् मेरुविल् शॅञ्जुडरोन्* तिरुमाल् तिरुक्कै त्तिरु च्चक्करम् ऑक्कुम्* अन्न कण्डुम् तिरुमाल् उरुवोडवन् शिन्नमे पिदट्रा निर्पदोर्* तिरुमाल् तलैक्कॉण्ड नङ्गट्कु* एङ्ग वरुम् तीविनैये॥८८॥	मेरू पर्वत तिरूमल प्रभु के आकार जैसा दिखता है।इस पर्वत पर उदयकालीन सूर्य प्रभु के हाथ का सुन्दर दीप्तमान चक्र की तरह दिखता है। समान चीजों को देखकर प्रभु की एवं प्रभु के प्रतीक चिह्नों की तुलना करते हुए प्रेम से उद्वेलित हृदय से हम गाथा गाते हैं। यातना कभी भी हमें कैसे सतायेगी ? **2565**
तीविनैगट्करु नञ्जिनै* नल् विनैक्किन्नमुदै* पूविनै मेविय* देवि मणाळनै* पुन्मै एळ्गादु आविनै मेयक्कुम् वल् आयनै* अन्रुलगीर् अडियाल् ताविन एट्रै एम्मानै* एञ्ञान्रु तलैप्पॅय्वने॥८९॥	बुरे कर्म के विरूद्ध में आप हमारी औषधी हैं तथा अच्छे कर्मो के लिये पुरस्कार हैं। कमलनिवासिनी देवी के आप पतिदेव हैं। गाय को चराना एवं उसकी रक्षा करने से आप तनिक भी निम्न स्थिति को प्राप्त नहीं हुए। पुरा काल में आपने धरा को दो कदमों में माप दिया। हाय ! कब हम आपको प्राप्त कर सकेंगे ? **2566**
तलैप्पॅय्दु यान् उन्* तिरुवडि शूडुम् तगैमैयिनाल्* निलैप्पॅय्द आक्कैक्कु* नोट्रविम् मायमुम्* मायम् शॅव्वे निलै प्पॅय्दिलाद निलैमैयुम् काण्दोरशुरर् कुळाम्* तॉलै प्पॅय्द नेमि एन्दाय्* तॉल्लै ऊळि शुरुङ्गलदे॥९०॥	असुरों का नाश करने वाले चक्र को धारण करने वाले प्रभु ! अपने सिर से आपके चरणारविंद की पूजा करने की कृपा से हमारा हृदय आप पर स्थिर हो गया है। हमारे शरीर को चमत्कार पूर्वक संचालित समझते हुए तथा चमत्कार पूर्वक शारीरिक श्रम के फल के लाभ से हमारी युग जैसी लम्बी प्रतीक्षा की बीती हुई अवधि छोटी दिखती है। **2567**

शुरुङ्गुरि वॆण्णै⋆ तॊडुवुण्ड कळ्वनै⋆ वैय मुट्रुम् ऑरुङ्गुर उण्ड⋆ पॆरु वयिट्राळनै⋆ मावलिमाट्टु इरुङ्गुरळ् आगि इशैय ओर् मूवडि वॆण्डि च्चॆन्र⋆ पॆरुङ्गिरियानै अल्लाल्⋆ अडियेन् नॆञ्जम् पेणलदे॥११॥	रस्सी के छींके से मक्खन चुराने वाले, एक कौर में संपूर्ण ब्रह्मांड को निगल जाने वाले, एवं मावली के पास सम्मानीय वामन की तरह जाकर उसे छकाने वाले प्रभु हमारे हृदय के परम ईष्ट हैं। मैं किसी अन्य की सेवा नहीं करती। **2568**
पेणलम् इल्ला अरक्कर्⋆ मुन्नीर पॆरुम् पदिवाय्⋆ नीणगर् नीळ् एरि वैत्तरुळाय् एन्रु⋆ निन्नै विण्णोर् ताळ् निलम् तोयन्दु तॊळुवर् निन् मूर्त्ति पल् कूट्रिल् ऑन्रु⋆ काणलुम् आङ्गॊल् एन्रे⋆ वैगल् मालैयुम् कालैयुमे॥१२॥	स्वर्गस्थों ने निष्ठुर राक्षसों के टापू वाले लंका नगर के नाश के लिये आपसे प्रार्थना की जो कि आपने मरणधर्मा मनुष्य का शरीर धारण कर इस धरा पर आकर किया।क्या वे आपकी रात दिन पूजा आपके बहुआयामीय सुन्दर स्वरूप के एक भाग के दर्शन के लिये करते हैं ? **2569**
कालै वॆय्योर्कु मुन् ओट्टुक्कॊडुत्त⋆ कङ्गुल् कुरुम्बर्⋆ मालै वॆय्योन् पड⋆ वैयगम् पावुवर्⋆ अन्न कण्डुम् कालै नल् ञान त्तुरै पडिन्दाडि क्कण् पोदु शॆय्दु⋆ मालै नन्नाविल् कॊळ्ळार्⋆ निनैयार् अवन् मै प्पडिये॥१३॥	अंधकार का दुष्ट जो सूर्योदय के पूर्व भाग जाता है पुनः संध्याकाल में सूर्य के डूबने पर वापस आकर धरा को हर दिन आक्रांत करता है।यह देखते हुए भी कोई अपना मन श्याम प्रभु पर नहीं लगाता, कोई ज्ञानसरोवर में नित्य प्रातः नहीं नहाता, कोई अर्न्तमन से जागकर तिरूमल प्रभु की प्रार्थना नहीं करता। हाय ! **2570**
मै प्पडि मेनियुम्⋆ शॆन्तामरै क्कण्णुम् वैदिगरे⋆ मॆय् प्पडियाल् उन् तिरुवडि शूडुम् तगैमैयिनार्⋆ एप्पडि ऊर् आमिलैक्क क्कुरुट्टा मिलैक्कुम् एन्नुम्⋆ अप्पडि यानुम् शॊन्नेन्⋆ अडियेन् मट्रु यार्दन्बने॥१४॥	सात्विक वैदिक ऋषि हीं केवल आपके चरणारविंद को धारण करने के योग्य हैं। समूह में चरने के लिये जाती अंधी गाय की तरह हमने भी आपकी स्तुति की। मैं अपने निम्नात्मा के लिये और क्या कह सकती हूं ? **2571**
यादानुम् ओर् आक्कैयिल् पुक्कु⋆ अङ्गाप्पुण्डुम् आप्पविळ्न्दुम्⋆ मूदावियिल् तडुमारुम्⋆ उयिर् मुन्नमे⋆ अदनाल् यादानुम् पट्रि नीङ्गुम् विरदत्तै नल् वीडुशॆय्युम्⋆ मादाविनै प्पिदुवै⋆ तिरुमालै वणङ्गुवने॥१५॥	हर जीवात्मा को पुनर्जन्म एवं मृत्यु की आवृति में पड़कर विभिन्न शरीरों से गुजरते देखकर माता एवं पिता की तरह उदार तिरूमल प्रभु हमारी रक्षा में आते हैं एवं हमें अनावश्यक आशाहीनता की उदासी से बचाते हैं। मैं आपकी पूजा करती हूं। **2572**
वणङ्गुम् तुरैगळ्⋆ पल्ल पल्ल आक्कि⋆ मदि विगर्पाल् पिणङ्गुम् शमयम्⋆ पल्ल पल्ल आक्कि⋆ अवै अवैदोरु अणङ्गुम् पल्ल पल्ल आक्कि निन् मूर्त्ति परप्पि वैत्ताय्⋆ इणङ्गु निन्नोरै इल्लाय्⋆ निन्गण् वेट्कै एळुविप्पने॥१६॥	अद्वितीय प्रभु ! आपने इतने सारे पूजा की विधि बनाया, आपने इतने सोर विरोधाभासी सिद्धांतों को बनाया, एवं हर में आपने इतने सारे देवों का निर्माण किया, तथा सबों में आपने अपना अद्वितीय स्वरूप को रख दिया।मेरा हृदय आपके प्रेम से भरकर ऊंचा हो गया है। **2573**

एळुवदुम् मीण्डे॰ पडुवदुम् पट्टु॰ एनै ऊळिगळ् पोय् कळिवदुम् कण्डु कण्डेळ्गल् अल्लाल्॰ इमैयोर्गळ् कुळाम् तॊळुवदुम् शूळ्वदुम् शॆय् तॊल्लै माल्ै क्कण्णार क्कण्डु॰ कळिवदोर् कादल् उट्रारक्कुम्॰ उण्डो कण्गळ् तुञ्जुदले ॥९७॥	देवों के समूह पुराकालीन प्रभु की पूजा कर परिक्रमा करते हैं तथा प्रेमासिक्त नजरों से प्रभु को घंटों निहारते हैं।हरबार जब आंख की पलके गिरती हैं तो वे उसी तरह की वेदना का अनुभव करते हैं जैसे शाश्वत काल से जन्म मरण की आवृति से। **2574**
तुञ्जा मुनिवरुम्॰ अल्लादवरुम् तॊंडर निन्र॰ एञ्जा प्पिरवि इडर् कडिवान्॰ इमैयोर् तमक्कुम् तन् शार्विलाद तनि प्पॆरु मूर्त्ति तन् मायम् शॆळ्वे॰ नॆञ्जाल् निनैप्परिदाल्॰ वॆण्णॆय् ऊण् एन्नुम् ईन च्चॊल्ले ॥९८॥	निद्राहीन मुनिगन जो पुनर्जन्म की आवृति की यातना से मुक्त हैं तथा अन्य लोग भी अद्वितीय प्रभु की पूजा करते हैं जिसकी पूजा स्वर्ग स्थजन भी करते हैं। लकिन आपका मक्खन चुराने के लिये आने का आश्चर्य वास्तव में उनलोगों की समझ के परे है। **2575**
ईन च्चॊल्लायिनुम् आग॰ एरि तिरै वैयम् मुट्टुम्॰ एनत्तुरुवाय् इडन्द पिरान्॰ इरुङ्कर्पगम् शेर् वानत्तवर्क्कुम् अल्लादवर्क्कुम् मट्रॆल्लायवर्क्कुम्॰ ञान प्पिरानै अल्लाल् इल्लै॰ नान् कण्ड नल्लदुवे ॥९९॥	आकाश के देवों के लिये, धरती के मरणशील जनों के लिये, तथा अन्य जनों के लिये मैं जो जानता हूं उसकी घोषणा करता हूं ः ज्ञान के प्रभु के अतिरिक्त एवं जो वराह रूप में आये एवं धरा को उठा लिये दूसरा कोई देवता नहीं है। अगर ये शब्द अप्रिय हैं तो रहने दो। **2576**
नल्लार्॰ नविल् कुरुगूर् नगरान्॰ तिरुमाल् तिरुप्पेर् वल्लार्॰ अडि क्कण्णि शूडिय॰ मारन् विण्णप्पम् शॆय्द शॊल्लार् तॊडैयल् इन् नूरुम् वल्लार् अळुन्दार् पिरप्पाम्॰ पॊल्ला अरुविनै॰ मायवन् शेट्ळळल् पॊय्न् निलत्ते ॥१००॥	कुरूगुर (आळवार तिरूनगरी) नगर के अच्छे भक्तों से तिरूमल प्रभु पूजित हैं। यह शतक पदावली मारन शठकोपन के हैं जो ऐसे भक्तों के चरण को धारण करते हैं जो प्रभु के नाम का गान अपने गले की माला की तरह करते हैं। जो इसे कंठ कर लेंगे वे कभी भी यातना पूर्ण जन्म के रहस्यमय कीचड़ में नहीं पड़ेंगे। **2577** **नम्माळवार् तिरूवडिगले शरणं** ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

तिरूवाशिरियम् (2578 – 2584)

अरूळाळ प्पेरूमाळ् एम्बेरूमानार् अरूळिच्चेय्द तनियन्

काशिनियोर् ताम् वाऴ क्कलियुगत्ते वन्दुदित्तु
आशिरिय प्पावदनाल् अरु मऱै नूल् विरित्तानै
देशिगनै प्पराङ्गुशनै त्तिगऴ् वगुळ त्तारानै
माशडैया मनत्तु वैत्तु मऱवामल् वाऴ्त्तुदुमे

शॆक्कर् मा मुगिल् उडुत्तु मिक्क शॆञ्जुडर् प्परिदि शूडि⋆ अञ्जुडर् मदियम् पूण्डु⋆ पल शुडर् पुनैन्द पवळ च्चॆव्वाय्⋆ तिगऴ् पशुञ्जोदि मरगद क्कुन्ऱम्⋆ कडलोन् कैम्मिशै क्कण्वळर्वदु पोल्⋆ पीदगवाडै मुडि पूण् मुदला⋆ मेदगु पल् कलन् अणिन्दु⋆ शोदि वायवुम् कण्णवुम् शिवप्प⋆ मीतिट्टु प्पच्चै मेनि मिग प्पगैप्प⋆ नच्चु विनै क्कवर्दलै अरविन् अमळियेऱि⋆ एऱि कडल् नडुवुळ् अऱिदुयिल् अमर्न्दु⋆ शिवन् अयन् इन्दिरन् इवर् मुदल् अनैत्तोर्⋆ दॆय्व क्कुऴाङ्गळ् कैदॊऴ क्किडन्द⋆ तामरै उन्दि त्तनि प्पॆरु नायग⋆ मूवुलगळन्द शेवडि योये ! ॥१॥	अरूणाभ चरणारविंद से धरा को मापने वोले प्रभु ! रक्तिम बादल का वस्त्र, ज्योतिर्पुंज सूर्य का मुकुट, सुखद चांद वदन पर, सर्वत्र तारागनों के प्रदीप्त कण, लाल मूंगावत होंठ, आभा विखेरते हरे पन्ना के पर्वत समूह, सागर के प्रभु के बाहों में पड़े हैं जैसे कोई सोया है।पीला वस्त्र, मुकुट एवं अनेकों आभूषण धारण किये, चमकते आंख एवं होंठ की लालिमा, शरीर का हरापन या श्यामपन लाल रंग के ऊपर प्रभावी, क्षीरसागर में अनेकों फन के शेष पर आप गहरी नींद में सोये हुए, जहां शिव ब्रह्मा एवं इन्द्र के साथ सभी देवगन पूजा अर्पित करते हैं। नाभि में कमल वाले अद्वितीय प्रभु ! **2578**
उलगु पडैत्तुण्ड एन्दै⋆ अऱै कऴल् शुडर् प्पून् तामरै शूडुदर्कु⋆ अवावा– रुयिर् उरुगि उक्क⋆ नेरिय कादल् अन्बिल् इन्बीन् तेऱल्⋆ अमुद वॆळ्ळत्तानाम् शिऱप्पु विट्टु⋆ ऒरु पॊरुट्कशैवोर् अशैग⋆ तिरुवॊडु मरुविय इयर्कै⋆ माया प्पॆरुविऱल् उलगम् मून्ऱिनॊडु नल्वीडु पॆऱिनुम्⋆ कॊळ्वदॆण्णुमो तॆळ्ळियोर् कुऱिप्पे॥२॥	प्रभु मेरे जनक ! आपने जगत को बनाया एवं निगल गये। जो प्रेमपूर्व क प्रभु के नुपूर वाले पादारविंद के फूल को अपने सिर पर प्रेमासिक्त हृदय से धारण करना चाहते हैं और गौरवगाथा के आनंदामृत के प्रवाह में डूबे हैं। क्या स्पष्ट विचार वाले कभी मोक्ष की इच्छा करेंगे जो कि कमल वासिनी लक्ष्मी की संपन्नता एवं तीनों लोक के सतत राज से आये ? जो ऐसा करते हैं उन्हें करने दो। **2579**

कुऱिप्पिल् कॊण्डु नॆऱिप्पड⋆ उलगम् मून्ऱुडन् वणङ्गु तोन्ऱु पुगळ् आणै⋆ मॆय् पॆऱ नडाय दॆय्वम् मूवरिल् मुदल्वन् आगि⋆ शुडर् विळङ्ग कलत्तु⋆ वरै पुरै तिरै पॊर पॆरु वरै वॆरुवर⋆ उरुमुरल् ऑलि मलि नळिर् कडल् पडवर- वरशु⋆ उडल् तड वरै शुळट्रिय⋆ तनिमा त्तॆय्वत्तडियवर्क्किनि नाम् आळागवे इशैयुङ्गॊल्⋆ ऊळिदोऱुळि ओवादे॥३॥	अद्वितीय सर्वोत्तम प्रभु ने नागराज बासुकी को विशाल मंदर पर्वत पर लपेटकर सागर का मंथन किया एवं आपके गर्जन से पर्वत कांप उठे।आपका वक्षस्थल ज्योर्तिमय है। आप त्रिमूर्ति के प्रथम कारण हैं। आप जगत पर न्यायपूर्ण एवं यशोमय राज्य करते हैं तथा तीनों लोकों में पूजित हैं। कम से कम अबसे, क्या हम युगों युगों तक आपके भक्तों के सेवक नहीं बन सकेंगे ? **2580**
ऊळिदोऱुळि ओवादु⋆ वाळिय एन्ऱु याम् तॊळ इशैयुङ्गॊल्लो⋆ यावगै उलगमुम् यावरुम् इल्ला⋆ मेल् वरुम् पॆरुम्पाळ् क्कालत्तु⋆ इरुम् पॊरु- ट्कॆल्लाम् अरुम् पॆऱल् तनि वित्तु⋆ ऑरु तान् आगि तॆय्व नान्मुग क्कॊळु मुळै ईन्ऱु⋆ मुक्कण् ईशनॊडु देवु पल नुदलि⋆ मूवुलगम् विळैत्त उन्दि⋆ माय क्कडवुळ् मा मुदल् अडिये॥४॥	महान प्रलय में जब सभी देवगन एवं सब लोक लुप्त हो गये, जो बच गये थे उनके लिये प्रभु अमूल्य बीज बन गये, एवं अंकुरित होकर डंढल पर कमल उत्पन्न किये तथा उस पर चतुर्मुख ब्रह्मा की रचना की। तब तीन आंखों वाले शिव एवं अनेकों देवगन आये। क्या हम आश्चर्यमय देव की अनवरत प्रशस्ति का युगों युगों तक आनंद ले सकेंगे जिनके नाभि में कमल है एवं जिन्होंने सब लोकों की रचना की ? **2581**
मा मुदल् अडि प्पोदॊन्ऱु कविळ्त्तलर्त्ति⋆ मण् मुळुदुम् अगप्पडुत्तु⋆ ऑण् शुडर् अडि प्पोदु ऑन्ऱु विण् शॆल्ली इ⋆ नान्मुग प्पुत्तेळ् नाडु वियन्दुवप्प⋆ वानवर् मुऱै मुऱै वळिपड नॆऱी इ⋆ तामरै क्काडु मलर् क्कण्णोडु कनि वाय् उडैयदु- माय्⋆ इरु नायिऱायिरम् मलर्न्दन्न⋆ कर्पग क्कावु पर्पल वन्न⋆ मुडि तोळ् आयिरम् तळैत्त⋆ नॆडियोय्क्कल्लदुम् अडियदो उलगे॥५॥	पुराकालीन प्रभु ! हजारों सूर्य से प्रकाशित मुकुट पहन कर आप आकाश में खड़ा हुए।आपकी हजारों भुजायें कल्प वृक्ष के घने जंगल की तरह फैली थीं।आकर्षक मुखमंडल था एवं कमल फूल के गुच्छों की तरह आंखें थीं। एक चरणकमल धरती पर स्थिर था तो दूसरा चरण कमल लोक लोकान्तरों से पार करता हुआ ब्रह्मा के लोक में प्रवेश किया जहां देवगन आनंदमय आश्चर्य से भरे खड़े थे। समूह में देवगनों ने आकर पूजा अर्पित की। क्या जगत किसी दूसरे देव का भक्त हो सकता है ? **2582**

<table>
<tr>
<td>ओओ ! उलगिनदियल्वे⋆ ईन्ऱोळ् इरुक्क
मणै नीराट्टि⋆ पडैत्तिडन्दुण्डुमिळ्–
न्दळन्दु⋆ तेऱ्न्दुलगळिक्कुम् मुदल् पॅरुम्
कडवुळ् निर्प⋆ पुडै प्पल तान् अऱि
दॅय्वम् पेणुदल्⋆ तनादु
पुल्लऱि वाण्मै पॊरुन्द क्काट्टि⋆
कॊल्वन मुदला अल्लन मुयलुम्⋆
इनैय शॅय्गै इन्बु तुन्बळि⋆
तॊल् मा माय प्पिऱवियुळ् नीङ्गा⋆
प्पल् मा मायत्तळुन्दुमा नळिऱ्न्दे॥६॥</td>
<td>हाय ! हाय ! संसार की रीति ! मां गाय को छोड़कर नवजात बछड़े को नहाते हैं। प्रथम कारण प्रभु जिन्होंने ब्रह्यांड को बनाया, उठाया, निगला, फिर बनाया, और मापा।इस तरह से सब समय इसकी रक्षा की। परंतु ऐसे प्रभु को छोड़ देते हैं और राह के किसी अज्ञात छोटे देवता की पूजा करते हैं तथा अपनी छोटी बुद्धि एवं बड़े अहंकार का प्रदर्शन करते हैं। दुष्ट कार्य तथा निर्दयता में लिप्त हो मृदु वेदना लेते हैं जिससे कांपता हुई जीवात्मा कार्मिक नरक के गर्त को प्राप्त होता है। 2583</td>
</tr>
<tr>
<td>नळिर् मदि च्चडैयनुम् नान्मुग क्कडवुळुम्⋆
तळिर् ऑळि इमैयवर् तलैवनुम् मुदला⋆
यावगै उलगमुम् यावरुम् अगप्पड⋆
निलम् नीर् ती काल् शुडर् इरु विशुम्बुम्⋆
मलर् शुडर् पिऱवुम् शिऱिदुडन् मयङ्ग⋆
ऑरु पॊरुळ् पुऱप्पाडिन्ऱि मुळुवदुम्
अगप्प्पड क्करन्दु⋆ ओर् आल् इलै च्चेऱ्न्द एम्
पॅरु मा मायनै अल्लदु⋆
ऑरु मा दॅय्वम् मट्टुडैयमो यामे॥७॥</td>
<td>बिना किसी अपवाद के, सारे लोक, सभी जीवात्मायें, सभी देवगन, शशिभूषण शिव, चतुर्मुख ब्रह्या, तथा तेजोमय इन्द्र, पृथ्वी, अग्नि, जल, हवा, आकाश, दोनों ज्योतिर्पुंज, सभी एक छोटे शिशु के उदर में चले जाते हैं। प्रभु सब को निगलकर बटपत्र पर सोये हुए प्रलय जल में रहते हैं। इनको जानकर, क्या हम दूसरे देव की पूजा करेंगे ? 2584
नम्माळवार् तिरूवडिगले शरणं ।</td>
</tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

पेरिय तिरूवन्दादि (2585 – 2671)

अरूळाळ प्पेरूमाळ् एम्बेरूमानार् अरूळिच्चेय्द तनियन्

मुन्दुट्र् नेंञ्जे ! मुयट्रि तरित्तुरैत्तु⋆
वन्दित्तु वायार वाळ्त्तियेे⋆ – शन्द
मुरुगूरुम् शोलैशूळ् मोंय् पूम् पोंरुनल्⋆
कुरुगूरन् मारन् पेर् कूरु

मुयट्रि शुमन्देंळुन्दु⋆ मुन्दुट्र् नेंञ्जे⋆ इयट्रुवाय् एम्मोंडु नी कूडि⋆ नयप्पुडैय नावीन् तोंडै क्किळवि⋆ उळ् पोंदिवोम्⋆ नल् पूवै प्पूवीन्र् वण्णन् पुगळ्॥१॥	हे उत्सुक हृदय ! इस पद की रचना में मेरे साथ रहो। चलो साथ मिलकर काया के रंग वाले प्रभु की गौरव गाथा अपनी जिह्वा से निकले कुतूहल पूर्ण शब्दों की धागा में बाध दें। **2585**
पुगळ्वोम् पळिप्पोम्⋆ पुगळोम् पळियोम्⋆ इगळ्वोम् मदिप्पोम्⋆ मदियोम् इगळोम्⋆ म- ट्रेङ्गळ् माल् ! शेंङ्गण् माल् !⋆ शीर्ल् नी तीविनैयोम्⋆ एङ्गळ् माल् कण्डाय् इवै॥२॥	पूज्य अरूणाभ पंकजनेत्र प्रभु ! हम प्रशंसा करें न करें, दोष लगायें न लगायें, सम्मान दें न दें, आनन्द मनायें न मनायें, प्रार्थना है कि आप कोप न करें। यद्यपि हम पापी हैं परंतु आप ध्यान दीजिये यह हमारा प्रेमोद्‌गार है। **2586**
इवैयन्रे नल्ल⋆ इवैयन्रे तीय⋆ इवै एन्रिवै अरिवनेलुम्⋆ इवै एल्लाम् एन्नाल् अडैप्पु नीक्क⋆ ओंण्णादिरैयवने⋆ एन्नाल् शेंयर् पालदेन्॥३॥	प्रभु ! हम अच्छा बुरा नहीं जानते। क्या है या नहीं है यह भी नहीं जानते। और अगर कुछ करें भी तो हम स्वयं न तो कुछ ले सकते हैं और न रख सकते हैं। क्या है जो हम कर सकते हैं ? **2587**
एन्निन् मिगु पुगळार् यावरे⋆ पिन्नैयुम् मट्रु एण्णिल्⋆ मिगु पुगळेन् यान् अल्लाल्⋆ एन्न करुञ्जोदि⋆ क्कण्णन् कडल् पुरैयुम्⋆ शील प्पेंरुञ्जोदिक्केंन् नेंञ्जाट्पेंट्रु॥४॥	सागर से अथाह दिव्य गौरव गाथा वाले आभापूर्ण श्यामल कृष्ण प्रभु से हमारा हृदय का परिणय हो गया है। इस जगत में हमसे महत्वपूर्ण कौन होगा ? जरा सोंचो, हमें छोड़कर ऐसा कोई अन्य हो सकता है क्या ? **2588**
पेंट्र् ताय् नीये⋆ पिरप्पित्त तन्दै नी⋆ मट्रैयार् आवारुम् नी पेशिल्⋆ एट्रेयो माय ! मा मायवळै⋆ माय मुलै वाय् वैत्त⋆ नी अम्मा ! काट्टुम् नेंरि॥५॥	आप गर्भ में शिशु पालने वाली मां हैं तथा जन्म देने वाले पिता हैं एवं जो कहा जाता है आप सबकुछ हैं। राक्षसी के विषैले स्तन पीने वाले प्रभु ! आपकी रीति कितना आश्चर्यमय है ? **2589**

नॆरि काट्टि नीक्कुदियो⋆ निन्बाल् करु मा मुरि मेनि काट्टुदियो⋆ मेनाळ् अरियोमै⋆ एन् शॆय्वान् एण्णिनाय् कण्णने⋆ ईदुरैयाय् एन् शॆय्दाल् एन् पडोम् याम्॥६॥	कृष्ण ! क्या अपने चरण तक का मार्ग दिखायेंगे और तब लुप्त हो सकते हैं। और क्या अपना श्यामल स्वरूप भी दिखायेंगे ? आगे क्या होगा हम नहीं जानते।प्रार्थना है, कृपया बतायें कि आपकी ईच्छा क्या है ? आप जो भी करेंगे हम उससे प्रभावित होंगे। **2590**
यामे अरुविनैयोम् शेयोम्⋆ एन् नॆञ्जिनार् तामे अणुक्कराय् च्चार्न्दॊळिन्दार्⋆ पू मेय शॆम्मादै⋆ निन् मार्विल् शेर्वित्तु⋆ पार् इडन्द अम्मा ! निन् पादत्तरुगु॥७॥	पंकजनिवासिनी लक्ष्मी को अपने वक्षस्थल पर धारण करने वाले प्रभु ! धरा को मापने वाले प्रभु ! हमारा हृदय तो आपके चरणारविंद प्राप्त कर चुका है। हाय ! केवल हम पापी हीं अभी दूर हैं। **2591**
अरुगुम् शुवडुम् तॆरिवुणरोम्⋆ अन्बे पॆरुगुम् मिगविदुवॆन् पेशीर्⋆ परुगलाम् पण्पुडैयीर् ! पार् अळन्दीर् !⋆ पावियेम् कण् काण्बरिय⋆ नुण्पुडैयीर् नुम्मै नुमक्कु॥८॥	अमृत समान मृदु प्रभु ! आप इतने सूक्ष्म हैं कि इस पापी की आंखों से नहीं देखे जा सकते हैं। न तो आपको प्राप्त करने की हम कोई युक्ति ही जानते हैं।फिरभी आपके लिये हमारा प्रेम उद्वेलित हो रहा है। यह कैसे ? कृपया बताईये। **2592**
नुमक्कडियोम् एन्रॆन्रु⋆ नॊन्दुदुरैत्तॆन्⋆ मालार् तमक्कवर् ताम्⋆ शार्वरियर् आनाल्⋆ एमक्किनि यादानुम्⋆ आगिडु काण् नॆञ्जे⋆ अवर् तिरत्ते यादानुम् शिन्दित्तिरु॥९॥	हे हृदय ! जब प्रभु के प्रियतमों के लिये प्रभु के पास जाना कठिन है तो हमारे निवेदन से "हम आपके सेवक हैं, यह और वह करूणा की बातें आदि" से क्या लाभ ? हमलोगों पर कुछ भी होने दो तुम प्रभु के वारे में सोंचता रह। **2593**
इरु नाल्वर् ईरैन्दिन् मेल् ऒरुवर्⋆ एट्टो- डॊरु नाल्वर्⋆ ओर् इरुवर् अल्लाल्⋆ तिरुमार्कु याम् आर् वणक्कम् आर्⋆ ए पावम् नल् नॆञ्जे⋆ नामा मिग उडैयोम् नाळ्॥१०॥	हम तो आठ बसु, ग्यारह रूद्र, बारह आदित्यों, तथा दो अश्विनी कुमारों में से हैं नहीं।प्रभु के हम कौन हैं ? हमारी पूजा क्या है ? हे हृदय ! हमारे पास केवल गर्वीली जिह्वा है। **2594**
नाळाल् अमर् मुयन्र⋆ वल् अरक्कन् इन् उयिरै⋆ वाळावगै वलिदल् निन् वलिये⋆ आळाद पारुम् नी वानुम् नी⋆ कालुम् नी तीयुम् नी⋆ नीरुम् नी आय् निन्र नी॥११॥	आपने युद्ध में आमंत्रित कर एक अभिमानी राक्षस के प्रिय प्राण को हर लिया। क्या यह आप के शौर्य के अनुरूप है जबकि आप ही धरनी अग्नि वायु जल आकाश तथा अपने आप हैं ? **2595**

नी अन्ऱे आळ् तुयरिल्* वीळ्िप्पान् निन्ऱुळन्राय्* पोय् ऑन्ऱु शॉल्लि एन् पो नॅञ्जे* नी एन्ऱुम् काळ्त्तुपदेशम् तरिनुम्* कैक्कॉळ्ळाय्* कण्णन् ताळ् वाळ्त्तुवदे कण्डाय् वळक्कु॥१२॥	हे हृदय ! क्या अपने कार्यो से तूने हमें गहरी उदासी में नहीं रख दिया है ? इसकी लंबी व्याख्या से क्या लाभ ? जाओ, तूने कभी भी मेरी नेक राय नहीं सुनी। यह जान लो कि कृष्ण की प्रशस्ति गाना अच्छा है। **2596**
वळक्कॉडु माऱुगॉळ् अन्ऱु* अडियार् वेण्ड* इळक्कवुम् काण्डुम् इऱैव ! इळप्पुण्डे* एम् आट्कॉण्डागिल्लुम्* यान् वेण्ड एन् कण्गळ्* तम्माल् काट्टुन् मेनि च्चाय्॥१३॥	हे प्रभु ! यह विश्वासघात नहीं है। आपने सदा अपने भक्तों को अपवाद की अनुमति दी है।यह कोई बड़ी क्षति नहीं है। चूंकि हम आपके भक्त हैं अतः एक विनती है 'हमारी आंखों को आपके श्याम वदन की झांकी मिले'। **2597**
शायाल् करियानै* उळ् अऱियाराय् नॅञ्जे* पेयार् मुलैगॉडुत्तार् पेयर् आय्* नी यार् पोय् त्तेम्पूण् शुवैत्तु* ऊन् अऱिन्दऱिन्दुम्* तीविनैयाम् पाम्बार् वाय् क्कै नीट्टल् पार्त्तु॥१४॥	हे हृदय ! क्या अपने कार्यो से तूने हमें गहरी उदासी में नहीं रख दिया है ? इसकी लंबी व्याख्या से क्या लाभ ? जाओ, तूने कभी भी मेरी नेक राय नहीं सुनी। यह जान लो कि कृष्ण की प्रशस्ति गाना अच्छा है। **2598**
पार्त्तोर् एदिरिदा नॅञ्जे* पडु तुयरम् पेर्त्तोद* प्पीडळिवाम् पेच्चिल्लै* आर्त्तोदम् तम् मेनि* ताळ् तडव त्ताम् किडन्दु* तम्मुडैय शॅम्मेनि क्कण्वळर्वार् शीर्॥१५॥	हे हृदय ! जब सागर लहराता है तब प्रभु इसमें शयन करते हुए इसकी लहरों को अपने चरणाविंद का स्पर्श करने देते हैं एवं अपने वदन की सेवा की अनुमति देते हैं।अपने स्वप्निल आंखों से इसे प्रेमपूर्वक निहारते भी हैं। अपने आत्मनाश से बचो एवं प्रभु की प्रशस्ति गाओ। यह एक स्पष्ट सच है कि इससे पहचान को कोई क्षति नहीं होती। **2599**
शीराल् पिऱन्दु* शिऱप्पाल् वळरादु* पेर् वामन् आगाक्काल् पेराळा* मार्वार प्पुल्गि नी उण्डुमिळ्न्द* बूमि नीर् एर्परिदे* शॉल्लु नी याम् अऱिय च्चूळ्न्दु॥१६॥	हे हृदय ! जबकि आप ऊंचे कुल में जन्म नही लिये पर पालन पोषण संपन्नता में हुआ एवं एक ब्रह्मचारी के रूप में प्रकट होकर उपहार की याचना करने आये। क्या पृथ्वी को लेना आपके लिये कठिन था जिसे आपने पूर्व के समय में अपने वक्षस्थल के पास रखा था निगल गये थे तथा पुनः बना दिया था ? विनती है, मुझे बताइये जिससे कि हम आश्वस्त हो जायें। **2600**
शूळ्न्दडियार् वेण्डिनक्काल्* तोन्ऱादु विट्टालुम्* वाळ्न्दिडुवर् पिन्नुम् तम् वाय् तिऱवार्* शूळ्न्दॅङ्गुम् वाळ् वरैगळ् पोल् अरक्कन्* वन् तलैगळ् ताम् इडिय* ताळ् वरै विल् एन्दिनार् ताम्॥१७॥	जबकभी भी भक्तगन एकत्र होकर प्रभु को पुकारते हैं, यद्यपि आप प्रकट नहीं होते परंतु राहत तो प्रदान करते ही हैं। इसके बाद भी आप बोलते नहीं हैं। आपने धनुष धारण कर एक पर्वत की तरह खड़ा होकर राक्षसों के सिरों को वैसे ही धराशायी किया जैसे कि पत्थर लुढ़क रहे हों। **2601**

ताम्वाल् आप्पुण्डालुम्⋆ अत्तळुम्बु तान् इळग⋆ प्पाम्बाल् आप्पुण्डु पाडुट्टालुम्⋆ शोम्बादिप्- पल् उरुवै एल्लाम्⋆ पडर्वित्त वित्ता⋆ उन् तॉल्लुरुवै यार् अरिवार् शॉल्लु॥१८॥	विभिन्न रूपों में दिखने वाले नहीं समाप्त होते बीज की तरह प्रभु ! आप जब बांधे गये थे तो उसका चिह्न आप पर रह गया। जब आपने नाग से युद्ध किया तो उसके चिह्न ने पुराने चिह्न को मिटा दिया। तब भी कौन आपके मूल स्वरूप को समझता है ? बताइये। **2602**
शॉल्लिलल् कुरै इल्लै⋆ शूदरिया नॅञ्जमे⋆ एल्लि पगल् एन्नादॅप्पोदुम्⋆ तॉल्लै क्कण् मा त्तानैक्कॅल्लाम्⋆ ओर् ऐवरैये मारग⋆ कात्तानै क्काण्डुम् नी काण्॥१९॥	हे सरल हृदय ! बताने में कोई हानि नहीं है। आक्रमणकारियों की महान सेना के विरूद्ध प्रभु ने पांच जनों को रात दिन तथा हर समय संरक्षण प्रदान किया। देखो, तुम भी प्रभु को देख सकते हो। **2603**
काण प्पुगिल् अरिवु⋆ कै क्कॉण्ड नल् नॅञ्जम्⋆ नाण प्पडुम् अन्रे नाम् पेशिल्⋆ माणि उरुवागि क्कॉण्डु⋆ उलगम् नीर् एट्ट शीरान्⋆ तिरुवागम् तीण्डिट्टु च्चॅन्रु॥२०॥	अहो ! यह हृदय संवेदनशील है। जब कोई कहता है या यह स्वयं सोचता है कि धरा का उपहार लेने वाले सुन्दर वामन प्रभु को स्पर्श करना है तो यह लज्जा से भर जाता है। **2604**
शॅन्रङ्गु वॅन्नरगिल्⋆ शेरामल् काप्पदर्कु⋆ इन्रिङ्गॅन् नॅञ्जाल् इडुक्कुण्ड⋆ अन्रङ्गु प्पार् उरुवुम्⋆ पार् वळैत्त नीर् उरुवुम्⋆ कण् पुदैय कार् उरुवन् तान् निमिर्त्त काल्॥२१॥	पुरा काल में श्याम वदन प्रभु ने पग बढ़ाकर सागर तथा धरती को ढ़क लिया था। यह सुनिश्चित करने के लिये हमें नरकगामी न होना पड़े मेरे हृदय ने आज प्रभु के पदारविंद को अपने में स्थापित कर लिया है। **2605**
काले पॊद त्तिरिन्दु⋆ कत्तुवराम् इननाळ्⋆ मालार् कुडिपुगुन्दार् एन् मनत्ते⋆ मेलाल् तरुक्कुम् इडम् पाट्टिनोडुम्⋆ वल्विनैयार् ताम्⋆ वी- ट्रिरुक्कुम् इडम् काणादिळैत्तु॥२२॥	पूज्य प्रभु हमारे हृदय में बैठ गये हैं। हमारे कर्म के आततायी राजा अपने दुष्कर्मो के शरीर के लिये ठहरने का कोई ठौर नहीं पा रहे हैं एवं अपना समय घूमते हुए तथा घायल पैरों के साथ कराहते हुए बिता रहे हैं। **2606**
इळैप्पाय् इळैयाप्पाय्⋆ नॅञ्जमे ! शॉन्नेन्⋆ इळैक्क नमन तमर्गळ पट्टि इळैप्पॅय्द⋆ नाय् तन्दु मोदामल्⋆ नल्गुवान् नल् काप्पान्⋆ ताय् तन्दै एव् उयिर्क्कुम् तान्॥२३॥	हे हृदय ! मेरी बातो से तू मूर्छित हो जा सकता है। यमदूत हमपर अपने कुत्तों को छोडकर हमारा कचूमर निकाल देंगे।लेकिन अपनी शक्ति का ह्यास नहीं होने दो। सबकुछ देखने वाले प्रभु जो सभी जीवात्माओं के माता एवं पिता हैं यह नहीं होने देंगे। **2607**
ताने तनि त्तोन्रल्⋆ तन् अळप्पॊन्रिल्लादान्⋆ ताने पिरर्गट्कुम् तन् तोन्रल्⋆ ताने इळैक्किल् पार् कीळ् मेलाम्⋆ मीण्डमैप्पान् आनाल्⋆ अळक्किर्पार् पारिन् मेल् आर्॥२४॥	प्रभु स्वयं निर्मित हैं।न तो कोई आपके समान है और न आपसे कोई बड़ा है। कोई अगर आपके गुणों को प्राप्त करता है तो आपकी कृपा से ही। जब आप चाहते हैं तो जगत में उथल पुथल मच जाता है लेकिन उसे आप ही ठीक कर देते हैं। आपकी गाथा को कौन पार पा सकता है ? **2608**

आरानुम् आदानुम् शैय्य⋆ अगल्लिडत्तै आरायन्दु⋆ अदु तिरुत्तल् आवदे⋆ शीर् आर् मनत्तलै⋆ वन् तुन्बत्तै माट्रिनेन्⋆ वानोर् इन त्तलैवन् कण्णनाल् यान्॥२५॥	जो जैसा चाहता है वैसा करने दो। क्या इस वृहत संसार को समझाना एवं ठीक रखना संभव है ? कृष्ण की कृपा से हमने अपने हृदय को अकथनीय यातना से मुक्त कर लिया है। **2609**
यानुम् एन् नैञ्जुम् इशैन् तॊळिन्दोम्⋆ वल्विनैयै कानुम् मलैयुम् पुग क्कडिवान्⋆ तान् ओर् इरुळ् अन्न मा मेनि⋆ एम् इरैयार् तन्द⋆ अरुळ् एन्नुम् तण्डाल् अडित्तु॥२६॥	प्रभु ! घोर अंधकार ने हमें कृपा रूपी एक डंडा दिया है। इसकी सहायता से हम अपने हृदय के साथ मिलकर अपने दुष्कर्मों को जंगल एवं पर्वतों में खदेड़ देना चाहते हैं। **2610**
अडियाल्⋆ पडि कडन्द मुत्तो⋆ अदन्रेल् मुडियाल्⋆ विशुम्बळन्द मुत्तो⋆ नैंडियाय् ! शॆरि कळल् कॊळ् ताळ् निमिरत्तु⋆ च्चॆन्रुलगम् एल्लाम्⋆ अरिगिलमाल् नी अळन्द अन्रु॥२७॥	क्या यह आपके चरणारविंद से धरा को मापने का आनन्द है या आकाश को आपके मुकुट से मापने का आनन्द है ? मैं नहीं जानता। हे पुरा काल के प्रभु ! जब आभूषित पदारविंद को बढ़ाकर ब्रह्मांड को मापा उस समय का आपके मुखमंडल का आश्चर्य ! **2611**
अन्रे नम् कण् काणुम्⋆ आळियान् कार् उरुवम्⋆ इन्रे नाम् काणादिरुप्पदुवुम्⋆ एन्रेनुम् कट्कण्णाल्⋆ काणाद अव्वुरुवै⋆ नैञ्जॆन्नुम् उट्कण्णाल् काणुम् उणर्न्दु॥२८॥	इन आंखों से प्रभु का दर्शन कभी नहीं मिल सकता लेकिन यह केवल अब की बात है। जब अन्तःचक्षु जिसे हृदय कहते हैं आपके स्वरूप का ध्यान करता है तो उसे अनुभूति होने लगती है। तब ये आंखें भी चक्रधारी प्रभु के श्याम स्वरूप देखने लगती है। **2612**
उणर ऑरुवरक्कु⋆ एळियने शॆव्वे⋆ इणरुम् तुळाय् अलङ्गल् एन्दै⋆ उणर त्तनक्कॆळियर्⋆ एव्वळवर् अव्वळवन् आनाल्⋆ एनक्कॆळियन् एम् पॆरुमान् इङ्गु॥२९॥	प्रभु, मेरे पिता ! ओजस्वी तुलसी धारण करते हैं। क्या कोई आपको पूर्णतया समझ सकता है ? जो जितना ही विनम्र होता है उतनी ही प्रभु की गौरव गाथा को समझ पाता है। वह आपके पास सरलता से पहुंच जाता है। **2613**
इङ्गिल्लै पण्डुपोल्⋆ वीट्रिरुत्तल्⋆ एन्नुडैय शॆङ्कण् माल् शीरक्कुम् शिरिदुळ्ळम्⋆ अङ्ग मडि अडक्कि निर्पदनिल्⋆ वल्विनैयार् ताम्⋆ मीण्डु अडि एडुप्पदन्रो अळगु॥३०॥	अरूणाभ नयन पूज्य प्रभु की गौरव गाथा को रखने के लिये हमारा हृदय बहुत ही छोटा है। अतः बूढ़े की तरह हमारा पुराना कर्म यहां बैठ नहीं सकता। बल्कि किसी कोने में खड़ा होकर कांपता एवं कहता 'उन्हें अपना रास्ता पाकर निकल जाने दो'। **2614**
अळगुम् अरिवोमाय्⋆ वल्विनैयै त्तीरप्पान्⋆ निळलुम् अडि तोरुम् आनोम्⋆ शुळल कुडङ्गळ्⋆ तलै मीदॆडुत्तु क्कॊण्डाडि⋆ अन्र त्तडङ्गडलै मेयार् तमक्कु॥३१॥	गहरे सागर में सोने वाले प्रभु हर्षित मन से अपने सिर पर पात्र रखकर सर्वत्र नाचते हैं। हमारे कर्मो को नाश करने की आपकी शक्ति एवं आपके सौंदर्य को जानकर हम आपके चरण चिह्न एवं आपकी छाया हो गये हैं। **2615**

तमक्कडिमै वेण्डुवोर्* दामोदरनार् तमक्कु* अडिमै शैय् एन्ऱाल् शैय्यादु* एमक्कैन्ऱु ताम् शैय्युम् तीविनैक्के* ताऴ्वुऱुवर् नैञ्जिनार्* याम् शैय्वदिव् विडत्तिङ्गियादु॥ ३२॥	दामोदर प्रभु जो ऊखल में बांध दिये गये थे सेवा से प्रसन्न होते हैं। लेकिन बताने पर हृदय सेवा नहीं करेगा। यह नीच कर्मों की सेवा में लगा रहेगा एवं कहेगा 'मैं स्वयं का हूं'। ऐसी स्थिति में हम क्या कर सकते हैं। **2616**
यादानुम् ऑन्ऱरियिल्* तन् उगक्किल् एन् कौलो* यादानुम् नेरन्दणुगा आऱु तान्* यादानुम् तेऱुमा* शैय्या अशुरर्गळै* नेमियाल् पाऱु पाऱाक्किनान् पाल्॥ ३३॥	प्रभु अपने चक्र से असुरों का सर्वनाश कर देते हैं जो अपने को सुधारने के लिये कोई प्रयास नहीं करते हैं। आपको अति अल्प जानने पर भी बहुत आनंद मिलता है। तब भी कोई आपके पास किसी भी माध्यम से क्यों नहीं पहुंचता है ? **2617**
पाल् आऴि नी किडक्कुम् पण्बै* याम् केट्टेयुम् काल् आऴुम्* नैञ्जऴियुम् कण् शुऴलुम्* नील् आऴि शोदियाय्! आदियाय्!* तौल्विनै एम्बाल् कडियुम्* नीदियाय्! निन् शारन्दु निन्ऱु॥ ३४॥	गहरे सागर के रंग वाले हे प्रभु ! हे प्रथम प्रभु ! हमारे युगों पुराने कर्मों के नाश करने के साधन, हे प्रभु ! क्षीरसागर में शयनावस्था के आपके गौरवशाली स्वरूप के बारे में हमने सुना है। हाय ! आपको प्राप्त करने की ईच्छा को जानकर हमारे पैर कांपते हैं, हृदय मूर्च्छित हो जाता है, एवं आंखें घूमने लगती हैं। **2618**
निन्ऱुम् इरुन्दुम्* किडन्दुम् तिरिदन्दुम्* ऑन्ऱुमो आट्टान् एन् नैञ्जगलान्* अन्ऱङ्गै वन् पुडैयाल् पौन् पैयरोन्* वाय् तगरत्तु मार् विडन्दान्* अन्बुडैयन् अन्ऱे अवन्॥ ३५॥	खड़े, बैठे, सोये एवं चलते हुए प्रभु कभी आराम की चिंता नहीं करते एवं कभी भी मेरे हृदय को नहीं छोड़ते। पुराकाल में आप सुन्दर हाथ एवं शक्तिशाली नखों के साथ आये। आपने हिरण्य के मुंह को बंद करते हुए उसकी छाती चीर डाली। क्या आप हमें प्रेम नहीं देते ? **2619**
अवनाम् इवनाम् उवनाम्* मट्टुम्बर् अवनाम्* अवन् एन्निरादे* अवनाम् अवने एन तैळिन्दु* कण्णनुक्के तीरन्दाल्* अवने एवनेल्लुम् आम्॥ ३६॥	आपके विभिन्न रूपों को देखकर कि आप वहां, आप यहां, आप बीच में, एवं आप आकाश में, द्वंद में मत पड़ो। यह जान लो कि कृष्ण अकेले ही सर्वत्र हैं एवं आपकी पूजा करो। तुम जिस रूप में चाहोगे आप प्रकट होंगे। **2620**
आमाऱरिवुडैयार्* आवदरिदन्ऱे* नामे अदुवुडैयोम् नल् नैञ्जे* पू मेय् मदुगरमे* तण् तुऴाय् मालारै* वाऴ्त्ताम् अदु करमे अन्बाल् अमै॥ ३७॥	आपके विभिन्न रूपों को देखकर कि आप वहां, आप यहां, आप बीच में, एवं आप आकाश में, द्वंद में मत पड़ो। यह जान लो कि कृष्ण अकेले ही सर्वत्र हैं एवं आपकी पूजा करो। तुम जिस रूप में चाहोगे आप प्रकट होंगे। **2621**
अमैक्कुम् पौऴुदुण्डे* आरायिल् नैञ्जे* इमैक्कुम् पौऴुदुम् इडैच्चि कुमैत्तिऱङ्गळ्* एशिये आयिनुम्* ईन् तुऴाय् मायनैये* पेशिये पोक्काय् पिऴै॥ ३८॥	हे हृदय ! सोच लो, क्या आपकी प्रशस्ति के लिये हमारे पास पर्याप्त समय है ? हर क्षण मधुर माला वाले प्रभु के बारे में बोलो, यहां तक कि वह गोप किशोरियों के व्यंग हीं क्यों न हो। **2622**

पिळैक्क मुयन्रोमो⋆ नॆञ्जमे ! पेशाय्⋆ तळैक्कुम् तुळाय् मार्वन् तन्नै⋆ अळैत्तॊरुगाल् पोयुपगारम्⋆ पॊलिय क्कॊळ्ळादु⋆ अवन् पुगळे वायुपगारम् कॊण्ड वाय्प्पु॥३९॥	हे हृदय ! तुलसी माला वाले प्रभु का एक बार ही नाम लेकर क्या हम आपकी सेवा करने के लिये वैकुंठ चले जायेंगे ? क्या हम यहां प्रतीक्षा नहीं करते रहे हैं तथा हर अवसर पर प्रशस्ति नहीं गायी है ? बताओ। **2623**
वाय्प्पो इदुवॊप्प⋆ मट्रिल्लै वा नॆञ्जे⋆ पोय् प्पोय्⋆ वॆन्नरगिल् पूवियेल्⋆ ती प्पाल पेय् त्ताय्⋆ उयिर् कळाय् प्पाल् उण्डु⋆ अवळ् उयिरै माय्त्तानै वाळ्त्ते वलि॥४०॥	आओ, हे हृदय ! इससे अच्छा अवसर नहीं मिलेगा। हमें बार बार नरक नहीं दें। अच्छा हो कि राक्षसी के विषैले स्तन पीने के साथ उसके प्राण पी जाने वाले प्रभु की प्रशस्ति गाओ। **2624**
वलियम् ऎन निनैन्दु⋆ वन्दॆदिर्न्द मल्लर्⋆ वलिय मुडि इडिय वाङ्गि⋆ वलिय निन् पॊन् आळि क्कैयाल्⋆ पुडैत्तिडुदि कीळादे⋆ पल् नाळुम् निर्कुम् इप्पार्॥४१॥	हे शक्तिवान ! मल्ल योद्धाओं ने सोचा कि वे शक्तिशाली हैं परंतु चक्र धारण करने वाले सुन्दर हाथ से आपने उनके सिर लुघड़ा दिये तथा उनका नाश कर दिया। अब संसार बहुतों वर्षो तक व्यवधान मुक्त रह सकेगा। **2625**
पार् उण्डान् पार् उमिळ्न्दान्⋆ पार् इडन्दान् पार् अळन्दान्⋆ पार् इडम् मुन् पडैत्तान् ऎन्बराल्⋆ पार् इडम् आवानुम्⋆ तान् आनाल् आर् इडमे⋆ मट्रॊरुवर्– क्कावान् पुगावाल् अवै॥४२॥	कहते हैं कि धरा को निगल कर पुनः बनाने वाले, उठाकर मापने वाले, वही प्रभु हैं जिन्होंने प्रारंभ में धरा एवं आकाश को बनाया था।अगर प्रभु स्वयं धरा एवं आकाश हैं तो हमारा आश्रय कौन हो सकते हैं ? अन्य किसी को खोजना तो असंभव है। **2626**
अवयम् ऎन निनैन्दु⋆ वन्द शुरर् पाले⋆ नवैयै नळिर्विप्पान् तन्नै⋆ कवैयिल् मनत्तुयर वैत्तिरुन्दु⋆ वाळ्त्तादार्क्कुण्डो⋆ मन त्तुयरै माय्क्कुम् वगै॥४३॥	देवगन जो आश्रय खोजते आते हैं प्रभु उनकी यातना का नाश कर देते हैं। जो आपको अपने हृदय में दृढ़ता से नहीं रखते तथा आपकी पूजा नहीं करते ऐसे लोगों को मानसिक वेदना से मुक्त करने का कोई मार्ग है क्या ? **2627**
वगै शेरन्द नल् नॆञ्जुम्⋆ ना उडैय वायुम्⋆ मिग वायन्दु वीळा ऎनिलुम्⋆ मिगवायन्दु मालै त्ताम्⋆ वाळ्त्तादिरुप्पर् इदुवन्रे⋆ मेलैत्ताम् शॆय्युम् विनै॥४४॥	अच्छा हृदय अपनी चेतना के साथ, जीभ अपनी बोलने की शक्ति के साथ, अपने को प्रभु की प्रशस्ति में स्वयं नहीं लगाते, तथा जो प्रभु की गाथा गाने के लिये कोई प्रयास नहीं करते, कर्मो का संचय कर लेते हैं। **2628**
विनैयार् तर मुयल्लुम्⋆ वॆम्मैये अञ्जि⋆ तिनैयाम् शिरिदळवुम् शॆल्ल निनैयादु⋆ वाशगत्ताल् ऎत्तिनेन्⋆ वानोर् तॊळुदिरैञ्जुम्⋆ नायगत्तान् पॊन् अडिगळ् नान्॥४५॥	कर्म की यातना से डर कर स्वर्गिकों से पूजित एवं प्रशंसित प्रभु की अपने पदों से हमने पूजा की है तथा भक्ति के मार्ग से हम तनिक भी विचलित न हुए हैं। **2629**

नान् कूरुम्⋆ कूट्टावदित्तनैये⋆ नाळ् नाळुम् तेङ्गोद नीर् उरुवन् शेङ्गण् माल्⋆ नीङ्गाद मा गदियाम्⋆ वेन्नरगिल् शेरामल् काप्पदर्कु⋆ नी गदिया नेञ्जे ! निनै॥ ४६॥	हर दिन जो हम बोलते हैं यह उसका सार है। सागर के वर्ण वाले एवं आकर्षक राजीव नयन प्रभु हमारे शाश्वत आश्रय हैं। घोर नरक में डाल दिये जाने के विरूद्ध आप हमारे रक्षक हैं। हे हृदय ! ध्यान करो। **2630**
निनैत्तिरैञ्जि मानिडवर्⋆ ऑन्रिरप्पर् एन्रे⋆ निनैत्तिडवुम् वेण्डा नी नेरे⋆ निनैत्तिरैञ्ज एव्वळवर्⋆ एव्विडत्तोर् माले⋆ अदु तानुम् एव्वळवुम् उण्डो एमक्कु॥ ४७॥	पूज्य प्रभु ! आपको तनिक भी भयग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है कि जो आपका ध्यान करता है वह आपसे वरदान मांगने पहुंच जायेगा। कितने ऐसे हैं जो आपका सीधा ध्यान करते हैं तथा गाथा गान करते हैं ? कहां हैं वे लोग ? निश्चित रूप से, क्या हम तनिक भी ऐसी इच्छा रखते हैं ? **2631**
एमक्कु याम् विण् नाट्टुक्कु⋆ उच्चमदाम् वीट्टै⋆ अमैत्तिरुन्दोम् अग्दन्रे यामारु⋆ अमै प्पॉलिन्द मॅन् तोळि कारणमा⋆ वॅम् कोट्टेरेळ् उडने⋆ कॉन्रानैये मनत्तु क्कॉण्डु॥ ४८॥	पतली बाहों वाली नप्पिनाय के लिये प्रभु ने सात वृषभों का बध शीघ्र ही कर दिया। आपका ध्यान करते हुए हमने वैकुंठ का मार्ग ढूंढ़ा है जो ऊच्चतम स्वर्ग से भी ऊपर है। क्या यह उचित एवं योग्य नहीं है ? **2632**
कॉण्डल् तान् माल् वरै तान्⋆ मा कडल् तान् कूर् इरुळ् तान्⋆ वण्डरा प्पूवै तान् मट्रूत्तान्⋆ कण्ड नाळ् कार् उरुवम्⋆ काण्दोरुम् नॅञ्जोडुम्⋆ कण्णनार् पेर् उरुवॅन्रॅम्मै प्पिरिन्दु॥ ४९॥	जब कभी भी हम श्याम मेघ या श्याम पर्वत या गहरा सागर या श्यामली रात या मधुमक्खी लिपटे कया के फूल या श्यामल रंग का अन्य कुछ भी खोजते हैं तब हमारा हृदय हमें छोड़कर यह कहते हुए चला जाता है 'यह हमारे कृष्ण का गौरवशाली वर्ण है'। **2633**
पिरिन्दॉन्रु नोक्कादु⋆ तम्मुडैय पिन्ने⋆ तिरिन्दुळलुम् शिन्दनैयार् तम्मै⋆ पुरिन्दॉरुगाल् आवा ! एन इरङ्गार्⋆ अन्दो ! वलिदेगॉल्⋆ मा वाय् पिळन्दार् मनम्॥ ५०॥	जो सबकुछ न्योछावर कर अन्य विचार को त्यागते हुए प्रभु के पीछे दौड़ते हैं उन पर प्रभु शीघ्र ही करूणा नहीं दिखाते। तब वे पूछते हैं 'ओह ! घोड़ा के जबड़ा चीरने वाले प्रभु क्या इतने कठोर हृदय के हैं ?' **2634**
मनम् आळुम् ओरैवर्⋆ वन् कुरुम्बर् तम्मै⋆ शिन माळ्वित्तोर् इडत्ते शेरत्तु⋆ पुनम् एय तण् तुळायान् अडियै⋆ ताम् काणुम् अग्दन्रे⋆ वण्डुळाम् शीरार्क्कु माण्बु॥ ५१॥	हृदय पर शासन करने वाले पांचों दुष्ट इन्द्रियों के कोप को दबाते हुए सुदृढ़ मन से तुलसी माला धारण करने वाले प्रभु के चरणारविंद का ध्यान करते हुए भद्र जनों की सेवा में जीवन लगाना श्रेयस्कर है। **2635**
माण् बावित्तन्नान्रु⋆ मण् इरन्दान्⋆ मायवळ् नं- जूण् बावित्तुण्डान्⋆ अदोरुरुवम्⋆ काण्बान् नम् कण्णवा⋆ मट्रॊन्रु काण् उरा⋆ शीर् परवा- दुण्ण वाय् तान् उरुमो ऑन्रु॥ ५२॥	पुरा काल में प्रभु ने वामन रूप में भूमि की भिक्षा मांगी एवं रूचि के साथ राक्षसी के विषैले स्तन का पान किया। मेरी आंखें आपके पूज्य स्वरूप के दर्शन के लिये लालायित है एवं अन्य कुछ भी नहीं देखना चाहती। मेरी जिव्हा आपके नाम का स्वाद लेना चाहती है और अन्य कुछ भी नहीं। **2636**

ऑन्ऱुण्डु शेङ्कण् माल्!⋆ यान् उरैप्पदु⋆ उन् अडियार्– क्कॅन् शेय्वन् एन्ऱे इरुत्ति नी⋆ निन् पुगळिल् वैगुम्⋆ तम् शिन्दैयिलुम् मट्रिनिदो⋆ नी अवर्क्कु वैगुन्दम् एन्ऱरुळुम् वान्॥५३॥	अरूणाभ नयन के पूज्य प्रभु ! हमें कुछ कहना है। आप सदा अपने भक्तों के लिये कुछ करने को आतुर रहते हैं। परंतु वैकुंठ का अनुभव जो आप बताते हैं वह आपकी गाथा गाने के आनंद से मृदुतर नहीं हो सकता है। **2637**
वानो मरि कडलो⋆ मारुदमो तीयगमो⋆ कानो ऑरुङ्गिट्रुम् कण्डिल माल्⋆ आन् ईन्ऱ कन्ऱुयर ताम् एरिन्दु⋆ काय् उदिर्त्तार् ताळ् पणिन्दोम्⋆ वन् तुयरै आवा ! मरुङ्गु॥५४॥	बछड़ा फेंककर ताड़ वृक्षों को उसके फलों के साथ गिराने वाले प्रभु के चरणों में हम पूजा अर्पित करते हैं। अहो ! हमारी सारी यातनायें बिना कोई निशान छोड़े हमलोगों को त्याग कर चली गयी। आश्चर्य है कि वे कहां चली गयीं ? आकाश में या सागर में या हवा में या अग्नि में। **2638**
मरुङ्गोद मोदुम्⋆ मणि नागणैयार्⋆ मरुङ्गे वर अरियरेलुम्⋆ ऑरुङ्गे एमक्कवरै क्काणलाम्⋆ एप्पॊळुदुम् उळ्ळाल्⋆ मन क्कवलै तीर्प्पार् वरवु॥५५॥	मणि से युक्त फनवाले नाग की शय्या पर प्रभु लहरों के सागर में शयन करते हैं।आप हमारे पास नहीं आ सकते परंतु हम अपने हृदय में आपको सदा ही देखते हैं तथा चिंता मुक्त रहते हैं। **2639**
वरवाऱॊन्ऱिल्लैयाल्⋆ वाळ्विनिदाल्⋆ एल्ले ! ऑरुवाऱॊरुवन् पुगावाऱु⋆ उरु माऱुम् आयवर् ताम् शेयवर् ताम्⋆ अन्ऱुलगम् तायवर् ताम्⋆ मायवर् ताम् काट्टुम् वळि॥५६॥	अब लौटना नहीं। अहो ! यह नया जीवन मधुर है।सुदूर वाले प्रभु गोपकिशोर होकर आये।धरा मापने वाले आश्चर्यमय प्रभु पुनर्जन्म से बचने के सरल मार्ग बताते हैं। अहो ! आश्चर्य है। **2640**
वळि त्तङ्गु वल्विनैयै⋆ माट्रानो नॆञ्जे⋆ तळीइ क्कॊण्डु पोर् अवुणन् तन्नै⋆ शुळित्तेङ्गुम् ताळ्विडङ्गळ् पट्रि⋆ प्पुलाल् वॆळ्ळम् तान् उगळ⋆ वाळ्वडङ्ग मार्विडन्द माल्॥५७॥	हे हृदय ! प्रभु ने असुर हिरण्य को अपनी गोद में दबाकर उसकी छाती चीर दी जिससे खून का झरना निकल कर सब जगह फैल गया। क्या आप हमलोगों को घोर कर्म से मुक्त नहीं करेंगे जो आपके और हमारे बीच में खड़ा है ? **2641**
माले ! पडि च्चोदि माट्रेल्⋆ इनि उनदु पाले पोल्⋆ शीरिल् पळुत्तॊळिन्देन्⋆ मेलाल् पिऱप्पिन्मै पॆट्रु⋆ अडिक्कीळ् क्कुट्रेवल् अन्ऱु⋆ मऱप्पिन्मै यान् वेण्डुम् माडु॥५८॥	पूज्य प्रभु ! अपना तेजोमय स्वरूप हमारे हृदय से पुनः कभी नहीं हटाईयेगा। आपके दूध जैसा मधुर गौरव गाथा की बाढ़ से प्रेम करने के लिये ही हम बढ़े हैं।मुझे पुनर्जन्म से मुक्ति नहीं चाहिये बल्कि आपके चरणों की सेवा अनवरत करते रहें एवं आपको कभी नहीं भूलें। **2642**
माडे वरप्पॆऱुवराम् एन्ऱे⋆ वल्विनैयार् काडानुम् आदानुम् कै कॊळ्ळार्⋆ ऊडे पोय् प्पोर् ओदम् शिन्दु⋆ तिरै क्कण्वळरुम्⋆ पेराळन् पेर् ओद च्चिन्दिक्क प्पेरन्दु॥५९॥	तेज लहरों के मध्य प्रभु सागर में शेषशायी हैं। हम जैसे ही आपके वारे में सोचते हैं हमारा घोर कर्म हमें छोड़ देता है परंतु वह जंगल या अन्यत्र नहीं जाता। वह पास ही रहता है जिससे कि पुनः मुझमें प्रवेश कर जाये। **2643**

पेरन्दॊन्ऱु नोक्कादु⋆ पिन् निर्पाय् निल्लाप्पाय्⋆ ईन् तुळाय् मायनैये एन् नॆञ्जे⋆ पेरन्दॆङ्गुम् तॊल्लै मा वॆन्नरगिल्⋆ शेरामल् काप्पदर्कु⋆ इल्लै काण् मट्रोर् इऱै॥६०॥	हे हृदय ! कहीं अन्यत्र ध्यान न देकर अगर चाहता है तो तू तुलसी माला वाले प्रभु पर ही ध्यान केन्द्रित कर। अगर तू ऐसा न करेगा तो हमें छोड़ कर चला जा। लेकिन यह जान लो कि अन्य कोई भी देवता ऐसा नहीं है जो तुझे नरक की यातना से बचाये। **2644**
इऱै मुऱैयान् शेवडिमेल्⋆ मण् अळन्द अन्नाळ्⋆ मऱै मुऱैयाल् वानाडर् कूडि⋆ मुऱै मुऱैयिन् तादिलगु⋆ पूर्त्तॆळित्ताल् ऒव्वादे⋆ ताळ् विशुम्बिन् मीदिलगि त्तान् किडक्कुम् मीन्॥६१॥	जब प्रभु विस्तृत होकर आकाश में विराजमान थे तो नीचे के तारे ऐसे दिख रहे थे मानों वे पराग से भरे अनेकानेक विखरे हुए फूल हों जो देवसमूह ने आपके कदमों में पूजा हेतु गाथा गान करते हुए चढ़ाया हो। **2645**
मीन् एन्नुम् कम्बिल्⋆ वॆरि एन्नुम् वॆळ्ळि वेय्⋆ वान् एन्नुम् केडिला वान् कुडैक्कु⋆ तान् ओर् मणि क्काम्बु पोल्⋆ निमिरन्दु मण् अळन्दान्⋆ नङ्गळ् पिणिक्काम् पॆरु मरुन्दु पिन्॥६२॥	जब वामन ने धरा को मापा तो आकाश छाता बन गया विस्तृत प्रभु स्वयं उसके डंडा हो गये तथा तारे कमानी बन गये एवं ग्रहादि सुन्दर फुदेना हो गये। आप हमारे सभी रोग की औषधि हैं। **2646**
पिन् तुरक्कुम् काट्रिळन्द⋆ शूल् कॊण्डल् पेरन्दुम् पोय्⋆ वन् तिरैक्कण् वन्दणैन्द वाय्मैत्ते⋆ अन्ऱु तिरु च्चॆय्य नेमियान्⋆ ती अरक्कि मूक्कुम्⋆ परु च्चॆवियुम् ईरन्द परन्॥६३॥	तड़ित पूर्ण श्याम मेघ से वर्षा ऐसे आई मानो धनुर्धर प्रभु ने भयानक राक्षसी के नाक कान काट लिये हों एवं विरोधी हवा से बह कर रूक गयी जैसे चक्रधारी प्रभु पुनः आपने सागर आवास में विश्राम हेतु चले गये हों। **2647**
परनाम् अवनादल्⋆ बाविप्पर् आगिल्⋆ उरनाल् ऒरु मून्ऱु पोदुम्⋆ मरम् एळ् अन्ऱु एय्दानै⋆ प्पुळ्ळिन् वाय् कीण्डानैये⋆ अमरर् कैदान् तॊळावे कलन्दु॥६४॥	अगर देवों ने यह समझा होगा कि प्रभु ने ही रामावतार में सात वृक्षों को वेधा था तथा कृष्णावतार में बकासुर पक्षी के चोंच चीर दिये थे तो क्या उनलोगों ने उस समय करबद्ध हो प्रभु की पूजा में दिन में तीन बार पुष्प नहीं चढ़ाये होंगे ? **2648**
कलन्दु नलियुम्⋆ कडुन् तुयरै नॆञ्जे⋆ मलङ्ग अडित्तु मडिप्पान्⋆ विलङ्गल् पोल् तॊल् मालै क्केशवनै⋆ नारणनै मादवनै⋆ शॊल् मालै एप्पॊळुदुम् शूट्टु॥६५॥	हे पर्वत समान पूज्य प्रभु केशव नारायण एवं माधव ! आप हमेशा हमारे यातना देने वाले घोर कर्म का नाश करते हैं। हे हृदय ! तू आपकी हमेशा गीत एवं माला से अर्चना कर। **2649**
शूट्टाय नेमियान्⋆ तॊल् अरक्कन् इन् उयिरै⋆ माट्टे तुयर् इळैत्त मायवनै⋆ ईट्ट वॆरि कॊण्ड⋆ तण् तुळाय् वेदियनै⋆ नॆञ्जे ! अरि कण्डाय् शॊन्नेन् अदु॥६६॥	हे हृदय ! मैं तुझे बताता हूं कि प्रभु कौन हैं। आप तीक्ष्ण चक्र धारण करते हैं तथा भयानक राक्षस रावण का नाश करने वाले आप आश्चर्य मय प्रभु हैं। आप वेदों के सार हैं तथा शीतल तुलसीमाला धारण करते हैं। **2650**

अदुवो नन्ऱॆन्ऱु⋆ अङ्गमर् उलगो वेण्डिल्⋆ अदुवो पॊरुळ् इल्लै अन्ऱे⋆ अदुवॊऴिन्दु मण् निन्ऱु⋆ आळ्वेन् ऎनिलुम् कूडुम् मड नॆञ्जे⋆ कण्णन् ताळ् वाऴ्त्तुवदे कल्॥६७॥	हे मूर्ख हृदय ! अगर तू स्वर्गिकों के जगत को सर्वोत्तम मानते हुए उसकी चाह रखता है तो जान ले वह ऊच्च लक्ष्य नहीं है। बल्कि तू धरा पर रहकर शासन कर यही अच्छा है और केवल तू कृष्ण के चरणों की बंदना करना सीख ले। **2651**
कल्लुम् कनै कडलुम्⋆ वैगुन्द वानाडुम्⋆ पुल् ऎन्ऱॊऴिन्दनगॊल् ए पावम्⋆ वॆल्ल नॆडियान् निऱम् करियान्⋆ उळ्पुगुन्दु नीङ्गान्⋆ अडियेनदुळ्ळत्तगम्॥६८॥	श्याम वदन सर्वोत्तम देव हमारे नीच हृदय में कभी नहीं लौटने के लिये प्रवेश कर गये हैं। आश्चर्य है कि अगर आपका पर्वत आवास, सागर आवास, आकाश आवास, एवं वैकुंठ कहीं सूना न हो जाये ! क्या करूणामय दृश्य होगा ! **2652**
अगम् शिवन्द कण्णिनराय्⋆ वल्विनैयर् आवार्⋆ मुगम् शिदैवराम् अन्ऱे मुक्कि⋆ मिगुम् तिरुमाल् शीर् क्कडल्लै उळ् पॊदिन्द⋆ शिन्दनैयेन् तन्नै⋆ आर्क्कडल् आम् शॆव्वे अडर्त्तु॥६९॥	हमारे घोर कर्म उनकी आंखों में लाल रंग होकर तनाव में है। कर्मो का मुखड़ा समाप्त हो गया है। भलाई के सागर शक्तिशाली तिरूमल प्रभु हमारे हृदय में आ गये हैं। अब कौन हमें यातना देगा ? **2653**
अडर् पॊन् मुडियानै⋆ आयिरम् पेरानै⋆ शुडर् कॊळ् शुडर् आऴियानै⋆ इडर् कडियुम् मादा पिदुवाग⋆ वैत्तेन् ऎनदुळ्ळे⋆ यादागिल् यादे इनि॥७०॥	सुवर्ण मुकुट एवं हजार नाम वाले तेजोमय चक्र के प्रभु हमारे मां एवं हमारे बाप हैं। हम आपको अन्तःपुर में रखते हैं, आप हमारी यातना का नाश करते हैं। जो होगा सो देखेंगे, क्या होगा ही ? **2654**
इनि निन्ऱु निन् पॆरुमै⋆ यान् उरैप्पदॆन्ने⋆ तनि निन्ऱ शार्विला मूर्त्ति⋆ पनि नीर् अगत्तुलवु⋆ शॆञ्शडैयान् आगत्तान्⋆ नान्गु मुगत्तान् निन् उन्दि मुदल्॥७१॥	अपनी जटा में गंगा को धारण करने वाले शिव आपके स्वरूप में एक कोने में हैं।कमलासीन ब्रह्मा का प्रारंभ ही आप से है। ऐसे स्वरूप वाले प्रभु जिसका न तो कोई समतुल्य है और न कोई अच्छा है, मैं किन शब्दों से आपकी गाथा का गान करूं ? **2655**
मुदल्लाम् तिरुवुरुवम् मून्ऱॆन्बर्⋆ ऒन्ऱे मुदल् आगुम्⋆ मून्ऱुक्कुम् ऎन्बर्⋆ मुदल्वा निगर् इलगु कार् उरुवा !⋆ निन् अगत्तदन्ऱे⋆ पुगर् इलगु तामरैयिन् पू॥७२॥	कहते हैं कि त्रिमूर्ति सबसे प्रथम हैं और यह भी कहते हैं कि तीनों एक प्रथम कारण से उत्पन्न हुए। शिव को धारण करने वाले प्रथम कारण श्यामल स्वरूप के प्रभु ! क्या ब्रह्मा का दिव्य कमल भी आपसे नहीं निकला ? **2656**
पूवैयुम् कायावुम्⋆ नीलमुम् पूक्किन्ऱ⋆ कावि मलर् ऎन्ऱुम् काण्दोऱुम्⋆ पावियेन् मॆल् आवि⋆ मॆय् मिगवे पूरिक्कुम्⋆ अव्वै ऎल्लाम् पिरान् उरुवे ऎन्ऱु॥७३॥	जबकभी भी मैं पूवै, काया, नीला कमल, एवं लाल कमल को देखता हूं मेरा क्षीण हृदय आनंद मनाते हुए कहता है 'अहो ! ये सब तो प्रभु के रंग हैं।' **2657**

एन्रुम् ऑरुनाळ्⋆ ऑलियामै यान् इरन्दाल्⋆ ऑन्रुम् इरङ्गार् उरु क्काट्टार्⋆ कुन्रु कुडै आग⋆ आ कात्त कोवलनार्⋆ नैञ्जे ! पुडै तान् पॆरिदे बुवि॥ ७४ ॥	हर दिन बिना किसी रूकावट के मैं पूजा करता हूं परंतु गायों की रक्षा में पर्वत उठाने वाले गोपकिशोर नहीं आते। आपको कोई दया नहीं है। हे मन ! क्या धरा केवल एक ही तरफ फैली है ? **2658**
बुवियुम् इरु विशुम्बुम् निन् अगत्त⋆ नी एन् शॆवियिन् वलि पुगुन्दु⋆ एन् उळ्ळाय्⋆ अविविन्रि यान् पॆरियन् नी पॆरियै⋆ एन्बदनै यार् अरिवार्⋆ ऊन् परुगु नेमियाय् ! उळ्ळु॥ ७५ ॥	मांस तक को कतर देने वाले चक्र को धारण करने वाले प्रभु धरा जगत तथा आकाश जगत आप में ही है। आप हमारे कानो के रास्ते चुपके से बिना हमारी जानकारी के हमारे अन्दर प्रवेश कर गये। क्या मैं आपसे बड़ा हूं या आप हमसे बड़े हैं ? यह कौन जानता है ? मुझे बताइये **2659**
उळ्ळिलुम् उळ्ळन् तडिक्कुम्⋆ विनै प्पडलम्⋆ विळ्ळ विळित्तुन्नै मॆय् उट्राल्⋆ उळ्ळ उलगळवु यानुम्⋆ उळन् आवन् एन्गॊलो⋆ उलगळन्द मूर्त्ति ! उरै॥ ७६ ॥	धरा को मापने वाले प्रभु जब मैं आपको सोचता हूं एवं ध्यान में चला जाता हूं यानी बाहरी होश खो देता हूं तो मेरा हृदय आपको भीतर पाकर वृहत हो जाता है और हमारे कर्म लुप्त हो जाते हैं। जब होश आने पर जागता हूं तो अपने को आपके समूचे ब्रह्मांड का, जो आप हैं, एक अगं पाता हूं। यह कैसे होता है ? बताइये। **2660**
उरैक्किल् ओर् शुट्रत्तार्⋆ उट्रार् एन्रारे⋆ इरैक्कुम् कडल् किडन्द एन्दाय्⋆ उरैप्पॆल्लाम् निन् अन्रि⋆ मट्रिलेन् कण्डाय्⋆ एनदुयिरक्कोर् शॊल् नन्रि आगुम् तुणै॥ ७७ ॥	गरजते सागर में शयन करने वाले प्रभु ! जरा सोचिये, हमारा कौन सखा है एवं कौन संबंधी है ? आपके अतिरिक्त मेरा कोई नहीं है। जो अच्छे शब्द आपकी प्रशस्ति में बोलता हूं वही हमारे सखा हैं। **2661**
तुणै नाळ् पॆरुङ्गिळैयुम्⋆ तॊल् कुलमुम्⋆ शुट्र-त्तिणै नाळुम् इन्बुडैत्ता मेलुम्⋆ कणै नाणिल् ओवा त्तॊलिल् शारङ्गन्⋆ तॊल् शीरै नल् नैञ्जे⋆ ओवाद ऊणाग उण्॥ ७८ ॥	नेक हृदय ! यद्यपि के तुम स्वागत करते हो तथा आनंद उठाते हो अच्छे मित्रों का, लंबी आयु का, अनुवर्ती वंशजों का, अग्रजों का, संबंधियों का, साथियों का, तबभी सदा टंकार करते शारंग धनुष वाले प्रभु के गौरव गाथा से अपनी भूख की तृप्ति करो जो कि अंत न होने वाल भोज्य पदार्थ हैं। **2662**
उण्णाट्टु त्तेशन्रे !⋆ ऊळिवनैयै अञ्जुमे⋆ विण् नाट्टै ऑन्राग मॆच्चुमे⋆ मण् नाट्टिल् आर् आगि⋆ एव्विळिट्रानालुम्⋆ आळियङ्गै प्पेरायर्काळ् आम् पिरप्पु॥ ७९ ॥	धरा पर गोपकिशोर बनकर आये चक्रधारी प्रभु की सेवा में लगाया हुआ जीवन धरा पर गौरवशाली है, चाहे वह कोई भी हो तथा कितना ही निम्न स्तर का पेशारत हो। क्या इसतरह के लोग कर्म से भय खायेंगे ? क्या ये लोग स्वर्ग का लक्ष्य पायेंगे ? **2663**
पिरप्पिरप्पु मूप्पु⋆ प्पिणि तुरन्दु⋆ पिन्नुम् इरक्कवुम् इन्बुडैत्ता मेलुम्⋆ मरप्पॆल्लाम् एदमे⋆ एन्रल्लाल् एण्णुवने⋆ मण् अळन्दान् पादमे एत्ता प्पगल्॥ ८० ॥	यद्यपि कोई जन्म मरण बृद्धावस्था एवं व्याधि से मुक्त होकर कैवल्य का भी आनंद उठाता हो परंतु अगर वह धरा मापने वाले प्रभु के चरणों का गाथा गान भूल हो गया हो तो क्या उसके सारे समय व्यर्थ नहीं व्यतीत हुए ? **2664**

पगल् इरा ऎन्बदुवुम्* बावियादु* ऎम्मै इगल् शॆय्दिरु पॊळुदुम् आळ्वर्* तगवा त्तॊळुम्बर् इवर् शीरक्कुम्* तुणैयिलर् ऎन्ऱोरार्* शॆळुम् परवै मेयार् तॆरिन्दु ॥८१॥	सागरशायी सर्वज्ञ प्रभु किसी को नीच, दया के लिये कुपात्र, एवं उद्धार के लिये अयोग्य नहीं समझेंगे।अहोरात्र हमें सेवा का अवसर एवं आनंद प्रदान करते हुए हमें स्वीकार करेंगे। **2665**
तॆरिन्दुणर्वॊन्ऱिन्मैयाल्* तीविनैयेन्* वाळा इरुन्दॊळिन्देन्* कीळ् नाळ्गळ् ऎल्लाम्* करन्दुरुविल् अम् मानै* अन्नान्ऱु पिन् तॊडरन्द* आळि अङ्गै अम्मानै एत्तादयरत्तु॥८२॥	अंगूठी धारण हुए प्रभु ने मृग के रूप में छली राक्षस का पीछा कर उसका वध किया। हाय ! सच्चाई से अनभिज्ञ रहते हुए हमने सदा बिना थके प्रशस्ति गाने का जो अवसर खो दिया वे दिन व्यर्थ बीते। **2666**
अयरप्पाय् अयराप्पाय्* नॆञ्जमे ! शॊन्नेन्* उयप्पोम् नॆरि इदुवे कण्डाय्* शॆयर्वाल अल्लवे शॆय्गिऱुदि* नॆञ्जमे ! अञ्जिनेन्* मल्लर् नाळ् वव्विननै वाळत्तु॥८३॥	हे हृदय ! तुम प्रभु को याद करो या मत याद करो परंतु हमें इस बात का भय है कि तुम्हारा व्यस्त जीवन उचित नहीं था। मल्ल योद्धाओं का नाश करने वाले प्रभु की प्रशस्ति गाओ। उद्धार का यही एक रास्ता है। **2667**
वाळत्ति अवन् अडियै* प्पू प्पुनैन्दु* निन् तलैयै त्ताळत्तु* इरु कै कूप्पॆन्ऱाल् कूप्पादु पाळत्त विदि* ऎङ्गुट्टाय् ऎन्ऱवनै* एत्तादॆन् नॆञ्जमे* तङ्गत्तान् आमेलुम् तङ्गु॥८४॥	स्वयं के विनाश में उद्धत मेरा हृदय ! करबद्ध होकर प्रभु के चरणारविंद में सिर नवाकर पूजा अर्पित करते हुए प्रशस्ति गान करो। लेकिन तुम यह कभी नहीं करोगे। अगर तुम प्रभु को बिना याद किये 'हे प्रभु ! आप कहां हैं ?' अपना काम कर लेते हो तो ठीक है करते रहो। **2668**
तङ्गा मुयट्रिय आय्* त्ताळ् विशुम्बिन् मीदु पायन्दु* ऎङ्गे पुक्के त्तवम् शॆय्दिट्टन कॊल्* पॊङ्गोद त्तण्णम् पाल्* वेलैवाय् क्कण्वळरुम्* ऎन्नुडैय कण्णन् पाल् नन्निऱम् कॊळ् कार्॥८५॥	मेरे प्रभु कृष्ण गहरे क्षीरसागर में योगनिद्रा में हैं। परिपक्व बादल ने प्रभु का रंग प्राप्त कर लिया है। इनलोगों ने आकाश में यत्र तत्र घूमने का कितना श्रमसाध्य तपस्या करके यह पाया है ! **2669**
कार् कलन्द मेनियान्* कै कलन्द आळियान्* पार् कलन्द वल् वयिट्रान् पाम्पणैयान्* शीर् कलन्द शॊल् निनैन्दु पोक्कारेल्* शूळ् विनैयिन् आळ् तुयरै* ऎन् निनैन्दु पोक्कुवर् इप्पोदु॥८६॥	मेरे प्रभु कृष्ण गहरे क्षीरसागर में योगनिद्रा में हैं। परिपक्व बादल ने प्रभु का रंग प्राप्त कर लिया है। इनलोगों ने आकाश में यत्र तत्र घूमने का कितना श्रमसाध्य तपस्या करके यह पाया है ! **2670**
इप्पोदुम् इन्नुम्* इनि च्चिरिदु निन्ऱालुम्* ऎप्पोदुम् ईदे शॊल् ऎन् नॆञ्जे* ऎप्पोदुम् कै कळला नेमियान्* नम्मेल् विनै कडिवान्* मॊय् कळले एत्त मुयल्॥८७॥	मेरा हृदय ! सदा चक्र धारण करने वाले प्रभु ने हमें कर्मों से मुक्त कर दिया है।सदा प्रभु के एक समान चरणों की प्रशस्ति गाने का प्रयास करो।यह हम अब कह रहे हैं, बाद में भी कहेंगे तथा सदा कहेंगे। **2671** **नम्माळवार् तिरूवडिगले शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

तिरूवेलुकूट्रिरूक्कै (2672)

अरूळाळ प्पेरूमाळ् एम्बेरूमानार् अरूळिच्चेय्द तनियन्

वाळि परकालन् वाळि कलिगन्रि
वाळि कुरैयलूर् वाळ्वेन्दन् वाळियरो
मायोनै वाळ्वलियाल् मन्दिरङ्गोंळ् मङ्गैयर् कोन्
तूयोन् शुडर्मान वेल् !

शीरार् तिरुवेळु कूट्रिरुक्कै एन्नुम् शेन् तमिळाल्
आरावमुदन् कुडन्दै प्पिरान्दन् अडियिणैक्कीळ्
एरार् मरैप्पोरुळ् एल्लाम् एडुत्तिव्वुलगुय्यवे
शेरामल् शोन्न अरुळ् मारि पादम् तुणै नमक्के

‡ओंरु पेर् उन्दियिरुमलर् त्तविशिल्⋆ ओंरुमुरै अयनै ईन्रनै⋆ ओंरुमुरै इरु शुडर् मीदिनिल् इयङ्गा⋆ मुम् मदिळ् इलङ्गै इरु काल् वळैय⋆ ओंरु शिलै ओंन्रिय ईर् एयिट्रळल् वाय् वाळियिन् अट्टनै⋆ मूवडि नानिलम् वेण्डि⋆ मुप्पुरि नूलोंडु मान् उरियिलङ्गु मार्विनिन्⋆ इरु पिरप्पोंरु माण् आगि⋆	एक वृहत नाभि कमल पर बैठे हुए मोड़कर एक दूसरे के ऊपर चढ़े हुए पैर के साथ ब्रह्मा का जन्म हुआ। जब दोनों ज्योर्तिपुंज यानी सूर्य एवं चन्द्र, तीन तरफ से दीवार से घिरे लंका के ऊपर से गुजरने में डरने लगे तो आप प्रभु ने महान धनुष के दोनों किनारों को मोड़ते हुए एक बाण छोड़ा जो दो मुड़े हुए दांत के बीच से भयंकर अग्नि उगल रहा था। तीन ऐंठे धागे का द्विज वाला यज्ञोपवीत पहने आपने चार जमीन से तीन पग की भिक्षा मांगी। क्षण भर में आपने दो चरणों से तीनो लोकों को माप लिया।

ऒरुमुऱै ईर् अडि मूवुलगळन्दनै★ नाल् दिशै नडुङ्ग अञ्जिऱै प्पऱवै एऱि★ नाल् वाय् मुम् मदत्तिरु शॆवि ऒरु तनि वेऴत्तरन्दैयै★ ऒरु नाळ् इरु नीर् मडुवुळ् तीर्त्तनै★ मुत्ती नान् मऱै ऐ वगै वेळ्वि★ अरु तॊऴिल् अन्दणर् वणङ्गुम् तन्मैयै★ ऐम् पुलन् अगत्तिनुळ् शॆरुत्तु★ नान्गुडन् अडक्कि मु क्कुणत्तिरण्डवै अगट्ऱि★ ऒन्ऱिनिल् ऒन्ऱि निन्ऱु★ आङ्गिरु पिऱप्पऱुप्पोर् अऱियुम् तन्मैयै★ मु क्कण् नाल् तोळ् ऐ वाय् अरवोडु★ आऱु पॊदि शडैयोन् अऱिवरुम् तन्मै प्पॆरुमैयुळ् निन्ऱनै★	अलौकिक चार पैर के दो कान वाले तीन तरफ (दोनों कपोल एवं ललाट) से मत्त से भींगे गजेन्द्र की रक्षा हेतु जब पांच पंख वाले गरूड़ पर आप सवार हुए तो चारों दिशायें कांप उठी। एक दिन दो सौ हाथ गहरे जल में, हे प्रभु आप पूजित हुए तीन अग्नि, चार वेद, पांच यज्ञ, छः कर्म से। पांच इन्द्रियों एवं चार अतिरक्तिों पर नियंत्रण रखते हुए तीन गुणों में से दो को मिटाते हुए एक (रज तम का विनाश कर केवल सत्व में) में स्थिर होकर, जो जन्म एवं मरण के दो धांगों को तोड़ देते हैं वे आपको अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन आपने तीन आंख, चार हाथ, वदन पर पांच फन के नाग, एवं छः धारा वाली गंगा को जटाओं पर धारण किये हुए शिव से अपने को अलग रखते हैं।
एऴ् उलगॆयिद्रिनिल् कॊण्डनै★ कूऱिय अरु शुवै प्पयनुम् आयिनै★ शुडर् विडुम् ऐम् पडै अङ्गैयुळ् अमर्न्दनै★ शुन्दर नाल् तोळ् मुन्नीर् वण्ण★ निन् ईर् अडि ऒन्ऱिय मनत्ताल्★ ऒरु मदि मुगत्तु मङ्गैयर् इरुवरुम् मलर् अन★ अङ्गैयिल् मुप्पॊऴुदुम् वरुड अऱिदुयिल् अमर्न्दनै★ नॆऱि मुऱै नाल् वगै वरुणमुम् आयिनै★ मेदगुम् ऐम् पॆरुम् बूदमुम् नीये★ अऱुपद मुरल्लुम् कून्दल् कारणम्★ एऴ् विडै अडङ्ग च्चॆट्ऱनै★ अरु वगै च्चमयमुम् अऱिवरु निलैयिनै★ ऐम्पाल् ओदियै आगत्तिरुत्तिनै★ अऱमुदल् नान्गवैयाय् मूर्त्ति मून्ऱाय्★	आपने सातों लोक को अपने दांत पर उठाकर संसार के छः स्वाद को वापस ला दिया। आप अपने हाथों में पांच अस्त्र धारण करते हैं। चार हाथ एवं तीन बादल के रंग वाले प्रभु ! जब आप योग निद्रा में रहते हैं आपके युगल चरणारविंद को अपने एक मात्र हृदय में रखते हुए दो चंद्रमुखी लक्ष्मी तीन बार आपके चरणों की सेवा करती हैं। आप मानव समुदाय के चार वर्ण हुए। पांचो तत्व भी आप ही है। छः पैरों वाले मधुमक्खी से लिपटे जूड़े वाले नप्पिनाय के लिये आपने सात वृषभों का अंत किया। आप अगम्य सनातन धर्म के छः सिद्धांत हैं। पांच मंगलमय गुणों वाली कमलनिवासिनी लक्ष्मी आपके वक्षस्थल पर

<table>
<tr>
<td>इरु वगै प्पयनाय् ऑन्राय् विरिन्दु
निन्रनै⋆ कुन्रा मदु मलर् च्चोलै

वण् कॉडि प्पडप्पै⋆ वरु पुनल् पॉन्नि
मा मणि अलैक्कुम्⋆ शॅन्नॆल् ऑण् कळनि
त्तिगळ् वनम् उडुत्त⋆ कर्पोर् पुरिशै
कनग मालिगै⋆ निमिर् कॉडि विशुम्बिल्
इळम् पिरै तुवक्कुम्⋆ शॅल्वम् मल्गु तॅन्
तिरुक्कुडन्दै⋆ अन्दणर् मन्दिर मॉळियुडन्
वणङ्ग⋆ आडरवमळियिल् अरिदुयिल्
अमरन्द परम⋆ निन् अडियिणै पणिवन्
वरुम् इडर् अगल माऱ्ऱो विनैये</td>
<td>विराजती हैं। हे चार पुरूषार्थ फलों के दाता, त्रिमूर्ति, विरोधाभास की जोड़ी, बहुतरूप वाले प्रभु !

जहां ऊंची दीवारों वाले सुनहले अटारी ऊपर उठकर कोमल चांद को छूते हैं एवं नदी अंतहीन उपजाऊ खेतों में बहुत सारे धन प्रदान करती है, मैं झुककर आपके चरणों को स्पर्श करता हूं। विनती है मुझे पूर्व के कर्मों से मुक्त कर दीजिये एवं आने वाली यातना से रक्षा कीजिये। **2672**

तिरूमङ्गैयाळवार् तिरूवडिगले शरणं ।</td>
</tr>
<tr>
<td>इदु कम्बर् पाडिय पाडल् एन्बर्

इडङ्गॊण्ड नॆञ्जदिणङ्गि क्किडप्पन्⋆ एन्रुम् पॊन्नि–
त्तडङ्गॊण्ड तामरै शूळुम् मलरन्द तण् पूङ्गुडन्दै⋆
विडङ्गॊण्ड वॆण्बल् करुन्दुत्ति च्चॆङ्गण् तळलुमिळ्वाय्⋆
पडङ्गॊण्ड पाम्बणै प्पळ्ळि कॊण्डान् तिरु प्पादङ्गळे

॥ तिरुमङ्गैयाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥</td>
<td></td>
</tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

शिऱिय तिरूमडल् (2673 – 2710)

मुळ्ळि च्चॆळुमलरो तारान् मुळैमदियम्⋆
कॊळ्ळिक्कॆन् उळ्ळम् कॊदियामे⋆ –वळ्ळल्
तिरुवाळन् शीर्क्कलियन् कार्क्कलियै वॆट्टि⋆
मरुवाळन् तन्दान् मडल्

<table>
<tr>
<td>‡कारार् वरै क्कॊङ्गै कण्णार् कडल् उडुक्कै⋆
शीरार् शुडर् च्चुट्टि शॆङ्गलुळि प्पेराट्टु⋆ ॥१॥
पेरार मार्विन् पॆरुमा मळै क्कून्दल्⋆
नीरार वेलि निलमङ्गै एन्नुम्⋆ इप्॥२॥
पारोर् शॊल्लप्पट्ट मून्ऱन्ऱे⊕अम्मून्ऱुम्
आरायिल् ताने अऱम्पॊरुळ् इन्बम् एन्ऱु⋆ ॥३॥
आरार् इवट्रिन् इडै अदनै एय्दुवार्⋆
शीरार् इरुकलैयुम् एय्दुवर्⊕शिक्कॆन मट्रु॥४॥
आरानुम् उण्डॆन्बार् एन्बदु तान् अदुवुम्⋆
ओरामै अन्ऱे उलगत्तार् शॊल्लुम् शॊल्⋆ ॥५॥
ओरामै आमाऱदु उरैक्कॆन् केळामे⋆
कारार् पुरवियेळ् पूण्ड तनि आऴि⋆ ॥६॥
तेरार् निऱै कदिरोन् मण्डलत्तै क्कीण्डु पुक्कु⋆
आरा अमुदम् अङ्गॆय्दि⊕अदिल् निन्ऱुम्॥७॥</td>
<td>बादल के शिखरवाले पर्वत भूदेवी का वक्षस्थल है। सागर झिलमिल वस्त्र है। सुन्दर नदियां नस हैं जो उरोज से गुजरती है। श्यामल मेघ से बनी जूड़े वाली सूर्य को अपने ललाट के आभूषण की तरह धारण करती हैं।आपके तीन मुख्य सिद्धांत हैं ः धर्म,अर्थ,एवं काम। **2673**

जो तीसरे की खोज करते हैं वे अन्य दोनों को भी प्राप्त कर लेते हैं। जो चौथे (मोक्ष) को चाहते हैं वे इनके बारे में केवल बोल सकते हैं जैसा कि ‘हमने सुना है’। **2674**

‘हमने सुना है‘ का क्या अर्थ है मैं बताता हूं। जो सात काले घोड़े से खीचे जाने वाले सूर्य के आभा क्षेत्र में चले जाते हैं एवं वहां अमरता के अमृत का आनंद उठाते हैं वे केवल वहीं रहते हैं कभी लौट नहीं सकते। **2675**</td>
</tr>
<tr>
<td>वारातॊऴिवदॊन्ऱुण्डे⋆ अदुनिर्क
एरार् मुयल्विट्टु क्काक्कैप्पिन् पोवदे⋆ ॥८॥
एरार् इळमुलैयीर्! एन्ऱन क्कुट्र्दुदान्⋆
कारार् कुऴल् एडुत्तु क्कट्टि⊕कदिर् मुलैयै॥९॥
वारार वीक्कि मणिमेकलै तिरुत्ति⋆
आरार् अयिल्वेर्कण् अञ्जनत्तिन् नीऱणिन्दु⋆ ॥१०॥
शीरार् शॆळुम्बन्दु कॊण्डडिया निन्ऱेन् नान्⋆
नीरार् कमलम् पोल् शॆङ्गण्माल् एन्ऱॊरुवन्⋆ ॥११॥
पारोर्गळ् एल्लाम् मगिऴ प्पऱै करङ्ग⋆
शीरार् कुडम् इरण्डेन्दि⊕शॆळुन्दॆरुवे॥१२॥
आरार् एनच्चॊल्लि आडुम् अदुकण्डु⋆
एरार् इळमुलैयार् एन्नैयरुम् एल्लारुम्⋆ ॥१३॥
वारायो एन्ऱार्क्कु च्चॆन्ऱेन् एन् वल्विनैयाल्⋆
कारार् मणिनिऱमुम् कैवळैयुम् काणेन् नान्⋆ ॥१४।</td>
<td>जैसा भी है रहने दो। लोमड़ी को छोड़ कर जाने वाले काग के पीछे जाने से क्या लाभ ? कोमल उरोजवाली ! क्या हुआ तुम जानती हो? मैंने बाल संवारा उरोज पर कंचुकी पहनी कमरधनी डाली आंखों में काजल लगायी तथा गेंद खेलने लगी। **2676**

एक सुन्दर मनोरंजन करने वाला सरोवर के नूतन कोमल लाल कमल जैसी आंखे लिये सबको मुग्ध करने वाले रूप के साथ वीथि में खड़ा पात्रों से नगाड़े की धुन पर खेल रहा था तथा पुकार रहा था ‘दूसरा कौन ? दूसरा कौन ?’ कोमल उरोजवाली हमारी बहन तथा मां एवं अन्यों ने कहा ‘आओ’। अतः मैं गयी। हाय ! मैंने श्यामल रत्न वर्ण वाले को गंवा दिया तथा अपने कंगन भी गंवा दिये। मुझे कोई सांत्वना नहीं दे सका। **2677**</td>
</tr>
</table>

<table>
<tr>
<td>आरानुम् शॊल्लिट्टुम् कॊळ्ळेन्⊕अऱिवळिन्दु
तीरा उडम्बॊडु पेदुऱुवेन् कण्डिरङ्गि⋆ ॥१५॥
एरार् किळिक्किळवि एम्मनैदान् वन्दॆन्नै⋆
शीरार् शॆळुम् पुळुदि क्काप्पिट्टु⊕शॆङ्गुऱिञ्जित्॥१६॥
तारार् नऱुमालै शात्तर्कु⋆ तान् पिन्नुम्
नेरादन ऒन्ऱु नेर्न्दाळ्⋆ अदनालुम्॥१७॥
तीरादॆन् शिन्तै नोय् तीरादॆन् पेदुऱवु⋆
वारादु मामै अदुकण्डु मट्राङ्गि⋆ ॥१८॥
आरानुम् मूदऱियुम् अम्मनैमार् शॊल्लुवार्⋆
पारोर् शॊलप्पडुम् कट्टु प्पडुत्तिरेल्⋆ ॥१९॥
आरानुम् मॆय्प्पडुवन् एन्ऱार्⊕अदुकेट्टु
कारार् कुऴल् कॊण्डै कट्टुविच्चि कट्टेरि⋆ ॥२०॥
शीरार् शुळगिल् शिलनॆल् पिडित्तॆऱिया⋆
वेरा विदिर्विदिरा मॆय्शिलिरा क्कैमोवा⋆ ॥२१॥</td>
<td>मैं अपनी बुद्धि गंवा चुकी हूं। मेरा शरीर प्रेत जैसा हो गया है। सुग्गे की तरह मधुर बोलने वाली मेरी मां ने हमारे ऊपर लाला कुमकुम लगाया है तथा उसने लाल कुरूंजी माला से शास्ता की पूजा की है जो कि पहले पूर्व में वह कभी ऐसी नहीं करती थी। **2678**

इससे भी मेरे हृदय का रोग ठीक नहीं हुआ और न तो हमारा प्रेतनुमा रूप ही बदला। मेरा रंग भी वापस नहीं लौटा। **2679**

ऐसा देख पुरानी प्रथा जानने वाली कुछ पुरानी पत्नियों ने राय दी ‘भविष्य बताने वाले किसी वनबासिनी से इसे दिखाओ वह बता देगी कि कौन इस पर सवार है’। **2680**

यह सुनकर एक काले जूड़ेवाली वनबासिनी वहां आयी।कुछ अन्न एक तश्तरी पर डालकर शपथ खाते तथा उसे हिलाते हुए चारों तरफ तरफ घूमकर शांत हो गयी। **2681**

अपनी तलहथी सूंघ कर बोली ‘यह हजार नाम वाला है’। **2682**</td>
</tr>
<tr>
<td>पेरायिरम् उडैयान् एन्ऱाळ्⊕पॆयर्त्तेयुम्
कारार् तिरुमेनि काट्टिनाळ्⋆ कैयदुवुम्॥२२॥
शीरार् वलम्बुरिये एन्ऱाळ्⊕तिरु त्तुळाय्
त्तारार् नऱुमालै कट्टुरैत्ताळ् कट्टुरैया⋆ ॥२३॥
नीरॆदुम् अञ्जेल्मिन्! नुम्मगळै नोय् शॆय्दान्⋆
आरानुम् अल्लन् अऱिन्देन् अवनै नान्⋆ ॥२४॥
कूरार् वेल् कण्णीर् उमक्कऱिय क्कूऱुगॆनो⋆
आराल् इव्वैयम् अडियळ प्पुण्डदुदान्⋆ ॥२५॥
आराल् इलङ्गै पॊडिपॊडिया वीऴ्न्ददु⋆ मट्रु
आराले कन्मारि कात्तदुदान्⊕आऴि नीर्॥२६॥
आराल् कडैन्दिड प्पट्टदु⋆ अवन् काण्मिन्
ऊरा निरै मेय्त्तुलगॆल्लाम् उण्डुमिऴ्न्दुम्⋆ ॥२७॥
आराद तन्मैयनाय् आङ्गॊरुनाळ् आय्प्पाडि⋆
शीरार् कलैयल्गुल् शीरडि च्चॆन्दुवर् वाय्⋆ ॥२८॥</td>
<td>फिर एक श्यामल स्वरूप दिखाया। अपने हाथ से शंख की तरह बनाकर तुलसी माला से सजा हुआ दिखायी और बोली ‘डरो मत, जो तुम्हारी किशोरी पर सवार है वह कोई दूसरा नहीं है, मैं उसे अच्छी तरह जानती हूं।’ **2683**

कटारी नयनों वाली सजनियों ! मैं बताऊं ? किसके चरण ने धरा को मापा ? किसने लंका को जलाकर भस्म कर दिया ? एक तूफान में किसने पर्वत उठा लिया ? किसने समुद्र मंथन किया ? अब यह देखो, संसार को निगल कर पुनः बनाने से संतुष्ट न हुए तो आप आयप्पादि (वृन्दावन मथुरा) में गाय चराने आये। **2684**</td>
</tr>
</table>

वारार् वनमुलैयाळ् मत्तार प्पट्रि क्कॊण्डु⋆ एरार् इडै नोव एत्तनैयोर् पोदुमाय्⋆ ॥२९॥ शीरार् तयिर् कडैन्दु वॆण्णै तिरण्डदनै⋆ वेरार् नुदल् मडवाळ् वेऱोर् कलत्तिट्टु⋆ ॥३०॥ नारार् उऱियेट्रि नन्गमैय वैत्तदनै⋆ पोरार् वेल् कण् मडवाळ् पोन्दनैयुम् पॊय् उऱक्कम्⋆ ॥३१॥ ओरादवन् पोल् उऱङ्गि अऱिवुट्रु⋆ तारार् तडम् तोळ्गाळ् उळ्ळळवुम् कै नीट्टि⋆ ॥३२॥ आराद वॆण्णै विळुङ्गि⊕अरुगिरुन्द मोरार् कुडम् उरुट्टि मुन् किडन्द तानत्ते⋆ ॥३३॥ ओरादवन्पोल् किडन्दानै क्कण्डवळुम्⋆ वारा त्तान् वैत्तदु काणाळ्⊕वयिऱडित्तिङ्गु॥३४॥ आरार् पुगुदुवार् ऐयर् इवर् अल्लाल्⋆ नीराम् इदु शॆय्दीर् एन्ऱोर् नॆडुम् कयिट्राल्⋆ ॥३५॥	तब एक दिन सुन्दर वस्त्राभूषित सुन्दर चाल लाल होंठ एवं कंचुकी वाली यशोदा मथानी लेकर दिन भर दही मथकर थक कर चूर हो गयी। सभी मक्खन एक घड़े में जमाकर ऊंचे रस्सी के छींके पर सुरक्षित रख दी। **2685** जब कटारी नयनों वाली यशोदा वहां से हट गयी तो प्रभु जो थकने के बहाने से सोने का स्वांग रचे हुए थे उठे और अपनी बांह की ऊपरी भाग को वहां तक जहां कंधे पर माला लटक रही थी जब घड़े के कनखा को छूने लगा मक्खन के पात्र मे डूबो दिया एवं संपूर्ण मक्खन चट कर गये। **2686** तब एक छांछ के घड़े को वहां फोड़कर थककर सोने का स्वांग भरते हुए सो गये। जब वह लौटी तो आपको देखी। तब जो मक्खन रखी थी उसे गायब हुए देख अपने पेट को पीटते हुए सोची 'इस श्रीमान् को छोड़ कर दूसरा कौन यहां आ सकता है ?' तब वह बोली 'ऐ ! मैं जानती हूं तूने यह किया है।' **2687**
ऊरार्गळ् एल्लारुम् काण उरलोडे⋆ तीरा वॆगुळियळाय् च्चिक्कॆन आर्त्तडिप्प⋆ ॥३६॥ आरा वयिट्रिनोडु आट्रादान्⊕अन्ऱियुम् नीरार् नॆडुम् कयत्तै च्चॆन्ऱलैक्क निन्ऱुरप्पि⋆ ॥३७॥ ओरायिरम् पण वॆम् कोवियल् नागत्तै⋆ वाराय् एनक्कॆन्ऱु मट्रदन् मत्तगत्तु⋆ ॥३८॥ शीरार् तिरुवडियाल् पायन्दान्⊕तन् शीदैक्कु नेरावन् एन्ऱोर् निशाचरिदान् वन्दाळै⋆ ॥३९॥ कूरार्न्द वाळाल् कॊडि मूक्कुम् कादिरण्डुम्⋆ ईरा विडुत्तवट्कु मूत्तोनै⊕वॆन्नरगम्॥४०॥ शेरा वगैये शिलै कुनित्तान्⋆ शॆन्दुवर् वाय् वारार् वन मुलैयाळ् वैदेवि कारणमा⋆ ॥४१॥ एरार् तडन्तोळ् इरावणनै⊕ईरैन्दु शीरार् शिरम् अऱुत्तु च्चॆट्रुगन्द शॆङ्गण् माल्⋆ ॥४२॥	तब सबों को देखने के लिये एक लंबी रस्सी से प्रभु को ऊखल में मजबूती से बांध दी। तब झूठे गुस्से का प्रदर्शन करती हुए प्रभु की पिटाई की और आप अपने पेट के तह से जोर से चिल्लाते रहे। अब आगे सुनो। तब प्रभु एक बड़े ताल में जाकर उसके जल को उद्वेलित करने लगे। जब एक मृत्यु के समान भयंकर नाग अपने हजार फनों को उठाकर बोला 'आओ' आप उसके फनों पर अपने मंगलमय चरणों से कूद पड़े। **2688** उसके बाद जब शूर्पनखा ने आकर कहा 'मैं सीता के समतुल्य हूं' तब प्रभु ने तलवार से उसके नाक कान काट लिये। तब उसके भाई खर दूषण को अपने धनुष से नरक भेज दिया। लाल फल के समान होंठ एवं कंचुकी धारण किये वैदेही के लिये आपने रावण के दस सिरों को धराशायी कर आनंद मनाया। **2689** आप अरूणाभ नयन प्रभु शेंकनमाल है। **2690**

<table>
<tr>
<td>पोरार् नॆंडु वेल्लोन् पॊन् पॆयरोन् आगत्तै⋆
कूरारन्द वळ् उगिराल् कीण्डु⊕कुडल् मालै॥ ४३ ॥
शीरार् तिरुमार्बिन् मेल् कट्टि⋆ शॆङ्कुरुदि
शोरा क्किडन्दानै क्कुङ्कुम त्तोळ् कॊट्टि⋆ ॥ ४४ ॥
आरा एळुन्दान् अरि उरुवाय्⊕अन्रियुम्
पेर् वामननाय कालत्तु⋆ मूवडि मण्॥ ४५ ॥
ताराय् एनक्कॆन्रु वेण्डि च्चलत्तिनाल्⋆
नीरेट्टुलगॆल्लाम् निन्रळन्दान् मावलियै⋆ ॥ ४६ ॥
आराद पोरिल् अशुरर्गळुम् तानुमाय्⋆
कारार् वरै नट्टु नागम् कयिराग⋆ ॥ ४७ ॥
पेरामल् ताङ्गि क्कडैन्दान्⊕तिरु त्तुळाय्
त्तारारन्द मार्वन् तड माल् वरै पोल्लुम्⋆ ॥ ४८ ॥
पोरानै पॊय्गैवाय् क्कोट्पट्टु निन्रलरि⋆
नीरार् मलर् क्कमलम् कॊण्डोर् नॆंडुम् कैयाल्⋆ ॥ ४९ ॥</td>
<td>आप नरसिंह हैं जिसने अपने नखों से हिरण्य की छाती चीर कर उसकी अंतड़ी का माला अपने पवित्र वक्षस्थल पर धारण कर लिया । आपके वदन से उसके लहू टपकते आप खड़े रहे एवं उसके मांस एवं लहू से ढ़के हुए अपनी भुजाओं को ठोकते हुए आप गरजते चले गये। **2691**

जब आप वामन रूप में मावली के पास आये तो आपने तीन पग जमीन मांगी। तब वृहत रूप धारण कर सारी धरा माप ली। **2692**

आप वक्षस्थल पर तुलसी धारण करने वाले प्रभु हैं जो देवों तथा असुरों के बीच की अंतहीन शत्रुता में हस्तक्षेप करते हुए एक काले पर्वत को रथापित कर नाग की रस्सी लपेटते हुए सागर का मंथन किया। **2693**</td>
</tr>
<tr>
<td>नारायणा ! ओ मणिवण्णा ! नागणैयाय्⋆
वाराय् ! एन् आरिडरै नीक्काय्⊕एन वॆंकुण्डु॥ ५० ॥
तीराद शीट्टत्ताल् शॆंन्रिरण्डु कूराग⋆
ईरा अदनै इडर् कडिन्दान् एम्पॆरुमान्⋆ ॥ ५१ ॥
पेरायिरम् उडैयान् पेय् प्पॆण्डीर् नुम्मगळै⋆
तीरा नोय् शॆय्दान् एन उरैत्ताळ्⊕शिक्कॆन मट्टु॥ ५२ ॥
आरानुम् अल्लामै केट्टॆङ्गळ् अम्मनैयुम्⋆
पोरार् वेल् कण्णीर् ! अवनागिल् पून्तुळाय्⋆ ॥ ५३ ॥
तारादॊळियुमे तन् अडिच्चि अल्लळे !⋆ मट्टु
आरानुम् अल्लने एन्रॊळिन्दाळ्⊕नान् अवनैक्॥ ५४ ॥
कारार् तिरुमेनि कण्डदुवे कारणमा⋆
पेरा प्पिदट्टा त्तिरिदरुवन्⊕पिन्नैयुम्॥ ५५ ॥
ईरा प्पुगुदलुम् इव्वुडलै त्तण् वाडै⋆
शोरा मरुक्कुम् वगै अरियेन्⊕शूळ् कुळलार्॥ ५६ ॥</td>
<td>जब एक विशाल हाथी कमल के सरोवर में खड़ा हो आक्रमणकारी ग्राह से संघर्षरत था तो उसने लंबे सूंढ़ से एक कमल अर्पित करते हुए आर्त पुकार की 'नारायण, रत्न वर्णवाले, शेषशायी प्रभु हमारी सहायता कर रक्षा कीजिये'। प्रभु यह सुनकर आये एवं ग्राह के जबड़े को दो भाग में चीर दिया तथा यातनाग्रस्त हाथी का उद्धार किया।हे सजनियों हजार नाम वाले प्रभु ने आपकी बेटी को इसतरह से रोगग्रस्त कर दिया है। यह कह कर वनवासिनी ने अपनी बात पूरी की। **2694**

हमलोगों की मां अपने संदेह को मिटाते हुए बोली 'मत्स्य नयना सजनियों ! अगर प्रभु ही हैं तो क्या अपनी तुलसी माला नहीं देंगे ? क्या यह बेटी उनकी भक्ति में नहीं रहती है ? प्रभु इसके लिये अजनवी नहीं हैं' और चली गयी। **2695**

जब से हमने आपका श्यामल स्वरूप देखा है गली गली बिना सांत्वना के उतावलापन में घूमे चल रही हूं। शीतल हवा बिना हमें जाने धीरे धीरे हमारा प्राण ले रही है। **2696**</td>
</tr>
</table>

आरानुम् एशुवर् एन्नुम् अदन् पळियै⋆ वारामल् काप्पदर्कु वाळा इरुन्दॊळिन्देन्⋆ ॥५७॥ वाराय् मड नॆञ्जे ! वन्दु⊕मणिवण्णन् शीरार् तिरु त्तुळाय् मालै नमक्करुळि⋆ ॥५८॥ तारान् तरुम् एन्रिरण्डत्तिल् ऑन्रदनै⋆ आरानुम् ऑन्नादार् केळामे शॊन्नक्काल्⋆ ॥५९॥ आरायुम् एलुम् पणिकेट्टदन्रॆनिलुम्⋆ पोरादॊळियादे पोन्दिडु नी एन्रेकु⋆ ॥६०॥ कारार् कडल् वण्णन् पिन् पोन नॆञ्जमुम्⋆ वारादे एन्नै मरन्ददुदान्⋆ वल्विनैयेन्॥६१॥ ऊरार् उगप्पदे आयिनेन्⊕मर्टॆनक्किङ्गु आराय्वार् इल्लै अळल् वाय् मॆळुगु पोल्⋆ ॥६२॥ नीराय् उरुगुम् एन्नावि⊕नॆडुङ्कण्गळ् ऊरार् उरङ्गिलुम् ताम् उरङ्गा⋆ उत्तमन् तन्॥६३॥	हे जूड़े वाली सजनी ! लोक अपवाद से बचने के लिये मैं कुछ नहीं कर सकती। **2697** मैं अपने हृदय से बोली 'हे मेरे असक्त हृदय ! मणिवर्ण के प्रभु के पास जाकर पूछो, ऐसा न हो कि अपने शत्रे सुन लें, 'क्या आप अतिसुंदर अपनी तुलसी की माला प्रदान करेंगे या नहीं करेंगे ?' **2698** वे या तो रूकें या नहीं बोले वहां ठहरना नहीं लौट कर आ जाओ। **2699** हाय ! मेरा हृदय भी मुझे भूलकर सागर सा सलोने प्रभु के पीछे चला गया और कभी नहीं लौटा। मैं पापिनी ! अपने पड़ोस के लिये मनोरंजन का साधन बनगयी हूं। कोई मेरी ओर से नहीं बोलता। **2700** मेरा हृदय आग में मोम की तरह पिघल रहा है। **2701** जबकि लोक सोता है मेरी बड़ी बड़ी आंखों में नींद नहीं है। **2702** निष्कलंक का प्रभु का नाम मैं व्यतिक्रम से बोलती रहती हूं। **2703**
पेर् आयिनवे पिदट्रुवन्⋆ पिन्नैयुम् कारार् कडल् पोलुम् कामत्तर् आयिनार्⋆ ॥६४॥ आरे पॊल्लामै अरिवार् अदु निर्क⋆ आरानुम् आदानुम् अल्लळ् अवळ् काणीर्⋆ ॥६५॥ वारार् वनमुलै वाशवदत्तै एन्रु⋆ आरानुम् शॊल्ल प्पडुवाळ्⊕अवळुम् तन्॥६६॥ पेरायम् एल्लाम् ऑळिय प्पॆरुम् तॆरुवे⋆ तारार् तडन्तोळ् तळै क्कालन् पिन् पोनाळ्⋆ ॥६७॥ ऊरार् इगळ्न्दिड प्पट्टाळे⊕मर्टॆनक्किङ्गु आरानुम् कर्पिप्पार् नायगरे⋆ नान् अवनैक्॥६८॥	पूर्व में भी ऐसे जन हुए हैं जिनका प्रेम नीले सागर की तरह उमड़ता रहा है। मदन की निष्ठुरता को कौन नहीं जानती ? विशेषकर इसे देखो जो कि अन्य जन या एक जन नहीं है बल्कि इन्द्र की बेटी वासवदत्ता है। **2704** इसने अपने राजशाही परिवेश को छोड़ दिया और बेड़ी वाले प्रेमी के लिये गली में आ गयी जो अपने वक्षस्थल पर अपनी प्रेमिका का माला पहने हुए था। **2705** तब क्या लोगों ने उसकी हंसी उड़ायी ? फिर कौन मुझे शिक्षा देने का साहस करेगा ? **2706**

कारार् तिरुमेनि काणुम् अळवुम् पोय्⋆ ‡शीरार् तिरुवेङ्कडमे तिरुक्कोवल्॥६९॥ ऊरे⋆ मदिळ् कच्चि ऊरगमे पेरगमे⋆ पेरा मरुदिरुत्तान् वॆळ्ळरैये वॆग्कावे⋆ ॥७०॥ पेरालि तण्काल् नरैयूर् तिरुप्पुलियूर्⋆ ‡आरामम् शूळ्न्द अरङ्गम्⊕कणमङ्गै॥७१॥ कारार् मणि निर क्कण्णनूर् विण्णगरम्⋆ शीरार् कणपुरम् शेरै तिरुवळुन्दूर्⋆ ॥७२॥ कारार् कुडन्दै कडिगै कडल् मल्लै⋆ एरार् पॊळिल् शूळ् इडवॆन्दै नीर्मलै⋆ ॥७३॥ शीरारुम् मालिरुम् शोलै तिरुमोगूर् ⊕ पारोर् पुगळुम् वदरि वडमदुरै⋆ ॥७४॥ ऊराय एल्लाम् ऒॊळियामे नान् अवनै⋆ ओर् आनै कॊम्बॊशित्तोर् आनै कोळ्विडुत्त॥७५॥ शीरानै⋆ शॆङ्कण् नॆडियानै त्तेन्दुळाय् त्तारानै⋆ तामरै पोल् कण्णानै⋆ एण् अरुञ्जीर्॥७६॥ पेर् आयिरमुम् पिदट्रि⊕पॆरुम् तॆरुवे ऊरार् इगळिलुम् ऊरादॊळियेन् नान्⋆ ॥७७॥	और जबतक मैं श्यामल प्रभु के रूवरूप को देखती हूं जिन्होंने मरूदु वृक्षों को तोड़ा, एक हाथी की रक्षा की तो दूसरे का दांत उखाड़ लिया। **2707** तिरूवेंकटम, तिरूक्कोवलूर, ऊंची दीवाल वाली कांची के ऊरगम एवं पेरगम, वेल्लारै, वेग्का, तिरूवाली, तिरूत्तन्कल, नरैयूर, तिरूप्पुलियूर, तिरूअरंगम, कण्णमंगै, कवानूर, विण्णगरम, तिरूक्कण्णपुरम, तिरूच्चेरै, तिरूअलन्दूर, शीतल कुडन्दै, कडिगै, कडलमल्लै, सुगंधित बागों का इडवेन्दै, नीर्मलै, मालिरूमशोलै, तिरूमोगूर, जगत प्रसिद्ध बदरी, उत्तर मथुरा, एवं सभी मंदिर नगरों में अपने राजीवनयन तुलसीमालाधारी एवं शीतल अरूणाभनयन प्रभु के अनगिनत मंगलमय नामों को उलटा पुलटा उच्चारण करते मैं घूमती चलूंगी। **2708 2709** मैं शपथ खाती हूं कि लोक अपवाद को भुलाकर लंबे ताड़ के धड़ पर पसंदीदा घोड़े जैसी सवारी करूंगी तथा त्याज्य मडल पाऊंगी। **2710** **तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगले शरणं ।**
वारार् पूम् पॆण्णै मडल्⊕ ऊरादॊळियेन् उलगरिय ऒॊण् नुदलीर् ! ⋆ शीरार् मुलै त्तडङ्गळ् शेरळवुम्⋆ –पार् एल्लाम् अन्रोङ्गि निन्रळन्दान् निन्र तिरुनरैयूर्⋆ मन्रोङ्ग ऊर्वन् मडल्⊕	

श्रीमते रामानुजाय नमः

पेरिय तिरूमडल् (2711 – 2790)

पिळ्ळै त्तिरूनरैयूर अरैयर अरूळिच्चेय्दु

पॊन्नुलगिल् वानवरुम् पूमगळुम् पोद्रिशॆय्युम्⋆
नन्नुदलीर्! नम्बि नरैयूरर्⋆ –मन्नुलगिल्
एन्निलैमै कण्डुम् इरङ्गारे यामागिल्⋆
मन्नु मडलूर्वन् वन्दु

‡मन्निय पल् पॊरि शेर् आयिर वाय् वाळ् अरविन्⋆ शॆन्नि मणि क्कुडुमि त्तॆय्व च्चुडर् नडुवुळ्⋆ ॥१॥ मन्निय नागत्तणैमेल् ओर् मामलै पोल्⋆ मिन्नुम् मणि मगर कुण्डलङ्गळ् विल् वीश⋆ ॥२॥ तुन्निय तारगैयिन् पेर् ऒळि शेर् आगाशम्⋆ एन्नुम् विदानत्तिन् कीळाल्⊕ इरु शुडरै॥३॥ मिन्नुम् विळक्काग एद्रि⋆ मरि कडलुम् पन्नु तिरै क्कवरि वीश⋆ निलमङ्गै॥४॥ तन्नै मुन नाळ् अळविट्ट तामरै पोल्⋆ मन्निय शेवडियै वान् इयङ्गु तारगै मीन्⋆ ॥५॥ एन्नुम् मलर् प्पिणैयल् एयन्द⊕ मळै क्कून्दल् तॆन्नन् उयर् पॊरुप्पुम् दॆय्व वडमलैयुम्⋆ ॥६॥	प्रभु की जय हो जो सागर के मध्य चितकवरे हजार फन के नाग पर शयन करते हैं जहां हर फन ज्योतिर्मय मणि से विभूषित है, प्रभु मकर कुंडल धारण किये हैं जो चतुर्दिक प्रकाश विखेरता है। तारों के समूह के साथ आकाश आपका छत्र है जबकि सूर्य एवं चंद्र प्रकाश के स्रोत हैं। **1** भूदेवी के लिये तारे फूलों की माला जैसे हैं, बादल जूड़ा है, एवं मालिरूमशोलै तथा वेंकटम के पर्वत उरोज हैं। आप प्रभु के चरणारविंद की सेवा सागर लहरों रूपी हाथों से करती हैं। गौरवशाली कमलनिवासिनी हंसगामिनी लक्ष्मी भी प्रभु के चरणाविंद की सेवा अपने हाथों से करती हैं। प्रभु योग निद्रा से जागकर जगत की सृष्टि का प्रारंभ करते हैं जिनकी नाभि से कमल निकलता है जिसपर ब्रह्मा बैठे हैं और जिन्होंने वेद की रचना की । **2**
एन्नुम् इवैये मुलैया वडिवमैन्द⋆ अन्न नडैय अणङ्ग⊕ अडियिणैयैत्॥७॥ तन्नुडैय अङ्गैगळाल् तान् तडव त्तान् किडन्दु⋆ ओर् उन्निय योगत्तुरक्कम् तलैक्कॊण्ड॥८॥ पिन्नै⋆ तन् नाबि वलयत्तु प्पेर् ऒळि शेर्⋆ मन्निय तामरै मामलर् पूत्तु⋆ अम्मलरमेल्॥९॥ मुन्नम् तिशैमुगनै त्तान् पडैक्क⋆ मद्रवनुम् मुन्नम् पडैत्तनन् नान्मरैगळ्⋆ अम्मरै तान्॥१०॥ मन्नुम् अरम् पॊरुळ् इन्बम् वीडॆन्ऱुलगिल्⋆ नन्नॆरि मेम्बट्टन नान्गान्रे⊕ नान्गानिलुम्॥११॥ पिन्नैयदु पिन्नै प्पॆयर् तरुम् एन्बदु⋆ ओर् तॊन्नॆरियै वेण्डुवार् वीळ् कनियुम् ऊळिलैयुम्⋆ ॥१२। एन्नुम् इवैये नुगरन्दुडलम् ताम् वरुन्दि⋆ तुन्नुम् इलै क्कुरम्बै त्तुञ्जियुम्⊕ वॆञ्जुडरोन्॥१३॥	वेद इस जगत में चार पुरूषार्थ के रूप में धर्म अर्थ काम मोक्ष की व्याख्या करते हैं। क्या नहीं है ? इन चारों में अंतिम को जो प्राथमिकता देते हैं,जो सबसे कम महत्व का है, वे गिरे हुए फल एवं पत्ते खाकर रहते हैं, अपने शरीर को कष्ट देते हैं, पर्णशाला में सोते हैं, गर्मी में धूप में रहकर तथा जाड़े में ठंढ़े सरोवर के जल में प्रवेश कर अपने आप को दंडित करते हैं, तथा जैसा कि कहते हैं शरीर छूटने पर प्राचीन मार्ग का अनुसरण करते हैं। लेकिन हम नहीं जानते कौन कहां गया। अगर सूर्य के छेद से पारकर वे स्वर्ग जाते हैं तो यह बताने कोई लौट कर आया है क्या ? छोटी बुद्धि एवं क्षुद्र विचार वाले इस पर बहुत कुछ कहते रहते हैं।उनको सही ज्ञान देने वाले हम कौन हैं ? 3

मन्नुम् अळल् नुगरन्दुम् वण् तडत्तिनुळ् किडन्दुम्⋆ इन्नदोर् तन्मैयराय् ईङ्गुडलम् विट्टॆळुन्दु⋆ ॥१४॥ तॊन्नॆरिक्कण् शॆन्रार् एनप्पडुम् शॊल् अल्लाल्⋆ इन्नदोर् कालत्तिनै यार् इदु पॆट्रार्⋆ ॥१५॥ एन्नवुम् केट्टरिवदिल्लै⊕ उळदॆन्निल् मन्नुम् कडुङ्गदिरोन् मण्डलत्तिन् नन्नडुवुळ्⋆ ॥१६॥ अन्नदोर् इल्लियिन् ऊडु पोय्⊕ वीडॆन्नुम् तॊन्नॆरिक्कण् शॆन्रारै च्चॊल्लुमिन्गाळ् शॊल्लादे⋆ ॥१७॥ अन्नदे पेशुम् अरिविल् शिरुमनत्तु⋆ आं– गन्नवरै क्कर्पिप्पोम् यामे⋆ अदुनिर्क॥१८॥ मुन्नम् नान् शॊन्न अरत्तिन् वळि मुयन्र्⋆ अन्नवर् ताम् कण्डीर्गळ् आयिर क्कण् वानवर् कोन्⋆ ॥१९॥ पॊन्नगरम् पुक्कमरर् पोट्रिशैप्प⋆ पॊङ्गॊळि शेर् कॊन्नविलुम् कोळ् अरिमा त्तान् शुमन्द कोलम् शेर्⋆ ॥२०॥	जैसा भी हो इसे छोड़ो। अब उनको देखो जो प्रथम मार्ग धर्म का अनुसरण करते हैं। वे हजार आंख वाले स्वर्ग के अधिपति इन्द्र के सुनहले नगर में जाते हैं एवं देवों से सम्मान प्राप्त कर सिंहासन पर विराजमान होते हैं जहां फूल सी कोमल किशोरियां उनका चवर डुलाती हैं। शीतल हवा बहती है, तड़ित रेखा सी कृश कटि किशोरियां आस पास में चमकती रहती हैं तथा अपने चंद्र समान मुखमंडल पर मुक्तामय मुस्कान विखेरती हैं।उनकी शांत आंखें तथा मृगशावक सी नजरें उनको आकर्षक एवं पूज्य बनाती हैं। **4** कल्पवृक्षों के सुनहले फूल एवं मधुमक्खी लिपटे अमृतमय मंदार वृक्षों के वन से घिरा है। सुन्दरियां स्वर्गीय फूलों की माला पहन मोर की तरह सुन्दर दिखने वाला जूड़ा पहनती हैं।धर्म के अनुसरण करने वाले स्वर्ग में इन सुन्दरियों से अपना मनोरंजन करते हैं जहां रत्नजड़ित फर्श में रूवी से पंक्तियां लगी हैं और स्फटिक के किनारे चमकते हैं। मूंगा जड़ित एवं सुवर्ण पत्तियों से सजे पलंग हैं। **5**
मन्निय शिङ्गाशनत्तिन् मेल्⊕ वाणॆडुङ्गण् कन्नियराल् इट्ट कवरि प्पॊदि अविळ्न्दु⋆ आङ्–॥२१॥ गिन्निळम् पून्दॆन्रल् इयङ्ग मरुङ्गिरुन्द⋆ मिन्ननैय नुण् मरुङ्गुल् मॆल्लियलार् वॆण्मुरुवल्⋆ ॥२२॥ मुन्नम् मुगिळ्त्त मुगिळ् निला वन्दरुम्ब⋆ अन्नवर् तम् मानोक्कम् उण्डाङ्गणिमलर् शेर्⋆ ॥२३॥ पॊन्नियल् कर्पगत्तिन् काडुडुत्त माडॆल्लाम्⋆ मन्निय मन्दारम् पूत्त मदुत्तिवलै⋆ ॥२४॥ इन्निशै वण्डमरुम् शोलैवाय् मालै शेर्⋆ मन्निय मामयिल् पोल् कून्दल्⊕ मळैत्तडङ्गण्॥२५॥ मिन्निडै यारोडुम् विळैयाडि वॆण्डडत्तु⋆ मन्नुम् मणि त्तलत्तु माणिक्क मञ्जरियिन्⋆ ॥२६॥ मिन्निन् ऒळि शेर् पळिङ्गु विळिम्बडुत्त⋆ मन्नुम् पवळ क्काल् शॆम् पॊन् शॆय् मण्डपत्तुळ्⋆ ॥२७॥	हंसगामिनी रंभा वीणा पर तेजी से अंगुलियां घुमाती हुई दिव्य स्वर में गाती हैं। वे लोग जब चाहें ये सब ऊपर आकाश में सुन सकते हैं। यहां घने वर्षा के बादल, पूर्ण चंद्र पर तथा गगन चुंबी ज्योर्तिमय अटारियों पर जहां आभूषण की बत्तियां लगी हैं, लता की भांति शोभा देते हैं।शांत आंखों वाली सुन्दरियां कोमल रूई के गद्दे पर सुखद बिछावन लगाती हैं।जब खिड़कियों के दरवाजे खुलते हैं तो हंस के पैर से बिखर कर उड़ते हुए नीले कमल का पराग शीतल हवा के साथ सुन्दरियों के उरोज पर के चंदन को सुखाते हुए धीरे से बहती हैं तथा जिसके सुगंध का पीछा करते भौंरे मंड़राते हैं।तड़ित रेखा सी कृशकटि दो बांस सी बाहों पर आधारित हैं तथा गले की हार की सुवर्ण शिक्कायें मधुर आवाज देती हैं। धर्म मार्गवाले इस तरह का सुख भोगते हैं, उनके हृदय पिघलते हैं, जब पलकें न गिरने वाली नयनों के मृगशावक सी चितवन को देखते हैं, तथा उनकी विजयी मुस्कान से आनंदित होते हुए उनके अमृत होंठों का पान करते हैं। क्या धर्म मार्ग का अनुसरण इस तरह के विदित उद्देश्य से तो नहीं करते हैं ? **6**

अन्न नडैय अरम्बयर् तम् कैवळर्त्त⋆ इन्निशैयाळ् पाडल् केट्टिन्बुट्टू⊕ इरुविशुम्बिल्॥२८॥ मन्नुम् मळै तवळुम् वाणिला नीण्मदि तोय्⋆ मिन्निन् ऑळि शेर् विशुम्बूरुम् माळिगैमेल्⋆॥२९॥ मन्नुम् मणि विळक्कै माट्टि⊕ मळै क्कण्णार् पन्नु विशित्तिरमा प्पाप्पडुत्त पळ्ळिमेल्⋆॥३०॥ तुन्निय शालेगम् शूळ् कदवम् ताळ् तिऱप्प⋆ अन्नम् उळक्क नॆरिन्दुक्क वाळ् नीलच्⋆॥३१॥ चिन्न नऱुन्दादु शूडि⊕ ओर् मन्दारम् तुन्नुम् नऱुमलराल् तोळ् कॊट्टि⋆ कर्पगत्तिन्॥३२॥ मन्नु मलर्वाय् मणि वण्डु पिन् तॊडर⋆ इन्निळम् पून्दॆन्ऱल् पुगुन्दु ईङ्गिळ मुलैमेल्⋆॥३३॥ नन्नऱुम् शन्दन च्चेऱलरत्त⊕ ताङ्गरुञ्जीर् मिन्निडैमेल् कैवैत्तिरुन्देन्दिळ मुलैमेल्⋆॥३४॥	यहांतक कि अर्थ के मार्ग का भी यही उद्देश्य है अतः हम युक्तिसंगत काम मार्ग का ही अनुसरण करेंगे। **7** हमलोगों ने सुना है कि तमिल प्रथा में मृगनयनी हंसगामिनी सुन्दरी कभी भी पुरूष प्रेमी के कारण मडल नहीं करती। हम यह स्वीकार नहीं करेंगे अतः उत्तर के संस्कृत वाली प्रथा का अनुसरण करेंगे। जो हमलोगों के साथ सहमत नहीं हैं उन्हें दक्षिण के पहाड़ों के लाल चंदन के गुणों के बारे की जानकारी का अभाव लगता है। वे लोग उनलोगों में नहीं है जो गोपकिशोर की बंशी की धुन से द्रवित होते हों।वे कभी भी सांढ़ों के गले की घंटी की आवाज से दुखी नहीं होते। ताड़ वृक्षों के कंटीले घोसलों से लंबे चोंच वाले अन्रिल पक्षी की जोड़ी की मैथुन हेतु पुकार को सुनकर वे द्रवित नहीं होते।आंगन में पूर्ण चंद्रमा की चांदनी के छलकाव से वे मूर्च्छित नहीं होते। प्रेम के देवता मदन के फूल के वाणों से वे कभी आहत न होते और न सुनहले धूल भरी वीथियों में वे मडल के लिये जाते। चमेली से सुगंधित सुखद हवा से उनके उरोज अधोभाग एवं जूड़े में गुदगुदी नहीं होती तथा वे कोमल विछावन पर अपने प्रेमी के साथ के सुखद क्षणों के लिये उत्कंठित नहीं होते। वे अपने नारी स्वरूप को निरर्थक गंवा देते हैं। वे दीर्घायु हों ! **8**
पॆन्नरुम्बारम् पुलम्ब⊕ अगङ्गुळैन्दां- गिन्न उरुविन् इमैया त्तडङ्गण्णार्⋆॥३५॥ अन्नवर् तम् मानोक्कम् उण्डाङ्गणि मुरुवल्⋆ इन्नमुदम् मान्दि इरुप्पर्⊕ इदुवन्ऱे॥३६॥ अन्न अऱत्तिन् पयन् आवदु⋆ ऑण् पॊरुळुम् अन्न तिऱत्तदे आदलाल्⋆ कामत्तिन्॥३७॥ मन्नुम् वळिमुऱैये निट्रुम् नाम् मानोक्किन्⋆ अन्न नडैयार् अलरेश आडवर्मेल्⋆॥३८॥ मन्नुम् मडल् ऊरार् एन्बदोर् वाशगमुम्⋆ तॆन्नुरैयिल् केट्टरिवदुण्डु⊕ अदनै याम् तॆळियोम्॥३९॥ मन्नुम् वड नॆऱिये वेण्डिनोम्⋆ वेण्डादार् तॆन्नन् पॊदियिल् शॆळुञ्जन्दन क्कुळम्बिन्⋆॥४०॥ अन्नदोर् तन्मै अऱियादार्⋆ आयन् वेय् इन्निशै ओशैक्किरङ्गादार्⋆ माल् विडैयिन्॥४१॥	योद्धा राजा ने अपने पिता की आज्ञा पर राज्य तुरत छोड़ दिया और नगर के लोग रोते उसके पीछे आये। अपना देश छोड़कर भूखे पेट चिलचिलाते मरूभूमि क्षेत्र के पथरीले पहाड़ों को बांस को भी फाड़ देने वाली गर्म हवा की झोंका को सहते पार किया।मृत्यदायी राक्षसों के कंकरीले क्षेत्र में प्रवेश कर चिलचिलाती धूप में सुमन सा सुकोमल चरणों से भ्रमण किया। राजा राम के पीछे पीछे क्या हंसगामिनी वैदेही नहीं घूमी ? **9**

मन्नुम् मणि पुल्मब्व वाडादार्★ पैण्णैमेल् पिन्नुम् अव्वन्रिल् पैडै वाय् च्चिरु कुरलुक्कु★ ॥ ४२ ॥ उन्नि उडलुरुगि नैयादार्⊕ उम्बर्वाय् त्तुन्नु मदियुगुत्त तू निला नीळ् नैरुप्पिल्★ ॥ ४३ ॥ तम्मुडलम् वेव त्तळरादार्⊕ कामवेळ् मन्नुम् शिलैवाय् मलर् वाळि कोत्तैय्य★ ॥ ४४ ॥ पॊन्नॆडु वीदि पुगादार्⊕ तम् पूवणैमेल् शिन्न मलर् क्कुळलुम् अल्गुलुम् मैन् मुलैयुम्★ ॥ ४५ ॥ इन्निळ वाडै तडवत्ताम् कण्डुयिलुम्★ पॊन्ननैयार् पिन्नुम् तिरुवुरुग★ पोर् वेन्दन्॥ ४६ ॥ तन्नुडैय तादै पणियाल् अरशॊळिन्दु★ पॊन्नगरम् पिन्ने पुलम्ब वलङ्गॊण्डु★ ॥ ४७ ॥ मन्नुम् वळनाडु कैविट्टु★ मादिरङ्गळ् मिन्नुरुविल् विण् तेर् तिरिन्दु वॆळिप्पट्टु★ ॥ ४८ ॥	तड़ित रेखा सा कृश कटि लाल होंठ काली आंखों एवं मृगनयनी की चितवन वाली यह किशोरी पुनः वहां उपस्थित हुई। अपने प्रेमी को न पाकर यह अपने बड़े भाई के पास गयी जो इसे सुदूर क्षेत्र में ले गये। भाई को छोड़कर यह युद्धक्षेत्र में गयी जहां अपने प्रेमी को पाकर उनसे व्याह रची। युद्ध के अंत तक प्रतीक्षा कर उनके दिव्य वक्षस्थल के आलिंगन को प्राप्त की। **10**
कन्निरैन्दु तीयन्दु कळैयुडैन्दु काल् शुळन्रु★ पिन्नुम् तिरै वयिट्टु प्पेये तिरिन्दुलवा★ ॥ ४९ ॥ कॊन्नविलुम् वॆङ्गानत्तूडु★ कॊडुङ्गदिरोन् तुन्नु वॆयिल् वरुत्त वॆम्बरमेल् पञ्जडियाल्★ ॥ ५० ॥ मन्नन् इरामन् पिन् वैदेहि एन्रुरैक्कुम्★ अन्न नडैय अणङ्गु नडन्दिलळे★ ॥ ५१ ॥ पिन्नुम् करु नॆडुङ्गण् शॆव्वाय् प्पिणै नोक्किन्★ मिन्ननैय नुण् मरुङ्गुल् वेगवति एन्रुरैक्कुम्॥ ५२ ॥ कन्नि★ तन् इन्नुयिराम् कादलनै क्काणादु★ तन्नुडैय मुन् तोन्रल् कॊण्डेग त्तान् शॆन्रु★ अङ्– ॥ ५३ ॥ गन्नवनै नोक्कादळित्तुरप्पि★ वाळमरुळ् कन्नविल् तोळ् काळैयै क्कैप्पिडित्तु मीण्डुम् पोय्★ ॥ ५४ ॥ पॊन्नविलुम् आगम् पुणरन्दिलळे⊕ पूङ्गङ् मुन्नम् पुनल् परक्कुम् नन्नाडन् मिन्नाडुम्★ ॥ ५५ ॥	महाकाव्य महाभारत से सुनकर हमने क्या नहीं जाना है कि नाग कन्या उलुपी ने महान कुरूयोद्धा धनंजय से प्रेम किया जिसने सुगंधित गंगा से सिंचित उपजाऊ क्षेत्र पर शासन किया ? नारी लाज भय वेवसी एवं मर्यादा को गंवाकर उलुपी ने अपने तने हुए उरोजों के साथ प्रेमी के पर्वतनुमा वक्षस्थल का आलिंगन किया तथा पाताल लोक के राज्य में वापस लौट गयी। **11**

<table>
<tr>
<td>कॊन्नविलुम् नीळ् वेल् गुरुक्कळ् कुल मदलै⋆
तन्निगर् ऒन्रिल्लाद वॆन्रि त्तनञ्जयनै⋆ ॥५६॥
पन्नागरायन् मड प्पावै⊕ पावै तन्
मन्निय नाण् अच्चम् मडम् ऎन्रिवै अगल⋆ ॥५७॥
तन्नुडैय कॊङ्गै मुगम् नॆरिय⋆ तान् अवन् तन्
पॊन्वरै आगम् तळी इक्कॊण्डु पोय्⋆ तनदु॥५८॥
नन्नगरम् पुक्कु नयन्दिनिदु वाळ्न्ददुवुम्⋆
मुन्नुरैयिल् केट्टरिवदिल्लैये⊕ शूळ् कडलुळ्॥५९॥
पॊन्नगरम् शॆट्र् पुरन्दरनोडॆरॊक्कुम्⋆
मन्नवन् वाणन् अवुणरक्कु वाळ् वेन्दन्⋆ ॥६०॥
तन्नुडैय पावै उलगत्तु त्तन्नॊक्कुम्⋆
कन्नियरै इल्लाद काट्चियाळ्⊕ तन्नुडैय॥६१॥
इन्नुयिर् त्तोळियाल् ऎम्बॆरुमान् ईन् तुळाय्⋆
मन्नुम् मणि वरैत्तोळ् मायवन्⋆ पावियेन्॥६२॥</td>
<td>सागर से परिवृत्त धरा पर सुनहले नगर में रहने वाले असुर पुरंदर देवेन्द्र से नाश को प्राप्त हूए। देवेन्द्र के समतुल्य बानासुर की गुड़िया सी सुन्दर बेटी ऊषा थी जो बिना कोई प्रतियोगी के अकेले चमकती रहती थी। उसकी सखी चित्रलेखा ने उसके प्रेमी पर्वत समान चतुर्भुज अनिरूद्ध को ला दिया जो हमारे प्रेमी कृष्ण के पौत्र हैं और जिसके साथ अनेकों दिन उसने आनंद मनाया। **12**
सजनी ! आपलोगों ने हमारी बात ध्यान से सुना, अब ज्यादा हम क्या कहें ? **13**</td>
</tr>
<tr>
<td>ऎन्नै इदुविळैत्त ईर् इरण्डु माल् वरैत्तोळ्⋆
मन्नवन् तन् कादलनै मायत्ताल् कॊण्डु पोय्⋆ ॥६३॥
कन्नि तन्बाल् वैक्क मट्र्वनोडॆत्तनैयो⋆
मन्निय पेरिन्बम् ऎय्दिनाळ्⊕ मट्रिवै तान्॥६४॥
ऎन्नाले केट्टीरे एळैगाळ् ऎन्नुरैक्केन्⋆
मन्नुम् मलैयरयन् पॊर्पावै⊕ वाणिला॥६५॥
मिन्नुम् मणि मुरुवल् शॆव्वाय् उमैयॆन्नुम्⋆
अन्ननडैय अणङ्गु नुडङ्गिडै शेर्⋆ ॥६६॥
पॊन्नुडम्बु वाड प्पुलनैन्दुम् नॊन्दगल⋆
तन्नुडैय कूळै च्चडाबारम् तान् दरित्तु⋆ आङ्– ॥६७॥
गन्न अरुन्दवत्तिन् ऊडुपोय्⋆ आयिरन्दोळ्
मन्नु करदलङ्गळ् मट्टित्तु⋆ मादिरङ्गळ्॥६८॥
मिन्नि ऎरि वीश मेल् ऎडुत्त शूळ् कळर्काल्⋆
पॊन्नुलगम् एळुम् कडन्दुम्बर् मेल् शिलुम्ब⋆ ॥६९॥</td>
<td>पर्वत राज हिमवान की मूंगा जैसी होंठ एवं विजयी मुस्कान वाली हंसगामिनी लता सी कृशकाय दिव्य बेटी उमा ने पांचो इन्द्रियों का शमन कर केश को जटा बनाती हुई घोर तपस्या की। शिव ने अपने हजारों हाथों को फैलाते हुए अग्नि उत्पन्न करने के लिये मुट्ठी खोली तथा हाथों में त्रिशूल लिये वदन पर भस्म लगाये जटा से भरे सिर एवं पैरों में पाजेब पहने संसार के ऊपर आकाश में नृत्य किया। उमा के समान तपस्वी होने से शिव ने उसका आलिंगन किया। **14**</td>
</tr>
</table>

<table>
<tr>
<td>मन्नु कुल वरैयुम् मारुदमुम् तारगैयुम्⋆
तन्निन् उडने शुळल च्चुळन्राडुम्⋆ ॥७०॥
कॊन्नविल्लुम् मूविल्लैवेल् कूत्तन् पॊडियाडि⋆
अन्नवन् तन् पॊन्नगलम् शॆन्राङ्गणैन्दिलळे⋆ ॥७१॥
पन्नि उरैक्कुङ्गाल् बारदमाम्⊕ पावियेर्कु
एन्नुरु नोय् यान् उरैप्प क्केण्मिन्⋆ इरुम् पॊळिल् शूळ्॥७२॥
मन्नु मरैयोर् तिरुनरैयूर् मामलै पोल्⋆
पॊन्नियलुम् माड क्कवाडम् कडन्दु पुक्कु⋆ ॥७३॥
एन्नुडैय कण्गळिप्प नोक्किनेन्⊕ नोक्कुदलुम्
मन्नन् तिरुमार्बुम् वायुम् अडियिणैयुम्⋆ ॥७४॥
पन्नु करदलमुम् कण्गळुम्⋆ पङ्गयत्तिन्
पॊन्नियल् काडोर् मणिवरैमेल् पूत्तदुपोल्⋆ ॥७५॥
मिन्नि ऒळि पडैप्प वीळ् नाणुम् तोळ् वळैयुम्⋆
मन्निय कुण्डलमुम् आरमुम् नीण्मुडियुम्⋆ ॥७६॥</td>
<td>अगर मैं ज्यादा उदाहरण दूंगी तो महाभारत के तुल्य हो जायेगा अतः मैं अपने प्रेमरोग का दृष्टांत देती हूं। **15**

वैदिक ऋषियों के निवास स्थान सुगंधित बागों से घिरे तिरूनरैयूर में जब पर्वत समान सुवर्ण दरवाजा खुला तो हमारे प्रभु का हमें दर्शन मिला। उसी क्षण प्रभु का वक्षस्थल होंठ चरण हाथ आंखें पर्वतनुमा काले सरोवर में कमल फूल के घने गुच्छे से दिखे। आपका कमरधनी गले का हार कंगन कुंडल मुकुट तथा शिकर के रत्न सब तेजोमय सूर्य के समान प्रदीप्त थे। **16**</td>
</tr>
<tr>
<td>तुन्नु वॆयिल् विरित्त शूळामणि इमैप्प⋆
मन्नुम् मरदग क्कुन्रिन् मरुङ्गे⊕ ओर्॥७७॥
इन्निळ वञ्जिक्कॊडि ऒन्रु निन्रदुदान्⋆
अन्नमाय् मानाय् अणिमयिलाय् आङ्गिडैये⋆ ॥७८॥
मिन्नाय् इळवेय् इरण्डाय् इणै च्चॆप्पाय्⋆
मुन्नाय तॊण्डैयाय् क्कॆण्डै क्कुलम् इरण्डाय्⋆ ॥७९॥
अन्न तिरुवुरुवम् निन्रदरियादे⋆
एन्नुडैय नॆञ्जुम् अरिवुम् इन वळैयुम्⋆ ॥८०॥
पॊन्नियलुम् मेगलैयुम् आङ्गॊळिय प्पोन्देर्कु⋆
मन्नुम् मरि कडलुम् आर्क्कुम्⊕ मदियुगुत्त॥८१॥
इन्निलाविन् कदिरुम् एन्दनक्केवॆय्दागुम्⋆
तन्नुडैय तन्मै तविर त्तान् एन्गॊलो⋆ ॥८२॥
तॆन्नन् पॊदियिल् शॆळुञ्जन्दिन् तादळैन्दु⋆
मन्निव्वुलगै मनङ्गळिप्प वन्दियङ्गुम्⋆ ॥८३॥</td>
<td>रत्नपर्वत प्रभु पर एक सुकोमल लता लिपटी थी। वह हंसनी एवं मोरनी जैसी थी तथा कटि तड़ित रेखा जैसी थी।वह दो बांसो पर दो कटोरियों को संभाले थी। उसकी होंठ पके कोवै फल जैसी मांसल थी। उसकी आंखें केण्डै मछली जैसी थी। ऐसी सुन्दरता वाली नारी श्री देवी अपने प्रेमी के पास खड़ी थी। **17**

हमें यह तनिक भी पता नहीं चला कि हमारा मन हृदय कंगन एवं कमरधनी खिसक रहे थे। तब सागर का अंतहीन गर्जन हमें यातना देने लगा। प्रिय चांद की चांदनी हम पर तप्त होकर गिर रही थी।न जाने कैसे चांद ने अपना स्वभाव बदल लिया ? फूलों की सुगंध वाली तथा दक्षिण पर्वत के चन्दनवृक्ष के पराग से अभिषिक्त सबको सुख पहुंचाने वाली शीतल वायु हमारे ऊपर तप्त हवा की तरह बह रही थी। आंगन के ताड़ वृक्ष पर के कंटीले घोसला से आनेवाली अन्रिल युगल के मैथुन की पुकार हमारे हृदय में बर्छी की तरह घुस रही थी। **18**</td>
</tr>
</table>

इन्निळम् पून्दॆन्ऱलुम् वीशुम् एरियॆनक्के⋆ मुन्निय पॆण्णैमेल् मुळ्मुळरि क्कूट्टगत्तु⋆ ॥८४॥ पिन्नुम् अव्वन्ऱिल् पॆडै वाय् च्चिऱु कुरलुम्⋆ एन्नुडैय नॆञ्जुक्कोर् ईर् वाळाम् एन् शॆय्केन्⋆ ॥८५॥ कन्नविल् तोळ् कामन् करुप्पु च्चिलै वळैय⋆ कॊन्नविलुम् पूङ्गणैकळ् कोत्तु प्पॊदवणैन्दु⋆ ॥८६॥ तन्नुडैय तोळ् कळिय वाङ्गि⊕ तमियेन्मेल् एन्नुडैय नॆञ्जे इलक्काग एय्गिन्ऱान्⋆ ॥८७॥ पिन्निदनै क्काप्पीर् ताम् इल्लैये⊕ पेदैयेन् कन्नविलुम् काट्टगत्तोर् वल्लि क्कडिमलरिन्⋆ ॥८८॥ नन्नऱु वाशम् मट्रारानुम् एय्दामे⋆ मन्नुम् वऱुनिलत्तु वाळाङ्गुगुत्तदु पोल्⋆ ॥८९॥ एन्नुडैय पॆण्मैयुम् एन् नलनुम् एन् मुलैयुम्⋆ मन्नु मलर्मङ्गै मैन्दन्⊕ कणपुरत्तुप्॥९०॥	शक्तिशाली भुजाओं वाले मदन अपने गन्ने के धनुष की डोरी को कान तक खींचकर फूलों के बाण से हमारे हृदय को वेध रहे हैं। उन्हें रोकने वाला कोई नहीं है। **19** हमारी किशोरीपन एवं दक्षता कन्नपुरम के प्रभु के वक्षस्थल का आलिंगन नहीं प्राप्त कर सके जो श्रीपति हैं तथा सुवर्ण के पर्वत जैसे खड़े हैं।जैसे पथरीले वनों में फूल खिलकर विखर जाते हैं उसी तरह हमारा किशोरीपन हमारी आखों के समान व्यर्थ होता जा रहा है। हाय !! इसे रोकने की औषध से कोई अवगत नहीं दिखता । **20**
पॊन्मलै पोल् निन्ऱवन् तन् पॊन्नगलम् तोयावेल्⋆ एन्निवै तान् वाळा एनक्के पॊऱैयागि⋆ ॥९१॥ मुन्निरुन्दु मूक्किन्ऱु मूवामै क्काप्पदोर्⋆ मन्नुम् मरुन्दरिवीर् इल्लैये⊕ माल्विडैयिन्॥९२॥ तुन्नु पिडरॆरुत्तु तूक्कुण्डु वन् तॊडराल्⋆ कन्नियर् कण्मिळिर क्कट्टुण्डु⋆ माल्वैाय्॥९३॥ तन्नुडैय नावॊळियादाडुम् तनि मणियिन्⋆ इन्निशै ओशैयुम् वन्दॆन् शॆवि तनक्के⋆ ॥९४॥ कॊन्नविलुम् एगकिल् कॊडिदाय् नॊडिदागुम्⋆ एन्निदनै क्काक्कुमा शॊल्लीर्⊕ इदुविळैत्त॥९५॥ मन्नन् नऱुन्दुळाय् वाळ् मार्बन्⋆ मामदिगोळ् मुन्नम् विडुत्त मुगिल् वण्णन्⋆ कायाविन्॥९६॥ शिन्न नऱुम् पून्दिगळ् वण्णन्⋆ वण्णम् पोल् अन्न कडलै मलैयिट्टणैकट्टि⋆ ॥९७॥	एक वृषभ अपने गले में रस्सी से ऊंची घंटी बांधे किशोयिों की आंखों में चमक उत्पन्न करते हुए शाम में आकर लगातार घंटी बजाता है। यह आवाज हमारे कान में मृत्युदायी बर्छी की तरह घुसती है। बताओ कैसे इस निष्ठुरता को रोका जाये। **21** किसने यह किया ? अपने वक्षस्थल पर तुलसी की माला धारण करने वाले प्रभु ने, चांद को शाप से मुक्त करने वाले मेघ वर्ण वाले प्रभु ने, छोटे काया फूल के सुगंध को विखेरने वाले प्रभु ने, सागर पर सेतु बनाकर हाथी एवं घोड़े वाले राक्षस राज को युद्ध में चुनौती देते हुए उसके दस मुकुट वाले सिरों को धराशायी कर दक्षिण दिशा में भेजने वाले प्रभु ने ।

<table>
<tr>
<td>मन्नन् इरावणनै मामण्डु वॅञ्जमत्तु⋆
पॉन् मुडिकळ् पत्तुम् पुरळ च्चरन्दुरन्दु⋆ ॥९८॥
तॅन्नुलगम् एट्ठ्रवित्त शेवगनै⊕ आयिरक्कण्
मन्नवन् वानमुम् वानवर् तम् पॉन्नुलगुम्⋆ ॥९९॥
तन्नुडैय तोळ् वलियाल् कैक्कॉण्ड दानवनै⋆
पिन्नोर् अरियुरुवमागि एरिविळित्तु⋆ ॥१००॥
कॉन्नविलुम् वॅञ्जमत्तु क्कॉल्लादे⋆ वल्लाळन्
मन्नुम् मणिक्कुञ्जि पट्रि वर वीर्त्तु⋆ ॥१०१॥
तन्नुडैय ताळ्मेल् किडात्ति⋆ अवनुडैय
पॉन्नगलम् वळ्ळुगिराल् पोळ्न्दु पुगळ् पडैत्त⋆ ॥१०२॥
मिन्नलङ्गुम् आळि प्पडै त्तडक्कै वीरनै⋆
मन्निव्वगलिडत्तै मामुदु नीर् तान् विळुङ्ग⋆ ॥१०३॥
पिन्नुमोर् एनमाय् पुक्कु वळै मरुप्पिल्⋆
कॉन्नविलुम् कूर्नुदिमेल् वैत्तॅडुत्त कूत्तनै⋆ ॥१०४॥</td>
<td>उस प्रभु ने जो हजार आंखों वाले इन्द्र एवं अन्य देवताओं के बलपूर्वक राज्य छीनने वाले हिरण्य के विरोध में आग बवूला आंखें तथा चक्र लिये भयानक सिंह के रूप में आकर बिना हथियार के उसे उसका केश पकड़कर अपनी गोद में बैठाया एवं अपने घुमावदार नखों से उसकी छाती चीर दी तथा सबों से पूजित हुए।
उस प्रभु ने जो सूकर के रूप में घुमावदार दांतों पर हिरण्याक्ष द्वारा जल में छिपायी धरनी को ऊपर उठाया एवं नृत्य किया। उस प्रभु ने जो उदार रूप में पर्वत एवं नाग से सागर का मंथन किया और मंथन के समय दोनों ज्योतिर्पुंज तारेगन तथा अन्य सभी सागर के साथ चक्कर काटते दिखे तथा लंबे समय से देवों के यातनाग्रस्त जीवन का अंत करते हुए अमृत निकालकर उन्हें दे दिया।</td>
</tr>
<tr>
<td>मन्नुम् वड मलैयै मत्ताग माशुणत्ताल्⋆
मिन्नुम् इरुशुडरुम् विण्णुम् पिरङ्गॉळियुम्⋆ ॥१०५॥
तन्निन् उडने शुळल मलै तिरित्तु⋆ आङ्गु
इन्नमुदम् वानवरै ऊट्टि⋆ अवरुडैय॥१०६॥
मन्नुम् तुयर् कडिन्द वळ्ळलै⋆ मट्रन्रियुम्
तन्नुरुवम् आरुम् अरियामल् तान् अङ्गोर्⋆ ॥१०७॥
मन्नुम् कुरळ् उरुविल् माणियाय्⊕ मावलि तन्
पॉन्नियलुम् वेळ्विक्कण् पुक्किरुन्दु⋆ पोर्वेन्दर्॥१०८॥
मन्नै मनङ्गॉळ्ळ वञ्जित्तु नॅञ्जुरुक्कि⋆
एन्नुडैय पादत्ताल् यान् अळप्प मूवडि मण्⋆ ॥१०९॥
मन्ना ! तरुगॅन्रु वाय् तिरप्प⋆ मट्रवनुम्
एन्नाल् तरप्पट्टदॅन्रलुमे⋆ अत्तुणैक्कण्॥११०॥
मिन्नार् मणिमुडि पोय् विण् तडव⋆ मेलॅडुत्त
पॉन्नार् कनै कळर्काल् एळुलगुम् पोयक्कडन्दु⋆ अङ्–॥१११॥</td>
<td>उस प्रभु ने जो फिर छोटे वामन रूप में असुर मावली के महान यज्ञ में आये तथा उसे अति प्रसन्न करते हुए युक्तिपूर्वक अपने पैर की माप से तीन पग जमीन मांग लिये एवं असुर ने वचन दे दिया, तत्काल आपका दिव्य मुकुट आकाश छूने लगा तथा पाजेब वाले पैर सातों लोक को पार कर गया, मावली को छल पूर्वक वश में करते हुए सारा जगत अपना लिया।</td>
</tr>
</table>

गॊन्ना अशुरर् तुळङ्ग च्चॆल नीट्टि⋆ मन्निव्वगल्लिडत्तै मावल्लियै वञ्जित्तु⋆ ॥११२॥ तन्नुलगम् आक्कुवित्त ताळानै⊕ तामरैमेल् मिन्निडैयाळ् नायगनै विण्णगरुळ् पॊन् मलैयै⋆ ॥११३॥ पॊन्नि मणि कॊळिक्कुम् पूङ्गुडन्दै प्पोर् विडैयै⋆ तॆन्नन् कुऱुङ्गुडियुळ् शॆम् पवळ क्कुन्ऱिनै⋆ ॥११४॥ मन्निय तण् शेऱै वळ्ळलै⋆ मामलर्मेल् अन्नम् तुयिलुम् अणि नीर् वयलालि⋆ ॥११५॥ एन्नुडैय इन्नमुदै एव्वुळ् पॆरु मलैयै⋆ कन्नि मदिळ् शूळ् कणमङ्ग क्कर्पगत्तै⋆ ॥११६॥ मिन्नै इरुशुडरै वॆळ्ळऱैयुळ् कल्लऱैमेल् पॊन्नै⋆ मरदगत्तै प्पुट्कुळि एम् पोरेऱै⋆ ॥११७॥ मन्नुम् अरङ्गत्तॆम् मामणियै⊕ वल्लवाळ् पिन्नै मणाळनै प्पेरिल् पिऱप्पिलियै⋆ ॥११८॥	आप कमल निवासिनी तड़ित रेखा सी कृश कटि वाली लक्ष्मी के पति हैं। आप विण्णगर के सुवर्ण पर्वत हैं। रत्न से भरपूर कुडन्दै के योद्धा वृषभ हैं। दक्षिण कुरूंगुडी के मूंगा पर्वत हैं। शांत तिरूचैरै के उदारमना प्रभु हैं। वयलालि के प्यारे अमृत हैं जहां हंस कमल में घर बनाते हैं। दीवारों से घिरे कण्णमंगै के कल्पवृक्ष तड़ित एवं ज्योतिर्मय सूर्य हैं। वेल्लारै के पन्ना एवं सुवर्णमय कोष हैं। पुटकुली के योद्धा वृषभ हैं । संपन्न अरंगम के रत्न पर्वत हैं। वल्लवल में नप्पिनाय के पतिदेव हैं। तिरूप्पेर के अजन्मा प्रभु हैं।
तॊन्नीर् क्कडल् किडन्द तोळा मणि च्चुडरै⋆ एन्मनत्तु मालै इडवॆन्दै ईशनै⋆ ॥११९॥ मन्नुम् कडन्मल्लै मायवनै⊕ वानवर् तम् शॆन्नि मणि च्चुडरै त्तण्गाल् तिऱल् वलियै⋆ ॥१२०॥ तन्नै प्पिऱररिया तत्तुवत्तै मुत्तिनै⋆ अन्नत्तै मीनै अरियै अरुमऱैयै⋆ ॥१२१॥ मुन्निव्वुलगुण्ड मूर्त्तियै⋆ कोवलूर् मन्नुम् इडैगळि एम् मायवनै⋆ पेयलऱप् ॥१२२॥ पिन्नुम् मुलैयुण्ड पिळ्ळैयै⋆ अळ्ळल्वाय् अन्नम् इरै तेर् अळुन्दूर् एळुम् शुडरै⋆ ॥१२३॥ तॆन् तिल्लै च्चित्तिरगूडत्तॆन् शॆल्वनै⋆ मिन्नि मळै तवळुम् वेङ्गडत्तॆम् वित्तगनै⋆ ॥१२४॥ मन्ननै मालिरुञ्जोलै मणाळनै⋆ कॊन्नविलुम् आळि प्पडैयानै⋆ कोट्टियूर् ॥१२५॥	क्षीरसागर के बिनाकाटे मणि हैं। हमारे हृदय में रहने वाले पूज्य हैं। कडलमलै के आश्चर्यमय प्रभु हैं। स्वर्गिकों के शिरमौर हैं। तिरूतन्कल के दक्ष शक्तिशाली प्रभु हैं। ऐसा रहस्य जो कोई समझ नहीं पाता ः मोती, हंस, मत्स्य, सिंह, चार वेद, ब्रह्मांड को निगलने वाले, कोवलूर के प्रवेश बैठका में प्रकट होने वाले आश्चर्यमय प्रभु, दर्द से कराहते राक्षसी के स्तन पान करते रहने वाले शिशु, अलन्दूर के तेजोमय प्रभु जहां सरोवरों में हंस मछलियों को खोजती हैं, दक्षिण चित्रकूटम के मेरे धन, सदा बरसते रहने वाले पर्वत वेंकटम के प्रभु, मालिरूमशोलै के राजा एवं दूल्हा प्रभु, कोट्टियूर के प्रभु जो मृत्युदायी तीक्ष्ण चक्र को धारण करते हैं।

<table>
<tr>
<td>अन्नवुरुविन् अरियै⋆ तिरुमॅय्यत्तु
इन्नमुद वॅळ्ळत्तै इन्दळूर् अन्दणनै⋆ ॥१२६॥
मन्नुम् मदिट्कच्चि वेळुक्कै आळरियै⋆
मन्निय पाडगत्तॆम् मैन्दनै⋆ वॆग्काविल्॥१२७॥
उन्निय योगत्तुरक्कत्तै⋆ ऊरगत्तुळ्
अन्नवनै अट्ट पुयगरत्तॆम् आनेट्रै⋆ ॥१२८॥
एन्नै मनङ्गवर्न्द ईशनै⊕ वानवर् तम्
मुन्नवनै मूळिक्कळत्तु विळक्किनै⋆ ॥१२९॥
अन्नवनै आदनूर् आण्डळक्कुम् ऐयनै⋆
नॆन्नलै इन्रिनै नाळैयै⋆ नीर्मलैमेल्॥१३०॥
मन्नुम् मरै नान्गुम् आनानै⋆ पुल्लाणि
त्तॆन्नन् तमिळै वडमॊळियै⋆ नाङ्गूरिल्॥१३१॥
मन्नुम् मणिमाड क्कोयिल् मणाळनै⋆
नन्नीर् त्तलैच्चङ्ग नाण्मदियै⋆ नान् वणङ्गुम्॥१३२॥</td>
<td>मेय्यम के हरि जो अमृत की बाढ़ हैं। ईन्दालूर के वैदिक ऋषि, दीवारों के नगर कांची के स्वर्गिकों के नाथ, वेलुक्कै के नरसिंह, संपन्न पडकम के राजकुमार, वेग्का के योग निद्राशायी प्रभु , उरूकम के प्रभु, अट्टाव्युक्कारम के शक्तिवान वृषभ, मेरे हृदय को चुराकर स्वर्गिकों पर राज्य करने वाले प्रभु, मुळिकळम के प्रकाशदीप, समय मापने वाले आदनूर के निवासी, कल आज एवं आनेवाला कल, नीर्मलै के चार वेद बनने वाले प्रभु, पुल्लाणि के प्रभु, तमिल एवं संस्कृत के प्रभु, नांगुर के मणिमाड कोयिल के दूल्हा प्रभु, तलैच्चंग नाण्मदियम के नेक प्रभु ।</td>
</tr>
<tr>
<td>कण्णनै क्कण्णवुरत्तानै⋆ तॆन्नरैयूर्
मन्नुम् मणिमाड क्कोयिल् मणाळनै⋆ ॥१३३॥
कन्नविल् तोळ् काळैयै क्कण्डाङ्गु क्कै तॊळुदु⋆
एन्निलैमै एल्लाम् अरिवित्ताल् एम्बॆरुमान्⋆ ॥१३४॥
तन्नरुळुम् आगमुम् तारानेल्⋆ तन्नै नान्
मिन्निडैयार् शेरियिलुम् वेदियर्गळ् वाळ्विडत्तुम्⋆ ॥१३५॥
तन्नडियार् मुन्बुम् तरणि मुळुदाळुम्⋆
कॊन्नविलुम् वेल् वेन्दर् कूट्टत्तुम् नाट्टगत्तुम्⋆ ॥१३६॥
तन्निलैमै एल्लाम् अरिविप्पन्⋆ तान् मुन नाळ्
मिन्निडै आय्च्चियर् तम् शेरि क्कळविन्गण्⋆ ॥१३७॥
तुन्नु पडल् तिरन्दु पुक्कु⊕ तयिर् वॆण्णॆय्
तन् वयिरार विळुङ्ग⋆ कॊळुङ्गयल् कण्॥१३८॥
मन्नुम् मडवोर्गळ् पट्रियोर् वान् कयिट्राल्⋆
पिन्नुम् उरलोडु कट्टुण्ड पॆट्रिमैयुम्⋆ ॥१३९॥</td>
<td>कण्णपुरम के मेरे कृष्ण प्रभु। हरजगह आपको खोजते हुए मैं करबद्ध हो पूजा अर्पित करूंगी तथा हृदय के उद्‌गार को प्रकट करूंगी।क्या आप अपनी करूणा एवं वदन से हमें लाभान्वित नहीं करेंगे ?

अगर नहीं करेंगे तो हम सुन्दरियों के समक्ष वैदिक ऋषियों से, भक्तों से, तथा इस विशाल धरा के राजाओं से आपकी करतूत के बारे में खुलेयाम बताऊंगी। आप गोपजनों की कुटिया से मक्खन चुराये, ऊखल में बांध कर गोपनारी यशोदा से पीटे गये,</td>
</tr>
</table>

<table>
<tr>
<td>अन्नदोर् बूतमाय् आयर् विळविन् कण्⋆
तुन्नु शगडत्ताल् पुक्क पेरुञ्जोट्रै⋆ ॥१८०॥
मुन्निरुन्दु मुट्र त्तान् तुट्रिय तेंट्रेनवुम्⋆
मन्नर् पेरुञ्जवैयुळ् वाळ् वेन्दर् दूतनाय्⋆ ॥१८१॥
तन्नै इगळ्न्दुरैप्प त्तान् मुन नाळ् शेन्रदुवुम्⋆
मन्नु परैकरङ्ग मङ्गैयर् तम् कण्गळिप्प⋆ ॥१८२॥
कॊन्नविलुम् कूत्तनाय् प्पेर्त्तुम् कुडम् आडि⋆
एन्निवन् एन्न प्पडुगिन्र् ईडर्वुम्⋆ ॥१८३॥
तॆन्निलङ्गै आट्टि अरक्कर् कुल प्पावै⋆
मन्नन् इरावणन् तन् नल् तङ्गै⊕ वाळ् एयिट्रुत्॥१८४॥
तुन्नु शुडु शिनत्तु च्चूर्पणका शोर्वॆय्दि⋆
पॊन्निरङ्गॊण्डु पुलर्न्दॆळुन्द कामत्ताल्⋆ ॥१८५॥
तन्नै नयन्दाळै त्तान् मुनिन्दु मूक्करिन्दु⋆
मन्निय तिण्णॆनवुम् वाय्त्त मलै पोलुम्⋆ ॥१८६॥</td>
<td>पर्वत के रूप में गाड़ीभरे भोज्य पदार्थ गोवर्द्धन पर खा गये जो इन्द्र के लिये लाया गया था, पुराकाल में राजाओं की सभा में निम्न दूतवाहक के रूप में जाकर अपमान का घूंट पीये। गलियों में नगाड़े की धुन पर नृत्य करते हुए किशोरियों के मन को चुरा लिये तथा अन्यों ने आपके इस शरारत के लिये आश्चर्य प्रकट किया। शक्तिशाली लंका के राजा की बहन शूर्पनखा ने जब जंगल में काम से वशीभूत भयानक रूप धारण कर लिया था तब आपने उसके नाक कान काट लिये थे। ऋषि के यज्ञ की रखवाले करते समय आपने पर्वत के समान राक्षसी ताड़का का नाश किया। एवं अन्य बहुत सारे कल्पनातीत कारनामों को आपने किया है। **25**</td>
</tr>
<tr>
<td>तन्निगर् ऑन्रिल्लाद ताडगैयै⊕ मामुनिक्का
तॆन्नुलगम् एट्रुवित्त तिण् तिर्लुम्⋆ मट्रिवैतान्॥१८७॥
उन्नि उलवा उलगरिय ऊर्वन् नान्⋆
मुन्नि मुळैत्तॆळुन्दोङ्गि ऑळि परन्द⋆ ॥१८८॥</td>
<td>जगत को खुलेयाम बताते हुए लोकलाज को त्याग कर धैर्यपूर्वक मडल करूंगी। **26**

तिरूमङ्गैयाळवार तिरूवडिगले शरणं ।</td>
</tr>
<tr>
<td>मन्निय पूम् पॆण्णै मडल्⊕

एन्निलैमै एल्लाम् अरिवित्ताल् एम्बॆरुमान्⋆
तन्नरुळुम् आगमुम् तारानेल् – पिन्नै प्पोय्
ऑण्डुरैनीर् वेलै उलगरिय ऊर्वन् नान्⋆
वण्डरै पूम् पॆण्णै मडल्⊕

मण्णिर्पॊडि पूशि वण्डिरैक्कुम् पूच्चूडि⋆
पॆण्णै मडल् पिडित्तु प्पिन्पिन्नै – अण्णल्
तिरु नरैयूर् निन्र् पिरान् तेर् पोगुम् वीति⋆
पॊरुमरैया च्चॆल्वम् पॊलिन्दु⊕</td>
<td></td>
</tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

इरामानुश नूट्रन्दादि (2791 – 2898)

वेदप्पिरानबट्टर् अरूळिच्चेय्दवै

वेदप्पिरान्बट्टर् अरुळिच्चेय्दवै

मुन्नै विनै अगल मूङ्गिल् कुडि अमुदन्⋆
पॊन्नम् कळर्कमल प्पोदिरण्डुम्⋆ एन्नुडैय
शॆन्निक्कणि आग च्चेर्त्तिनेन् तॆन्बुलत्तार्क्कु⋆
एन्नु क्कडवुडैयेन् यान्

नयन्तरु पेरिन्बम् एल्लाम् पळुदॆन्रु नण्णिनर्पाल्⋆
शयन्तरु कीर्त्ति इरामानुश मुनि ताळ् इणैमेल्⋆
उयर्न्द गुणत्तु त्तिरुवरङ्ग त्तमुदोङ्गुम्⋆ अन्बाल्
इयम्बुम् कलित्तुऱै अन्दादि ओद इशै नॆञ्जमे !

शोमाजियाण्डान् अरुळियदॆन्बर्

शॊल्लिन् तॊगै कॊण्डुनदडि प्पोदुक्कु त्तॊण्डु शॆय्युम्⋆
नल्लन्बर् एत्तुम् उन् नामम् एल्लाम् एन्रन् नाविनुळ्ळे⋆
अल्लुम् पगलुम् अमरुम् पडि नल्गुऱुशमयम्
वॆल्लुम् परम⋆ इरामानुश ! इदॆन् विण्णप्पमे

वेदप्पिरान्बट्टर् अरुळियदॆन्बर्

इनियॆन् कुऱै नमक्कॆम्बॆरुमानार् तिरुनामत्ताल्⋆
मुनि तन्द नूट्रॆट्टु च्चावि त्तिरियॆन्नुम् नुण्पॊरुळै⋆
कनि तन्द चॆञ्जॊल् कलित्तुऱै अन्दादि पाडित्तन्दान्⋆
पुनिदन् तिरुवरङ्गत्तमुदागिय पुण्णियनॆ

पू मन्ऩु मादु पॊरुन्दिय मार्वऩ्* पुगऴ् मलिन्द पा मन्ऩु माऱऩ्* अडि पणिन्दुयन्दवऩ्* पल् कलैयोर् ताम् मन्ऩ वन्द इरामनुशऩ्* शरणारविन्दम् नाम् मन्ऩि वाऴ* नॆञ्जे ! शॊल्लुवोम् अवन् नामङ्गळे॥१॥	हे हृदय ! आओ रामानुज का नाम लो। आपने ज्ञानवान लोगों को मार्ग दिखाया। आपने प्रकांड कवि मारन के चरणों की पूजा की जिन्होंने वक्षस्थल पर कमलनिवासिनी लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु की आकंठ प्रशस्ति गायी। हमें सदा आपके चरणकमल के पास स्थान मिले। **2791**
कळ्ळार् पॊऴिल् तॆन् अरङ्गऩ्* कमल प्पदङ्गळ् नॆञ्जिल् कॊळ्ळा* मनिशरै नीङ्गि* कुऱैयल् पिराऩ् अडिक्कीऴ् विळ्ळाद अन्बन् इरामानुशऩ्* मिक्क शीलम् अल्लाल् उळ्ळादॆन् नॆञ्जु* ऑन्ऱरियेन् ऎनक्कुट्ऱ पेरियल्वे॥२॥	मैं अपने सौभाग्य को समझ नहीं सकता। रामानुज के असीम उदारपना को छोड़कर मेरा हृदय और कुछ नहीं सोचता। आपने उनसबों का संग छोड़ दिया जो अमृतमय बागों से घिरे अरंगम के प्रभु के चरणों की प्रशस्ति नहीं गाते तथा कुरैयालुर के राजा तिरूमंगैयाळवार की शरणागति ली । **2792**
पेरियल् नॆञ्जे ! अडि पणिन्देन् उन्नै* पेय् प्पिऱवि प्पूरियरोडुळ्ळ शुट्रम् पुलत्ति* प्पॊरुवरुम् शीर् आरियन् शॆम्मै इरामानुश मुनिक्कन्बु शॆय्युम्* शीरिय पेरुडैयार्* अडिक्कीऴ् ऎन्नै च्चेर्त्तदर्के॥३॥	हे उदार हृदय ! दुष्टात्माओं के कुल के लोगों की संगति से हटाकर मुझे अद्वितीय संत रामानुज के परम पूज्य एवं प्रिय लोगों के चरणों में लगा दिया। इस कृपा के लिये हम सिर नवाते हैं। **2793**
ऎन्नै प्पुवियिल् ऑरु पॊरुळ् आक्कि* मरुळ् शुरन्द मुन्नै प्पऴविनै वेर् अरुत्तु* ऊऴि मुदल्वनैये पन्न प्पणित्त इरामानुशन्* परन् पादमुम् ऎन् शॆन्नि त्तरिक्क वैत्तान्* ऎनक्केदुम् शिदैविल्लैये॥४॥	रामानुज प्रभु ने सबों को केवल प्रथम प्रभु की पूजा करने को उत्साहित किया एवं मुझे इस संसार में आदमी बना दिया। आपने हमारे युगों पुराने कर्मों के अंधकार को दूर कर अपने चरण को हमारे सिर पर रख दिया।हमें अब कोई भय नहीं है। **2794**
ऎनक्कुट्ऱ शॆल्वम् इरामानुशन् ऎन्ऱु* इशैयगिल्ला मन क्कुट्ऱ मान्दर्* पऴिक्किल् पुगऴ्* अवन् मन्ऩिय शीर् तनक्कुट्ऱ अन्बर् अवन् तिरुनामङ्गळ् शाट्रुम् ऎन्बा* इन क्कुट्रम् काणगिल्लार्* पत्ति एय्न्द इयल्विदॆन्ऱे॥५॥	मतिभ्रम लोग जो रामानुज को अपनी संपत्ति नहीं समझते उनके अपशब्द को हम प्रशंसा समझेंगे। जो लोग आपके गुणों को प्रिय समझते हैं वे हमारी कविता में खोट नहीं पायेंगे क्योंकि इससे हम आपके नाम का गान कर रहे हैं। **2795**
इयलुम् पॊरुळुम् इशैय त्तॊडुत्तु* ईन् कविगळ् अन्बाल् मयल् कॊण्डु वाऴ्त्तुम् इरामानुशनै* मदि इन्मैयाल् पयिलुम् कविगळिल् पत्ति इल्लाद ऎन् पावि नॆञ्जाल्* मुयल्गिन्ऱनन्* अवन् तन् पॆरुम् कीर्त्ति मॊऴिन्दिडवे॥६॥	प्रेमासिक्त हृदय वाले प्रिय कवि रामानुज की प्रशंसा में उपयुक्त शब्दों के चुनाव में सक्षम नहीं होते। हाय ! इस पापी हृदय में भक्ति के कारण ही हम भी आपकी प्रशंसा करने का प्रयास कर रहे हैं।यह एक उन्माद ही कहा जा सकता है। **2796**
मॊऴियै क्कडक्कुम् पॆरुम् पुगऴान्* वञ्ज मुक्कुरुम्बाम् कुऴियै क्कडक्कुम्* नम् कूरत्ताऴ्वान् शरण् कूडियपिन्* पऴियै क्कडत्तुम् इरामानुशन् पुगऴ् पाडि* अल्ला वऴियै क्कडत्तल्* ऎनक्किनि यादुम् वरुत्तम् अन्ऱे॥७॥	कुरत्ताळवार के शरण में आकर जिनकी गाथा शब्दों से परे है और जो हमें छद्म ज्ञान के गह्वर से बाहर निकालते हैं हम रामानुज की प्रशस्ति गाते हैं जिन्होंने हमें पाप से बाहर निकाला।कुरास्ता से हम बच गये हैं और हमें किसी बात का पश्चात्ताप नहीं है। **2797**

<table>
<tr><td>वरुत्तुम् पुऱविरुळ् माट्र* एम् पॉय्गै प्पिरान् मऱैयिन्
कुरुत्तिन् पॉरुळैयुम्* शॅन्दमिळ् तन्नैयुम् कूट्टि* ऑन्ऱ
त्तिरित्तन्ऱॅरित्त तिरुविळक्कै त्तन् तिरुवुळत्ते*
इरुत्तुम् परमन्* इरामानुशन् एम् इऱैयवने॥८॥</td><td>पोयगै आलवार ने वेद के सार एवं तमिल कविता की सरसता को मिलाकर एक दीप जलाया जो यातना के अंधकार को दूर भगाया। रामानुज ने उस दीपक को अपने हृदय में स्थापित किया, आप हमारे नाथ एवं स्वामी हैं। **2798**</td></tr>
<tr><td>इऱैवनै क्काणुम् इदयत्तिरुळ् कॅड* ञानम् एन्नुम्
निऱै विळक्केट्रिय* बूद त्तिरुवडि ताळ्गळ्* नॅञ्जत्तु
उऱैय वैत्ताळुम् इरामानुशन् पुगळ् ओदुम् नल्लोर्*
मऱैयिनै क्कात्तु* इन्द मण्णगत्ते मन्न वैप्पवरे॥९॥</td><td>भूत आलवार ने ज्ञान का दीप जलाया तथा भक्तों के हृदय के अंधकार को दूर भगाया। रामानुज उस आळवार के चरण को अपने हृदय में रखकर आनन्दित हुए। जो वेद के रक्षक हैं और नेक हैं वे आपकी सदा प्रशस्ति गायेंगे। **2799**</td></tr>
<tr><td>मन्निय पेरिरुळ् माण्डपिन्* कोवलुळ् मा मलराळ्
तन्नॉडु मायनै* क्कण्डमै काट्टुम्* तमिळ् त्तलैवन्
पॉन्नडि पोट्रुम् इरामानुशर्कन्बु पूण्डवर् ताळ्*
शॅन्नियिल् शूडुम्* तिरुवुडैयार् एन्ऱुम् शीरियरे॥१०॥</td><td>तिरूकोईलूर में उस रात जब अंधकार की छाया का अंत हुआ तो पेय आळवार ने गोपकिशोर आश्चर्यमय प्रभु को कमल निवासिनी लक्ष्मी के साथ देखा। रामानुज ने आळवार के दिव्य चरण की पूजा की। जो रामानुज पर अपना प्रेम बरसाते हैं वे सौभाग्यशाली एवं विशिष्ट मेधा के भक्त हैं। **2800**</td></tr>
<tr><td>शीरिय नान्मऱै च्चॅम्पॉरुळ्* शॅन्दमिळाल् अळित्त
पार् इयलुम् पुगळ् पाण्पॅरुमाळ्* शरणाम् पदुम
त्तार् इयल् शॅन्नि इरामानुशन् तन्नै च्चारन्दवर् तम्*
कारिय वण्मै* एन्नाल् शॊल्लॊणादिक्कडल् इडत्ते॥११॥</td><td>तिरूप्पनाळवार ने वेद के तथ्य को मधुर तमिल पदों में ढ़ाल दिया। रामानुज ने सदा आळवार के चरणकमल की माला पहनी। जो रामानुज की शरण लेते हैं उनकी विशिष्टता का इस विस्तृत जगत में हम वर्णन नहीं कर सकते हैं। **2801**</td></tr>
<tr><td>इडम् कॊण्ड कीर्त्ति मळिशैक्किऱैवन्* इणैयडि प्पोदु
अडङ्गुम् इदयत्तिरामानुशन्* अम् पॊन् पादम् एन्ऱुम्
कडम् कॊण्डिऱैञ्जुम् तिरु मुनिवर्क्कन्ऱि क्कादल् शॆय्या*
तिडम् कॊण्ड ञानियर्क्के* अडियेन् अन्बु शॆय्वदुवे॥१२॥</td><td>रामानुज के हृदयाकाश में तिरूमळिशैयालवार के चरणारविंद छाये रहते हैं। जो रामानुज के भक्तों की पूजा कर आपकी चरण कमल की प्रशस्ति गाते हैं वे हमारे प्रिय स्वामी हैं। **2802**</td></tr>
<tr><td>शॆय्युम् पशुन् तुळब त्तॊळिल् मालैयुम्* शॅन्दमिळिल्
पॆय्युम् मऱै त्तमिळ् मालैयुम्* पेराद शीर् अरङ्ग
त्तैयन् कळर्कणि अम् परन् ताळ् अन्ऱि* आदरिया
मॆय्यन्* इरामानुशन् शरणे गति वेऱॆनक्के॥१३॥</td><td>तोन्डरादिप्पोडि आळवार ने वैदिक ज्ञान से सुगंधित तमिल पदों की माला बनाया तथा आपके द्वारा निर्मित नूतन हरी तुलसी पत्ती की गुथी हुए माला अरंगम प्रभु के चरणारविंद पर अर्पित करने योग्य हैं।सत्यवादी रामानुज ने आळवार की एकमात्र पूजा की। रामानुज के चरण हमारे एक मात्र आश्रय हैं। **2803**</td></tr>
<tr><td>गतिक्कु प्पदऱि* वॆम् कानमुम् कल्लुम् कडलुम् एल्लाम्
कॊदिक्क* त्तवम् शॆय्युम् कॊळ्गै अट्रेन्* कॊल्लि कावलन् शॊल्
पदिक्कुम् कलै क्कवि पाडुम् पॆरियवर् पादङ्गळे*
तुदिक्कुम् परमन्* इरामानुशन् एन्नै च्चोर्विल्लने॥१४॥</td><td>कोल्ली के राजा कुलशेखर आळवार ने कलात्मक गौरव से पूर्ण पदों को गाया। उन महान लोगों की रामानुज प्रशंसा करते हैं जो आळवार के पदों को गाते हैं। अपने उद्धार के लिये तप्त वन पर्वत एवं सागर में खड़े होकर कठिन तपस्या के मार्ग को छोड़कर हमने रामानुज के चरणों में आश्रय पाया है, हमारा तिरस्कार आप कभी नहीं करेंगे। **2804**</td></tr>
</table>

शोराद कादल् पेरुञ्जुळिप्पाल्⁎ तोल्लै माल्ै ऑन्रुम् पारादवनै⁎ प्पल्लाण्डेन्रु काप्पिडुम्⁎ पान्मैयन् ताळ् पेराद उळ्ळत्तिरामानुशन् तन् पिरङ्गिय शीर्⁎ शारा मनिशरै च्चेरेन्⁎ एनक्केन्न ताळ्विनिये॥१५॥	प्रेम के झरना से नहाते हुए पेरियाळवार ने प्रभु के लिये प्पलांडु गाया "आपकी जय हो" "आपका गौरव अक्षुण्ण रहे" गीत जिसमें अन्य चीजों को भुलाकर निरंतर प्रेम का प्रवाह बहता है। रामानुज सदा इनको अपने हृदय में रखते हैं। जो रामानुज की महानता को समझते नहीं है वैसे नीच लोगों की संगति मैं कभी नही करूंगा।अब मैं यह नहीं चाहूंगा। **2805**
ताळ्वोन्रिल्ला मरै ताळ्न्दु⁎ तलमुळुदुम् कलिये आळ्गिन्र नाळ् वन्दु⁎ अळित्तवन् काण्मिन्⁎ अरङ्गर् मौलि शूळ्गिन्र मालैयै च्चूडि क्कोंडुत्तवळ् तोंल् अरुळाल्⁎ वाळ्गिन्र वळ्ळल्⁎ इरामानुशन् एन्नुम् मा मुनिये॥१६॥	कलि के एक छत्र प्रभाव में आकर निष्कलंक वेद में भी कलंक लग जाने पर परम उदार रामानुज मुनि का अवतार हुआ जो अंडाल के कृपा पात्र हुए। अंडाल एक बालिका कवयित्री थी जो पहले माला स्वयं पहन कर बाद में अरंगम के भगवान को पहनाती थी और भगवान उस माला को अपने मुकुट पर लपेटकर धारण करते थे। **2806**
मुनियार् तुयरङ्गळ् मुन्दिलुम्⁎ इन्बङ्गळ् मोंय्त्तिडिनुम् कनियार् मनम्⁎ कण्ण मङ्ग निन्रानै⁎ क्कलै परवुम् तनियानैयै त्तण्डमिळ् शेय्द नीलन् तनक्कु⁎ उलगिल् इनियानै⁎ एङ्गळ् इरामानुशनै वन्देय्दिनरे॥१७॥	ओजस्वी एवं अलौकिक कवि नीलन तिरूमंगैयाळवार ने कन्नमंगै के प्रभु एवं अन्य मंदिर नगरों पर तमिल मे गीत की रचना की। हमारे रामानुज आपको बहुत ही चाहते थे। जो आप में आश्रय लेगा वह दुर्दिन या सुदिन की घटनाओं से मुक्त रहेगा। **2807**
एय्दर्करिय मरैगळै⁎ आयिरम् इन् तमिळाल् शेय्दर्कुलगिल् वरुम्⁎ शडगोबनै⁎ च्चिन्दैयुळ्ळे पेय्दर्किशैयुम् पेरियवर् शीरै उयिर्गळ् एल्लाम्⁎ उय्दर्कुदवुम्⁎ इरामानुशन् एम् उरु तुणैये॥१८॥	मधुरकवि अपने हृदय में अपने स्वामी शडगोपन को स्थित कर आनंदित रहना चाहते थे जिनका पृथ्वी पर अवतार अगम्य वेद को हजार मृदु पदों में रूपांतरित करने के लिये हुआ था। रामानुज ने आळवार के चरण की शरण का मार्ग बताया। आप हमारे एकमात्र आश्रय हैं। **2808**
उरु पेरुञ्जेल्वमुम् तन्दैयुम् तायुम्⁎ उयर् गुरुवुम् वेरि तरु पूमगळ् नादनुम्⁎ मारन् विळङ्गिय शीर् नेरि तरुम् शेन्दमिळ् आरणमे एन्रिन् नीळ् निलत्तोर्⁎ अरिदर निन्र⁎ इरामानुशन् एनक्कारमुदे॥१९॥	मारन शडगोपन के श्रीमुख से गाये जाने वाला तमिल वेद तिरूवायमोळि ही प्रभु का आनंद प्रदान करने वाला एक मात्र अर्जित करने योग्य संपत्ति है। यह माता, पिता, श्रेष्ठ आचार्य, यहां तक कि कमलनिवासिनी लक्ष्मी पति है। इस बात का रहस्योद्घाटन करने वाले रामानुज हमारे अमृत हैं। **2809**
आर प्पोंळिल् तेन् कुरुगै प्पिरान्⁎ अमुद त्तिरुवाय् ईर त्तमिळिन्⁎ इशै उणर्न्दोर्गट्कु⁎ इनियवर् तम् शीरै प्पयिन्रुय्युम् शीलम्कोंळ् नादमुनियै⁎ नेञ्जाल् वारि प्परुगुम्⁎ इरामानुशन् एन्रन् मा निदिये॥२०॥	नाथमुनि मृदु मधुरकवि की पूजा से गौरवान्वित होते थे जो रसाषिक्त तिरूवायमोळि को गाने का महारथ प्राप्त किये हुए थे और जो उन्हें फूलों के बाग से घिरे दक्षिण कुरूगुर के स्वामी शडगोपन से विरासत में मिला था। नाथमुनि के लिये अपने हृदय को प्रेम से भरने वाले रामानुज हमारी अपार संपदा हैं। **2810**

निदियै प्पॊऴियुम् मुगिल् ऎन्ऱु⋆ नीशर् तम् वाशल् पट्रि त्तुदि कट्रुलगिल् तुवळिगिन्ऱिलेन्⋆ इनि तूय् नॆऱि शेर् ऎदिगट्किरैवन् यमुनै त्तुरैवन् इणै अडियाम्⋆ गदि पॆट्रुडैय⋆ इरामानुशन् ऎन्नै क्कात्तननॆ॥२१॥	यामुनाचार्य हमारे प्रभु रामानुज के पथ प्रदर्शक हुए जो धर्ममार्ग पर चलने वाले संयमी संतों के सम्राट हैं। आपका संरक्षण मिल जाने के बाद हम कभी भी संकीर्ण बुद्धिवाले मरणधर्मा मनुष्यों के द्वार पर यातना झेलेते हुए यह नहीं गायेंगे "हे संपदा बरसाने वाले मेघ"। **2811**
कार्त्तिगै यानुम् करिमुग त्तानुम्⋆ कनलुम् मुक्कण् मूर्त्तियुम् मोडियुम् वॆप्पुम् मुदुगिट्टु⋆ मूवुलगुम् पूत्तवने ! ऎन्ऱु पोट्रिड वाणन् पिळै पॊऱुत्त⋆ तीर्त्तनै ऎत्तुम्⋆ इरामानुशन् ऎन्ऱन् शेम वैप्पे॥२२॥	सुब्रमण्य विनायक शिव पार्वती अग्नि एवं अन्य देवता अपना पीठ दिखाते हुए भाग गये और पुकारा "हे तीनों लोकों के नियंता" "हे सृष्टिकर्ता"। कृष्ण ने इस हद तक अपने पुत्र रामानुज पर दया दिखायी। जो आपकी पूजा करते हैं वे हमारे भविष्य की निधि हैं। **2812**
वैप्पाय वान् पॊरुळ् ऎन्ऱु⋆ नल् अन्बर् मनत्तगत्ते ऎप्पोदुम् वैक्कुम् इरामानुशनै⋆ इरु निलत्तिल् ऒप्पार् इलाद उऱु विनैयेन् वञ्ज नॆञ्जिल् वैत्तु⋆ मुप्पोदुम् वाऴ्त्तुवन्⋆ ऎन्नाम् इदु अवन् मॊय् पुगऴ्क्के॥२३	धार्मिक प्रवृति वाले लोग रामानुज को अपने हृदय कोष में रखते हैं। मैं पापी ! इस जगत में मेरे समान अन्य पापी नहीं है, अपने छली कठोर हृदय से आपकी प्रशस्ति गाने का दुस्साहस दिखाया है। अगर सभी प्रातः संध्या एवं रात्रि अनवरत आपकी गाथा गाते रहें तब भी आपके अनंत सद्गुणों का अंत नहीं पा सकते। **2813**
मॊय्त्त वॆम् तीविनैयाल् पल्लुडल् तॊऱुम् मूत्तु⋆ अदनाल् ऎय्त्तॊऴिन्देन् मुनै नाळ्गळ् ऎल्लाम्⋆ इन्ऱु कण्डुयर्न्देन् पॊय् त्तवम् पोट्रुम् पुलै च्चमयङ्गळ् निलत्तविय⋆ कैत्त मॆय्ञ्ञानत्तु⋆ इरामानुशन् ऎन्नुम् कार् तन्नैये॥२४॥	वे दिन थे जब घोर पाप के कर्मो से हमारे अनगिन्त जन्म हुए, हमारी उम्र बढ़ी, एवं हम थके। अब हमने सुखद श्याममेघ की तरह रामानुज को देख लिया है और हमारी रक्षा हो गयी है क्योंकि ढ़ोगपूर्ण तपस्या के अधम मार्ग से वे अलग रखते हैं। **2814**
कारेय् करुणै इरामानुश⋆ इक्कडलिडत्तिल् आरे अऱिबवर्⋆ निन् अरुळिन् तन्मै⋆ अल्ललुक्कु नेरे उऱैविडम् नान् वन्दु नी ऎन्नै उय्त्तपिन्⋆ उन् शीरे उयिर्क्कुयिराय्⋆ अडियेर्किन्ऱु तित्तिक्कुमे॥२५॥	श्याममेघ की तरह उदार रामानुज ! इस विस्तृत जगत में कौन आपका करूणामय स्वभाव को समझ सकता है ? मैं तो पाप का खेत था एवं आप स्वयं आकर हमें स्वीकार किये।आज आपका सदगुण इस अधम जीव के लिये अमृत है। **2815**
तिक्कुट्र कीर्त्ति इरामानुशनै⋆ ऎन् शॆय् विनैयाम् मॆय् क्कुट्रम् नीक्कि⋆ विळङ्गिय मेगत्तै⋆ मेवुम् नल्लोर् ऎक्कुट्र वाळर् ऎदु पिऱप्पेदियल्वाग निन्ऱोर्⋆ अक्कुट्रम् अप्पिऱप्पु⋆ अव्वियल्वे नम्मै आट्कॊळ्ळुमे॥२६॥	श्याममेघ की तरह उदार जगतप्रसिद्ध रामानुज ने हमें पूर्व के घोर दुष्कर्मो से अलग किया। धार्मिक जन जो आपका शरण लेते हैं चाहे वे किसी भी कुल के हों और जो भी उनका दुष्कर्म रहा हो वे हमारे गुणवान स्वामी हैं। **2816**

कॊळ्ळ क्कुरैवट्रिलङ्गि⋆ कॊळुन्दु विट्टोङ्गिय उन् वळ्ळल् तनत्तिनाल्⋆ वल्विनैयेन् मनम् नी पुगुन्दाय्⋆ वॆळ्ळै च्चुडर् विडुम् उन् पॆरु मेन्मैक्किळुक्किदॆन्रु⋆ तळ्ळुट्रिरङ्गुम्⋆ इरामानुश ! एन् तनि नॆञ्जमे ! ॥२७॥	कभी नहीं कम होते तेज एवं गौरववाले तथा सदा प्रभाव में बढ़ते रहने वाले रामानुज ! श्याममेघ की तरह आपकी उदारता हमारे हृदय को मुग्ध किये हुए है। आपके बड़प्पन की आभा में कोई दोष नहीं है परंतु मैं सहमा रहता हूं। **2817**
नॆञ्जिल् करै कॊण्ड कञ्जनै क्कायन्द निमलन्⋆ नङ्गळ् पञ्जि त्तिरुवडि⋆ प्पिन्नै तन् कादलन्⋆ पादम् नण्णा वञ्जरक्करिय इरामानुशन् पुगळ् अन्रि एन् वाय्⋆ कॊञ्जि प्परवगिल्लादु⋆ एन्न वाळिवन्रु कूडियदे ! ॥२८॥	जो नप्पिनाय के प्रेमी तथा कंस के वध करने वाले कृष्ण के फूल सा सुकोमल चरणों की पूजा नहीं करते ऐसे अधमबुद्धि वाले को रामानुज कभी नहीं मिलते। आपके नाम को छोड़कर हमारा हृदय अन्य किसी का गान एवं विरूदावली नहीं करता। अहो मेरे जीवन को क्या ही सौभाग्यशाली आशीष मिला है ! **2818**
कूट्टुम् विदि एन्रु कूडुङ्गॊलो⋆ तॆन् कुरुगै प्पिरान् पाट्टॆन्नुम्⋆ वेद प्पशुन्दमिळ् तन्नै⋆ त्तन् पत्ति एन्नुम् वीट्टिन् कण् वैत्त इरामानुशन् पुगळ् मॆय् उणर्न्दोर्⋆ ईट्टङ्गळ् तन्नै⋆ एन् नाट्टङ्गळ् कण्डिन्बम् एय्दिडवे॥२९॥	रामानुज ने भक्तिमार्ग को बड़ी दृढ़ता से स्थापित किया है जिसमें प्रभु से मिलने का साधन दक्षिणी कुरूगुर के स्वामी के गाये हुए मधुर तमिल वेद हैं। अहो कब हमारी आंखें इस सत्य को जानने वाले भक्तों की पंक्तियों को देखकर प्रसन्न होगी ! **2819**
इन्बम् तरु पॆरु वीडु वन्दॆय्दिल् एन्⋆ एण् इरन्द तुन्बम् तरु निरयम् पल शूळिल् एन्⋆ तॊल् उलगिल् मन् पल् उयिर्गट्किरैयवन् मायन् एन मॊळिन्द⋆ अन्बन् अनगन्⋆ इरामानुशन् एन्नै आण्डनने॥३०॥	मित्रवत निष्कलंक रामानुज ने अपने व्याखयान से स्पष्ट कर दिया कि आश्चर्यमय प्रभु कृष्ण इस ब्रह्मांड के सभी जीवों के स्वामी हैं। आप हमारे हृदय के स्वामी हैं।अब यह बात निरर्थक है कि चाहे हम स्वर्ग का आनन्द उठायें या नरकगामी बनें। **2820**
‡आण्डुगळ् नाळ् तिङ्गळाय्⋆ निगळ् कालम् एल्लाम् मनमे ! ईण्डु⋆ पल् योनिगळ् तोरुम् उळल्वोम्⋆ इन्रोर् एण् इन्रिये काण् तगु तोळ् अण्णल् तॆन् अत्ति ऊरर् कळल् इणैक्कीळ्⋆ पूण्ड अन्बाळन्⋆ इरामानुशनै प्पॊरुन्दिनमे॥३१॥	हे हृदय ! अनेकों जन्मों से अनेकों गर्भो में हम अंतहीन दिन महीना एवं वर्षो तक यातना भोगते रहे। अब बिना किसी दूसरे विकल्प का विचार किये हम रामानुज के चरणों में आ गिरे हैं जिनका हृदय अत्तिगिरी के नाथ उदारहाथों वाले वरदराज के प्रेम से उत्प्लावित है। **2821**
पॊरुन्दिय तेशुम् पॊरैयुम् तिरल्लुम् पुगळुम्⋆ नल्ल तिरुन्तिय ञानमुम्⋆ शॆल्वमुम् शेरुम्⋆ शॆरु कलियाल् वरुन्दिय ञालत्तै⋆ वण्मैयिनाल् वन्दॆडुत्तळित्त अरुन्दवन्⋆ एङ्गळ् इरामानुशनै अडैपवर्क्के॥३२॥	अपने तपस्या के प्रभाव से रामानुज ने कलि के विनाशकारी प्रभाव से जगत को बाहर निकाला तथा रक्षा की।जो आपको प्राप्त कर लेंगे उनके पास तेजोमय ज्ञान, सहिष्णुता, योग्यता, यश, संपत्ति सबकुछ अपने आप आ जायेंगे। **2822**

<table>
<tr><td>अडैयार् कमलत्तलर्मगळ् केळ्वन्* कै आळि एन्नुम्
पडैयॊडु नान्तगमुम् पडर् दण्डुम्* ऑण् शारङ्ग विल्लुम्
पुडै आर् पुरि शङ्गमुम् इन्द प्पूदलम् काप्पदर्कु* एन्ऱु
इडैये* इरामानुश मुनि आयिन इन्निलत्ते॥३३॥</td><td>पद्मश्री लक्ष्मी के नाथ सुदर्शन चक्र, नन्दकी खड्ग, कौमोदकी गदा, शारंग धनुष, एवं दक्षिणावर्ती पाञ्चजन्य शंख धारण करते हैं। अच्छे लोगों की रक्षा के लिये ये सभी रामानुज मुनि के रूप में आये हैं। **2823**</td></tr>
<tr><td>निलत्तै च्चॆरुत्तुण्णुम् नीश क्कलियै* निनैप्परिय
पलत्तै च्चॆरुत्तुम्* पिरङ्गियदिल्लै* एन् पॆय् विनै तॆन्
पुलत्तिल् पॊरित्तव प्पुत्तग च्चुम्मै पॊरुक्किय पिन्*
नलत्तै प्पॊरुत्तदु* इरामानुशन् तन् नय प्पुगळे॥३४॥</td><td>यद्दपि घोर कलि के सर्वव्यापी कल्पनातीत शक्ति का नाश हो गया था परंतु रामानुज का प्रभाव द्दष्टिगोचर नहीं हो पाया। जब नरक के लेखा में हमारे पूर्व के पापों को मिटा दिया गया तब रामानुज की महानता सूर्य के तरह चमक उठी। **2824**</td></tr>
<tr><td>नयवेन् ऑरु दॆय्वम् नानिलत्ते* शिल्ल मानिडत्तै
प्पुयत्ले एन* क्कवि पोट्टि शॆय्येन्* पॊन् अरङ्गम् एन्निल्
मयत्ले पॆरुगुम् इरामनुशन्* मन्नु मा मलर्त्ताळ्
अयरेन्* अरुविनै एन्नै एव्वारिन्ऱडरप्पदुवे॥३५॥</td><td>धरा पर मैं किसी देव की पूजा नहीं करूंगा। ‘हे मेघ’ कहते हुए मरणाधर्मा की प्रशंसा नहीं करूंगा। लेकिन रामानुज के चरणारविंद को कभी नहीं भुलूंगा जो केवल तिरूअरंगम का नाम मात्र लेने से प्रेम की बाढ़ से उत्प्लावित कर देते हैं। कर्म कैसे कभी भी हमारे पास आयेगा ? **2825**</td></tr>
<tr><td>अडल् कॊण्ड नेमियन् आरुयिर् नादन्* अन्ऱारण च्चॊल्
कडल् कॊण्ड ऑण् पॊरुळ् कण्डळिप्प* पिन्नुम् काशिनियोर्
इडरिन्कण् वीळ्न्दिड तानुम् अव् ऑण्पॊरुळ् कॊण्डु* अवर् पिन्
पडरुम् गुणन्* एम् इरामानुशन् तन् पडि इदुवे॥३६॥</td><td>चक्रधारण करने वाले सभी जीवों के नाथ ने पुरा काल में अर्जुन को वेद का छिपा हुआ रहस्य बताया। उस समय भी जो उदासी की वेदना से ग्रस्त थे प्रभु ने उन्हें अच्छे मार्ग का परामर्श दिया, और इस तरह से रामानुज का पदार्पण हुआ। **2826**</td></tr>
<tr><td>पडि कॊण्ड कीर्त्ति इरामायणम् एन्नुम् पत्ति वॆळ्ळम्*
कुडि कॊण्ड कोयिल्* इरामानुशन् गुणम् कूरुम्* अन्बर्
कडि कॊण्ड मा मलर् त्ताळ् कलन्दुळ्ळम् कनियुम् नल्लोर्*
अडि कण्डु कॊण्डुगन्दु* एन्नैयुम् आळ् अवर्क्काक्किनरे॥३७</td><td>भक्तिभाव से ओतप्रोत जगप्रसिद्ध रामायण को रामानुज ने अपने ह्रदय में रखा। आपके प्रंशसनीय भक्त कुरत्ताळवान एवं चरण वंदनीय ह्रदयद्रावी संत पराशर भट्ट ने इस अधम में आशा की किरण देखकर अपनी सेवा में लगा लिया। **2827**</td></tr>
<tr><td>आक्कि अडिमै निलैप्पित्तनै* एन्नै इन्ऱवमे
पोक्कि प्पुरत्तिट्टदॆन् पॊरुळा मुन्बु* पुण्णियर् तम्
वाक्किल् पिरिया इरामानुश ! निन् अरुळिन् वण्णम्*
नोक्किल् तॆरिवरिदाल्* उरैयाय् इन्द नुण् पॊरुळे॥३८॥</td><td>सौभाग्यशालियों से प्रशंसित रामानुज ! आपने आज हमें अपना सेवक बनाकर अपनी करूणा का प्रदर्शन किया है। लेकिन हमें स्वच्छंद छोड़कर क्यों हमारे जीवन के इन वर्षों को आपने व्यर्थ जाने दिया ? हाय ! इस सूक्ष्म बात को मैं समझ नहीं सकता, कृपया बतायें। **2828**</td></tr>
<tr><td>पॊरुळुम् पुदल्वरुम् बूमियुम्* पूङ्गुळलारुम् एन्ऱे
मरुळ् कॊण्डिळैक्कुम्* नमक्कु नॆञ्जे !* मट्रुळार् तरमो
इरुळ् कॊण्ड वॆम् तुयर् माट्रि त्तन् ईरिल् पॆरुम् पुगळे*
तॆरुळुम् तॆरुळ् तन्दु* इरामानुशन् शॆय्युम् शेमङ्गळे॥३९॥</td><td>हे ह्रदय ! संतान संपत्ति एवं पत्नी की मृगमरीचिका में दौड़ते हुए हम अपनी शक्ति व्यर्थ गंवा दिये। रामानुज ने यातना एवं अंधकार के जीवन को बदलते हुए हमें आपको समझने की बुद्धि दी। क्या अन्य कोई आपके सनातन गौरव के समान है ? **2829**</td></tr>
</table>

शेम नल् वीडुम् पॊरुळुम् दरुममुम्॰ शीरिय नल् काममुम् एन्रिवै नान्गॆन्वर्॰ नान्गिनुम् कण्णनुक्के आमदु कामम् अरम् पॊरुळ् वीडिदर्कॆन्ऱुरैत्तान्॰ वामनन् शीलन्॰ इरामानुशन् इन्द मण्मिशैये॥ ८०॥	संयम का व्रत रखने वाले रामानुज ने जगत को यह बताया कि जीवन के चार उद्देश्य हैंः सिद्धांत का जीवन (धर्म), अर्थ अर्जन (अर्थ), ईच्छा की पूर्त्ति (काम), एवं पुर्नजन्म से छुटकारा (मोक्ष)। इन सबों में कृष्ण को प्राप्त करना ही इच्छा पूर्त्ति है एवं अन्य तीन इसके सहायक हैं। **2830**
मण्मिशै योनिगळ् तोरुम् पिरन्दु॰ एङ्गळ् मादवने कण्णुर निर्किलुम् काणगिल्ला॰ उलगोर्गळ् एल्लाम् अण्णल् इरामानुशन् वन्दु तोन्रिय अप्पॊळुदे॰ नण्णरु ञानम् तलैक्कॊण्डु॰ नारणर्कायिनरे॥ ८१॥	यद्दपि माधव हर गर्भ मे प्रवेश कर जन्म लेते हैं एवं हमारी आंखों के सामने खड़े होते हैं हम आपको देखने में असमर्थ हैं। जबकि रामानुज के एक अवतार से सबों का नारायण के चरणों तक जाने का सूक्ष्म ज्ञान मिल गया है। **2831**
आयिळैयार् कॊङ्गै तङ्गुम्॰ अ क्कादल् अळट्ळुन्दि मायुम् एन् आवियै॰ वन्देडुत्तान् इन्रु॰ मा मलराळ् नायकन् एल्ला उयिर्गट्कुम् नादन्॰ अरङ्गन् एन्नुम् तूयवन्॰ तीदिल् इरामानुशन् तॊल् अरुळ् शुरन्दे॥ ८२॥	सत्वगुण संपन्न रामानुज ने बताया कि पद्मश्री पति अरंगन ही सभी जीवों के नाथ हैं। अपनी असीम कृपा से आपने नारियों के उरोज प्रेम के कीचड़ से हमें खींचकर बाहर निकाला एवं हमारी रक्षा की। **2832**
शुरक्कुम् तिरुवुम् उणर्वुम्॰ शॊलप्पुगिल् वाय् अमुदम् परक्कुम् इरु विनै पट्र ओडुम्॰ पडियिल् उळ्ळीर् उरैक्किन्रनन् उमक्कु यान् अरम् शीरुम् उरु कलियै॰ तुरक्कुम् पॆरुमै॰ इरामानुशन् एन्रु शॊल्लुमिने॥ ८३॥	हे जगत के लागों ! आत्मविनाशक कलि से निपटने का हम एक महान रास्ता बताते हैं। 'रामानुज' कहो। जैसे ही यह काम करोगे तुम्हारी बुद्धि धवल सात्विक हो जायेगी, मुंह अमृत से भर जायेगा, एवं जन्म मरण की यातनायें भाग जायेंगी। **2833**
शॊल्लार् तमिळ् ऒरु मून्रुम्॰ शुरुदिगळ् नान्गुम् एल्लै इल्ला॰ अरनॆरि यावुम् तॆरिन्दवन्॰ एण् अरुम् शीर् नल्लार् परवुम् इरामानुशन् तिरुनामम् नम्बि॰ कल्लार् अगल् इडत्तोर्॰ एदु पॆर्रॆन्रु कामिप्परे॥ ८४॥	अच्छे लोग रामानुज को सभी धर्मो द्वारा बताये गये अनेकों धर्म मार्ग के ज्ञाता के रूप में जानते हैं । आप चारो वेद के ज्ञाता हैं तथा मधुर तमिल के तीन आयामों में निपुण हैं ः कविता, संगीत, एवं नाटक। जो आपका नाम विश्वास पूर्वक नहीं लेते वे किस उद्देश्य से इस संसार में रहते हैं ? **2834**
पॆरॊन्रु मट्रिल्लै निन् शरण् अन्रि॰ अ प्पेरळित्तर्- कारॊन्रुम् इल्लै मट्र च्चरण् अन्रि॰ एन्रि प्पॊरुळैत् तेरुम् अवरक्कुम् एनक्कुम् उनै त्तन्द शॆम्मै शॊल्लाल्॰ कूरुम् परमन्रु॰ इरामानुश मॆय्म्मै कूरिडिले॥ ८५॥	रामानुज ! आपके चरण को प्राप्त करने से बड़ा उद्देश्य नहीं हो सकता एवं आपके चरणों की कृपा के बिना यह मिल नहीं सकता। जो यह जानते हैं वे इसे महत रूप में प्राप्त कर चुके हैं जैसा आपने आज हमें दिया। कितना दिया ? यह कहना हमारे शब्दो से परे है।? **2835**

कूऱुम् शमयङ्गळ् आऱुम् कुलैय⋆ कुवलयत्ते मारन् पणित्त⋆ मऱै उणर्न्दोनै⋆ मदियिलियेन् तेऱुम् पडि एन् मनम् पुगुन्दानै⋆ दिशै अनैत्तुम् एऱुम् गुणनै⋆ इरामानुशनै इऱैञ्जिनमे॥ ८६॥	श्रीभाष्यम् प्रदान करने वाले रामानुज की हम प्रशस्ति गाते हैं। आपने मारन शडगोपन के तमिल वेद के सार को समझ कर छः मार्ग के द्वंद को समाप्त किया। हमारे अधम हृदय में प्रवेश कर आपने हमारे विचार को निर्मल कर दिया। **2836**
इऱैञ्ज प्पडुम् परन् ईशन् अरङ्गन् एन्ऱु⋆ इव्वुलग त्तऱम् शॆप्पुम्⋆ अण्णल् इरामानुशन्⋆ एन् अऱुविनैयिन् तिऱम् शॆट्रिरवुम् पगलुम् विडादॆन्ऱन् शिन्दैयुळ्ळे⋆ निऱैन्दॊप्पर इरुन्दान्⋆ एनक्कारुम् निगर् इल्लैये ! ॥ ८७॥	हमारे प्रवीण रामानुज ने संसार को विश्वास दिलाया कि रंगनाथ के प्रभु ही ब्रह्मांड के पूजनीय नाथ हैं। आप अद्वितीय हैं एवं हमारे घोर कर्मो को चूर करते हुए हमारे हृदय में दिन रात निवास करते हैं। अब संसार में कौन मेरी बराबरी कर सकता है ? **2837**
निगर् इन्ऱि निन्ऱ एन् नीशदैक्कु⋆ निन् अरुळिन्कण् अन्ऱि प्पुगल् ऑन्ऱुम् इल्लै⋆ अरुट्कुम् अग्ते पुगल्⋆ पुन्मैयिलोर् पगरुम् पॆरुमै इरामानुश ! इनि नाम् पळुदे⋆ अगलुम् पॊरुळ् एन्⋆ पयन् इरुवोमुक्कुम् आन पिन्ने॥ ८८॥	सात्विकों से प्रशंसित रामानुज ! आपकी दया के सिवा हमारे जैसे अधम के लिये कोई आश्रय नहीं है। हमारे सिवा आपकी दया अन्यत्र जा भी नहीं सकती। जब दोनों एकही मार्ग का अवलंबन करें तो फिर दोनों को अलग रखना निरर्थक नहीं है क्या ? **2838**
आनदु शॆम्मै अऱनॆऱि⋆ पॊय्म्मै अऱु शमयम् पोनदु पॊन्ऱि⋆ इऱन्ददु वॆम् कलि⋆ पूङ्कमल त्तेन् नदि पाय् वयल् तॆन् अरङ्गन् कळल् शॆन्नि वैत्तु⋆ तान् अदिल् मन्नुम्⋆ इरामानुशन् इत्तलत्तुदित्ते॥ ८९।	दक्षिणी अरंगम खेतों एवं कमल फूलों की अमृतमयी नदियों से घिरा है। रामानुज ने रंगनाथ के चरण को अपने सिर पर रखा तथा अपने को रंगनाथ के चरणों पर रख दिया। धरा पर रामानुज के अवतार के बाद छः नास्तिक मतों का प्रसार समाप्त हो गया तथा धर्म का मार्ग स्थापित हुआ एवं कलि पर विजय प्राप्त कर लिया गया। **2839**
उदिप्पन उत्तमर् शिन्दैयुळ्⋆ ऑन्नलर् नॆञ्जमञ्जि कॊदित्तिड⋆ मारि नडप्पन⋆ कॊळ्ळै वन् कुट्रम् एल्ला पदित्त एन् पुन् कवि प्पाविनम् पूण्डन पावु तॊल् शीर्⋆ एदि त्तलै नादन्⋆ इरामानुशन् तन् इणै अडिये॥ ५०	यतिराज एवं शाश्वत यश वाले रामानुज के चरणारविंद अच्छे लोगों के विचार में प्रभात की छटा विखेरते हैं। विरोधियों को भयाक्रांत करते हुए वे उनके हृदय को विदीर्ण कर देते हैं। हमारे दोषपूर्ण एवं निम्नस्तर की कविता के वे सुधी धारक हैं। **2840**
अडियै त्तॊडर्न्दॆळुम् ऐवर्गट्काय्⋆ अन्ऱु बारत प्पोर् मुडिय⋆ प्परि नॆडुन् तेर् विडुम् कोनै⋆ मुळुदुणर्न्द अडियर्क्कमुदम् इरामानुशन् एन्नै आळ वन्दु⋆ इ– प्पडियिल् पिऱन्ददु⋆ मट्रिल्लै कारणम् पार्त्तिडिले॥ ५१॥	पुराकाल में प्रभु ने भारत के युद्ध में पांच पांडवों के लिये घोड़ेवाले रथ को हंकाया। अब आपही भक्तों के अमृत रामानुज बनकर हमारी उन्नति के लिये अवतार लिये हैं। हम इसमें अन्य कारण तो नहीं देखते। **2841**
पार्त्तान् अऱु शमयङ्गळ् पदैप्प⋆ इप्पार् मुळुदुम् पोर्त्तान् पुगळ् कॊण्डु⋆ पुन्मैयिनेनिडै त्तान् पुगुन्दु⋆ तीर्त्तान् इरु विनै तीर्त्तु⋆ अरङ्गन् शॆय्य ताळ् इणैयो– डार्त्तान्⋆ इवै एम् इरामानुशन् शॆय्युम् अर्बुदमे॥ ५२॥	अपने दर्शन से रामानुज ने छः नास्तिक मतों को पराजित कर चतुर्दिक अपना यश फैलाया। हमारे अधम हृदय में प्रवेश कर युगल कर्मो का अंत किया तथा हमें रंगनाथ के चरणारविंद से लागी लगा दिये। ये आपके कुछ चमत्कारिक कृत्य हैं। **2842**

अर्पुदन् शॅम्मै इरामानुशन्⋆ एन्नै आळ वन्द कर्पगम् कट्वर्⋆ कामुऱु शीलन्⋆ करुदरिय पर्पल् उयिर्गळुम् पल् उलगु यावुम् परनदॆन्नुम्⋆ नर्पॊरुळ् तन्नै⋆ इन् नानिलत्ते वन्दु नाट्टिनने॥५३॥	आश्चर्यमय गौरवशाली रामानुज हमारे कल्प वृक्ष हैं। आपको विद्वतजन चाहते हैं एवं हम पर शासन करने के लिये आये। आपने क्लिष्ट सिद्धांत का प्रतिपादन कर यह बताया कि सारा जगत प्रभु का आवास है एवं सभी जीव प्रभु की आत्मा हैं। **2843**
नाट्टिय नीश च्चमयङ्गळ् माण्डन⋆ नारणनै काट्टिय वेदम् कळिप्पुट्टदु⋆ तॆन् कुरुगै वळ्ळल् वाट्टम् इला वण् तमिळ् मऱै वाळ्न्ददु⋆ मण्णुलगिल् ईट्टिय शीलत्तु⋆ इरामानुशन् तन् इयल्वु कण्डे॥५४॥	रामानुज दर्शन की अच्छाई को देखकर नीच नास्तिक सब विखर गये। वैदिक सत्य नारायण का सुखद प्रतिपादन हुआ। दक्षिणी कुरूगुर के सन्त का आनन्ददायी तमिल वेद को नया जीवन मिला। **2844**
कण्डवर् शिन्दै कवरुम्⋆ कडि पॊळिल् तॆन् अरङ्गन्⋆ तॊण्डर् कुलावुम् इरामानुशनै⋆ तॊगै इऱन्द पण् तरु वेदङ्गळ् पार्मेल् निलविड प्पार्त्तरुळुम्⋆ कॊण्डलै मेवि तॊळुम्⋆ कुडियाम् एङ्गळ् कोक्कुडिये॥५५॥	सुगंधित बागों से घिरे दक्षिण अरंगम के प्रभु के भक्तगन रामानुज की प्रशस्ति गाने में आनंद मनाये। आपने तमिल वेद के गान की परंपरा स्थापित की। जो आपको मेघ सा उदार मान कर पूजा करते हैं वे हमारे वंशानुगत स्वामी हैं। **2845**
को क्कुल मन्नरै मूवॆळु काल्⋆ ऑरु कूर् मळुवाल् पोक्किय देवनै⋆ पोट्रुम् पुनिदन्⋆ बुवनम् एङ्गुम् आक्किय कीर्त्ति इरामानुशनै अडैन्द पिन्⋆ एन् वाक्कुरैयादु⋆ एन् मनम् निनैयादिनि मट्रॊन्ऱैये॥५६॥	जग से सम्मानित हमारे पावन आचार्य रामानुज युद्ध में फरसा चलाकर इक्कीस राजाओं का अंत करने वाले प्रभु की चरणवंदना करते हैं। आपको पाकर हमारा हृदय अन्य कुछ नहीं सोचता तथा हमारा होंठ अन्य कुछ नहीं बोलता। **2846**
मट्रॊरु पेऱु मदियादु⋆ अरङ्गन् मलर् अडिक्काळ् उट्रवरे⋆ तनक्कुट्रवराय् क्कॊळ्ळुम् उत्तमनै⋆ नल् तवर् पोट्रुम् इरामानुशनै⋆ इन् नानिलत्ते पॆट्रनन⋆ पॆट्रपिन मट्ररियेन ऑरु पेदैमैये॥५७॥	अन्य किसी चीज से प्रभावित न होकर यतिराज रामानुज ने रंगनाथ के भक्तों के चरणों को अपना प्रिय माना। आपकी दया से सौभाग्यशाली बन हमारा हृदय अन्य कुछ नहीं चाहता। **2847**
पेदैयर् वेद प्पॊरुळ् इदॆन्ऱुन्नि⋆ पिरमम् नन्ऱॆन्ऱु ओदि मट्रॆल्ला उयिरुम् अह्तॆन्ऱु⋆ उयिर्गळ् मॆय्वि- ट्टादि प्परनॊडॊन्ऱाम् एन्ऱु शॊल्लुम् अव्वल्लल् एल्लाम्⋆ वादिल् वॆन्ऱान्⋆ एम् इरामानुशन् मॆय्म् मदिक्कडले॥५८॥	यह मानते हुए कि वेद का सार आत्म ज्ञान प्राप्त करना है बालसिद्धांत वालों ने चैतन्य को ब्रह्म मान लिया तथा जड़ जगत का तिरस्कार कर दिया। उनलोगों ने आगे बताया कि शरीर त्यागने पर जीव सर्वेसर्वा से मिल जाता है। हमारे रामानुज इनसब अनर्गल बातों पर अपने सिद्धांत के बेजोड़ तर्क एवं गहरे विचार से विजय प्राप्त किये।**2848**
कडल् अळवाय दिशै एट्टिनुळ्ळुम्⋆ कलि इरुळे मिडैदरु कालत्तिरामानुशन्⋆ मिक्क नान्मऱैयिन् शुडर् ऑळियाल् अव्विरुळै तुरत्तिलनेल्⋆ उयिरै उडैयवन्⋆ नारणन् एन्ऱरिवार् इल्लै उट्रुणर्न्दे॥५९॥	कलि के समसामयिक काल में जबकि अंधकर आठों दिशाओं में फैलकर सागर पर्यन्त व्याप्त है अगर रामानुज चार वेदों के प्रकाश से अंधकार का नाश नहीं किये होते तो हमलोग इस सच्चाई के ज्ञान से दूर रह जाते कि नारायण ही सारे जीव के प्रभु एवं नाथ हैं। **2849**

उणर्न्द मॆय्ञ्ञानियर् योगम् तॊरुम्⋆ तिरुवाय् मॊऴियिन् मणम् तरुम्⋆ इन्निशै मन्नुम् इडन्दॊरुम्⋆ मामलराळ् पुणर्न्द पॊन् मार्बन् पॊरुन्दुम् पदिदॊरुम् पुक्कुनिर्कुम्⋆ गुणम् तिगऴ् कॊण्डल्⋆ इरामानुशन् एम् कुल क्कॊऴुन्दे ॥६०॥	जहां प्रभु को समझने वाले जीवों की पंक्तियां हों, जहां तिरूवायमोळि का संगीत बजता हो, जहां अपने वक्षस्थल पर पद्मश्री लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु रहते हों, उदार एवं हमारे कुल के स्वामी रामानुज वहीं प्रवेश कर टिकते हैं। **2850**
कॊऴुन्दु विट्टोडि प्पडरुम् वॆङ्गोळ् विनैयाल्⋆ निरय- त्तऴुन्दियिट्टेनै वन्दाट् कॊण्ड पिन्नुम्⋆ अरु मुनिवर् तॊऴुम् तवत्तोन् एम् इरामानुशन् तॊल् पुगऴ्⋆ शुडर् मि कॆऴुन्ददु⋆ अत्ताल् नल् अदिशयम् कण्डदिरुनिलमे ॥६१॥	पाप के नित्य बढ़ते जहरीले गुच्छे में हम फंस गये थे परंतु रामानुज आये और हमारे स्वामी बने।इसके बाद भी यह संत, योगियों से पूजित हो, शाश्वत यश की ज्योति के साथ बढ़ते गये। इस जगत ने यह चमत्कार देखा है। **2851**
इरुन्देन् इरु विनै प्पाशम् कऴट्टि⋆ इन्रु यान् इरैयुम् वरुन्देन् इनि एम् इरामानुशन्⋆ मन्नु मामलर् त्ताळ् पॊरुन्दा निलै उडै प्पुन्मैयिनोर्क्कॊन्रुम् नन्मै शॆय्या⋆ पॆरुन् देवरै प्परवुम्⋆ पॆरियोर् तम् कऴल् पिडित्ते ॥६२॥	देवाधिराजा को पूजने वाले कुरत्ताळवार की शाश्वत कृपा सबों को मिली जो रामानुज के चरण में शरण लिये। कुरत्ताळवार के चरण को पकड़े रहने से हम पर पाप की पकड़ ढ़ीली पड़ गयी है। अब हमें कोई दुख नहीं है। **2852**
पिडियै त्तॊडरुम् कळिरॆन्न⋆ यान् उन् पिरङ्गिय शीर् अडियै त्तॊडरुम् पडि नल्ग वेण्डुम्⋆ अरु शमय- च्चॆडियै त्तॊडरुम् मरुळ् शॆरिन्दोर् शिदैन्दोड वन्दु⋆ इ- प्पडियै त्तॊडरुम्⋆ इरामानुश ! मिक्क पण्डितने ! ॥६३॥	महान विद्वान रामानुज ! जो छः नास्तिक मतों के अंधविश्वासी हैं वे धरा पर यत्र तत्र आपके द्वारा पीछा करने के कारण भागे चल रहे हैं।हमें आशीष दें कि आपके चरणाविंद का पीछा हम उसीतरह करते रहें जैसे वृषभ गाय की करता है। **2853**
पण् तरु मारन् पशुन्दमिऴ्⋆ आनन्दम् पाय् मदमाय् विण्डिड एङ्गळ् इरामानुश मुनि वेऴम्⋆ मॆय्म्मै कॊण्ड नल् वेद क्कॊऴुन्दण्डम् एन्दि⋆ क्कुवलयत्ते मण्डि वन्देन्रदु⋆ वादियर्गाळ् ! उङ्गळ् वाऴ्वट्रदे ॥६४॥	निरर्थक शास्त्रार्थ वाले ! सावधान ! मधुर तमिल पण वाले तिरूवायमोळी के मद से मत्त एवं वैदिक सत्य रूपी भारी सूंढ़ वाला रामानुज नामक हाथी उन्मत्त हो सर्वत्र घूम रहा है। तुमलोगों के जीवन का अंत हो गया है। **2854**
वाऴ्वट्रदु तॊल्लै वादियर्क्कु⋆ एन्रुम् मरैयवर् तम् ताऴ्वट्रदु⋆ तवम् तारणि पॆट्रदु⋆ तत्तुव नूल् कूऴ् अट्रदु कुट्रम् एल्लाम् पदित्त गुणत्तिनर्क्कु⋆ अन् नाऴ् अट्रदु⋆ नम् इरामानुशन् तन्द ञानत्तिले ॥६५॥	रामानुज ने जो ज्ञान दिया है उससे उपनिषद के सभी विवादों का अंत हो गया है। निरर्थक शास्त्रार्थ वाले का प्रभाव समाप्त हो गया है।वैदिक ऋषियों को ऊंचा स्थान मिला है। जगत का बहुत कल्याण हुआ है। दोषी जीवन के युगल कर्मो का नाश हो गया है। **2855**
ञानम् कनिन्द नलम् कॊण्डु⋆ नाळ् तॊरुम् नैबवर्क्कु वानम् कॊडुप्पदु मादवन्⋆ वल्विनैयेन् मनत्तिल् ईनम् कडिन्द इरामानुशन् तन्नै एय्दिनर्क्कु⋆ अ- त्तानम् कॊडुप्पदु⋆ तन् तगवॆन्नुम् शरण् कॊडुत्ते ॥६६॥	जो ज्ञान से परिपक्व हृदय से नित्य पूजा करते हैं उन्हें माधव प्रभु आकाश जगत का मोक्ष देते हैं। हमारे हृदय की कमियों को दूर करने वाले रामानुज भी शरणागत को दयावश वही पद प्रदान करते हैं। **2856**

शरणम् अडैन्द दरुमनुक्का⋆ पण्डु नूट्रवरै मरणम् अडैवित्त मायवन् तन्नै⋆ वणङ्ग वैत्त करणम् इवै उमक्कन्रॆन्रि इरामानुशन्⋆ उयिर्ग- ट्करण् अङ्गमैत्तिलनेल्⋆ अरणार् मट्रिव्वारुयिर्क्के॥ ६७॥	आश्चर्यमय प्रभु ने सौ जनों के ऊपर शरणागत धर्मपुत्र को विजय दिलवायी। रामानुज ने हमलोगों को यह बताया कि हमारे अंग प्रभु की सेवा के लिये हैं जो यातनाग्रस्त जीवों को शरण देते हैं। **2857**
आर् एनक्किन्रु निगर् शॊल्लिल्⋆ मायन् अन्रैवर् दॆय्व त्तेरिनिल् शॆप्पिय गीदैयिन्⋆ शॆम्मै प्पॊरुळ् तॆरियप् पारिनिल् शॊन्न इरामानुशनै पणियुम् नल्लोर्⋆ शीरिनिल् शॆन्रु पणिन्ददु⋆ एन् आवियुम् शिन्दैयुमे॥ ६८	आश्चर्यमय प्रभु ने पुराकाल में सौ जनों से पांच की लड़ाई में अर्जुन के रथ चलाते समय उसे गीता सुनायी। हमारे स्वामी रामानुज ने इसकी रसासिक्त व्याख्या से जगत को अर्थ समझाया। आपके ही भक्तों की अच्छाई में हमारा हृदय एवं आत्मा स्नान करते हैं। बताओ हमारा शिरमौर कौन है ? **2858**
शिन्दैयिनोडु करणङ्गळ् यावुम् शिदैन्दु⋆ मुन्नाळ् अन्दम् उट्राळन्ददु कण्डु⋆ अवै एन् तनक्कन्ररुळाल् तन्द अरङ्गनुम् तन् शरण् तन्दिलन्⋆ तान् अदु तन्दु⋆ एन्दै इरामानुशन् वन्देडुत्तनन् इन्रॆन्नैये॥ ६९ ॥	प्रलयकाल में सभी जीव बुद्धि एवं इन्द्रियां को नष्ट हो जाने पर आत्मा में शिथिल थे। यह देखते हुए अरंगम के प्रभु ने उनसबों की आत्मा को ठीक कर इन्द्रियों को कार्यशील कर दिया। परंतु आपने हमें उस हद तक आश्रय नहीं दिया जो रामानुज ने हमें ऊपर उठाकर आज दिया है। **2859**
एन्नैयुम् पार्त्तेन् इयल्वैयुम् पार्त्तु⋆ एण्णिल् पल् गुणत्त उन्नैयुम् पार्क्किल्⋆ अरुळ् शॆय्वदे नलम्⋆ अन्रि एन्बाल् पिन्नैयुम् पार्क्किल् नलम् उळदे उन् पॆरुम् करुणै⋆ तन्नै एन् पार्प्पर्⋆ इरामानुश ! उन्नै च्चार्न्दवरे॥ ७०॥	हे रामानुज ! मुझे एवं मेरे स्वभाव को देखते हुए एवं आपके अनंत गुण को देखते हुए आपकी कृप्रा ही हमारे लिये कल्याणकारी है। इसके बाद भी अगर आप मुझमें कुछ गुण देखते हैं तो आपके भक्तगन आपकी असीम करूणा के बारे में क्या कहेंगे ? **2860**
शार्न्ददॆन् शिन्दै उन् ताळ् इणैक्कीळ्⋆ अन्बु तान् मिगवुम् कूरन्ददु⋆ अ त्तामरै त्ताळ्गळुक्कु⋆ उन् तन् गुणङ्गळुक्के तीर्न्ददॆन् शॆय्गै मुन् शॆय्विनै नी शॆय्विनै⋆ अदनाल् पेर्न्ददु⋆ वण्मै इरामानुश ! एम् पॆरुन् तगैये॥ ७१॥	हे उदार एवं कल्याणकारी रामानुज ! हमारा ध्यान सदा आपके चरणारविंद पर रहता है। मेरा सारा स्नेह इन कमल द्वय पर न्योछावर है। आपके कल्याणकारी गुण में हमारी सेवा समाहित हो गयी है। आपके कारण हमारे पूर्व के कर्मो का नाश हो गया है। **2861**
कैत्तनन् तीय शमय क्कलगरै⋆ काशिनिक्के उय्त्तनन्⋆ तूय मरैनॆरि तन्नै⋆ एन्रुन्नि उळ्ळम् नॆय्त्त अन्बोडिरुन्देत्तुम् निरै पुगळोरुडने⋆ वैत्तनन् एन्नै⋆ इरामानुशन् मिक्क वण्मै शॆय्दे॥ ७२॥	रामानुज ने हमें उनकी संगत में रखा है जिनका हृदय इस बात से द्रवित होते रहता है कि आपने नास्तिकों से जगत को मुक्त कर वैदिक मार्ग को स्थापित किया है। यह हमारे स्वामी की असीम करूणा है। **2862**

वण्मैयिनाल्लुम् तन् मा तगवाल्लुम्⋆ मदि पुरैयुम् तण्मैयिनाल्लुम्⋆ इ त्तारणियोर्गट्कु⋆ तान् शरणाय् उण्मै नल् ज्ञानम् उरैत्त इरामानुशनै⋆ उन्नुम् तिण्मै अल्लाल् एनक्किल्लै⋆ मट्रोर् निलै तेर्न्दिडिले॥७३॥	अत्यंत उदारता, दया, एवं चंद्र के समान शांति से रामानुज ने जगत को आश्रय देते हुए वेद के सत्य एवं ज्ञान को प्रकाशित किया। यह सोच लो आपके चरण का ध्यान के सिवा हमारी कोई इच्छा नहीं है। **2863**
तेरार् मरैयिन् तिरम् एन्रु⋆ मायवन् तीयवरै कूराळि कॉण्डु कुरैप्पदु⋆ कॉण्डल् अनैय वण्मै एरार् गुणत्तॆम् इरामानुशन्⋆ अव्वॆळिल् मरैयिल् शेरादवरै च्चिदैप्पदु⋆ अप्पोदॊरु शिन्दै शॆय्दे॥७४॥	भयदायी समय चक्र के माध्यम से आश्चर्यमय प्रभु दुष्टों का अंत करते हैं जो वेद के मार्ग का अवलंबन नहीं करते। जबकि मेघ समान शीतल रामानुज उन्हें तथ्य से समझाकर तेजोमय वैदिक मार्ग पर लाते हैं। **2864**
शॆय्त्तलै च्चङ्गम् शॆळु मुत्तम् ईनुम्⋆ तिरुवरङ्गर् कैत्तलत्ताळियुम् शङ्गमुम् एन्दि⋆ नम् कण् मुगप्पे मॆय्त्तलैत्तुन्नै विडेन् एन्रिरुक्किलुम्⋆ निन् पुगळे मॊय्त्तलैक्कुम् वन्दु⋆ इरामानुश ! एन्नै मुट्रुम् निन्रे॥७५॥	हे रामानुज ! मोती एवं शंख देने वाले सिंचित खेतों से घिरे अरंगम के प्रभु सुन्दर हाथों में चक्र शंख धारण कर हमारी नयनों मे बसते हुए कहते हैं 'मैं तुझे कभी नहीं छोडूंगा' । फिर भी आपके गौरव से हम खींच कर प्रेतात्मा से ग्रस्त की भांति कूदते हैं। **2865**
निन्र वण् कीर्त्तियुम् नीळ् पुनलुम्⋆ निरै वेङ्गड प्पॊन् कुन्रमुम्⋆ वैगुन्द नाडुम् कुलविय पार्कडलुम्⋆ उन्रनक्कॆत्तनै इन्बम् तरुम् उन् इणैमलर् त्ताळ्⋆ एन् तनक्कुम् अदु⋆ इरामानुश ! इवै ईन्दरुळे॥७६॥	हे रामानुज ! वेंकटम पर्वत, वैकुंठ, एवं क्षीरसागर से समेकित आनंद जो आप बटोरते हैं वैसा ही आनंद हमें आपके चरणारविंद के ध्यान से मिलता है। विनती है, दास को अनुगृहीत करें। **2866**
ईन्दनन् ईयाद इन्नरुळ्⋆ एण्णिल् मरै क्कुरुम्बै प्पायन्दनन्⋆ अम्मरै प्पल् पॊरुळाल्⋆ इ प्पडि अनैत्तुम् एय्न्दनन् कीर्त्तियिनाल् एन् विनैगळै⋆ वेर् परिय कायन्दनन्⋆ वण्मै इरामानुशर्कॆन् करुत्तिनिये॥७७॥	रामानुज ने कल्पनातीत उदारतापूर्ण करूणा की वर्षा की। प्रगाढ़ वैदिक ज्ञान से आपने नास्तिक विचारों को हटाया। सारे संसार में आपका यश फैल गया है। हमारे कर्म को आपने जड़ से निकाल दिया है। मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि योग्य जन अब इसके बाद क्या करेंगे ? **2867**
करुत्तिल् पुगुन्दुळ्ळिल् कळ्ळम् कळट्टि⋆ करुदरिय वरुत्तत्तिनाल् मिग वञ्जित्तु⋆ नी इन्द मण्णगत्ते तिरुत्ति त्तिरुमगळ् केळ्वनुक्काक्किय पिन्⋆ एन्नॆञ्जिल् पॊरुत्त प्पडादु⋆ एम् इरामानुश ! मट्रोर् पॊय् प्पॊरुळे॥७८॥	हे रामानुज ! मेरे अधम हृदय में प्रवेश कर आप ने इसे अपना आवास बना लिया है।इसे दुष्ट कृत्यों से मुक्त रखते हुए अपनी करूणामयी प्रभाव से हमें सही रास्ते पर लाकर पदमश्री के पति की सेवा में लगा दिया। अब अनर्गल सिद्धांत हमारे मन में कभी नहीं आ सकते। **2868**
पॊय्यै च्चुरक्कुम् पॊरुळै त्तुरन्दु⋆ इन्द प्पूदलत्ते मॆय्यै प्पुरक्कुम् इरामानुशन् निर्क⋆ वेरु नम्मै उय्य क्कॊळ वल्ल दॆय्वम् इङ्गु यादॆन्रुलरन्दवमे⋆ ऐयप्पडा निर्पर्⋆ वैयत्तुळ्ळोर् नल्लरिविळन्दे॥७९॥	जब रामानुज इस संसार में सत्य के अभिभावक हैं एवं पाखंडी सिद्धांतो को नष्ट करने वाले हैं तब भी हाय ! लोग अन्य प्रभु की खोज में लगकर विखर रहे हैं तथा अपनी बुद्धि का नाश कर रहे हैं एवं द्वंद में जीवन यापन कर रहे हैं। **2869**

नल्लार् परवुम् इरामानुशन्⋆ तिरुनामम् नम्ब वल्लार् तिरत्तै⋆ मरवादवर्गळ् एवर्⋆ अवरक्के एल्ला इडत्तिलुम् एन्ऱुम् एप्पोदिलुम् ए त्तॊळुम्बुम्⋆ शॊल्लाल् मनत्ताल्⋆ करुमत्तिनाल् शॆय्वन् शोर्विन्ऱिये॥८०॥	जो उन अच्छे लोगों को याद करते हैं जिनका विश्वास मात्र रामानुज के नाम में है तथा इनकी प्रशंसा करते हैं, मैं केवल इन लोगों की सेवा बिना थके मन, वचन, कर्म से सर्वदा, सर्वत्र, सब मौसम में करूंगा। **2870**
शोर्विन्ऱि उन् तन् तुणै अडिक्कीळ्⋆ तॊण्डु पट्टवर्पाल् शार्विन्ऱि निन्ऱ एनक्कु⋆ अरङ्गन् शॆय्य ताळ् इणैगळ् पेर्विन्ऱि इन्ऱु पॆऱुत्तुम् इरामानुश !⋆ इनि उन् शीर् ऑन्ऱिय करुणैक्कु⋆ इल्लै माऱु तॆरिवुऱिले॥८१॥	हे रामानुज ! आपके चरण के अथक भक्तों की मैंने सेवा की है। आपने स्वयं हमें अरंगम के प्रभु के अरूणाभ चरणारविंद सदा के लिये दिया है। इस असीम करूणा के वदले हमें कुछ नहीं देना है। **2871**
तॆरिवुट्र ञालम् शॆऱिय प्पॆऱादु⋆ वॆम् तीविनैयाल् उरुवट्र ञानत्तुळल्गिन्ऱ एन्नै⋆ ऑरु पॊळुदिल् पॊरुवट्र केळ्वियन् आक्कि निन्ऱान् एन्न पुण्णियनो !⋆ तॆरिवुट्र कीरत्ति⋆ इरामानुशन् एन्नुम् शीर् मुगिले॥८२॥	विना सम्यक ज्ञान के हम अनभिज्ञ भ्रमात्क समझ के साथ घूम रहे थे। क्षण भर में रामानुज ने हमें वेजोड़ विद्वान बना दिया और हमारे पार्श्व में खड़े हो गये।जबकि संसार ने उत्साह से कहा 'क्या सौभाग्य है !' आप मेघ की तरह उदारता के लिय प्रसिद्ध हैं। **2872**
शीर् कॊण्डु पेरऱम् शॆय्दु⋆ नल् वीडु शॆऱिदुम् एन्नुम्⋆ पार् कॊण्ड मेन्मैयर् कूट्टन् अल्लेन्⋆ उन् पद युगमाम् एर् कॊण्ड वीट्टै एळिदिनिल् एय्दुवन्⋆ उन्नुडैय कार् कॊण्ड वण्मै⋆ इरामानुश ! इदु कण्डु कॊळ्ळे॥८३॥	हे रामानुज ! मैं जगत के योग्य जनों में नहीं हूं जो भक्ति योग के ऊंचे मार्ग का अनुसरण कर मोक्ष की पूर्णता को प्राप्त करते हैं। देखिये, आपके मेघ समान उदारता के कारण, सहज रूप में हम वैकुण्ठ की महान मुक्ति पा जायेंगे। **2873**
कण्डु कॊण्डेन् एम् इरामानुशन् तन्नै⋆ काण्डलुमे तॊण्डु कॊण्डेन्⋆ अवन् तॊण्डर् पॊन् ताळिल्⋆ एन् तॊल्लै वॆम्नोय् विण्डु कॊण्डेन् अवन् शीर् वॆळ्ळ वारियै⋆ वाय्मडुत्तिन्- ऱुण्डु कॊण्डेन्⋆ इन्नम् उट्रन ओदिल् उवप्पिल्लैये॥८४॥	मैंने रामानुज को पा लिया है और इसी के कारण हम इनके भक्तों के चरण को पा सके हैं एवं युगों पुरानी कर्म की यातना को काट सके हैं। आज हम इनके गौरव की नदी की बाढ़ में गहरे जाकर रस पान किये हैं। मैं और अधिक की मांग करने वाला था लेकिन इसका कोई अंत नहीं है। **2874**
ओदिय वेदत्तिन् उट्पॊरुळाय्⋆ अदन् उच्चि मिक्क शोदियै⋆ नादन् एन अऱियादुळल्गिन्ऱ तॊण्डर्⋆ पेदैमै तीरत्त इरामानुशनै त्तॊळुम् पॆरियोर्⋆ पादम् अल्लाल् एन् तन् आर् उयिरक्कु⋆ यादॊन्ऱुम् पट्रिल्लैये॥८५॥	जो लोग वेद पढ़ने में लगे रहते हैं लेकिन यह नहीं जान पाते कि वेद का सार या इसका सूक्ष्म तत्व इस बात में निहित है कि सर्वतेजोमय प्रभु ही इस ब्रह्मांड के नियंता हैं उनके लिये तथा अन्यों के लिये रामानुज पथ प्रदर्शक हैं। आपकी पूजा करने वाले हमारे स्वामी हैं। हमारे हृदय में इनलोगों की चरणों की सेवा छोड़कर अन्य कोई चाह नहीं है। **2875**
पट्रा मनिशरै प्पट्रि⋆ अप्पट्रु विडादवरे उट्रार् एन उळन्ऱोडि नैयेन् इनि⋆ ऑळ्ळिय नूल् कट्रार् परवुम् इरामानुशनै⋆ करुदुम् उळ्ळम् पॆट्रार् एवर्⋆ अवर् एम्मै निन्ऱाळुम् पॆरियवरे॥८६॥	हृदयहीन जनों को संवंधी कहते हुए,उनके स्नेह की चाह रखते हुए, श्रांत हो, अव हम और नहीं उनके पीछे दौड़ेंगे।जिनके हृदय शुद्ध हैं, जो पवित्र ग्रथों को पढ़ते हैं, एवं जो रामानुज की पूजा करते हैं, केवल वही हमारे स्वामी हैं, हम उनकी पूजा करते हैं। **2876**

पॅरियवर् पेशिलुम् पेदैयर् पेशिलुम्* तन् कुणङ्गट्कु उरियशॊल् एन्ऱुम्* उडैयवन् एन्ऱॆन्ऱु* उणर्विल् मिक्कोर् तॆरियुम् वण् कीर्त्ति इरामानुशन्* मऱै तॆर्न्दुलगिल् पुरियुम् नल् ञानम्* पॊरुन्दादवरै प्पॊरुम् कलियॆ॥८७॥	जो रामानुज को जानते हैं वे आपके लिये हमेशा प्रशंसा करते हैं 'आप चाहे विद्वान से बात करें या साधारण जन से, सदा आप सबों से अच्छे शब्दों में बात करते हैं,आदि आदि।' वेद के चुने हुए ज्ञान जो आपने संसार को दिया है वह सर्वदा प्राप्य है। जो ऐसा नहीं करते वे कलि की यातना से ग्रस्त रहते हैं। **2877**
कलि मिक्क शॆन्नॆल् कऴनि क्कुऱैयल्* कलै प्पॆरुमान् ऑलिमिक्क पाडलै उण्डु* तन् उळ्ळम् तडित्तु* अदनाल् वलि मिक्क शीयम् इरामानुशन् मऱै वादियराम्* पुलि मिक्कदॆन्ऱु* इव्वुवनत्तिल् वन्दमै पोट्रुवने॥८८॥	जब नास्तिक जन बाघ की भांति घूम रहे थे रामानुज हृदय को पण आधारित पद से शक्तिवान बनाकर उनलोगों पर सिंह के रूप में आये। उपजाऊ कुरैयालूर के राजा कलिकन्रि को हम सिर नवाते हैं। **2878**
पोट्रुम् शीलत्तिरामानुश* निन् पुगऴ् तॆरिन्दु शाट्रुवनेल् अदु ताऴ्वदु तीरिल्* उन् शीर् तनक्कोर् एट्रम् एन्ऱे कॊण्डिरुक्किलुम्* एन् मनम् एत्ति अन्ऱि आट्रगिल्लादु* इदर्कॆन् निनैवाय् एन्ऱिट्टञ्जुवने॥८९॥	हे रामानुज आपकी गाथा प्रशंसा से परे है। अगर मैं यह सोच कर आपकी प्रशस्ति गाऊं कि मैं आपके महान गुणों को जानता हूं यह नीच स्तर का होगा।अगर मैं यह कह कर छोड़ दूं कि यह हमारे बश का नहीं तो यह सही प्रशस्ति होगी। यह जानते हुए हमारा हृदय कभी भी आपकी प्रशंसा से संतुष्ट नहीं होता। मुझे भय है कि आप हमारे बारे में क्या सोचते होंगे। **2879**
निनैयार् पिऱवियै नीक्कुम् पिरानै* इन् नीऴ् निलत्ते एनै आळ वन्द इरामानुशनै* इरुङ्गविगळ् पुनैयार् पुनैयुम् पॆरियवर् ताळ्गळिल्* पून्दॊडैयल् वनैयार्* पिऱप्पिल् वरुन्दुवर् मान्दर् मरुळ् शुरन्दे॥९०॥	रामानुज हम पर शासन करने तथा हमें जन्म से मुक्त करने आये।जो आपके बारे में सोच नहीं सकते या प्रशंसा के पद नहीं गा सकते या आपके प्रशंसकों के चरण की पूजा नहीं कर सकते वे अंधकार के वाहक हैं तथा अनेकों जन्मों की यातना धरा पर भोगेंगे। **2880**
मरुळ् शुरन्दागम वादियर् कूऱुम्* अव प्पॊरुळाम् इरुळ् शुरन्दॆय्त्त* उलगिरुळ् नीङ्ग* त्तन् ईण्डिय शीर् अरुळ् शुरन्दॆल्ला उयिर्गट्कुम् नादन्* अरङ्गन् एन्नुम् पॊरुळ् शुरन्दान्* एम् इरामानुशन् मिक्क पुण्णियने॥९१॥	आगम के भ्रमात्मक व्याख्या करने वाले केवल क्षय एवं अंधकार की ओर ले जाते हैं। संसार को अंधकार से मुक्त करने के लिये रामानुज ने उदारपूर्ण करूणा की वर्षा करते हुए कहा कि अरंगम के प्रभु सभी जीवों के स्वामी हैं। आप एक पूर्णतया पवित्र जीव हैं। **2881**
पुण्णिय नोन्बु पुरिन्दुम् इलेन्* अडि पोट्रि शॆय्युम् नुण् अरुम् केळ्वि* नुवन्ऱुम् इलेन्* शॆम्मै नूल् पुलवर् कॆण् अरुम् कीर्त्ति इरामानुश! इन्ऱु नी पुगुन्दु* एन् कण्णुळ्ळुम् नॆञ्जुळ्ळुम्* निन्ऱ इ क्कारणम् कट्टुरैये॥९२॥	हे विद्वानों से अगम्य गौरव वाले रामानुज ! जाग्रत बनने के लिये हमने कोई तपस्या नहीं की है। न तो हमने आपके चरण की पूजा की और न प्रश्न पूछ कर आपसे ज्ञान प्राप्त किये। तबभी आप हमारे हृदय में प्रवेश कर हमारी आंखों में रहते हैं। विनती है, बताइये किस उद्देश्य से ? **2882**

कट्ट प्पॊरुळै मरै प्पॊरुळ् एन्ऱु* कयवर् शॊल्लुम् पॆट्टै क्कॆडुक्कुम् पिरान् अल्लने* एन् पॆरु विनैयै किट्टि क्किळङ्गॊडु तन् अरुळ् एन्नुम् ऒळ् वाळ् उरुवि* वॆट्टि क्कळैन्द* इरामानुशन् एन्नुम् मॆय्त्तवने॥९३॥	करूणा की चमकती तलवार निकालकर महान तपस्वी रामानुज हमारे पास आये और हमारे कर्म का मूलोच्छेदन कर दिया। क्या आप हमारे स्वामी नहीं हैं जो दुष्ग्रंथों को वैदिक वाणी कहने वाले दुष्टों की बड़बड़ाहट को शांत करते हैं ? **2883**
तवम् तरुम् शॆल्वम् तगवुम् तरुम्* शलिया प्पिरवि प्पवम् तरुम्* तीविनै पाट्टि तरुम्* परन्दामम् एन्नुम् तिवम् तरुम् तीदिल् इरामानुशन् तन्नै च्चार्न्दवर्गट्कु* उवन्दरुन्देन्* अवन् शीर् अन्ऱि यान् ऒन्ऱुम् उळ् मगिळ्न्दे॥९४॥	जो आपकी शरण लेते हैं रामानुज उसे दया का धन, तपस्या का फल देकर उसके कर्म के कारण जन्म की आवृत्ति का अंत करते हैं और वैकुण्ठ का ऊंचा आसन देते हैं। आपकी गाथा गान के सिवा मेरा हृदय अन्य किसी चीज से प्रसन्न नहीं रहता। **2884**
उळ् निन्ऱुयिर्गळुक्कुट्रनवे शॆय्दु* अवरक्कुयवे पण्णुम् परनुम् परिविलनाम् पडि* पल् उयिर्क्कुम् विण्णिन् तलै निन्ऱु वीडळिप्पान् एम् इरामानुशन्* मण्णिन् तलत्तुदित्तु* उय्मरै नालुम् वळर्त्तनने॥९५॥	प्रभु सब जीवों के हृदय में रहकर उसका कल्याण करते हुए मुक्ति देते हैं। लेकिन रामानुज के समक्ष यह स्नेह छोटा दिखता है जो वैकुंठ छोड़कर चारों वेद के प्रसार एवं हर जीव को मुक्त करने हेतु धरा पर अवतरित हुए। **2885**
वळरुम् पिणिकॊण्ड वल्विनैयाल्* मिक्क नल्विनैयिल् किळरुम् तुणिवु किडैत्तरियादु* मुडैत्तलै ऊन् तळरुम् अळवुम् दरित्तुम् विळुन्दुम् तनि तिरिवेर्कु* उळर् एम् इरैवर्* इरामानुशन् तन्नै उट्रवरे॥९६॥	घोर कर्म जो जीव को उद्वेलित करते रहते हैं इसके कारण हमने अभी मोक्ष में पूर्ण विश्वास नहीं उत्पन्न किया है। जब यह गन्दा शरीर असहाय होता है एवं जीवन मरण के बीच जूझता है तब रामानुज के भक्तगन जो हमारे स्वामी हैं अकेले हमारा आश्रय होंगे। **2886**
तन्नै उट्राट्शॆय्युम् तन्मैयिनोर्* मन्नु तामरै त्ताळ् तन्नै उट्राट्चॆय्य* एन्नै उट्रान् इन्ऱु* तन् तगवाल् तन्नै उट्रार् अन्ऱि तन्मै उट्रार् इल्लै एन्ऱरिन्दु* तन्नै उट्रारै* इरामानुशन् गुणम् शाट्रिडुमे॥९७॥	जो आपकी सेवा करते हैं उनके स्नेह की रक्षा हेतु रामानुज ने अपना चरणारविंद का आश्रय देकर उन्हें अपना लिया। अपने शिष्यों के अलावे जो जिज्ञासु नहीं हैं उनके कल्याण हेतु अपनी असीम करूणा से शिष्यों को सर्वत्र सिद्धांत के प्रसार के लिये उत्साहित किया। **2887**
इडुमे इनिय शुवर्क्कत्तिल्* इन्नम् नरगिल् इट्टु च्चुडुमे अवट्रै* तॊडर् तरु तॊल्लै* शुळल् पिरप्पिल् नडुमे इनि नम् इरामानुशन् नम्मै नम् वशत्ते* विडुमे शरणम् एन्राल्* मनमे ! नैयल् मेवुदर्के॥९८॥	हे मेरा मन ! एक बार जब रामानुज की शरण में चले आये तब वे चाहे हमें सुखद स्वर्ग भेजें या ज्वालापूर्ण नरक दें या पुनर्जन्म की आवृति में डाल दें या हम जैसा चाहते हैं वैसा होने दें हमें विचलित नहीं होना है। **2888**
तर्क च्चमणरुम् शाक्किय प्पेय्गळुम्* ताळ्शडैयोन् शॊल् कट्र शोम्बरुम्* शूनिय वादरुम्* नान्मरैयुम् निर्क क्कुरुम्बु शॆय् नीशरुम् माण्डनर्* नीळ् निलत्ते पॊन् कर्पगम्* एम् इरामानुश मुनि पोन्द पिन्ने॥९९।	हमारे दिव्य कल्प वृक्ष रामानुज मुनि के अवतार के बाद बड़बड़ाते श्रमन, निराधार शाख्य, शिव आगम के आलसी शून्यवादी, तथा वेदांत के भ्रमपूर्ण व्याख्या करने वाले सभी इस पृथ्वी पर पराजित हो चुके हैं। **2889**

पोन्दर्दन् नेञ्जन्नुम् पोन् वण्डु* उनदडि प्पोदिल् ओण् शीर् आम् तेळि तेन् उण्डमरन्दिड वेण्डि* निन्पाल् अदुवे ईन्दिड वेण्डुम् इरामानुश ! इदन्रि ओन्रुम्* मान्दगिल्लादु* इनि मट्रोन्रु काट्टि मयक्किडले॥१००॥	हे रामानुज ! हमारा हृदय एक सुनहला मधुमक्खी है जो आपके आस पास इस चाह से मंड़राता है कि आपके चरणार विंद के गौरवपूर्ण बाढ़ से अमृत का पान कर सके। मधुमक्खी अन्य किसी चीज का पान भी नहीं कर सकता। विनती है इसे अवसर दीजिये जो यह चाहता है। कोई अन्य चीज में बहला कर इसे अपने से दूर मत भगाइये। **2890**
मयक्कुम् इरु विनै वल्लियिल् पूण्डु* मदि मयङ्गि त्तुयक्कुम् पिरवियिल्* तोन्रिय एन्नै* तुयर् अगट्रि उयक्कोण्डु नल्गुम् इरामानुश ! एन्रदुन्नै उन्नि* नयक्कुम् अवर्क्किदिळुक्केन्वर्* नल्लवर् एन्रुम् नैन्दे॥१०१॥	हे रामानुज ! पुनर्जन्म की आवृति में पड़कर हम कर्म की माया में अंधे बनकर जीवन बिताते रहे। आपने स्वयं हमें यातना से बाहर निकाला। आपकी करूणा के स्मरण मात्र से अपने द्रवित हृदय के साथ रहने वाले योग्य जन इसे दोष पूर्ण बताते हैं कि हमने आपसे इसके लिये याचना की थी। **2891**
नैयुम् मनम् उन् गुणङ्गळै उन्नि* एन् ना इरुन्देम् ऐयन् इरामानुशन् एन्रळैक्कुम्* अरुविनैयेन् कैयुम् तोळुम् कण् करुदिडुम् काण क्कडल् पुडै शूळ्* वैयम् इदनिल्* उन् वण्मै एन्बाल् एन् वळरन्ददुवे॥१०२॥	हे हमारे प्रभु एवं नाथ रामानुज ! आपके सदगुणों को यादकर हमारा हृदय द्रवित होता है। मेरी जीभ केवल आपका नाम लेती है। मेरे हाथ प्रार्थना रत हैं तथा आंखें आपके सुन्दर स्वरूप के दर्शन के लिये लालायित हैं। कितना घोर पापी हम हैं ! क्यों आपने सागर से घिरी धरती पर केवल मुझे अपना दया का पात्र बनाया ? **2892**
वळरन्द वेम् कोब मडङ्गल् ओन्राय्* अन्रु वाळ् अवुणन् किळरन्द* पोन् आगम् किळित्तवन्* कीरत्ति प्पयिर् एळुन्दु विळैन्दिडुम् शिन्दै इरामानुशन् एन्रन् मेय्विनै नोय्* कळैन्दु नल् ज्ञानम् अळित्तनन्* कैयिल् कनि एन्नवे॥१०३॥	पुराकाल में प्रभु विशाल एवं महाकोध से ग्रस्त नरसिंह के रूप में प्रकट हुए तथा शस्त्रों से सुसज्जित हिरण्य के सुनहले छाती को चीर डाला। रामानुज के उपजाऊ हृदय में आपकी गाथा सदा बढ़ती है। हमारे कर्म के जन्मों के घास को निकालते हुए वे हमें सम्यक ज्ञान की अच्छी फसल काटने का अवसर देते हैं। **2893**
कैयिल् कनि एन्न* क्कण्णनै क्काट्टि त्तरिलुम्* उन् तन् मेय्यिल् पिरङ्गिय शीरन्रि वेण्डिलन् यान्* निरय- त्तोय्यिल् किडक्किलुम् शोदि विण् शेरिलुम् इव्वरुळ् नी* शेय्यिल् दरिप्पन्* इरामानुश ! एन् शेळुङ्गोण्डले ! ॥१०४॥	हे हमारे तैयार सघन मेघ रामानुज ! अगर एक फल की तरह कृष्ण को भी हमारे हाथ में देंगे तबभी हम आपके स्वरूप से बहने वाली आपकी गाथा की चाह रखते हैं। चाहे हम नरक के मलकुंड में जायें या ऊंचे गौरवशाली स्वर्ग में आप हमें यह अवश्य प्रदान करें नहीं तो हमारे जीवन का अंत हो जायेगा। **2894**
शेळुन्दिरै प्पार्कडल् कण् तुयिल् मायन्* तिरुवडिक्कीळ् विळुन्दिरुप्पार् नेञ्जिल्* मेवु नल् ज्ञानि* नल् वेदियर्गळ् तोळुम् तिरु प्पादन् इरामानुशनै तोळुम् पेरियोर्* एळुन्दिरैत्ताडुम् इडम्* अडियेनुक्किरुप्पिडमे॥१०५॥	भक्तगन जो सागरशायी प्रभु के चरणाविंद में शरणागत हैं रामानुज को प्रबुद्ध मानते हैं। वैदिक विद्वान आपके चरणकमल की पूजा करते हैं। महान जीव आपके नाम के साथ नृत्य करते हैं। ये लोग जहां भी रहते हैं वे सब हमारे लिये तीर्थ हैं। **2895**

इरुप्पिडम् वैगुन्दम् वेङ्गडम्⋆ मालिरुञ्जोलै एन्नुम् पॊरुप्पिडम्⋆ मायनुक्कॆन्बर् नल्लोर्⋆ अवै तम्मॊडुम् व– न्दिरुप्पिडम् मायन् इरामानुशन् मनत्तु⋆ इन्रवन् वन्– दिरुप्पिडम्⋆ एन्रन् इदयत्तुळ्ळे तनक्किन्बुरवे॥१०६॥	योग्य जन यही कहते हैं कि वैकुण्ठ, वेंकटम, एवं मालिरूञ्शोलै आश्चर्यमय प्रभु के गौरवशाली निवास हैं। इनसबों के साथ प्रभु रामानुज के हृदय में रहते हैं। तथा रामानुज प्रेम से हमारे हृदय में रहने आये हैं। **2896**
इन्बुट्र शीलत्तिरामानुश⋆ एन्रुम् एव्विडत्तुम् एन्बुट्र नोय्⋆ उडल् तोरुम् पिरन्दिरन्दु⋆ एण् अरिय तुन्बुट्रु वीयिनुम् शॊल्लुवदॊन्रुण्डु⋆ उन् तॊण्डर्गट्के अन्बुट्रिरुक्कुम् पडि⋆ एन्नै आक्कि अङ्गाट्पडुत्ते॥१०७॥	हे मृदु स्वभाव के रामानुज ! हमें कुछ कहना है। इस हाड़ मांस के पिंजरा में हम कितने जन्म मरण से गुजरें आप सदा सर्वत्र हमारे हृदय को अपने भक्तों के प्रेम से भर दीजिये एवं हमें उनके चरणाश्रित बना दीजिये। **2897**
अङ्गयल् पाय् वयल् तॆन् अरङ्गन्⋆ अणि आगमन्नुम् पङ्गय मामलर्⋆ पावैयै प्पोट्रुदुम्⋆ पत्ति एल्लाम् तङ्गियदॆन्न त्तळैत्तु नॆञ्जे ! नम् तलैमिशैये⋆ पॊङ्गिय कीर्त्ति⋆ इरामानुशन् अडि प्पू मन्नवे॥१०८॥	**2898** **तिरूवरङ्गत्तमुदनार् तिरूवडिगले शरणं ।**